अलेक्जैण्डर
सोलजिस्तीन

१९७० में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले
विश्व-प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार का बहुचर्चित उपन्यास

पहला भाग

कैंसर वार्ड

कैन्सर वार्ड

प्रथम भाग

१९७० में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले विश्व-प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार के बहुचर्चित उपन्यास का प्रथम भाग।

इस दुर्लभ किताब की मूलप्रति आदरणीय कश्मीर उप्पल सर जी ने उपलब्ध करायी है ताकि हनी शर्मा इसका PDF बनाकर इसे सर्वसुलभ कर सकें और सोवियत साहित्य के प्रेमी इस अनमोल रचना का रसपान कर सकें।

कैन्सर वार्ड

प्रथम भाग

लेखक

अलेक्जैण्डर सोलनिस्तीन

अनुवादक :

रमेश गौड़

प्रेम गोपाल मित्तल

प्रकाशक :

नेशनल एकाडमी

६, अन्सारी मार्केट, दरिया गंज,

दिल्ली-११०००६

प्रकाशक :
नेशनल एकाडमी
६, अन्सारी मार्केट
दरिया गंज, दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण : फरवरी १९७१

द्वितीय संस्करण : अप्रेल १९७३

मूल्य : { लाइब्रेरी संस्करण : आठ रुपए
पेपर बैक संस्करण : पाँच रुपए }

मुद्रक :
वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस,
विश्वास नगर शाहदरा दिल्ली-३२

क्रम

प्रकाशक का वक्तव्य

अलेक्जैण्डर सोलनिस्तीन वर्तमान रूस के महान उपन्यासकार हैं। एक सफल उपन्यासकार के रूप में उनकी ख्याति १९६२ से शुरू होकर धीरे-धीरे पूरे संसार में फैल चुकी है। इन्हें सफल उपन्यास लिखने की अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण १९७० में संसार का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार—नोबल पुरस्कार—प्रदान किया गया। 'कैंसर वार्ड' सोलनिस्तीन के उपन्यासों में से सबसे मशहूर उपन्यास है, जो राजनीतिक कारणों से स्वयं उनके अपने देश में प्रकाशित नहीं हो सका। रूस में इनका केवल एक ही उपन्यास 'इवान डेनिसोविच के जीवन का एक दिन' प्रकाशित हुआ है जिसमें बलात श्रमशिविरों की सच्ची तस्वीर का विस्तारपूर्वक उल्लेख हुआ है। बाद के उपन्यास 'पहला दायरा' और 'कैंसर वार्ड' रूस से बाहर प्रकाशित हुए हैं और ये वर्तमान रूसी जीवन के बड़े सच्चे और मुंह बोलते नमूने हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास एक प्रादेशिक अस्पताल के आंतरिक वातावरण के चित्रण से शुरू होकर सामान्य जीवन के समस्त पहलुओं को अपनी गिरफ्त में लेता चला जाता है। भिन्न स्तरों पर जीवन व्यतीत करने वाले लोगों की मनोवैज्ञानिक अवस्था और उनकी पारस्परिक भिन्नता, शहरी और देहाती वातावरण की भिन्नता से पैदा होने वाली पेचीदगियां, धीरे-धीरे मौत की गोद में पहुंचते हुए मरीजों की इच्छाएं और आकांक्षाएं, डाक्टरों की उलझनें और सबसे बढ़कर निजी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति के दखल आदि सभी

विषयों को इस उपन्यास में एक लड़ी की तरह पिरो दिया गया है कि उपन्यास आज के रूसी जीवन का दर्पण बन गया है। लेखक की सशक्त वर्णन शैली, चरित्रों के चित्रण की क्षमता, कहानी के उपयुक्त वातावरण निर्माण करने की अपूर्व मेधा तथा कथानक को गढ़कर तैयार करने की उसकी कला की, इस उपन्यास के पढ़ने से हमें जानकारी मिल जाती है।

इस उपन्यास का हिन्दी संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। इसके १,२,३,४,९,१० और ११ अध्यायों का अनुवाद प्रेम गोपाल मित्तल ने किया है तथा शेष का रमेश गौड़ ने।

१. कैंसर है ही नहीं

—और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अस्पताल की इमारत के जिस बाजू में कैंसर के इलाज का विभाग था उसका नम्बर था तेरह। पावेल निकोलाएविच रूसानोव कभी भी अंधविश्वासी या वहमी नहीं रहा था। वह तो अन्धविश्वासी हो ही नहीं सकता था फिर भी जब उसके प्रवेश-पत्र पर "वार्ड तेरह" लिखा गया तो उसका दिल डूब गया। इनमें इतनी बुद्धिमत्ता तो होनी ही चाहिए थी कि तेरह नम्बर किसी प्रसव सम्बन्धी या किसी अन्य संयुक्त विभाग को दे देते।

लेकिन समूचे गणराज्य में यह क्लिनिक ही एकमात्र ऐसा स्थान था, जहाँ उसके लिए कुछ किया जा सकता था।

"मुझे—मुझे कैंसर तो नहीं है, नहीं है न डॉक्टर?" पावेल निकोलाए-विच ने, अपनी गरदन के दाहिने ओर की कष्ट-दायक रसौली को हल्के से छूकर, आशापूर्ण स्वर में पूछा। ऐसा प्रतीत होता था कि रसौली हर दिन बढ़ जाती है, फिर भी बाहर की बनी हुई खाल हमेशा की तरह अब भी सफेद थी और कोई भी तकलीफ नहीं दे रही थी।

"भगवान न करे, अरे, हरगिज नहीं," डॉक्टर दोन्तसोवा ने उसकी बीमारी का पिछला विवरण लिखते-लिखते उसे सांत्वना देते हुए, दसवीं बार कहा। लिखते समय वह किनारों पर गोल हो गये अपने आयताकार फ्रेम वाले चश्मे को लगा लेती और जैसे ही लिखना बन्द करती चश्मे को उतारकर रख देती। वह अब युवा नहीं रही थी। उसका चेहरा पीला और बहुत थका हुआ लगता था।

यह कुछ दिन पहले की बात है, जब निरीक्षण के कमरे में बाहर के रोगियों को देखा जा रहा था। जिन रोगियों को कैंसर के विभाग में भेजा जाता, फिर वह चाहे बाहरी रोगी के रूप में ही क्यों न हों, उनके लिये आने वाली रात को सोना कठिन हो जाता और दोन्तसोवा ने पावेल निकोलाएविच को तुरन्त ही दाखिल हो-जाने की आज्ञा दे दी थी।

इस हंसमुख व्यक्ति पर, जिसके जीवन में न कोई विशेष परेशानी थी न चिन्ता, रोग ने चुपचाप—बिना किसी चेतावनी के आक्रमण कर दिया था

और केवल दो ही सप्ताह में तूफान की तरह इस पर टूट पड़ा था। पावेल निकोलाएविच के लिए रोग भी कोई कम कष्टप्रद नहीं था परन्तु इसके साथ ही उसे इस बात से भी काफी कष्ट पहुंच रहा था कि उसे एक साधारण रोगी के रूप में दाखिल होना पड़ रहा है। एकदम साधारण व्यक्तियों की तरह जब वह सार्वजनिक अस्पताल में आखिरी बार गया था, वह भी इतनी पुरानी बात थी कि उसके लिए याद करना भी कठिन था। इवजेनी सेमीनोविच, शेंदयापिन और उल्मास्बेव को टेलीफोन किये जा चुके थे। और फिर उन्होंने यह जानने के लिए दूसरे लोगों को टेलीफोन किये थे कि क्या चिकित्सालय में "विशेष व्यक्तियों" के लिये कोई विभाग है या किसी छोटे-से कमरे को थोड़े समय के लिये विशेष विभाग में परिवर्तित किया जा सकता है। लेकिन चिकित्सालय में स्थान की इतनी कमी थी कि कुछ किया ही नहीं जा सकता था।

बड़े डॉक्टर की सहायता से केवल इतनी सफलता अवश्य मिल गई थी कि उसे प्रतीक्षालय में जाना न पड़े, कपड़े बदलने न पड़ें तथा उसके लिये सार्वजनिक शौचालय में जाना आवश्यक न हो।

यूरी अपने माता-पिता को उनकी छोटी-सी नीली मोस्कविच गाड़ी में बिठाकर सीधा वार्ड नं० १३ की सीढ़ियों तक ले गया। हल्के-हल्के हिमपात के होते हुये भी दो स्त्रियां बार-बार धोई हुई सूती गाउनें पहनें बाहर पत्थर के दालान पर खड़ी थीं। सर्दी से वे कांप अवश्य रही थीं फिर भी डटी हुई थीं। पावेल निकोलाएविच को उन बेढंगे गाउनों से लेकर यहां की प्रत्येक चीज तक अप्रिय लगी। दालान का फर्श बता रहा था कि वह अगणित कदमों द्वारा रौंदा गया है। किवाड़ों के हत्थे बेढंगे थे और रोगियों के बार-बार हाथ लगाने से मैले भी हो गये थे। प्रतीक्षालय का फर्श टूट-फूट रहा था। इसकी जैतूनी रंग की ऊंची-ऊंची दीवारों का रंग उखड़ रहा था (ऐसा प्रतीत होता था कि वह जैतूनी रंग ही गंदा है)—और फिर इसके बड़े-बड़े तख्तों वाली लकड़ी की बैंचें जिन पर रोगियों के बैठने के लिये काफी स्थान भी नहीं था। रोगियों में से बहुत से रोगी दूर-दूर से आते थे और उन्हें फर्श पर बैठना पड़ता था। इनमें उज्बेक थे जिन्होंने रूई से भरे हुये गद्दे-दार कोट पहन रखे थे। वृद्ध उज्बेक स्त्रियों ने लम्बे-लम्बे सफेद शाल ओढ़े हुए थे और युवतियों ने लाल और हरे फूलदार शाल। सभी ने ऊंची एड़ी के जूते थे और जूतों पर रबड़ भी चढ़ा रखा था। कांटे जैसा पतला-दुबला एक रूसी युवक अपने बड़े से फूले हुए पेट के साथ लेटा हुआ था। उसके कोट के बटन खुले हुए थे और कोट जमीन तक फैला हुआ था। उसने एक पूरी बैंच को अपने कब्जे में कर रखा था। वह दर्द से लगातार चीख रहा था। उसकी चीखों से पावेल निकोलाएविच के कान बहरे हो गये। उसे इतनी तकलीफ हुई जैसे वह युवक

अपने दर्द के कारण नहीं बल्कि रूसानोव के दर्द क कारण चीख रहा हो।

पावेल निकोलाएविच का चेहरा सफेद हो गया। उस पर मूर्छा-सी छा गई और उसने चुपके से अपनी पत्नी से कहा "कापा, मैं यहां मर जाऊंगा। मुझे यहां नहीं रहना चाहिए। आओ वापस चलें।"

कैपीतोलीना मैत्वेयेव्ना ने उसे दृढ़ता से बाजू से पकड़ लिया और कहा "पाशेंका, हम कहां जा सकते हैं? और यहां से जाकर फिर क्या करेंगे?"

"संभव है हम मास्को में कोई व्यवस्था कर सकें।"

"पाशेंका, यदि हम मास्को गये तो संभवतः दो सप्ताह और इन्तजार करना पड़ेगा या ऐसा भी हो सकता है कि हम वहां जा ही न सकें। हम इन्तजार कैसे कर सकते हैं? यह तो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।"

उसकी पत्नी ने उसे पूरी दृढ़ता से पकड़ लिया जैसे अपना साहस उसमें हस्तांतरित कर रही हो। पावेल निकोलाएविच अपने नागरिक और सरकारी कर्त्तव्यों का पूरी तरह पालन करता था और उसके लिए यह बात आसान भी थी और अनुकूल भी कि वह घरेलू मामलों में अपनी पत्नी पर भरोसा करता रहे। वह सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय बड़ी शीघ्रता से कर देती थी और वह ठीक भी होते थे।

बैंच पर लेटा हुआ युवक अब भी चीख रहा था और उसका हाल बुरा हो रहा था।

"सम्भवतः डॉक्टर हमारे घर आ जाएं, हम उन्हें फीस दे देंगे।" पावेल निकोलाएविच ने तर्क देते हुए कहा, परन्तु अपनी बात पर उसे स्वयं भी विश्वास नहीं था।

"पासिक" उसकी पत्नी ने थोड़ा झिड़कते हुए कहा, वह स्वयं उतनी ही दुखी थी जितना उसका पति। "तुम जानते हो कि इस पर तो सबसे पहले मैं ही सहमत होती कि किसी को बुला लिया जाए और फीस दे दी जाए। लेकिन हम इससे पहले भी कोशिश कर चुके हैं। ये डॉक्टर घर पर इलाज नहीं करते और ना ही वे पैसे लेंगे। फिर उनके उपकरणों की समस्या भी है। यह असम्भव है।"

पावेल निकोलाएविच अच्छी तरह जानता था कि यह असम्भव है। उसने यह सब इसलिये कह दिया था क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसे कुछ न कुछ कहना ही चाहिये।

चिकित्सालय के बड़े डॉक्टर से यह तय हुआ था कि चिकित्सालय की मैट्रन दोपहर के दो बजे उसे देखेगी। एक रोगी बैसाखियों की सहायता से नीचे उतर रहा था लेकिन मैट्रन कहीं-नहीं दिखाई दे रही थी और सीढ़ियों के नीचे उसके कमरे में ताला लगा हुआ था।

ये सब कितने अविश्वसनीय हैं कैपीतोलीना मैत्वेयेव्ना ने दिल की भड़ास

निकाली, आखिर इन्हें वेतन काहे का मिलता है।"

ठीक उस समय जब कैपीतोलीना मैत्वेयेव्ना, जिसके दोनों कानों पर सफेद फर झूल रहे थे, गलियारे में प्रविष्ट हुई थी तो उसकी दृष्टि एक सूचनापट पर पड़ी थी जिस पर लिखा था, "बाहर के कपड़े पहने हुए लोगों का प्रवेश वर्जित है।"

पावेल निकोलाएविच प्रतिक्षालय में प्रतीक्षा करता रहा। उसने डरते-डरते अपने सिर को दाईं तरफ घुमाया और उस रसौली को, जो उसकी हंसुली और जबड़े के बीच आगे को निकली हुई थी, छूकर देखा। उसका कुछ ऐसा विचार था कि इस आधे घंटे में—जब इसने मफलर लपेटते हुए शीशे में आखिरी बार देखा था तबसे लेकर अब तक—रसौली कुछ और बड़ी हो गई है। पावेल निकोलाएविच को थकावट महसूस हो रही थी और वह बैठना चाहता था लेकिन बैंचें गन्दी दिखाई पड़ती थीं और इसके अतिरिक्त उसे स्थान प्राप्त करने के लिये किसी ऐसी किसान स्त्री से प्रार्थना भी करनी पड़ती, जिसने अपने गले में स्कार्फ लपेटा हुआ था और अपने पांवों के बीच गंदा थैला रखा था। उसे ऐसा लग रहा था कि काफी दूरी होने के बावजूद उस गन्दे थैले की बदबू उस तक पहुंच रही है।

वह समय कब आयेगा जब हमारे देशवासी साफ-सुथरे सूटकेस लेकर यात्रा किया करेंगे? (अब जबकि उसके यह रसौली निकल आई है, यह बात क्या महत्त्व रखती है!)

दीवार का एक भाग कुछ आगे को निकला हुआ था। रूसानोव उस पर लगभग झुका हुआ खड़ा था। उसे नवयुवक की चीखों से बड़ा कष्ट हो रहा था और प्रत्येक उस चीज से भी जो उसकी आंखों ने देखी या जिसकी बदबू उसकी नाक तक पहुंची। एक किसान दाखिल हुआ जिसने अपने हाथों में आधा लिटर का एक मर्तबान-सा उठा रखा था। उस पर लेबल लगा था और वह किसी पीले तरल पदार्थ से लगभग भरा हुआ था। उसने उसे छुपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वह उसे इतराते हुए उठाए हुआ था। जैसे यह बियर का मग हो जिसे प्राप्त करने के लिये उसे लम्बी पंक्ति में खड़ा रहना पड़ा हो। वह पावेल निकोलाएविच के आगे आकर रुक गया, जैसे वह अपना मर्तबान इसे थमा देना चाहता हो। वह उससे कुछ पूछना चाहता था लेकिन जैसे ही उसकी दृष्टि उसके सूट पर पड़ी, वह पीछे हट गया। इधर-उधर देखकर वह एक रोगी की तरफ मुड़ा जो बैसाखियों की सहायता से खड़ा था।

"भाई, यह मैं किसे दूं?"

लंगड़े ने प्रयोगशाला के दरवाजे की ओर इशारा कर दिया।

पावेल निकोलाएविच को बेहद उकताहट हो रही थी।

दरवाजा फिर खुला और अस्पताल की मैट्रन दाखिल हुई। उसने केवल

सफेद कोट पहन रखा था। उसका चेहरा काफी लम्बा था और वह सुन्दर तो हरगिज नहीं थी। उसने पावेल निकोलाएविच को तुरन्त ही देख लिया और यह अनुमान लगाकर कि वह कौन है वह उसके पास पहुंची।

"मुझे खेद है," उसने कहा। उसका सांस फूल रहा था और जल्दी के कारण उसके गाल उसकी लिपस्टिक की तरह लाल हो रहे थे "क्षमा कीजिए, क्या आपको बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी? वे दवाईयां ला रहे थे और मुझे जाकर उनकी प्राप्ति के हस्ताक्षर करने थे।"

पावेल निकोलाएविच का जी चाहा कि वह कोई कड़वा-सा जवाब दे लेकिन उसने अपने आप पर काबू पा लिया। यूरी आगे बढ़ा, उसने केवल वही सूट पहन रखा था जिसमें वह गाड़ी को चलाकर लाया था, न ओवरकोट था न हैट। उसने एक सूटकेस उठा रखा था और एक बैग जिसमें कुछ फुटकर सामान था। सुनहरे बालों की एक लट उसके माथे पर नाच रही थी और वह बहुत शान्त था।

"मेरे साथ आइये!" मैट्रन ने कहा और सीढ़ियों के नीचे अपने छोटे-से कमरे की ओर, जो गोदाम-सा दिखाई पड़ता था, ले गई। निजामुद्दीन बह-रामोविच ने कहा था कि आप अपना कच्छा और पाजामा लायेंगे। इसे इससे पहले पहना तो नहीं गया? नहीं पहना गया न?"

"नहीं, एकदाम कोरे हैं।"

"यह अत्यन्त आवश्यक है, नहीं तो इन्हें कीटाणु-रहित कराना होगा। समझ गए ना? अच्छा तो आप वहां कपड़े बदल सकते हैं।"

उसने पलाईवुड का दरवाजा खोला और बिजली जलादी। उस छोटे-से कमरे में जिसकी छत ढलवां थी, कोई खिड़की नहीं थी। दीवारों पर रंगदार पैंसिल से बनाए हुए केवल कुछ नक्शे लटके हुए थे।

यूरी चुपचाप सूटकेस अन्दर लाया और फिर कमरे से बाहर चला गया। पावेल निकोलाएविच कपड़े बदलने अन्दर चला गया। इस बीच अस्पताल की मैट्रन कहीं चली गई थी लेकिन कैपीतोलीना ने उसे जा पकड़ा।

"नर्स!" उसने कहा, "ऐसा लगता है कि तुम बहुत जल्दी में हो।"

"हां कुछ जल्दी में ही हूं।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मीता।"

"अद्‌भुत-सा नाम है! तुम रूसी नहीं हो। नहीं न?"

"नहीं, जरमन ......"

"तुमने हमसे बहुत प्रतीक्षा कराई है।"

"हां, मुझे खेद है। मुझे उनकी प्राप्ति के हस्ताक्षर ......"

"मीता अब मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूं। मेरा पति

महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है जो अत्यन्त आवश्यक और मूल्यवान कार्य कर रहा है। उसका नाम पावेल निकोलाएविच है।"

"अच्छा पावेल निकोलाएविच, मैं याद रखूंगी।"

"वह इस बात के अभ्यस्त हैं कि कोई उनकी देखभाल करे। समझ गई न ? वह इस समय बहुत बीमार हैं। क्या यह सम्भव है कि तुम उनकी देखभाल के लिये एक स्थायी नर्स की व्यवस्था कर दो।"

मीता के चेहरे पर जो चिन्ता थी वह और भी बढ़ गई उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा—

"उन नर्सों के अलावा जो ऑपरेशन कक्ष में काम करती हैं, हमारे पास दिन में तीन नर्सें हैं जिन्हें साठ मरीजों की देखभाल करनी होती है। दो नर्सें रात की ड्यूटी पर होती हैं।"

"अच्छा तो इसका मतलब तो यह हुआ कि कोई मरीज चाहे मर रहा हो, वह बुरी तरह चीख रहा हो लेकिन उसके पास कोई भी नहीं आयेगा।"

"आप ऐसा क्यों सोचती हैं ? प्रत्येक व्यक्ति की उचित देखभाल होती है।"

("प्रत्येक व्यक्ति!" अगर वह "प्रत्येक व्यक्ति" की बात कर रही है तो फिर कहने को रह ही क्या जाता है ?")

"क्या नर्सें पारियों में कार्य करती हैं ?"

"जी हां ! प्रत्येक बारह घण्टे के बाद नर्सें बदल जाती हैं।"

"यह सामान्य और निर्वैयक्तिक बर्ताव अत्यधिक कष्टदायक है। मैं और मेरी बेटी बड़ी आसानी से बारी-बारी उनके पास बैठ सकती हैं। या मैं एक नर्स का खर्च उठाने को तैयार हूं लेकिन उन्होंने कहा है कि ऐसा करने की भी इजाजत नहीं है।"

"मुझे खेद है कि वास्तव में ही ऐसा नहीं किया जा सकता है। ऐसा पहले कभी हुआ भी नहीं है फिर वार्ड में कोई स्थान भी तो नहीं जहां कुर्सी रखी जा सके।"

"हे भगवान ! अब मैं अच्छी तरह अनुमान लगा सकती हूं कि यह वार्ड कैसा है ! मैं इस वार्ड को अच्छी तरह देखना चाहूंगी। यह कितने बिस्तर हैं ?"

"नौ ! तुम्हारे पति भाग्यशाली हैं कि उन्हें सीधे ही वार्ड में स्थान मिल गया है। कुछ नये रोगियों को तो गलियारों में लेटना होता है या सीढ़ियों पर।"

"मैं तुमसे फिर अनुरोध करती हूं कि पावेल निकोलाएविच के लिए किसी नर्स या अरदली की व्यवस्था कर दी जाए, जो निजी रूप में उनकी देख-भाल कर सके। तुम यहां लोगों को जानती हो। तुम्हारे लिए इस प्रकार की व्यवस्था

करना कठिन न होगा।" वह अब तक अपना बड़ा-सा काला हैंड बैग खोलकर पचास रूबल के तीन नोट निकाल चुकी थी।

उसके पास ही खड़े उसके पुत्र ने अपना मुंह चुपचाप दूसरी ओर कर लिया।

मीता ने अपने दोनों हाथ अपनी पीठ की तरफ कर लिए।

"नहीं, नहीं! यह सम्भव नहीं है।"

"यह मैं तुम्हें नहीं दे रही हूं।" कैपीतोलीना ने नोट मैट्रन की तरफ बढ़ाते हुए कहा—

"लेकिन अगर यह वैध तरीके से सम्भव न हो, यदि इस पर किसी भी आपत्ति की सम्भावना हो तो···मैं तो केवल सेवा के बदले दे रही हूँ। मैं तो केवल इतना चाहती हूं कि तुम यह राशि उस व्यक्ति तक पहुंचा दो जो इसका हकदार हो।"

"नहीं, नहीं" मैट्रन ने कंककंपी-सी अनुभव करते हुए कहा, "हम यहां ऐसी कोई बात नहीं करते?"

दरवाज़ा चरमराया और पावेल निकोलाएविच अपने नए हरे और भूरे पाजामे और सोने के कमरे में पहनने के गर्म और साफ-सुथरे सलीपरों में मैट्रन की कोठरी में से बाहर निकला। अपने लगभग गंजे सिर पर उसने रसबरी रंग की एक उज्बेक मखमली टोपी पहन रखी थी। अब क्योंकि उसने अपना गर्म ओवरकोट कालर तथा मफलर उतार दिये वे, इसलिए उसकी गर्दन के दायीं ओर की रसौली, जो बन्द मुट्ठी जितनी थी, बहुत ही भयानक लग रही थी। अब तो उसके लिये अपने सिर को सीधा रखना भी बहुत कठिन हो गया था। अब उसे अपने सिर को एक ओर को थोड़ा झुकाना पड़ता था।

उसका बेटा उतारे हुए कपड़े उठाने अन्दर गया और उन्हें सूटकेस में रख दिया। कैपीतोलीना मैत्वेयेव्ना ने नोट वापस अपने हैंडबैग में डाल लिए। उसने चिन्ता के साथ अपने पति की ओर देखा।

"इस प्रकार क्या तुम ठिठुर नहीं जाओगे? तुम्हें अपने साथ एक अच्छी-सी गर्म गाउन लानी चाहिए थी। अब मैं आऊंगी तो लेती आऊंगी। देखो यह स्कार्फ है"। उसने अपनी जेब से स्कार्फ निकालते हुए कहा—"इसे अपनी गर्दन में लपेट लो, इससे तुम्हें सर्दी नहीं लगेगी"। अपने फर-कोट में वह अपने पति की अपेक्षा तिगुनी बलवान दिखाई दे रही थी।

"अब वार्ड में जाओ और आराम से रहो। अपना खाना निकाल लो और देखो किसी और चीज़ की जरूरत तो नहीं है। मैं यहां बैठकर इन्तजार करूंगी। जिस चीज की जरूरत हो मुझे नीचे आकर बता देना मैं शाम को लेती आऊंगी"।

वह कभी नहीं घबराती थी। उसे पता होता था कि आगे क्या करना है।

अपने जीवन में वह अपने पति की सच्ची साथी थी। पावेल निकोलाएविच ने उसकी ओर आभार तथा वेदना के मिले-जुले भाव से देखा और फिर उसने पुत्र पर दृष्टि डाली।

"अच्छा तो अब तुम जा रहे हो यूरी ?"

"पिता जी मैं शाम की गाड़ी पकड़ूंगा" वह उसकी ओर बढ़ा। अपने पिता की उपस्थिति में उसका बर्ताव सदा आदरपूर्ण होता था। वह स्वभावतः भावुक नहीं था। सदा की तरह अब भी उसने भावनारहित ढंग से अपने पिता से विदा ली। जीवन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया सदा धीमी होती थी।

"यह ठीक है बेटे ! देखो यह तुम्हारी प्रथम महत्वपूर्ण सरकारी यात्रा है। सतर्कता बरतना और आरम्भ से ही उचित दृष्टिकोण अपनाना। बहुत अधिक नरमी न बरतना। याद रखना, तुम्हारी नरमी पतन का कारण बन सकती है। हमेशा स्मरण रखना कि तुम यूरी रूसानोव नहीं हो। तुम कानून के प्रति-निधि हो, मेरी बात समझ गए न ?"

यूरी उसकी बात समझा या नहीं, लेकिन पावेल निकोलाएविच के लिये इससे बेहतर शब्द ढूंढना कठिन होता। माता चिन्तित-सी हो रही थी और जाने के लिये बेचैन थी।

"मैं यहां मां के पास प्रतीक्षा करूंगा" यूरी ने मुस्करा कर कहा। "विदाई के नमस्कार की आवश्यकता नहीं पिता जी केवल चले जाइये।"

"तुम अपने आप जा सकते हो न ?" मीता ने पूछा।

"तुम देखती नहीं, यह कठिनाई से ही खड़े हो सकते हैं। तुम इतना भी नहीं कर सकतीं कि इन्हें बिस्तर तक पहुंचा दो और इनका बैग उठाकर ले जाओ।"

पावेल निकोलाएविच यतीमों की तरह अपने कुटुम्ब को देखने लगा। मीता ने सहारे के लिये अपना बाजू बढ़ाया था जिसे पकड़ने से उसने इन्कार कर दिया। जीने की रेलिंग को उसने दृढ़ता से पकड़ा और ऊपर चढ़ने लगा। उसका दिल जोर से धड़क रहा था। लेकिन अब तक इस धड़कन का कारण चढ़ाई कदापि नहीं थी। वह सीढ़ियां इस प्रकार चढ़ रहा था, जैसे लोग फांसी के तख्ते पर चढ़ते हैं जहां उनकी गर्दन उड़ा दी जाती है।

मैट्रन उसका बैग उठाकर सीढ़ियों पर आगे-आगे दौड़ गई। वह चिल्ला-चिल्ला कर किसी मारिया से कोई बात कह रही थी। पावेल निकोलाएविच अभी पहला ही जीना चढ़ पाया था कि वह लौटकर दौड़ती हुई, उसके पास से गुजर गई और नीचे की तरफ भागती हुई इमारत से बाहर चली गई। इस प्रकार उसने कैपीतोलीना मैत्वेयेव्ना को बता दिया कि इस स्थान पर उसके पति को किस प्रकार का शांत व एकांत वातावरण मिल सकेगा।

सीढ़ियों के मध्य जो चबूतरा-सा होता है, पावेल निकोलाएविच सीढ़ियां

चढ़ता हुआ उस तक पहुंच गया। यह चबूतरा काफी लम्बा-चौड़ा था, जैसा कि बहुत पुरानी इमारतों में होता है। इस चबूतरे पर, जो सीढ़ियों में पहला चबूतरा था, दो बिस्तर बिछे थे। उन पर दो रोगी थे और उसके पास ही दो चौकियां रखी थीं। इन बिस्तरों और चौकियों के कारण आने-जाने वालों को कोई असुविधा नहीं होती थी। एक रोगी की हालत खराब थी और उसका शरीर अत्यधिक दुर्बल था। उसे गुब्बारे द्वारा आक्सीजन गैस दी जा रही थी।

यह प्रयत्न करते हुए कि उसकी दृष्टि रोगी के निराशाजनक मुख पर न पड़े, रूसानोव मुंह फेर कर चलने लगा और ऊपर देखता हुआ सीढ़ियां चढ़ता गया, लेकिन दूसरा जीना चढ़ जाने के बाद भी उसके सामने प्रोत्साहित करने वाला वातावरण नहीं था। एक नर्स मारिया वहां खड़ी थी। उसका चेहरा काला और बुत जैसा था, जिस पर न तो कोई मुस्कराहट थी और ना ही कोई अभिवादन। लम्बी, पतली और सपाट सीने वाली यह नर्स एक संतरी की तरह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह इसे देखते ही एक कदम आगे बढ़ी और सीढ़ियों के बीच आकर उसे बताया कि उसे कहां जाना है। हॉल के शुरू में कई दरवाजे थे। दरवाजे बिलकुल खुले रह गये थे क्योंकि वहां भी बिस्तर बिछे थे और उन पर मरीज लेटे थे। लगातार जलते हुए लैम्प के नीचे दीवार के आले जैसे रिक्त स्थान में नर्स का लिखने का मेज था जिसके पास ही दीवार के साथ दंदानेदार शीशे की अलमारी लगी हुई थी जिस पर रैडक्रास का निशान बना हुआ था। वे मेज को पार कर गये और एक बिस्तर को भी। तब मारिया ने अपनी लम्बी और पतली उंगली से इशारा करते हुए कहा—"खिड़की के बाद दूसरा बिस्तर!"

इतनाभर कहकर वह वहां से भाग खड़ी हुई। सभी सार्वजनिक अस्पतालों की एक अप्रीतिकर विशेषता यह होती है कि वहां कोई भी दो-चार शब्द कहने सुनने को ठहरता नहीं।

वार्ड के दरवाजे हमेशा खुले रखे जाते थे फिर भी दहलीज पार करते हुए पावेल निकोलाएविच को एक दम घोंटने वाली नम-दुर्गन्ध का अहसास हो गया जिसमें दवाओं की दुर्गन्ध भी सम्मिलित थी। एक ऐसे व्यक्ति के लिये, जो गंध के विषय में अत्यधिक संवेदनशील हो, यह अत्यन्त कष्टदायक था।

बिस्तर पंक्तियों में लगे थे और एक-दूसरे से मिले हुए थे। सिर दीवार की ओर थे। उनके मध्य यदि कोई फासला था भी तो केवल इतना कि उसमें एक छोटी-सी मेज रखी जा सके और वार्ड के बीच में जो रास्ता था वह भी केवल इतना था कि उसमें से दो व्यक्ति निकल सकें।

इस रास्ते में एक मोटा, चौड़े कंधों वाला रोगी खड़ा था जिसने लाल धारियों वाला पाजामा पहन रखा था। उसकी गर्दन मोटी तथा कसी हुई पट्टियों से पूरी तरह ढंकी हुई थी जो लगभग उसके कानों की फूलकों तक पहुँचती

थी। पट्टियों का यह सफेद और मजबूत घेरा उसके भारी सिर के स्वतन्त्र रूप से हिलने-जुलने में रुकावट डाल रहा था, जिस पर लोमड़ी जैसे कत्थई रंग का एक छप्पर-सा था।

वह बैठी हुई आवाज में अपने साथी रोगियों से कह रहा था, जो अपने बिस्तरों पर लेटे ही सुन रहे थे। रूसानोव के प्रवेश करने पर उसने अपना सारा शरीर, जिसके साथ उसका सिर, भी जुड़ा हुआ था, उसकी ओर घुमा दिया। बिना किसी सहानुभूति के उसकी ओर देखा और कहा—"अच्छा! देखो, कौन आया है? एक अन्य छोटा-सा कैंसर।"

पावेल निकोलाएविच ने इस प्रकार के परिचय का कोई उत्तर उचित नहीं समझा। उसे प्रतीत हुआ कि कमरे में सभी लोग उसकी ओर देख रहे हैं, परन्तु उन लोगों पर जो उसके रास्ते में केवल संयोग से ही आ गये थे, उसने ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा और ना ही किसी प्रकार के अभिवादन की आवश्यकता ही समझी। उसने केवल लोमड़ी जैसे कत्थई बालों वाले व्यक्ति की ओर हाथ हिलाया ताकि वह उसके लिये रास्ता छोड़ दे। उसने पावेल निकोलाएविच के लिये रास्ता छोड़ दिया और उसे देखने के लिये अपना सारा शरीर, जिसके ऊपर सिर भी लगा हुआ था, घुमा दिया।

"अरे मित्र क्या तुम्हें कैंसर है?" उसने अपनी मोटी आवाज में पूछा।

पावेल निकोलाएविच इस समय तक अपने बिस्तर तक पहुँच चुका था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे इस प्रश्न ने उसके शरीर को छील दिया है। उसने इस ढीट-गंवार की ओर आंखें घुमाईं और प्रयत्न किया कि उसे क्रोध न आये। उसके बावजूद उसके कन्धे फड़क गये। एक सम्मानपूर्ण एवं मर्यादित ढंग से उसने कहा—

"मुझे काई कैंसर नहीं हैं। किसी प्रकार का कोई कैंसर नहीं है।"

लोमड़ी जैसे बालों वाले ने नाक से आवाज निकाली और ऐसी आवाज में, जिसे सारा वार्ड सुन सके अपना निर्णय सुनाया:

"बेवकूफ! यदि यह कैंसर नहीं तो फिर वह तुम्हें झक मारने को यहां लाए हैं।"

२. शिक्षा चतुर तो नहीं बना देती

वार्ड में उस पहली सुबह के कुछ ही घन्टों में पावेल निकोलाएविच को एक भय ने घेर लिया।

जिस प्रकार कांटा मछली को खेंच लेता है, रसौली का यह निरर्थक, बेकार आकस्मिक और निर्दयी लोंदा उसे यहां खींच लाया था और लोहे के इस तंग और जलील पलंग पर, जिसकी कमानियां चरमरा रही थीं और जिसका गद्दा गद्दे के नाम की खिल्ली उड़ा रहा था, पटख दिया था। सीढ़ियों के नीचे कपड़े उतारने और अपने कुटुम्ब से विदा लेने के बाद ऊपर उस वार्ड में पहुंचने पर ऐसा लगता था जैसे समूची पिछली जिन्दगी दरवाजे के पीछे रह गई है और यहां की जिन्दगी इतनी जलील और लज्जाजनक थी कि रसौली से कहीं अधिक यह भय और कष्ट का कारण बन जाती थी। अब किसी ऐसी वस्तु पर दृष्टि डालना उसके लिये संभव नहीं था जो सुखद या शांतिदायक हो। वह इन आठ व्यक्तियों की ओर देखने को विवश था जो अब उसके बराबर थे। आठ रोगी जो बेढंगे तथा घिसे हुए गुलाबी तथा सफेद रंग के पाजामे पहने हुए थे। ये पाजामे थिगलीदार और फटे-पुराने थे और लगभग सबके सब गलत माप के थे। वह एक निर्णय भी नहीं कर सकता था कि क्या सुने और क्या नहीं। वह इन गंवारों की बात सुनने को विवश था और उनके थका देने वाले वार्तालाप का न तो उसके साथ कोई सम्बन्ध था और न उसे उसमें कोई रुचि थी। उसका दिल चाहता था कि वह सबसे कहदे कि वे खामोश रहें। विशेषतः लोमड़ी जैसे कत्थई बालों वाले व्यक्ति से जिसकी गर्दन पट्टियों के मजबूत दायरे में जकड़ी हुई थी। उसकी बात-चीत थका देने वाली थी। प्रत्येक व्यक्ति उसे "येफ्रेम"[१] कहकर बुलाता था, हालांकि वह नौजवान नहीं था।

येफ्रेम को नियंत्रण में रखना असम्भव था। वह लेटने का नाम नहीं लेता था और न कभी वार्ड से बाहर जाता था। केवल पलंगों की पंक्तियों के बीच के रास्ते पर बेचैनी से घूमता रहता था। कभी-कभी वह अपने चेहरे को सिकोड़

---

१. सम्बोधन करने का यह ढंग रूस में किसी सीमा तक असम्मान का द्योतक है। प्रायः बड़ी आयु वालों को उनके नाम और पैतृक नाम से पुकारा जाता है। जैसे पावेल निकोलाएविच में, पावेल, निकोलाई का पुत्र। (अनुवादक की टिप्पणी)

लेता जैसे उसे इंजैक्शन लगाया जा रहा हो और अपने सिर को पकड़ लेता। उसके बाद वह फिर ऊपर-तले चलने लगता। इस प्रकार की चहलकदमी के बाद वह प्रायः रूसानोव के पलंग के पांयते आ खड़ा होता, अपने शरीर के पट्टियों में जकड़े हुए ऊपर के भाग को पलंग के कटहरे के ऊपर से झुकाता और अपने चौड़े चेचक भरे खिन्न चेहरे को आगे की ओर धकेल कर उसे भाषण देना आरम्भ कर देता।

"तुम्हें वही हो गया है प्रोफेसर? तुम अब घर कभी न जा सकोगे समझे?"

वार्ड में बेहद गर्मी थी। पावेल निकोलाएविच अपना पाजामा और मखमली टोपी पहने हुए कम्बल पर लेटा हुआ था। उसने सुनहरी फ्रेम वाला चश्मा ठीक किया, येफ्रेम की ओर सख्ती से देखा, जिसका इसे अच्छा-खासा अभ्यास था, और उत्तर दिया, "मेरी समझ में नहीं आता कि तुम मुझसे क्या चाहते हो कामरेड और तुम मुझे भयभीत करने का प्रयास क्यों कर रहे हो? कभी मैंने भी तुमसे कोई प्रश्न पूछा है?"

येफ्रेम ने घृणा से नथुने फुलाकर कहा, "तुम्हारे प्रश्नों की किसे परवाह है लेकिन तुम घर वापस फिर भी न जा सकोगे। तुम अपना यह चश्मा वापस भेज दो और नया पाजामा भी।"

ऐसी असभ्य बातों के बाद उसने अपने बेढंगे शरीर को सीधा किया और एक भूत की तरह पलंगों के बीच के रास्ते पर उपर-तले चलना शुरू कर दिया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि पावेल निकोलाएविच चाहता तो उसके मुंह में लगाम दे सकता था, उसे उसकी हैसियत याद दिला सकता था लेकिन न जाने क्यों वह अपनी सामान्य इच्छा-शक्ति का प्रयोग न कर सका। उसकी इच्छा-शक्ति पहले भी क्षीण हो रही थी, परन्तु इस पट्टियों में लिपटे हुए शैतान ने तो उसे और भी परास्त कर दिया। केवल कुछ ही घंटों में उसकी हैसियत प्रतिष्ठा तथा भविष्य की योजनाएं उसके हाथ से जाती रही थीं और वह गर्म और सफेद मांस का ग्यारह स्टोन का एक लोथड़ा बनकर रह गया था जिसे कुछ पता न था कि कल क्या होगा।

उसके चेहरे से उसके दुखी हृदय का पता चल रहा था क्योंकि अपनी गश्तों के बीच एक बार येफ्रेम उसके सामने आकर रुका और काफी मित्रतापूर्ण स्वर में बोला, "यदि वे तुम्हें घर जाने भी देंगे तो बहुत शीघ्र तुम लौट आओगे। इस केकड़े को लोगों से प्यार है। एक बार वह किसी को अपने पंजों में कस ले तो जब तक वह तुड़मुड़ा न जाए, छोड़ता नहीं।"

पावेल निकोलाएविच में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह प्रतिवाद कर सके। येफ्रेम ने फिर चलना आरम्भ कर दिया। सच यह है कि कमरे में ऐसा कोई

भी नहीं था जो उसे बस में कर सके । अन्य सभी या तो अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थे जो प्रत्येक बात से निस्संग थे या फिर गैर-रूसी थे । दूसरी दीवार के साथ केवल चार पलंग थे, क्योंकि कुछ स्थान आगे को निकले हुये स्टोव ने घर लिया था । रूसानोव ने ठीक सामने बीच के रास्ते को छोड़ कर येफ्रेम का पलंग था । दोनों पलंगों की पाइंतियां एक दूसरे से थोड़ी ही दूरी पर थीं । अन्य तीनों पलंगों पर नवयुवक रोगी थे । स्टोव के साथ एक सीधे-सादे और कुछ काले से लड़के का पलंग था । एक उज्बेक था जो बैसाखियों की सहायता से चलता था और खिड़की के साथ केंचवे जैसा पतला एक अन्य नवयुवक था, जो अपने बिस्तर पर दोहरा पड़ा रहता था । उस युवक की खाल काफी पीली हो गई थी और वह हर समय आहें भरता रहता था । पावेल निकोलाएविच की लाइन में बाईं ओर दो एशियाई थे और फिर दरवाजे के पास एक लम्बा खशखशी बालों वाला नवयुवक रूसी लड़का । वह बैठा पढ़ता रहता था । पावेल निकोलाएविच के बिल्कुल पास खिड़की के पास एक अन्य व्यक्ति था जो देखने में रूसी लगता था परन्तु उस व्यक्ति का पड़ौसी होना किसी प्रसन्नता का कारण कदापि नहीं हो सकता था । अपनी शक्ल से वह एक पापी हत्यारा दिखता था । शायद वह ऐसा उस जख्म के निशान के कारण लगता था, जो उसके मुंह के कोने से शुरू होता था और उसके गाल के नीचे से होता हुआ लगभग उसकी गर्दन तक पहुंचता था । या शायद ऐसा उसके काले बालों के कारण था । वह अपने बालों में कंघी कभी नहीं करता था । और वे उसके सिर पर हमेशा खड़े रहते थे । इसका एक अन्य कारण उसकी खुरदुरी और कठोर शैली भी हो सकती थी । बहरहाल उस हत्यारे को सुसंस्कृत होने का दावा भी था । वह एक पुस्तक पढ़ रहा था जिसे वह लगभग समाप्त कर चुका था ।

बत्तियां जला दी गईं । छत से दो जलते हुए बल्ब लटक रहे थे । बाहर अंधेरा हो चुका था और वे रात का इन्तजार कर रहे थे ।

"यहां एक बूढ़ा भलामानस है," येफ्रेम छोड़ने वाला नहीं था, वह नीचे लेटा है । कल उसका ऑपरेशन होगा । सन् ४२ की बात है कि उन्होंने उसके छोटे से कैंसर को काट कर निकाल दिया था और उससे कहा था, "अब सब ठीक-ठाक है, जाओ मजे करो ।" येफ्रेम की जुबान कैंची की तरह चल रही थी लेकिन उसकी आवाज से ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसी के शरीर को चीरा जा रहा हो । "तेरह साल बीत गए और वह क्लिनिक के विषय में सब कुछ भूल गया । वोदका पीता, स्त्रियों से रंगरेलियाँ मनाता । वह कुछ बांका-सा है । और अब उसके एक बड़ा-सा कैंसर निकल आया है उससे मिलोगे तो देखना" उसने मजे से चटखारे लेकर कहा "मेरा ख्याल है कि ऑपरेशन की मेज से वह सीधे श्मशान-घाट पहुंचेगा" ।

"अब बस करो ! मैं तुम्हारी निराशापूर्ण भविष्यवाणियां काफी सुन चुका हूं !" पावेल निकोलाएविच ने उपेक्षा दिखाते हुए अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया। वह अपनी आवाज को कठिनाई से ही पहचान सका, जो काफी दुखपूर्ण थी। ऐसा लगता था कि उसकी अफसराना आवाज खत्म हो चुकी है।

किसी के मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी। दूसरी लाइन में खिड़की के पास मरीयल-सा जो नवयुवक लेटा हुआ था वह भी मुसीबत बन रहा था। वह अपने शरीर को तोड़-मरोड़ रहा था। उसने बैठने की कोशिश की लेकिन कोई लाभ न हुआ। फिर उसने लेटने का प्रयत्न किया इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। उसने अपने शरीर को दोहरा किया और घुटनों को छाती के साथ लगा लिया। किसी तरह आराम न मिला तो उसने अपना सिर तकिए की बजाय पलंग के कटहरे पर रख लिया। वह बहुत धीरे-धीरे आहें भर रहा था। उसका बिगड़ा हुआ चेहरा और कष्टदायक स्थिति उसकी तकलीफ को प्रकट कर रही थी। पावेल निकोलाएविच ने उसकी ओर से भी ध्यान हटा लिया। अपने पांव नीचे करके सलीपर पहने और बेदिली से अपने पलंग के पास रखी मेज को देखने लगा। उसने अलमारी का किवाड़, जिसमें उसका खाने का पैकिट रखा था, पहले खोला और फिर बन्द कर दिया। उसके बाद ऊपर की छोटी-सी दराज खोली जिसमें उसके कपड़े, तेल-फुलेल और बिजली का रेजर रखा था।

येफ्रेम अब भी ऊपर-तले चहल-कदमी कर रहा था और उसने अपने बाजू सीने पर भींच रखे थे। अनेक बार वह आंतरिक पीड़ा, से जो उसे सूइयां चुभो रही थी, झुरझुरी-सी लेता और एक ऐसी आवाज में, जैसे कोई रो रहा हो, कहता :

"हां...परिस्थिति भयानक है। वास्तव में भयानक"।

पावेल निकोलाएविच ने अपने पीछे पटाख की-सी आवाज सुनी। उसने अपना सिर सावधानी से घुमाया—उसे सिर धीरे से हिलाने में भी कष्ट होता था। उसने देखा कि वह आवाज उसके पड़ोसी खूनी की ओर से आई थी, जिसने अपनी पुस्तक को जो उसने अभी-अभी समाप्त की थी, जोर से बन्द किया था और उसने अपने बड़े-बड़े हाथों में जोर से घुमा रहा था। पुस्तक की गहरी नीली जिल्द पर सुनहरी अक्षरों में जो अब काफी मद्धम हो चुके थे, लेखक का नाम था। यही नाम पुस्तक की पुश्त पर भी था। पावेल निकोलाएविच यह मालूम न कर सका कि वह नाम किसका है फिर भी इस प्रकार के व्यक्ति से कोई प्रश्न पूछने का साहस वह न कर सका। उसके दिमाग में अपने पड़ोसी के लिए एक उपनाम आया—हड्डी-चूस। यह उपनाम उसके लिए बहुत उचित था।

"हड्डी-चूस" ने अपनी बड़ी-बड़ी उदास आंखों से पुस्तक की ओर देखा

और बड़ी बेशरमी से सारे कमरे को ऊंची आवाज में सम्बोधित किया :

"यदि द्योमा ने यह पुस्तक अलमारी के ऊपर से न उठाई होती तो मैं शपथ लेकर कह सकता था कि उसे विशेषत: हमारे लिए भेजा गया है।"

द्योमा को क्या हुआ ? कैसी पुस्तक ?" दरवाजे के समीप बिस्तर पर लेटे हुए युवक ने उत्तर में अपनी पुस्तक पर से आंखें उठा कर पूछा।

"तुम्हें ऐसी पुस्तक नहीं मिलेगी। चाहे सारे शहर का कोना-कोना छान मारो", हड्डी-चूस ने येफ्रेम के सिर के पीछे की ओर दृष्टि डाली। उसके बाल कई माह से काटे नहीं गए थे—यह बहुत ही कष्टदायक होता। इसलिए बाल उसकी पट्टी के ऊपर से बाहर को निकल रहे थे। तब उसने येफ्रेम के विकृत चेहरे की ओर देखकर कहा "येफ्रेम रोना-धोना बहुत हो चुका, अब यह पुस्तक पढ़ो !"

येफ्रेम एक झुंझलाए हुए सांड की तरह भन्ना कर रह गया और उसने उसकी ओर तिलमिला कर देखा।

"पढ़ूं ? मैं क्या पढ़ूं ? हम सब शीघ्र ही इस संसार से विदा होने वाले हैं।"

हड्डी-चूस के घाव का निशान फड़कने लगा। "बात यही है यदि तुमने शीघ्रता न की तो इस पुस्तक को पढ़ने से पहले ही इस संसार से विदा हो जाओगे, देखो जल्दी करो।"

उसने अपनी पुस्तक उठाई लेकिन येफ्रेम अपने स्थान से हिला नहीं।

"यहां पहले ही लोग बहुत पढ़ते हैं। मैं पढ़ना नहीं चाहता।"

"तुम अनपढ़ हो या इसी प्रकार की कोई अन्य बात है ?" हड्डी-चूस ने उसे बात-चीत के लिए तैयार करने का अनमना-सा प्रयास करते हुए कहा।

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है ? मैं बहुत पढ़ा लिखा हूं। यदि आवश्यकता पड़े तो बहुत पढ़ा लिखा हूं।"

हड्डी-चूस ने खिड़की के आगे के तख्ते पर से अपनी पैंसिल टटोली। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ खोले, उन पर दृष्टि दौड़ाई और यहां वहां कुछ टिप्पणियां लिखने लगा।

"डरो नहीं," उसने धीरे से कहा, "ये अच्छी छोटी मोटी कहानियां हैं परन्तु ये कुछ ही कहानियां हैं—प्रयत्न करो। तुम्हारे रोने-धोने से मैं तंग आ गया हूं। सुनते हो। पुस्तक पढ़ो !"

"मैं किसी चीज से नहीं डरता," येफ्रेम ने पुस्तक ले ली और पलंग पर फेंक दी।

उज्बेक नवयुवक अहमदजान एक बैसाखी के सहारे लंगड़ाता हुआ दरवाजे में से आया। उस कमरे में एकमात्र वही व्यक्ति था जो प्रसन्न था।

"भोजन तैयार है," वह चिल्लाया।

स्टोव के समीप वाले काली से रंगत के लड़के में जान पड़ गई।

"मित्रो वे भोजन ला रहे हैं।"

भोजन लाने वाली अरदली, जिसने सफेद कोट पहन रखा था, अन्दर आई। उसने अपने कंधे पर एक ट्रे उठा रखा थी। उसे उसने अपने आगे किया और प्रत्येक बिस्तर के पास जाने लगी। खिड़की के पास के बिस्तर पर दर्द से तड़पते युवक के अतिरिक्त सभी गति में आ गए और उन्होंने ट्रे में से प्लेटें उठा लीं। वार्ड में प्रत्येक व्यक्ति के पलंग के साथ मेज थी। केवल युवक द्योमा के पास मेज नहीं थी। वह बड़ी-बड़ी हड्डियों वाले कज्जाक की मेज में ही हिस्सेदार था, जिसका ऊपर का होंठ एक लाल खरिंड के कारण सूजा हुआ था।

इस बात के अलावा कि पावेल निकोलाएविच की खाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी, चाहे वह वैसा ही खाना हो जैसा वह घर से अपने साथ लाया था, अस्पताल के खाने पर दृष्टि डालते हुए उसे एक बार फिर अहसास हुआ कि वह बड़ी गलत जगह पर आ गया है और क्लिनिक में भरती होने की हामी भर कर उसने बहुत बड़ी भूल की है। एक तो पुडिंग ही रबड़ की भांति सख्त थी जिसके ऊपर जैली की पीली-सा परत जमी हुई थी, फिर अलमोनियम का भूरा गंदा चम्मच, जिसकी डंडी दो जगह से मुड़ी हुई थी।

आहें भरने वाले युवक के अतिरिक्त शेष सभी खाने में लग गए। पावेल निकोलाएविच ने प्लेट अपने हाथ में नहीं ली। वह अपने नाखून से उसके किनारे को बजाता रहा और इधर-उधर देखता रहा कि किसे यह प्लेट दे। उनमें से कुछ उसके पहलू की ओर को बैठे हुए थे और शेष की उसकी ओर पीठ थी। केवल दरवाजे के पास वाला युवक ही उसके सामने था।

"तुम्हारा नाम क्या है?" पावेल निकोलाएविच ने अपने स्वर को ऊंचा किये बिना पूछा। उस युवक का कर्त्तव्य था कि उसकी बात को सुने।

कांटों के खटखटाने की आवाज आ रही थी फिर भी वह समझ गया कि उसी को संबोधित किया जा रहा है। काफी तत्परता से उसने उत्तर दिया "प्रोश्का···मेरा मतलब है प्रोकोफी सेमीयोनिच"।

"यह ले लो!"

"जी बहुत अच्छा···" प्रोश्का आगे बढ़ा, प्लेट ली और सिर झुका कर धन्यवाद किया।

पावेल निकोलाएविच को अपने जबड़े के नीचे सख्त लौंदे का अहसास हुआ और अचानक उसे लगा कि उसकी बीमारी साधारण हरगिज़ नहीं है। उनमें से केवल एक अर्थात येफ़ेम के पट्टियां बंधी हुई थीं और ये पट्टियां ठीक उस स्थान पर थीं, जिस स्थान पर पावेल निकोलाएविच का ऑपरेशन भी किया जा सकता है। जहां तक बैसाखियों वाले उज्बेक का प्रश्न है, वह इनका सहारा बहुत ही कम लेता था। शेष में से किसी के शरीर पर न तो कोई रसौली दिखाई

देती थी और न ही कोई अन्य नुक्स। वह सब स्वस्थ व्यक्तियों की तरह नजर आते थे, विशेषकर प्रोश्का। उसके पूरे चेहरे पर चमक थी जैसे यह किसी मनोरंजन स्थल में हो, अस्पताल में नहीं। जिस प्रकार वह प्लेट को चाट रहा था उससे अनुमान लगाया जा सकता था कि उसे भूख भी खूब लगती है।

हां यह तो सही है कि हड्डी-चूस के चेहरे का रंग भूरा-सा था लेकिन वह बिना किसी कष्ट के चलता फिरता था और पुडिंग पर इस शान से हमला कर रहा था कि पावेल निकोलाएविच के मस्तिष्क में यह विचार बिजली की तरह कौंध गया कि वह कोई कामचोर है जो सरकारी भोजनालय में घुसने में सफल हो गया है क्योंकि हमारे देश में रोगियों को मुफ्त भोजन मिलता है।

लेकिन पावेल निकोलाएविच की स्थिति भिन्न थी। उसकी रसौली का लौंदा उसके सिर को एक ओर झुकाये रखता था जिससे उसे अपना सिर घुमाने में कठिनाई होती थी। यह लौंदा हर घंटे बढ़ भी रहा था। केवल यहां के डॉक्टर ही ऐसे थे जिन्हें घंटों के गुजर जाने का जरा भी ख्याल नहीं था। दिन के खाने से रात के खाने तक कोई भी रूसानोव को देखने नहीं आया और ना ही उसका कोई इलाज हुआ हालांकि डॉक्टर दोन्तसोवा उसे यही लालच देकर यहां लाई थी कि इलाज तुरन्त होगा। तो फिर वह अत्यधिक अनुत्तरदायी तथा अपराध की सीमा तक लापरवाह स्त्री होगी। रूसानोव ने उस पर विश्वास किया था और अपना बहुमूल्य समय, जो टेलीफोन करने और वायुयान द्वारा मास्को पहुंचने में व्यतीत किया जाना चाहिये था, उसने इस भीड़-भाड़ वाले गन्दे और सड़े हुये वार्ड में खो दिया।

अपनी रसौली के कष्ट से भी अधिक विलंब होने पर उसके क्रोध और इस अहसास ने, कि वह एक भूल कर बैठा है, पावेल निकोलाएविच के दिल पर आरे चला दिये। अब प्रत्येक वस्तु उसके लिये असह्य थी। प्लेटों पर चम्मचों की रगड़ से पैदा होने वाली आवाज लोहे के पलंग, खुरदुरे कम्बल, दीवारें, रोशनियां और यहां के लोग। उसे महसूस हुआ कि वह फंस गया है—और यह कि सुबह तक कोई भी निर्णय करना कठिन है।

वह अत्यधिक कष्ट की स्थिति में लेट गया और रोशनी और वहां के सारे वातावरण से बचने के लिए उसने अपनी आंखों पर तौलिया डाल लिया, जो वह घर से लाया था। अपने दिमाग को आस-पास की वस्तुओं से दूर हटाने के लिए उसने अपने घर और अपने कुटुम्ब के बारे में सोचना शुरू कर दिया। वे सब क्या कर रहे होंगे? यूरी कब का गाड़ी पर सवार हो चुका होगा। वह पहली-बार जांचपड़ताल के लिए जा रहा था। यह बहुत आवश्यक था कि वह अच्छा प्रभाव डाले लेकिन यूरी रौब वाला नहीं था और अनाड़ी भी था। कोई भूल न कर बैठे! अवेती मास्को में अपनी छुट्टियां गुज़ार रही थी। वह वहां मनोरंजन कर रही होगी और नाटक भी देखती होगी। लेकिन उसका

वास्तविक उद्देश्य कारोबार है। यह मालूम करना कि परिस्थिति कैसी है और हां कुछ सम्पर्क-सम्बन्ध भी स्थापित करना। विश्वविद्यालय में उसका अंतिम वर्ष ही तो है। उसे जीवन में अपने लिए राह खोजनी है। वह बहुत व्यवहारकुशल थी और स्पष्ट था कि उसे मास्को जाना पड़ेगा। यहां उसे अपनी योग्यता के अनुसार सफलता मिलनी कठिन है। वह कितनी बुद्धिमान और कितनी व्यवहार-कुशल है। कुटुम्ब में कोई भी उस तक नहीं पहुंचता। पावेल निकोलाएविच को इससे कोई रोष नहीं था, बल्कि अत्यधिक प्रसन्नता थी कि उसकी लड़की उससे कहीं अधिक शिक्षित हो गई है। उसे इस समय तक कोई विशेष अनुभव प्राप्त नहीं हुआ था परन्तु उसकी बुद्धि बहुत ही तीव्र थी। लावरिक मन-मौजी किस्म का लड़का था, वह पढ़ाई से बे-परवाह था लेकिन उसकी प्रतिभा खेल-कूद में चमकती थी। वह खेलों के टुरनामेंट में कब का रीगा हो आया था, जहां वह होटल में एक वयस्क व्यक्ति की तरह ठहरा था और वह उनकी कार भी कब की दौड़ाए फिरता था। वह केडट फोर्स में कार चलाने की शिक्षा ले रहा था और आशा थी कि शीघ्र ही उसे लाइसेंस मिल जायेगा। अपनी दूसरी टर्म में वह दो विषयों में फेल हुआ था। उसे काफी कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। फिर माइका थी। वह शायद घर पर पियानो बजा रही होगी (पियानो बजाना सीखने वाली वह परिवार में पहली व्यक्ति थी) और जूलेबारस गलियारे में कालीन पर लेटा होगा। पिछले वर्ष पावेल निकोलाएविच स्वयं उसे सुबह की सैर को ले जाता था क्योंकि उसका ख्याल था कि यह उसके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। अब उसकी बजाय लावरिक उसे सैर को ले जाता होगा। उसका स्वभाव था कि जंजीर को किसी सीमा तक ढीला करके कुत्ते को राह-गीरों के पीछे लगा देता और फिर कहता, "सब ठीक है, डरो नहीं। मैंने इसे पकड़ा हुआ है।"

लेकिन कुछ ही दिनों में रूसानोव हर चीज से कट कर रह गया था। उसका हंसता-खेलता परिवार जिसमें आदर्श सामंजस्य था, उनका सुव्यवस्थित जीवन व स्वच्छ व सुन्दर घर। अब यह उसकी रसौली के दूसरी ओर था। वे जीवित हैं और जीवित रहेंगे, उनके पिता को कुछ भी हो। वे चाहे कितनी भी चिन्ता करें, कितनी भी भाग-दौड़ करें और कितना भी रोयें, रसौली उनके बीच दीवार की तरह आ गई थी और बढ़ती जा रही थी। और उसके इस ओर वह बिल्कुल अकेला था।

घर के बारे में सोचने से पावेल निकोलाएविच को कुछ चैन न मिला तो उसने राज्य की समस्याओं पर विचार करना शुरू कर दिया। शनिवार को सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत का अधिवेशन शुरू होने वाला था। कोई विशेष बात होने की सम्भावना नहीं थी। बजट पास कर दिया जायेगा। ताई-वान की खाड़ी में गोली चली थी···जिस सुबह वह घर से अस्पताल रवाना

हुआ था, रेडियो भारी-उद्योग के विषय पर एक लम्बी रिपोर्ट प्रसारित करने लगा था परन्तु यहां वार्ड में रेडियो तक नहीं था और ना ही गलियारे ही में कोई रेडियो था। कम-से-कम वे इतना प्रबन्ध ही कर देते कि हर सुबह उसे "प्रावदा" देखने को मिल जाता। आज भारी-उद्योगों की उन्नति की बात है, कल मांस व दूध मक्खन की पैदावार बढ़ाने के विषय में हुक्म जारी हुआ था। हां, अर्थव्यवस्था बड़ी ही तेज़ी से उन्नति कर रही है और स्पष्ट है कि इसका अर्थ होगा अनेक सरकारी व आर्थिक संस्थाओं में बड़े-बड़े परिवर्तन।

पावेल निकोलाएविच ने अभी से यह सोचना शुरू कर दिया था कि गणतंत्र और राज्य स्तर पर पुर्नगठन किस प्रकार लागू किया जायेगा। यह पुर्नगठन हमेशा कुछ दिलचस्पी और जोश उत्पन्न कर देता था। दैनिक कार्यों से ध्यान हट जाता था और कुछ दिल-बहलावे का सामान हो जाता था। अफसर एक-दूसरे को टेलिफोन करते, गोष्ठियां करते और सम्भावनाओं पर विचार करने के लिए आपस में विचार-विमर्श करते। नवीन संगठन चाहे कोई-सा भी दृष्टि-कोण अपनाता, इस तरफ या उस तरफ, किसी अफसर की भी जिनमें निकोलाएविच भी सम्मिलित है, पदावनति नहीं होती थी, केवल पदोन्नति ही होती थी।

परन्तु राज्य की समस्याओं पर विचार करने से भी न तो उसका ध्यान अपनी बीमारी से हटा और न उसका दिल ही बहला। उसकी गर्दन के नीचे दर्द के कारण छुरियां चल रही थीं। उसकी निर्दयी रसौली ने, जो उसकी प्रत्येक भावना से अनभिज्ञ थी, बीच में आकर समस्त संसार से उसका सम्बन्ध काट दिया था। एक बार फिर बजट, भारी-उद्योग, पशुओं तथा दूध-मक्खन की पैदावार और नवीन संगठन सब कुछ रसौली के दूसरी तरफ रह गए थे और इस तरफ पावेल निकोलाएविच रूसानोव था, बिल्कुल अकेला।

वार्ड में एक मधुर आवाज सुनाई दी। हालांकि उसकी सम्भावना कम ही थी कि आज पावल निकोलाएविच को कोई चीज़ सुखद लगे। यह आवाज वास्तव में विशेष-रूप से सुखद और मधुर थी।

"आओ अब तुम्हारा टेम्प्रेचर लें" ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह मिठाई देने का वादा कर रही हो।

रूसानोव ने तौलिया चेहरे से हटा दिया, कुछ ऊपर को उठा और अपना चश्मा लगा लिया। क्या ही सौभाग्य था। सांवली और उदास मारिया की बजाय एक चुस्त और सुडौल लड़की सामने थी जिसने सिर पर रूमाल लपेटने की बजाय अपने सुनहरी बालों पर, डाक्टरों की तरह एक छोटी-सी टोपी सजा रखी थी।

इसके पलंग के पास खड़े-खड़े ही उसने खिड़की के पास के नवयुवक को पुकारा, "अजोवकिन, अरे अजोवकिन!" वह पहले से भी ज्यादा बे-ढंगेपन से

लेटा हुआ था। बिस्तर के आर-पार, चेहरा नीचे की तरफ किये, तकिया पेट के नीचे रखे और कुत्ते की तरह अपनी ठोड़ी को गद्दे पर रखे, वह बिस्तर के कटहरे में से यूं झांक रहा था, जैसे वह किसी पिंजरे में बन्द हो। उसकी आंतरिक पीड़ा उसके चेहरे से साफ झलक रही थी और उसका एक हाथ फर्श की ओर लटक रहा था।

"अब आओ भी कुछ हिम्मत करो," नर्स ने उसे शर्म दिलाते हुए कहा, "खुद थर्मामीटर लगाओ!"

उसने बड़ी कठिनाई से अपना फर्श की तरफ लटका हुआ हाथ उठाया, जैसे कुएं में से डोल निकाल रहा हो और थर्मामीटर ले लिया। वह इतना थका हारा था और कष्ट से इतना निढाल था कि यह मानना कठिन था कि उसकी आयु सत्रह वर्ष से अधिक नहीं।

"जोया!" उसने आह भर कर विनती करते हुए कहा, "मुझे गर्म पानी की बोतल दे दो।"

"तुम अपने सबसे बड़े शत्रु हो," वह कड़ाई से बोली, "हमने तुम्हें गर्म पानी की बोतल दी परन्तु तुमने उसे इंजेक्शन के स्थान पर नहीं रखा, अपने पेट पर रख लिया।"

"परन्तु इससे मुझे आराम मिलता है," उसने एक ऐसी आवाज में जिससे अत्यधिक कष्ट प्रकट होता था, आग्रह किया।

"इससे तुम्हारी रसौली बढ़ती है। तुम्हें पहले भी बताया जा चुका है कि फोड़ा-फुंसी विज्ञान (Oncology) विभाग में गर्म पानी की बोतलों की अनुमति नहीं है। हमें तुम्हारे लिए विशेष रूप से मंगवानी पड़ी थी।"

"अच्छा तो फिर मैं इंजेक्शन नहीं लगवाऊंगा।"

लेकिन अब जोया कुछ सुन नहीं रही थी। वह अपनी नाजुक-सी छोटी उंगली से हड्डी-चूस के पलंग के कटहरे को खटखटा रही थी। "कोस्तोग्लोतोव कहां है?" उसने पूछा। (खूब-खूब। पावेल निकोलाएविच का निशाना ठीक बैठा था। उसने जो उपनाम दिया था वह कितना उचित बैठा था[1]) "वह सिगरेट पीने गया था है," द्योमा ने दरवाजे में से जवाब दिया। वह अब तक पढ़ रहा था।

"मैं उसे सिगरेट पिलवाती हूं!" जोया ने नाराजगी से कहा।

कुछ लड़कियां वास्तव में सुन्दर होती हैं। पावेल निकोलाएविच ने इस सहृदय लड़की के गठे हुए शरीर की तरफ देखा और उसकी बड़ी-बड़ी और होशियार आंखों की तरफ भी। वह उसे निष्पक्ष सराहना की दृष्टि से देख रहा था और उसे अपने अन्दर हल्कापन महसूस हो रहा था। जोया ने मुस्कराहट के

---

१. रूसी में कोस्तोग्लोतोव का अर्थ है, हड्डी निगलने वाला। (अनुवादक की टिप्पणी)

साथ थर्मामीटर उसकी ओर बढ़ाया । वह उसकी रसौली के बिल्कुल पास खड़ी थी परन्तु उसने ऐसा कोई संकेत नहीं किया, पलकें तक नहीं उठाईं, जिससे यह प्रकट हो कि वह उसे देखकर डर गई है या यह कि ऐसी चीज इससे पहले उसने कभी नहीं देखी ।

"क्या मेरे लिये कोई इलाज नहीं बताया गया ?" रूसानोव ने पूछा ।

"अभी नहीं," उसने क्षमायाचना के स्वर में मुस्कुरा कर कहा ।

"लेकिन आखिर क्यों नहीं ? डॉक्टर कहां है ?"

"वे आज का काम खत्म कर चुके हैं ।"

जोया से नाराज होने का कोई प्रश्न नहीं था लेकिन अगर उसका इलाज नहीं हो रहा है तो किसी-न-किसी का तो दोष होगा ही । उसे कुछ करना ही पड़ेगा । रूसानोव को आलसी और निष्क्रिय लोगों से घृणा थी । जब जोया उसका टैम्प्रेचर देखने आई तो उसने पूछा :

"तुम्हारा बाहर का टेलिफोन कहां है? मुझे किस स्थान पर जाना चाहिए ?"

यह उसके लिए अच्छा होगा कि वह अभी से कोई निर्णय कर ले और कामरेड ओस्तापैंको को फोन कर दे । टेलीफोन का विचार पावेल निकोलाएविच को फिर सामान्य संसार में वापिस ले आया और उसकी हिम्मत वापस आ गई । उसे महसूस हुआ कि उसकी संघर्ष-शक्ति लौट आई है ।

"अठानवें दशमलव छ: !" जोया मुस्कराई और बिस्तर के पायंती टेम्प्रेचर का जो नया चार्ट लटक रहा था उस पर पहला निशान बना दिया ।

"टेलीफोन रजिस्टरार के दफ्तर में है, लेकिन तुम अब वहां नहीं जा सकते । दरवाजा दूसरी तरफ से है।"

"क्षमा करना देवी", पावेल निकोलाएविच रूसानोव कुछ ऊपर उठा और उसके स्वर में थोड़ी कठोरता आ गई, "लेकिन यह कैसे हो सकता है कि यहां कोई फोन न हो । मान लो अभी कुछ हो जाए, उदाहरण के लिये मुझे।"

"हम भाग कर वहां जाएंगे और तुम्हारे लिये फोन कर देंगे," जोया ने कहा ।

"खूब ! मान लो तूफान आ जाये या जोर की वर्षा आ जाए ।"

जोया अब तक उसके पड़ोसी उज्बेक तक जा चुकी थी और उसके टैम्प्रेचर के चार्ट को भर रही थी ।

"दिन के समय हम सीधे वहां चले जाते हैं परन्तु इस समय वहां ताला पड़ा हुआ है ।"

खैर, वह एक अच्छी लड़की थी परन्तु किसी सीमा तक अशिष्ट । उसने उसकी पूरी बात भी नहीं सुनी और अभी से कज्जाक की ओर जा रही थी । पावेल निकोलाएविच रूसानोव की आवाज़ अनचाहे ही ऊंची हो गई और उसने

पीछे से पुकारा, "दूसरा टेलिफोन अवश्य होगा, यह असम्भव है कि न हो।"

"है," जोया ने उत्तर दिया। अब तक वह कज्जाक के पलंग पर बैठ चुकी थी। "लेकिन वह बड़े डाक्टर के दफ्तर में है।"

"तो इसमें कठिनाई क्या है?"

"द्योमा...अठानवें दशमलव चार...दफ्तर बन्द है। निज़ामुद्दीन बहरा-मोविच को यह पसन्द नहीं।" और वह कमरे से बाहर चली गई।

बात तर्क-संगत थी। स्पष्टत: यह कुछ अच्छी बात नहीं थी कि उसकी गैरहाज़िरी में लोग उसके दफ्तर में जायें। परन्तु इसके बावजूद एक अस्पताल में आवश्यक प्रबन्ध तो होने ही चाहिएं।

एक पल के लिये उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि बाह्य संसार से उसका सामान्य सम्बन्ध स्थापित हो गया है। अब वह फिर कट गया। एक बार फिर उसके जबड़े के नीचे की रसौली ने, जो मुट्ठी के आकार जितनी थी, सारे संसार से उसे अलग कर दिया था।

पावेल निकोलाएविच रूसानोव ने अपने छोटे-से शीशे की ओर हाथ बढ़ाया और अपने चेहरे पर दृष्टि डाली। रसौली फैल गई थी। यदि इसे एक बिल्कुल अजनबी की निगाहों से देखा जाता तो यह काफी भयभीत करने वाली थी परन्तु इसकी अपनी निगाहों में...। नहीं यह चीज़ वास्तविक नहीं हो सकती। इसके आस-पास जितने भी लोग थे उनमें से किसी के भी इस प्रकार की कोई चीज दिखाई नहीं देती थी और अपनी आयु के पैंतालीस वर्ष में पावेल निकोलाएविच रूसानोव ने ऐसी बेढंगी चीज देखी ही नहीं थी।

उसने यह अनुमान लगाना आवश्यक नहीं समझा कि यह और बढ़ी है या नहीं। उसने केवल शीशे को एक तरफ रख दिया। अपने पलंग के पास की मेज से कुछ खाना लिया और चबाना शुरू कर दिया।

वार्ड में जो दो रोगी सबसे अधिक अशिष्ट थे अर्थात् येफ़ेम और हड्डी-चूस वे वार्ड में नहीं थे। खिड़की के पास के पलंग पर अज़ोवकिन अपने शरीर को तोड़-मरोड़कर एक नई अवस्था में ले आया था, लेकिन इस समय वह कराह नहीं रहा था। बाकी लोग भी चुप थे। उसे ऐसा सुनाई दे रहा था जैसे कुछ लोग पुस्तकों के पृष्ठ उलट-पुलट रहे हैं और कुछ लोग सो गये थे। रूसानोव भी अब यही कर सकता था कि सो जाये, रात गुज़ार दे और कुछ न सोचे। और सुबह डाक्टरों की खबर ले।

इसलिये उसने अपना पाजामा उतार दिया और अपने कच्छे ही में कम्बलों के नीचे लेट गया। अपने सिर को उसने तौलिये से ढंक लिया जो वह घर से साथ लाया था और सोने का प्रयत्न करने लगा।

लेकिन वहां खामोशी के बावजूद एक परेशान करने वाली आवाज आ रही थी जिसे स्पष्ट रूप में सुना जा सकता था—जैसे कहीं कोई कानाफूंसी कर रहा

हो। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि आवाज सीधी उसके कानों में जा रही हो। वह उसे सहन न कर सका। उसने अपने चेहरे से तौलिया उतार फेंका और यह कोशिश करते हुए कि उसकी गर्दन को कष्ट न पहुंचे, कुछ ऊपर को उठा। पता चला कि यह उसका पड़ोसी उज्बेक है। वह एक दुबला-पतला बूढ़ा था, जिसकी चमड़ी लगभग भूरी, दाढ़ी काली और नोकीली थी। उसने मैली-कुचैली मखमली टोपी पहन रखी थी जो उसी की तरह भूरी थी। वह अपने हाथों को सिर के पीछे किये पीठ के बल लेटा हुआ छत की ओर देख रहा था और फुसफुसा रहा था, कोई दुआ या कुछ और—बेवकूफ बूढ़ा। "अरे ओ अकसाकाल"[1] रूसानोव ने उसकी ओर अपनी अंगुली हिलाई। "इसे बन्द करो मुझे परेशानी हो रही है।"

अकसाकाल चुप हो गया। रूसानोव फिर लेट गया और तौलिये से अपना चेहरा ढांप लिया। लेकिन अब भी वह सो नहीं सका। उसने महसूस किया कि उसकी बेचैनी का कारण छत से लटके हुए लैम्पों की तेज और नोकीली रोशनी है। लैम्पों पर जो शेड लगे हुए थे वे दानेदार शीशे के नहीं थे और बल्बों को पूरी तरह ढंकते भी नहीं थे। तौलिए में से भी उसे प्रकाश की तीव्रता महसूस हो रही थी। पावेल निकोलाएविच बड़बड़ाया और कोहनियों की सहायता से तकिये पर से सिर उठाया यह सतर्कता बरतते हुए कि रसौली में बेधक पीड़ा न उठे।

प्रोश्का बिजली के स्विच के पास अपने पलंग के किनारे खड़ा था और कपड़े उतार रहा था।

"नौजवान, बिजली बन्द कर दो।" पावेल निकोलाएविच ने आदेशात्मक ढंग में कहा।

"हूँ...नर्स अभी दवाईयां लेकर नहीं आई," प्रोश्का ने रुकते-रुकते कहा परन्तु उसने अपना एक हाथ स्विच की ओर बढ़ा दिया।

"रोशनी बुझा दो। तुम्हारा क्या मतलब है ?" रूसानोव के पीछे से हड्डी-चूस के गुर्राने की आवाज आई। "तुम अपने आपको क्या समझते हो ? यहां केवल तुम्हीं हो ?"

पावेल निकोलाएविच सीधा बैठ गया और उसने अपना चश्मा लगा लिया। अपनी रसौली को सतर्कता से सहलाते हुये, उसने अपना रुख बदल लिया जिससे उसके पलंग के स्प्रिंग चरमराये। "तुम्हें थोड़ा नम्र होना चाहिए।" उसने कहा।

उस असभ्य ने मुंह बनाकर धीमे स्वर में कहा "विषय मत बदलो। तुम

---

१. रूसी भाषा में अकसाकाल का मतलब है गांव का वृद्ध। यहां इसका प्रयोग उपहास रूप में हुआ है।

मेरे मालिक नहीं हो।"

पावेल निकोलाएविच ने उसकी ओर रुखाई से देखा लेकिन इसका हड्डी-चूस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

"बहुत अच्छा, लेकिन तुम्हें रोशनी की क्या जरूरत है?" रूसानोव ने मित्रतापूर्वक पूछा।

"ताकि मैं अपने सुई खुबा सकूं।" कोस्तोग्लोतोव ने भौंडे ढंग से उत्तर दिया।

पावेल निकोलाएविच को सांस लेने में कठिनाई अनुभव होने लगी हालांकि इस समय तक वह वार्ड की हवा का अभ्यस्त हो चुका था। उस असभ्य आदमी को बीस मिनट के नोटिस पर अस्पताल से निकाल देना चाहिए और काम पर वापस भेज देना चाहिए। लेकिन फिलहाल कोई स्पष्ट कार्यपद्धति उसकी समझ में नहीं आ रही थी (यह तो है ही कि बाद में वह अस्पताल के प्रबंधकों से इसका उल्लेख करेगा।)

"यदि तुम पढ़ना चाहते हो या कुछ और करना चाहते हो तो गलियारे में जा सकते हो," पावेल निकोलाएविच ने सहानुभूति की-सी भावना प्रदर्शित करते हुए बाहर की ओर इशारा किया। "मगर तुम यह क्यों चाहते हो कि निर्णय तुम्हीं करो। यहां भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगी हैं और कुछ भेद करना आवश्यक है...।"

"भेद अवश्य होगा," हड्डी-चूस ने अपने जहरीले फन फैलाये। "तुम्हारी मृत्यु के समाचार के साथ वे तुम्हारी संक्षिप्त-जीवनी भी छापेंगे, इतने समय से पार्टी सदस्य...। जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हमें बस टांग से घसीट कर ले जायेंगे।"

पावेल निकोलाएविच को इस प्रकार की उद्दण्डता और हठधर्मी का कभी सामना नहीं हुआ था। उसे याद नहीं पड़ता था कि ऐसा पहले कभी हुआ हो। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस प्रकार की परिस्थिति का कैसे मुकाबला करे? वह उस लड़की से शिकायत नहीं कर सकता था। इस समय यही उचित है कि जहां तक सम्भव हो इस वार्तालाप को सम्मानपूर्वक संक्षिप्त कर दिया जाये। पावेल निकोलाएविच ने अपना चश्मा उतार दिया, सावधानी से लेट गया और अपने सिर को तौलिये से ढांप लिया।

इस विचार से उसके अन्दर क्रोध और कष्ट का लावा फट रहा था कि उसने दुर्बलता क्यों दिखाई और इस क्लिनिक में प्रवेश पर सहमत क्यों हो गया परन्तु कल यदि वह कोशिश करके अस्पताल से छुट्टी ले ले तो समझो सहज में छूट गया।

उसकी घड़ी में आठ बज कर कुछ मिनट हो गये थे। खैर अच्छा कुछ देर के लिए वह यह सब कुछ सहन कर लेगा। देर या सबेर ये सब लोग खामोश

हो जायेंगे।

लेकिन कोई व्यक्ति पलंगों के बीच ऊपर-तले चलने लगा और फर्श पर कांपने लगा। स्पष्टत: यह येफ्रेम था जो अब वापस आ गया था। उसके पांवों की चाप से फर्श के पुराने तख्ते थरथरा रहे थे और रूसानोव को पलंग के कटहरे और तकिये में से थरथराहट साफ-साफ महसूस हो रही थी। लेकिन पावेल निकोलाएविच ने फैसला किया कि वह उसे कुछ नहीं कहेगा और उसे सहन कर लेगा।

हमारे देश में कैसे-कैसे उद्दंड और धृष्ट लोग रहते हैं। अभी तक हम इससे छुटकारा नहीं पा सके। इनके कन्धों पर इस सारे बोझ के साथ हम नये समाज की ओर इनका पथ-प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं?

ऐसा प्रतीत होता था कि रात कभी समाप्त न होगी। नर्स ने देख-भाल के लिए आना जारी रखा। एक बार, दूसरी बार, तीसरी बार और चौथी बार। एक के लिए मिक्शचर, एक के लिए पाउडर और दो के लिये इन्जैक्शन। अज़ोव्किन को इन्जैक्शन लगाया गया तो उसने चीख मारी और गिड़गड़ाने लगा कि उसे गर्म पानी की बोतल दी जाये, ताकि इसकी सहायता से इन्जैक्शन की दवाई शीघ्र ही घुल जाये। येफ्रेम ऊपर-तले पांव पटखता रहा। उसे चैन नहीं आता था। अहमद जान और प्रोश्का अपने बिस्तरों पर बैठे हुए बातें कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह सही ढंग से जीवन भी महसूस करने लगे हैं। जैसे उन्हें संसार में किसी चीज की चिन्ता न हो, ऐसी किसी भी चीज की, जिसका उपचार आवश्यक हो। द्योमा तक सोने के लिए तैयार नहीं था, वह आकर कोस्तोग्लोतोव के बिस्तर पर बैठ गया था और पावेल निकोलाएविच के कान के बिल्कुल समीप काना-फूंसी करने लगा था।

"अब जब समय है तो मैं और प्रयत्न करूंगा कि कुछ पढ़ लूं। मैं विश्व-विद्यालय में जाना चाहता हूं," द्योमा कह रहा था।

"यह अच्छी बात है, लेकिन याद रखो कि शिक्षा तुम्हें अधिक चतुर नहीं बनाती" (एक बच्चे से इस प्रकार की बातें करने से क्या लाभ?)

'क्या मतलब? चतुर नहीं बनाती!"

"यह केवल एक बात है"

"तो क्या चीज चतुर बनाती है"

"जीवन। यही चीज है जो चतुर बनाती है।"

द्योमा एक पल के लिए चुप रहा फिर बोला "मैं सहमत नहीं।"

"हमारे यूनिट में एक था पुश्किन, वह कहा करता था, शिक्षा चतुर नहीं बनाती, पद भी नहीं। वह तुम्हारे कन्धे पर एक और सितारा लगा देते हैं और समझते हैं तुम अधिक चतुर हो गये हो लेकिन तुम होते नहीं।"

"तो तुम्हारा क्या मतलब है? पढ़ने की आवश्यकता नहीं है? मै तुमसे

सहमत नहीं।"

"इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हें अवश्य पढ़ना चाहिए। पढ़ो अवश्य। अपने लाभ के लिये केवल इतना स्मरण रखो कि यह वह वस्तु नहीं जिसे बुद्धि कहते हैं।"

"तो फिर बुद्धि क्या है?"

"बुद्धि? बुद्धि यह है कि अपने कानों की अपेक्षा अपनी आंखों पर भरोसा करो। तुम्हारी रुचि किस विषय में है?"

"मैंने अभी निर्णय नहीं किया। वैसे मेरी रुचि इतिहास और साहित्य में है।"

"इन्जीनियरी के बारे में क्या विचार है?"

"नहीं!"

अजीब बात है। हमारे युग में तो यही होता था परन्तु अब युवक इन्जीनियरी को प्राथमिकता देते हैं। क्या तुम नहीं?"

"नहीं! मेरा विचार है कि मुझे सामाजिक समस्याओं में अधिक रुचि है।"

"सामाजिक समस्याएँ? अरे द्योमा अच्छा यह है कि तुम रेडियो सैट बनाना सीख लो। एक इन्जीनियर के लिए जीवन कहीं अधिक शान्तिमय होता है।"

"मुझे शांति या चैन की चिन्ता नहीं है। यदि एक या दो माह मैं यहां लेटा रहा तो अगले छः माह में अपनी नवीं कक्षा के विद्यार्थियों से जा मिलने में मुझे काफी परिश्रम करना पड़ेगा।"

"पाठ्य पुस्तकों के विषय में कुछ बताओ।"

"दो मेरे पास यहां हैं। स्टीरियोमीटरी की पुस्तक बहुत कठिन है।"

"स्टीरियोमीटरी! जरा दिखाओ।"

रूसानोव ने सुना कि युवक उठकर गया और पुस्तक ले आया।

"मुझे देखने दो। हाँ, हां, मेरे पुराने मित्र किसेल्योव की स्टीरियोमीटरी। हां, उसी की तो है। बिल्कुल वही। सीधी रेखाएं और समतल धरातल एक दूसरे के समानान्तर। यदि एक ही समतल धरातल पर, एक सीधी रेखा दूसरी सीधी रेखा के समानान्तर हो तो वह समतल धरातल के भी समानान्तर होगी। और द्योमा कितना अच्छा हो कि प्रत्येक व्यक्ति इसी प्रकार लिखे। पुस्तक बड़ी भी नहीं है; नहीं है न? लेकिन इसमें ज्ञान कितना भरा है!"

"इस पुस्तक से वह अठारह माह का पाठ्यक्रम पढ़ाते हैं।"

"मुझे भी पढ़ाया था। कभी मुझे याद थी।"

"कब?"

"बताता हूं। मैं भी नवीं कक्षा में था। दूसरी छ-माही में...। इसका अर्थ हुआ सन् ३७ या ३८ में। अब यह फिर मेरे हाथ में है। अद्भुत-सा लग रहा

है। रेखागणित मेरा मनपसन्द विषय था।"
"और फिर?"
"और फिर क्या?"
"मेरा मतलब है स्कूल के बाद?"
"मैंने एक शानदार विषय पढ़ा, भू-भौतिकी।"
"यह विषय तुमने कहां पढ़ा?"
"उसी स्थान पर। लेनिनग्राद में!"
"और फिर क्या हुआ?"
"मैंने अपना प्रथम वर्ष समाप्त किया। तब सितम्बर १९३९ में आदेश हुआ कि उन्नीस वर्ष के सभी युवक सेना में भर्ती हो जाएं मुझे भी घसीट लिया गया।"
"फिर उसके बाद?"
"मैं सक्रिय सैनिक सेवा में रहा।"
"और इसके बाद।"
"इसके बाद?—तुम नहीं जानते कि क्या हुआ? युद्ध!"
"तुम—तुम सेना में अफसर थे?"
"नहीं, सारजेंट"
"क्यों?"
"क्योंकि यदि प्रत्येक व्यक्ति को जनरल बना दिया जाये, तो युद्ध कौन जीते?...यदि एक समतल धरातल एक सीधी रेखा में से गुजरे जो एक अन्य समतल धरातल के समानान्तर हो और समतल धरातल को काटती हो तो... सुनो द्योमा तुम और मैं प्रतिदिन स्टीरियोमीटरी का अध्ययन किया करेंगे। हम अवश्य बहुत कुछ कर लेंगे। क्या तुम्हें पसन्द है।"
"हां, हां, अवश्य!"
(क्या यह हद नहीं हो गई, बिल्कुल मेरे कान के पास!)
"मैं तुम्हें पढ़ाया करूंगा।"
"ठीक है!"
"वरना हम समय ही नष्ट करते रहेंगे। आओ अभी से आरम्भ कर दें। पहले इन तीन स्वयंतथ्यों (axioms) को लें। देखो ये स्वयंतथ्य आसान हैं परन्तु इनका सामना प्रत्येक प्रश्न में होगा और तुम्हें पता लगाना होगा कि कहां पहले प्रथम स्वयंतथ्य को लो। यदि दो बिन्दु एक समतल धरातल पर सीधी रेखा में हों तो इस रेखा के साथ-साथ जो भी बिन्दु होगा, वह समतल धरातल पर भी होगा। देखो यह कैसा विचार है। मान लो कि यह पुस्तक समतल धरातल है और पैंसिल सीधी रेखा। ठीक है ना? आओ अब प्रयत्न करो और इन्हें व्यवस्थित करो..."

वे अपने विषय में डूब गये और स्वयं तथ्यों और उनके परिणामों पर फुस-फुसाते रहे लेकिन पावेल निकोलाएविच ने निर्णय कर लिया कि वह यह सब कुछ सहन कर लेगा। उसने केवल इतना किया कि अपना मुंह उनकी ओर से फेर लिया। अन्त में उन्होंने अपनी बात-चीत बन्द कर दी और अलग हो गये। अज़ोविकन भी नींद की दवा की दुगुनी खुराक पीकर सो गया था और शांत था। लेकिन अकसाकाल ने खांसना शुरू कर दिया। पावेल निकोलाएविच इस प्रकार लेटा हुआ था कि उसका मुंह उसकी ओर था। अब बत्तियां बुझाई जा चुकी थीं, लेकिन अब यह व्यक्ति, खुदा उसका बेड़ा गर्क करे, खांसे जा रहा था और वह भी इस बुरी तरह कि उसका सांस अब रुका कि अब रुका। साथ-ही-साथ वह नाक से आवाजें भी निकाल रहा था।

पावेल निकोलाएविच ने उसकी ओर से मुंह फेर लिया। उसने अपने सिर से तौलिया हटा दिया, लेकिन अभी पूरी तरह अंधेरा नहीं हुआ था। गलियारे में से रोशनी आ रही थी और शोर भी। लोग चल फिर रहे थे और थूक-दानों और बाल्टियों की खड़खड़ाहट की आवाज भी आ रही थी।

वह सोने में सफल न हुआ। उसकी रसौली उसे निढाल कर रही थी। उसका समूचा हंसमुख जीवन जो इतना सुखद और लाभदायक था और जिसे वह इतने सुचारू रूप में व्यतीत कर रहा था, अब छिन्न-भिन्न हो रहा था। उसे अपने ऊपर बड़ा तरस आने लगा। मामूली-सी ठेस लगने से ही उसकी आंखों में आंसू आ सकते थे।

और येफ़ेम ठेस लगाने का कोई अवसर नहीं छोड़ता था। अंधेरा भी उसे चुप रखने में सफल न हुआ। वह अपने पड़ोसी अहमदजान को कोई बेकार-सी देवमालाई कथा सुना रहा था :

"पर क्या आवश्यक है कि मनुष्य सौ वर्ष जीवित रहे। यह इस प्रकार हुआ था। ईश्वर ने समस्त जानवरों को पचास वर्ष का जीवन दिया था और यह पर्याप्त था परन्तु मनुष्य सब से अन्त में आया और ईश्वर के पास केवल पच्चीस रह गये थे।"[२]

"तुम्हारा तात्पर्य है पच्चीस रूबल ?"

"हां यही। और मनुष्य ने शिकायत की कि यह पर्याप्त नहीं। ईश्वर ने कहा यह पर्याप्त है और मनुष्य ने कहा—नहीं यह पर्याप्त नहीं। इसके बाद ईश्वर ने कहा कि बहुत अच्छा, जाओ और माँगने की कोशिश करो शायद किसी के पास अधिक हों और वह तुम्हें दे दे। मनुष्य चल पड़ा। उसे एक घोड़ा मिला। उसने उससे कहा, देखो मेरी आयु बहुत कम है। अपनी आयु के कुछ

---

२. अहमदजान उज्बेक है। वह बातचीत को परिहास का रूप देकर यह सिद्ध करना चाहता है कि वह रूसी बोलने में दक्ष है। (अनुवादक की टिप्पणी)

वर्ष मुझे दे दो। घोड़े ने कहा—बहुत अच्छा, पच्चीस वर्ष ले लो। मनुष्य कुछ और आगे गया और उसे कुत्ता मिला। उसने कहा—सुनो कुत्ते अपनी कुछ आयु मुझे दे दो। कुत्ते ने कहा—बहुत अच्छा, पच्चीस वर्ष ले लो। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसे एक बन्दर मिला। उसकी आयु के पच्चीस वर्ष भी उसने ले लिये। तब यह ईश्वर के पास वापस गया। ईश्वर ने कहा—तुम जैसा चाहो, इच्छा तुम्हारी है। आयु के पहले २५ वर्ष तुम मनुष्य की भांति जीओगे। अगले पच्चीस वर्ष तुम घोड़े की तरह परिश्रम करोगे। तीसरे पच्चीस वर्ष में तुम कुत्ते की तरह भोंकोगे। और आखिरी पच्चीस वर्ष में लोग तुम पर उसी प्रकार हंसेंगे जिस प्रकार बन्दर पर हंसते हैं…"

३. खिलौना रीछ

हालांकि जोया बड़ी फुर्तीली थी और वार्डों में दवाइयों की मेजों और रोगियों के पलंगों के बीच बड़ी ही फुर्ती से आ जा रही थी फिर भी उसने यह जान लिया था कि बत्तियां बुझने से पहले वह सब नुसखों को निपटा नहीं सकेगी, इसलिये पहले उसने जल्दी-जल्दी पुरुषों के वार्डों और स्त्रियों के छोटे वार्ड में अपना काम पूरा किया और बत्तियां बुझा दीं। जहां तक स्त्रियों के बड़े वार्ड का सम्बन्ध था—वह काफी बड़ा था और उसमें पूरे तीस बिस्तर थे—स्त्रियां ठीक समय पर कभी सोती ही नहीं चाहे बत्तियां बुझाई जायें चाहे न बुझाई जाएं। उनमें से अनेक को अस्पताल में आये हुये काफी समय हो गया था और वे अस्पताल से काफी तंग आ चुकी थीं। वार्ड में भीड़ काफी होने के कारण वे ठीक तरह से सो नहीं सकती थीं और उनमें इसकी बातों पर कि बालकनी का दरवाजा खुला रखा जाए या बन्द रखा जाये, हमेशा झगड़ा होता रहता था। उनमें से कुछ तो इतनी उत्साहित थीं कि कमरे के आर-पार भी एक-दूसरे से गप्प लड़ाती रहती थीं—आधी रात तक और कभी-कभी सुबह तक। गप्प-शप का विषय कुछ भी हो सकता था—मूल्य, फरनीचर, बच्चे, पुरुष, पड़ौसी यहां तक कि कुछ अत्यधिक लज्जास्पद विषय भी।

सबसे बढ़कर नेल्या नामक अरदली थी जो उस शाम को फर्श साफ कर रही थी। वह एक बातूनी और गोल-मटोल लड़की थी, जिसकी भौंहें और होंठ काफी मोटे थे। उसे काम करते हुए शताब्दियां हो गयी थीं परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपना काम कभी पूरा न कर सकेगी क्योंकि वह प्रत्येक बातचीत में हिस्सा लेने लगती थी। इस बीच में शराफ सिबगातोव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि उसे नहाने-धोने का अवसर मिले, जो काम वह रात ही को कर सकता था। उसका बिस्तर पुरुषों के वार्ड के दरवाजे के बिल्कुल पास हॉल में था। एक तो रात को नहाने-धोने के कारण और दूसरे इस कारण कि उसकी पीठ से जो दुर्गन्ध आती थी उस पर उसे बहुत लज्जा आती थी सिबगातोव ने पसन्द किया कि वह हाल ही में रहे, हालांकि अस्पताल में वह शेष रोगियों से कहीं पहले दाखिल हुआ था। सच्चाई यह है कि एक रोगी की अपेक्षा अब ऐसा लगता था कि जैसे वह अस्थाई कर्मचारीवर्ग का ही एक सदस्य हो।

स्त्रियों के वार्ड में भागदौड़ करते हुए जोया ने नेल्या को कई बार झाड़ पिलाई लेकिन नेल्या ने उत्तर में केवल झल्लाहट का प्रदर्शन किया और अपना काम सुस्ती ही से करती रही। नेल्या की आयु जोया से कुछ कम नहीं थी और उसके लिए यह बात उसके सम्मान के विरुद्ध थी कि वह एक अन्य लड़की के अधीन कार्य करे। जोया आज काम पर आई तो बहुत प्रसन्न थी, जैसे त्यौहार का दिन हो। लेकिन अरदली द्वारा लगातार की गई अवज्ञा से वह झल्ला गई।

सिद्धांततः जोया स्वीकार करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता का थोड़ा बहुत अधिकार प्राप्त है और यह आवश्यक नहीं कि कोई काम पर आए तो काम करते-करते अपनी जान हलकान कर दे, लेकिन प्रत्येक बात की सीमा होती है, विशेष कर इस अवस्था में जब बात रोगियों की हो।

अन्त में जब जोया ने प्रत्येक चीज की देखभाल कर ली और नेल्या ने फर्श साफ कर लिया तो उन्होंने स्त्रियों के इस वार्ड की बत्ती बुझा दी और वह बत्ती भी जो हॉल में ऊपर छत में थी। ग्यारह से कुछ ऊपर ही का समय होगा जब नेल्या ने पहली मंजिल पर गर्म तरल पदार्थ तैयार किया और नियमानुसार इसे कोंडे में डालकर शराफ सिबगातोव के पास ले गई।

"ओह मेरे पांव बेजान होकर रह गये हैं," उसने जोर से जमुहाई ली। "नींद आ रही है। रोगी सुनो, मुझे ज्ञात है कि तुम्हें लगभग एक घण्टा लग जायेगा। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करूंगी। क्या यह सम्भव नहीं कि तुम कोंडे को नीचे ले जाकर स्वयं ही खाली कर दो?" (बड़े-बड़े हॉल कमरों वाली इस बिल्डिंग की ऊपर की मंजिल में नालियां नहीं थीं)

शराफ सिबगातोव पहले कैसा होता था, यह अनुमान करना सम्भव नहीं था। अनुमान लगाया भी जाए तो किस बात पर? उसकी बीमारी इतनी लम्बी रही थी कि उसके असली अस्तित्व का कुछ भी शेष नहीं रहा था, परन्तु तीन वर्ष की लगातार जान-लेवा बीमारी के बावजूद यह तातारी नवयुवक अस्पताल के सभी रोगियों में सबसे अधिक सभ्य और नम्र था। अनेक बार वह इस ढंग से दयनीय-सी हंसी हंसता था जैसे इतने समय से कष्ट देते रहने की क्षमा मांग रहा हो। अस्पताल में अपने चार माह और उसके पश्चात् छः माह बिताने के कारण वहां के सभी डाक्टरों, नर्सों, और अरदलियों को पूरी तरह जान गया था, जैसे वे सब उसके कुटुम्ब के लोग हों। वे सब भी उससे पूरी तरह परिचित हो गये थे, परन्तु नेल्या नई थी और कुछ सप्ताह पहले ही वहां आई थी।

"यह मेरे लिये बहुत भारी होगा" सिबगातोव ने विनम्रतापूर्वक विरोध किया। "यदि कोई छोटी चीज होती जिसमें इसे डाला जा सकता तो मैं थोड़ा-थोड़ा करके नीचे ले जाता।"

पास ही ज़ोया की मेज थी, उसने सुन लिया और झपट पड़ी। "तुम्हें शर्म नहीं आती। इसे मना किया गया है कि अपनी पीठ पर ज़ोर न डाले और तुम उससे कोंडा उठवाना चाहती हो?"

यह सब कुछ उसने इस ढंग से कहा जैसे वह चिल्ला रही हो फिर भी उसकी आवाज़ कानाफूंसी की आवाज़ से अधिक ऊंची न थी, जिसे केवल वे तीन ही सुन सकते थे। नेल्या ने काफी शांति से उत्तर दिया, फिर भी उसकी आवाज़ समूची दूसरी मंजिल में गूंज रही थी—"शर्म क्यों आये मैं स्वयं बेदम हो रही हूँ।"

"तुम ड्यूटी पर हो। तुम्हें इसका वेतन मिलता है," ज़ोया ने घृणा से लेकिन और भी शांत-भाव से कहा।

"ऊंह! वेतन! तुम इसे वेतन कहती हो। इससे अधिक तो मुझे कपड़े की मिल में मिल सकता है।"

"श···श। क्या तुम चुप नहीं रह सकतीं?"

"ओह!" नेल्या ने एक ऐसी आवाज़ में जो आधी आह थी और आधी चीख, सारे हॉल को सुनाकर कहा "मेरे प्यारे-प्यारे तकिये, मुझे कितनी नींद आ रही है। पिछली रात मैंने ट्रक चालकों से निबटने में व्यतीत कर दी। बहुत अच्छा, रोगी, तुम कोंडा अपने बिस्तर के नीचे रख लेना, मैं सुबह ले जाऊंगी।" अपने मुँह पर हाथ रखे बिना उसने एक गहरी और लम्बी जमुहाई ली। उसके बाद ज़ोया से बोली—"मैं यहाँ सोफे पर रात व्यतीत करूंगी" और अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना वह कोने के दरवाजे की ओर चल दी, जो उस कमरे में खुलता था जहां डाक्टरों की गोष्ठियों आदि के लिये गद्देदार फरनीचर रखा था।

वह बहुत-सा काम अधूरा छोड़कर ही चल दी थी। सीढ़ियों का फर्श भी धोया जाना चाहिए था, जो नहीं धोया गया था परन्तु ज़ोया ने अपने ऊपर नियन्त्रण पा लिया और उसे जाते हुए चुपचाप देखती रही। जोया को वहाँ काम करते ज्यादा समय नहीं हुआ था, परन्तु इतने समय में ही यह कष्टदायक सिद्धान्त उसको समझ में आने लगा था कि यदि कोई सुस्ती से काम करे तो कोई उसे तेजी दिखाने को नहीं कहता, और जो चुस्ती से काम करे उसे दो का काम करना पड़ता है। प्रातः एलिजावेता अनातोल्येव्ना आयेगी, वह झाड़-पोंछकर अपने हिस्से का काम भी करेगी और नेल्या के हिस्से का भी।

सिबगातोव अब जब अकेला रह गया तो उसने अपनी त्रिक (Sacrum) की पट्टी को खोला और अपने बिस्तर के पास फर्श पर रखे कून्डे पर बैठ गया। उसके बैठने का ढंग काफी कष्टदायक था। वह वहाँ बड़ी सतर्कता से बैठा। किसी भी जरा-सी असावधानी से उसे अपने पेड़ू (Pelvis) में झुरझुरी-सी महसूस होती थी। घाव के स्थान से यदि कोई चीज छू जाती तो उसे काफी

कष्ट होता था, जो उसे कच्छे के छू जाने से भी होता रहता था और यह तो है ही कि उसे पीठ के बल लेटने में कष्ट होता था। उसकी पीठ पर क्या है यह उसने कभी देखा नहीं था। कभी-कभी अंगुलियों से छूकर वह अनुमान अवश्य लगा लिया करता था। दो वर्ष पूर्व उसे स्ट्रेचर पर डालकर अस्पताल में लाया गया था। वह न खड़ा रह सकता था और न चल-फिर सकता था। उसका निरीक्षण अनेकों डाक्टरों ने किया था परन्तु उसका इलाज हमेशा लुदमिला अफानासएवना ने ही किया था और चार माह में उसकी तकलीफ बिल्कुल जाती रही थी। वह चल सकता था, आसानी से झुक सकता था और उसे कोई भी शिकायत नहीं रही थी। जब उसे अस्पताल से छुट्टी मिली तो लुदमिला अफानासएवना ने, जब वह उसके हाथों को कृतज्ञता से चूम रहा था, कहा था, "शराफ सावधानी से रहना। उछल-कूद न करना।" लेकिन उसे ठीक ढंग का काम न मिल सका और उसे एकबार फिर घर-घर सामान पहुंचाने वाले का काम करना पड़ा और एक ऐसे मजदूर के लिए सम्भव नहीं कि वह ट्रक के पीछे से जमीन पर छलाँग लगाकर न उतरे या चालाक और माल ढोने वाले की सहायता न करे। काफी दिन तक सब कुछ ठीक-ठाक रहा परन्तु एक दिन एक ट्रंक ट्रक पर से गिरकर शराफ के ठीक उसी स्थान पर लगा जहाँ उसे तकलीफ थी। घाव का नासूर बन गया जो ठीक होने में न आया और एक दिन सिबगातोव को कैंसर के अस्पताल में बन्द कर दिया गया।

जोया की नाराजगी समाप्त होने में न आती थी। अपनी मेज पर बैठकर उसने जाँच-पड़ताल की कि प्रत्येक रोगी को उसकी दवा दी जा चुकी है या नहीं। अपने पैन से प्रतिदिन की डायरी भी भर रही थी और उसकी लिखावट जहाँ-जहाँ से मद्धम पड़ गयी थी उसे भी ठीक करती जा रही थी। कागज इतना खराब था कि वह लिखती बाद में थी, लिखावट धुन्धली पहले पड़ जाती थी। वह चाहती थी कि नेल्या को मजा चखाये लेकिन यह एक ऐसी बात थी जिसे वह कर नहीं सकती थी। आखिर नींद लेने में क्या बुराई है? जब उसके पास कोई अच्छी अरदली होगी तो आधी रात वह भी सो लिया करेगी। अब तो उसके लिये आवश्यक यही था कि वह बैठी रहे।

वह डायरी पर नज़र डाल रही थी कि उसे एक व्यक्ति की आवाज सुनाई दी जो उसके समीप आकर खड़ा हो गया था। यह कोस्तोग्लोतोव था, बिखरे बालों वाला कोस्तोग्लोतोव। उसने अपने बड़े-बड़े हाथों को अस्पताल की जैकिट में डाल रखा था, हालांकि वे उनमें मुश्किल से ही समाते थे।

"तुम्हें बहुत देर पहले सो जाना चाहिए था" जोया ने झिड़कते हुए कहा। "तुम क्या कर रहे हो? घूम रहे हो?"

"नमस्कार जोयेन्का" कोस्तोग्लोतोव ने अत्यधिक नर्मी से कहा, जैसे वह बोल न रहा हो, गा रहा हो।

"नमस्कार" वह उसकी ओर देखकर हल्का-सा मुस्कुराई। नमस्कार कहने का समय वह था जब मैं थर्मामीटर लेकर तुम्हारे पीछे भाग रही थी।"

"अच्छा उस समय तुम ड्यूटी पर थीं। तुम्हें मुझे दोष नहीं देना चाहिए। लेकिन अब मैं तुम्हारा मेहमान हूँ।"

"क्या सचमुच ?" (उसने न तो जानकर अपनी भौंहें हिलाई थीं न अपनी आंखों को ही फैलाकर खोला था। यह सब कुछ अनायास ही हो गया था) "तुम्हें किसने यह कहा कि मैं मेहमानों का स्वागत कर रही हूँ।"

"खैर यूं सही—हर रात जब तुम ड्यूटी पर होती हो तो अच्छी खासी चक्की पीस रही होती हो। लेकिन आज पाठ्य-पुस्तकें दिखाई नहीं दे रहीं। क्या तुमने अपनी अन्तिम परीक्षा पास करली है ?"

"तुम्हारी निगाह तेज़ है। हाँ, मैंने पास कर ली।"

"तुम्हें कितने नम्बर मिले ? इसका मतलब यह नहीं कि इससे कोई फर्क पड़ता है।"

"मुझे पाँच में से चार नम्बर मिले भला फर्क क्यों नहीं पड़ता ?"

"मैंने सोचा था कि तुम्हें शायद तीन मिले हों और तुम इस विषय में बात करना न चाहती हो।—तो अब तुम छुट्टी पर हो।"

उसने कुछ प्रसन्न-चित्त हो अपनी आँखें झपकाई—और आँखें झपकते ही उसने सोचा कि वह घबरा क्यों रही है ? दो सप्ताह की छुट्टियाँ ! क्या मजे की बात थी ! अस्पताल में आने के सिवा उसे कुछ भी नहीं करना था। इतनी फुर्सत ! ड्यूटी के समय में वह कोई हल्की-फुल्की चीज पढ़ सकती थी, लोगों से बातचीत कर सकती थी।

"तो अच्छा हुआ मैं तुम्हें मिलने चला आया !"

"अच्छा तो फिर बैठ जाओ!"

"लेकिन जोया जहाँ तक मुझे याद है, मेरे समय में छुट्टियाँ पहले आरम्भ हो जाती थीं, पच्चीस जनवरी को।"

"पतझड़ में हम कपास चुन रहे थे ? यह हम प्रत्येक वर्ष करते हैं"।[1]

"कालेज में तुम और कितने दिन रहोगी।"

"अठारह महीने।"

"फिर इसके बाद तुम्हारी ड्यूटी कहां लगेगी ?"

उसने अपने नर्म और गोल कन्धों को हिलाते हुए कहा—"हमारा देश

---

१. मध्य एशिया में कपास चुनने वालों की कमी है इसलिए पतझड़ में हर साल विद्यार्थियों को सहायता के लिए भेजा जाता है। इसी कारण लेनिनग्राद की अपेक्षा जहाँ कोस्तोग्लोतोव पढ़ा था, वहाँ पढ़ाई भी देर से भारम्भ होती है, और छुट्टियाँ भी अपेक्षाकृत बाद में। (अनुवादक की टिप्पणी)

काफी बड़ा है···।"

"जब उसका चेहरा शांत होता था, उस समय भी जोया की आंखें काफी बड़ी दिखाई देती थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि पपोटों में उसके लिए स्थान नहीं। जैसे वे कैद से रिहाई की भीख मांग रही हों।

"लेकिन शायद वह तुम्हें यहां से जाने नहीं देंगे।"

"नहीं कभी नहीं।"

"तुम अपने घर वालों को छोड़कर कैसे जा सकती हो?"

"कैसे घर वाले? मेरी केवल एक दादी है। दादी मां को मैं अपने साथ ले जाऊंगी।"

"और तुम्हारे माता-पिता?"

जोया ने आह भरी "मेरी मां मर चुकी है।"

कोस्तोग्लोतोव ने उसकी ओर देखा और उसके पिता के विषय में पूछना उचित नहीं समझा, "लेकिन तुम यहीं कहीं की रहने वाली हो। हो न?"

"नहीं मैं स्मोलेन्स्क की हूं?"

"सच·· तुमने वह स्थान कब छोड़ा?"

"भगदड़ के बीच···और क्या?"

"उस समय तुम्हारी आयु क्या होगी? लगभग नौ वर्ष।"

"हां, मैं दो वर्ष से स्कूल में पढ़ रही थी फिर मैं और दादी मां यहां फंस गए।"

जोया ने छोटी-मोटी चीजें रखने के एक नारंगी बैग की ओर हाथ बढ़ाया जो फर्श पर दीवार के पास रखा था। उसमें से शीशा निकाला, नर्स की टोपी उतारी, अपने बालों को जो उस पेटी के नीचे जकड़े हुए से थे, कुछ खुला छोड़ा और कंघी से अपने सुनहरी बालों की एक झालरी बनाने लगी। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके सुनहरी बालों का साया पड़ने से कोस्तोग्लोव के सख्त चेहरे पर शांत और नर्म-सी लहर दौड़ गई है।

"और तुम्हारी दादी मां कहां हैं?" शीशे को रखते हुए जोया ने विनोद से पूछा।

"मेरी दादी मां?" कोस्तोग्लोतोव एकदम गम्भीर हो गया "और मेरी मां (उसके चेहरे पर जो कड़वाहट थी, उससे यह शब्द मेल नहीं खा रहा था) घेराव में मर गईं।"

"लेलिनग्राद के घेराव में?"

"हां, और मेरी बहन गोली लगने से मर गई। तुम्हारी तरह वह भी नर्स थी लेकिन उसमें बचपना अधिक था।"

"ओह," जोया ने आह भरी और बच्ची के वर्णन पर ध्यान न देते हुए कहा "घेराव में असंख्य लोग मारे गए, हिटलर मुर्दाबाद!"

कोस्तोग्लोतोव ने शरारतपूर्ण मुस्कराहट से कहा, "हिटलर के मरने के हमारे पास अनेक प्रमाण हैं लेकिन लेनिनग्राद के घेराव का सारा दोष उस पर नहीं लगाया जा सकता।"

"तुम्हारा मतलब क्या है, क्यों नहीं ?"

"अच्छा सुनो। हिटलर हमें नष्ट करने आया था। क्या घिरे हुओं का काम यह था कि वे उससे यह आशा रखें कि वह आकर दरवाजा खोलेगा और उनसे यह कहेगा कि एक-एक करके निकल जाओ। भीड़ न करो। भूलो नहीं, वह युद्ध कर रहा था, वह हमारा शत्रु था। लेकिन कोई अन्य भी था जो घेराव के लिए दोषी था।"

"कौन ?" जोया ने फुसफुसाकर पूछा। वह काफी हैरान दिखाई दे रही थी। ऐसी बात न तो कभी उसने पहले सुनी थी और न ही उसके दिमाग में आ रही थी।

कोस्तोग्लोतोव की काली भौंहें तन गईं "बहरहाल, हम कह सकते हैं कि जिनका यह फर्ज था कि वे हिटलर से लड़ें, चाहे लन्दन, फ्रांस और अमरीका हिटलर के साथी ही क्यों न बन गये होते। वे लोग जो वर्षों तक अपने वेतन लेते रहे और उसकी उन्होंने चिन्ता नहीं की कि लेनिनग्राद भौगोलिक दृष्टि से शेष देश से अलग-थलग है और इसका उसकी रक्षा पर प्रभाव पड़ सकता है। वे भी यह अनुमान लगाने में असफल रहे कि बमबारी कितनी तेज होगी और जिनकी समझ में यह नहीं आया कि खुराक को तहखाने में सुरक्षित रखना चाहिए। उन्होंने मेरी मां को भी कत्ल कर दिया। उन्होंने और हिटलर ने।"

यह बात कितनी सामान्य थी लेकिन भयानकता की सीमा तक गई।

शराफ सिबगातोव उनके पीछे चुप-चाप एक कोने में अपने कुंडे पर बैठा हुआ था।

"लेकिन इस अवस्था में···इस अवस्था में उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए" जोया ने कानाफूंसी में कहने का साहस किया।

"मुझे नहीं मालूम।" कोस्तोग्लोतोव ने मुंह बना कर कहा। उसके होंठ पहले से अधिक पतले दिखाई देते थे, एक लकड़ी की तरह।

जोया ने फिर से अपने सिर पर टोपी रख ली। उसकी ऊपरी पोशाक का ऊपर का बटन खुला था और उसके अन्दर का सुनहरी भूरा कालर दिखाई दे रहा था।

"जोयेन्का मैं यहां एक काम से आया था।"

"क्या तुम काम से आये थे ?" जोया की भौंहें किसी सीमा तक तन गईं। "यदि ऐसा हो तो तुम्हें दिन की ड्यूटी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अब सोने का समय है। तुमने कहा ही था कि तुम केवल मिलने आये हो, क्या नहीं।"

"हां, मैं केवल मिलने आया था लेकिन इससे पूर्व कि तुम इस गड़बड़ घुटाले में फंस जाओ, इससे पूर्व की तुम एक पूरी डाक्टर बन जाओ, एक इन्सान के नाते मेरी कुछ सहायता करो।"

"क्या डाक्टर ऐसा नहीं करते ?"

"बात यह है कि यह सहायता कुछ ऐसी है जिसकी उनसे आशा नहीं की जा सकती। जोया इस बात से मुझे घृणा रही है कि मुझे एक ऐसा चूहा समझ लिया जाए जिस पर डाक्टर अपनी दवाइयों का प्रयोग करते रहें। वह मेरा इलाज कर रहे हैं लेकिन कोई मुझे कुछ बताता नहीं। यह मेरे लिये असह्य है। कल मैंने तुम्हारे हाथ में एक पुस्तक देखी थी "शारीरिक रोग-विज्ञान"। ठीक है ना ?"

"हां"

"और वह पुस्तक रसौलियों के विषय में है। है न ?"

"हां !"

"तुम मुझ पर दया करके, वह पुस्तक मुझे ला दो। मैं उसे देखना चाहता हूं और स्वयं अनुमान लगाना चाहता हूं अपने बारे में।"

जोया ने अपने होंठ सिकोड़ लिये और सिर हिला कर कहा, "यह बात नियमों के विरुद्ध है कि रोगी डाक्टरी की पुस्तकें पढ़ें। यहां तक कि जब विद्यार्थी भी किसी विशेष रोग के बारे में पढ़ते हैं तो हमें हमेशा ख्याल होता है कि..."

"दूसरों के लिये यह बात वर्जित हो सकती है, मेरे लिये नहीं।" कोस्तोग्लोतोव ने अपना भारी पंजा मेज पर मारा। "उन्होंने मुझे अनेक बार भयभीत करने का प्रयत्न किया है, परन्तु मैं भयभीत नहीं हुआ। क्षेत्रीय अस्पताल में मेरा निरीक्षण एक कोरियाई डाक्टर ने किया था। वह नव-वर्ष की पूर्व संध्या थी। वह बताना नहीं चाहता था कि क्या बीमारी है। मैंने कहा सच बोलो भले मानस। उसने कहा हमें यहां इसकी आज्ञा नहीं। मैंने फिर कहा अवश्य बताओ। मुझे अपने कुटुम्ब की समस्याओं को निपटा लेना चाहिए। इस पर वह फूट पड़ा। तुम तीन सप्ताह और जीवित रहोगे इससे अधिक का आश्वासन मैं नहीं दे सकता।"

"उसे इसका अधिकार नहीं था कि..."

"वह अच्छा व्यक्ति था। एक इन्सान। मैंने उससे हाथ मिलाया। बात यह है कि ठीक-ठीक जानना मेरे लिये अति आवश्यक था। इसमें पहले के छः महीने मैंने बड़े दुःख में बिताये थे। एक महीने से कष्ट के बिना न तो मैं लेट सकता था, न बैठ सकता था और न खड़ा हो सकता था। दिन भर में नींद मुझे कुछ मिनट ही आती थी। स्पष्ट है उस समय में मैंने खूब सोच-विचार किया होगा। इस पतझड़ में अनुभव से मुझे मालूम हो गया कि मनुष्य मौत

की दहलीज को पार कर सकता है चाहे उसका शरीर न भी मरा हो। खून दौड़ता है, मैदा पचाता है जबकि तुम मौत की तैयारी के समस्त मनोवैज्ञानिक दौर से गुजर जाते हो, बल्कि स्वयं मृत्यु का अनुभव भी कर लेते हो। अपने आस-पास की चीजें तुम्हें ऐसी दिखाई देती हैं जैसे तुम कब्र में से देख रहे हो और इसके बावजूद कि ईसाई धर्म में तुम्हारा कभी विश्वास नहीं था बल्कि तुम्हारा व्यवहार उनके बिल्कुल विपरीत था, एकदम तुम यह महसूस करते हो कि तुमने इन तमाम लोगों को जो तुम्हारे रास्ते में आए, क्षमा कर दिया है और उन तमाम लोगों के खिलाफ जिन्होंने तुम्हें कष्ट पहुंचाया, तुम्हारे दिल में कोई भाव नहीं रहे। हर चीज और व्यक्ति के बारे में तुम्हारा भाव केवल उदासीनता का है। अपने आपको बदलने की कोई इच्छा तुममें नहीं है। तुम्हें किसी चीज का अफसोस नहीं है। अब मैं इस अवस्था से निकल आया हूं परन्तु मुझे इसका पता नहीं कि इस पर मुझे प्रसन्न होना चाहिए या नहीं। इसका मतलब यह है कि मेरे सभी भाव लौट आये अच्छे भी और बुरे भी।"

"वाह कितना अच्छा भाषण है। तुम्हें अवश्य प्रसन्न होना चाहिए। तुम्हें यहां कब दाखिला मिला था···कितने दिन पहले?"

"बारह!"

"तुम यहां हॉल में अपनी बैसाखी पर दर्द से तिलमिलाते रहते थे। तुम्हें देखकर डर लगता था। तुम्हारा चेहरा मृतकों जैसा था और तुम कुछ भी नहीं खा सकते थे। बुखार सुबह व शाम सौ से ऊपर होता था—और अब? तुम भेंटें करने जाते हो···बारह दिन में व्यक्ति इस प्रकार जीवन में लौट आये। यह एक चमत्कार है। ऐसा कठिनाई से ही होता है।"

यह सच है कि उसका चेहरा गहरी झुर्रियों से अटा पड़ा था, जैसे किसी ने उसे छैनियों से काट दिया हो। यह इसका प्रमाण था कि उसके अन्दर अत्यधिक तनाव है परन्तु अब झुर्रियां कम हो गई थीं और जो बच गई थीं वह हल्की पड़ गई थीं।

"मेरा भाग्य अच्छा था। पता चला कि मुझमें एक्स-रे विकिरण (रैडिएशन) सहन करने की बहुत शक्ति है।"

"हां, ऐसा बहुत कम होता है। यह भाग्य की देन है," जोया ने कहा।

कोस्तोग्लोतोव के होंठों पर फीकी-सी हंसी फैल गई। ऐसा भाग्य मुझे जीवन भर नहीं मिला। यह ठीक ही है कि एक्स-रे के सम्बन्ध में मैं भाग्यशाली रहा। अब मैं पुनः स्वप्न देखने लगा हूं, धुंधले और सुन्दर स्वप्न। मेरे विचार में यह इसका प्रमाण है कि मैं अच्छा हो रहा हूं।"

"बहुत सम्भव है।"

"तो फिर मेरे लिए और भी आवश्यक है कि मैं समझूं और खोजूं। मैं यह ठीक-ठीक जानना चाहता हूं कि मेरा इलाज किस तरह किया जा रहा

है ? इस इलाज की चिरकालीन सम्भावनायें क्या हैं और क्या-क्या पेचीदगियां हैं ? मुझे अपनी सेहत में इतना फर्क महसूस हो रहा है कि शायद इलाज बिल्कुल ही बन्द करना पड़े। बहरहाल, मैं समझना चाहता हूं। लुदमिला अफानासएवना और वीरा कोर्नीलियेवना मुझे कुछ नहीं बतातीं। वे केवल इलाज करती रहती हैं, जैसे मैं कोई बन्दर हूं। जोया कृपया मुझे वह पुस्तक ला दो, मैं किसी को बताऊंगा नहीं। उस पर किसी की दृष्टि भी नहीं पड़ने दूंगा वादा करता हूं।"

वह इतने जोश में बोल रहा था कि उसका चेहरा लाल हो गया।

जोया सशोपंज में पड़ गई। उसने मेज की एक दराज का मुट्ठा पकड़ लिया।

"यह वहां है" कोस्तोग्लोतोव ने तुरन्त भांप लिया। "जोया यह मुझे दे दो।"

उसका हाथ फैला हुआ था, जैसे वह पुस्तक लेने को बिल्कुल ही तैयार हो। "तुम्हारी अगली ड्यूटी कब है ?"

"इतवार की दोपहर को"

"तब मैं तुम्हें लौटा दूंगा। ठीक है ना ? वादा रहा !"

वह कितनी शांत और प्रसन्न थी। सुनहरी लट और बड़ी-बड़ी खुली आंखों के साथ।

यदि उसकी दृष्टि अपने पर भी गई होती ? तकिए पर लेटे रहने के कारण, उसके बाल बुरी तरह जम गये थे और गुच्छों की तरह सिर पर खड़े थे, उसकी मोटी सूती कमीज का ऊपर का एक कॉलर उसकी जैकिट में से जिसके ऊपर के बटन बन्द नहीं किये गये थे, बेढंगेपन से झांक रहा था।

"अरे हां हां !" उसने पुस्तक झपटते हुये कहा और विषय सूची पर दृष्टि डालने लगा। "बहुत खूब, यह यहां है, धन्यवाद ! नहीं तो भगवान जाने वे मुझे आवश्यकता से अधिक ही दवाई पिला देते। उनकी एकमात्र रुचि आखिर यही तो है कि अपनी रिपोर्टों में कुछ न कुछ लिखते रहें। सम्भव है कि मैं भाग ही जाऊं। उम्र को एक अच्छा डाक्टर भी घटा सकता है।"

"अच्छा तो यह बात है," जोया हाथ झटक कर बोली। "मैंने तुम्हें यह क्यों देखने दी ? इसे लौटा दो।" वह पुस्तक छीनने लगी, पहले एक हाथ से फिर दोनों हाथों से। लेकिन कोस्तोग्लोतोव ने पुस्तक नहीं छोड़ी और यह उसके लिये कठिन भी नहीं था।

"तुम इसे फाड़ डालोगे। यह लाइब्रेरी की है। लौटा दो।"

उसके कंधे मजबूत और सुडौल थे। ऐसे ही उसके बाजू भी थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसकी पोशाक में ढल गये हैं। उसकी गर्दन न बहुत पतली थी और न बहुत मोटी, न बहुत छोटी न बहुत लम्बी। वह उसके कद

के अनुसार बिल्कुल ठीक थी।

पुस्तक की छीना-झपटी में वे एक दूसरे के समीप आ गये और उनकी नजरें एक-दूसरे से टकरा गईं। कोस्तोग्लोतोव के बेढंगे चेहरे पर अचानक एक मुस्कुराहट खेल गई। उसके घाव का निशाना अब इतना भयानक नहीं रहा था और अब पुराने घाव की तरह पीला-सा ही दिखाई देता था। उसने एक हाथ से पुस्तक पकड़ी हुई थी, दूसरे हाथ से उसने नर्मी से जोया की अंगुलियों को दबाया "जोयेन्का तुम अज्ञानता में नहीं, शिक्षा में विश्वास रखती हो। तुम लोगों को जानकार बनने से कैसे रोक सकती हो? मैं मजाक कर रहा था, मैं भागूंगा नहीं।"

उसने लड़ते हुये कानाफूंसी करते हुये कहा, "तुम इसे पढ़े दिए जाने के पात्र नहीं। तुमने अपने साथ लापरवाही बरती। तुम यहां पहले क्यों नहीं आये? तुम यहां तभी आये जब तुम लगभग एक लाश थे"

"बात यह है," कोस्तोग्लोतोव ने जोर से आह भर कर कहा, "यात्रा का कोई साधन नहीं था।"

"यात्रा का कोई साधन नहीं था! वह कैसा स्थान है। वायुयान तो सदैव ही मिलते हैं। क्या वहां नहीं हैं? तुम उसे अन्त समय तक टालते क्यों रहे। पहले ही किसी उचित स्थान पर क्यों नहीं आ गये? क्या वहां कोई डाक्टर नहीं था? कोई अप्रशिक्षित डाक्टर भी नहीं था? या इलाज का कोई अन्य प्रबन्ध?"

उसने पुस्तक छोड़ दी "हां स्त्री-रोगों की एक डाक्टर थी, बल्कि एक नहीं दो।"

"स्त्री रोगों की दो डाक्टर?" जोया ने हैरानी से मुंह खोलकर कहा "क्या वहां केवल स्त्रियां ही हैं?"

"इसके विपरीत वहां स्त्रियां कम ही हैं। लेकिन वहां स्त्री रोगों की दो डाक्टर तो हैं? अन्य और कोई डाक्टर नहीं। वहां कोई प्रयोगशाला भी नहीं। खून टैस्ट कराना असम्भव है। इस विषय में वहां कोई कुछ नहीं जानता।"

"भगवान् बचाये, यह सब कितना भयानक है! और फिर इसका निर्णय भी तुम स्वयं करोगे कि तुम्हारा इलाज हो या नहीं। यदि तुम्हें अपने पर दया नहीं आती तो कम-से-कम अपने कुटुम्ब और बच्चों पर ही दया करो।"

"बच्चे?" ऐसा मालूम होता था कि कोस्तोग्लोतोव एकदम जाग पड़ा हो। जैसे पुस्तक की छीना झपटी एक स्वप्न थी और अब वह अपने सामान्य अस्तित्व में आ गया है, वही चेहरे की सख्ती और वही मन्द स्वर "मेरा कोई बच्चा नहीं है।"

"और तुम्हारी पत्नी? क्या वह इनसान नहीं?"

कोस्तोग्लोतोव का स्वर और भी मंद हो गया "पत्नी भी नहीं है।"

"मर्द हमेशा कहते हैं कि उनकी कोई पत्नी नहीं। तो फिर वह कौन-सी खानदानी समस्याएं थीं जिन्हें तुम सुलझाना चाहते थे। कोरियाई डॉक्टर से तुमने क्या कहा था ?"

"मैंने उससे झूठ बोला था।"

"मैं कैसे जानूं कि तुम मुझ से अब झूठ नहीं बोल रहे हो ?"

"नहीं मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं शपथ खाता हूं।" कोस्तोग्लोतोव के चेहरे पर संजीदगी छाती जा रही थी। "बात केवल इतनी है कि मैं पसंद के मामले में काफी सख्त हूं।"

"शायद ऐसा हो कि वह तुम्हें सहन न कर सकी," जोया ने सहानुभूति में सिर हिलाया। कोस्तोग्लोतोव ने अपने सिर को बहुत धीरे-धीरे हिलाकर उत्तर दिया, "मेरी कोई पत्नी कभी थी ही नहीं।"

जोया ने उसकी आयु का अनुमान लगाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल पाई। एक बार उसके होंठ हिले भी परन्तु उसने सोचा कि उसे ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए। उसके होंठ कई बार हिले, लेकिन उसने कुछ पूछा नहीं।

जोया, सिबगातोव की तरफ पीठ किये बैठी थी और कोस्तोग्लोतोव का उसकी ओर मुंह था। उसने देखा कि सिबगातोव डरते-डरते अपने छोटे-से कूंडे पर से उठ रहा है। फिर उसने अपने दोनों हाथ अपनी पीठ पर मले और खड़ा होने का प्रयत्न करता रहा। उसके चेहरे से पता चलता था कि उसने हर वह कष्ट जो इनसान सहन कर सकता है, झेल रखा है। उसका भूतकाल कष्ट-दायक था और ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो आगे उसे खुशी का विश्वास दिला सके।

कोस्तोग्लोतोव ने पहले अन्दर को सांस लिया फिर बाहर को, जैसे सांस लेना ही उसके जीवन का एकमात्र काम हो।

"मैं सिग्रेट पीने के लिये तड़प रहा हूं। क्या यह सम्भव है ?..."

"हरगिज नहीं। तुम्हारे लिये सिगरेट पीना मौत है।"

"किसी हालत में भी नहीं।"

"किसी हालत में भी नहीं। विशेषकर मेरे सामने हरगिज नहीं।"

"शायद, केवल एक !"

"रोगी सो रहे हैं तुम सिगरेट कैसे पी सकते हो।"

फिर भी उसने एक लम्बा खाली सिगरेट होल्डर निकाला, जो हाथ का बना हुआ था और जिस पर सजावट के लिये पत्थर लगे हुए थे और उसे चूसने लगा।

"तुम्हें यह कहावत याद है। शादी के लिये एक नवयुवक आवश्यकता से अधिक नवयुवक होता है और बूढ़ा आवश्यकता से अधिक बूढ़ा," उसने अपनी

दोनों कोहनियां मेज़ पर टिका दीं और अपनी उंगलियां सिगरेट होल्डर समेत बालों में फेरने लगा। "युद्ध के बाद मेरी शादी लगभग हो ही गई थी। मैं विद्यार्थी था और वह भी। मैं शादी अवश्य कर लेता लेकिन हर चीज गड़बड़ा गई।"

जोया, कोस्तोग्लोतोव के चेहरे को देखने लगी। चेहरा ज्यादा मित्रता-पूर्ण नहीं था परन्तु उससे मजबूती प्रकट होती थी। उसके बाजू और कंधे बेढंगे अवश्य थे लेकिन ऐसे वे बीमारी के कारण थे।

"क्या इस गड़बड़ का कोई हल नहीं निकला ?"

"वह…यह बात किस प्रकार कही जाती है ?…वह समाप्त हो गई," उसने एक आंख मींच ली और दूसरी से तेज़-तेज़ देखने लगा। "वह समाप्त हो गई, हालांकि सच्चाई यह है कि वह अब भी जीवित है। पिछले वर्ष कई बार हमने एक-दूसरे को पत्र लिखे" उसने अपनी दूसरी आंख खोली, अपनी उंगलियों में सिगरेट होल्डर को देखा और उसे जेब में रख लिया।

"और तुम जानती हो कि इन पत्रों में कुछ वाक्य ऐसे थे कि मैं सोचने पर विवश हो गया। वह इतनी पूरी हरगिज नहीं थी जितनी मुझे नज़र आई थी। शायद वह थी भी नहीं। पच्चीस वर्ष की आयु में कोई क्या समझ सकता है," कोस्तोग्लोतोव अपनी काली भूरी आंखों से जोया की ओर देख रहा था "उदाहरणार्थ अब तुम मर्दों के बारे में क्या जान सकती हो ? कुछ भी तो नहीं।"

जोया ज़ोर से हंस पड़ी—"बहुत सम्भव है मैं उन्हें बहुत भली-भांति समझती हूं।"

"यह असम्भव है," कोस्तोग्लोतोव ने निर्णय कर दिया "जिसे तुम समझना कहती हो वह समझना है ही नहीं। तुम विवाह कर लोगी और बहुत बड़ी भूल करोगी।"

"रंग में भंग डालने वाला," जोया ने अपना सिर एक ओर से दूसरी ओर हिलाया, फिर उसने अपना हाथ नारंगी बैग में डाला और कढ़ा हुआ कपड़ा निकाल कर उसकी तह खोली। यह एक छोटा-सा कपड़ा था जिस पर एक सारस बनाया जा चुका था और गीदड़ और एक प्याले का केवल रेखा चित्र था।

कोस्तोग्लोतोव उसकी ओर ऐसे देखने लगा जैसे वह कोई चमत्कारी वस्तु हो।

"क्या तुम कढ़ाई का काम करती हो।"

"इसमें इतनी अचम्भे की क्या बात है ?"

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की छात्रा इस प्रकार की दस्तकारी का काम करेगी।"

"तुमने लड़कियों को कढ़ाई करते कभी नहीं देखा ?"

"केवल तब चब मैं बच्चा था। यह १६२० के बाद की बात है। उस समय भी बहुत से लोग इसे बुर्जुआ काम समझते थे। नवयुवक कम्युनिस्टों की सभाओं में इस बात पर तुम्हारी कटु आलोचना की जाती।"

"इन दिनों यह बहुत लोकप्रिय है। क्या तुमने नहीं देखा?"

कोस्तोग्लोतोव ने अपना सिर हिला दिया।

"क्या तुम इसे पसन्द नहीं करते?"

"क्यों, मैं पसन्द क्यों नहीं करूंगा? यह बहुत अच्छा मनोरंजन है। इससे बड़ी शान्ति मिलती है। मैं इसका प्रशंसक हूं।" वह कढ़ाई करती रही और वह उसे प्रशंसा भरी निगाहों से देखता रहा। उसकी नजरें अपने काम पर थीं, उसकी उस पर। लैम्प की पीली रोशनी में उसकी सुनहरी भौंहें चमक रही थीं और उसके कपड़ों के एक खुले कोने से उसका शरीर भी चमक रहा था।

"सुनहरी बालों वाला खिलौना रीछ!" कोस्तोग्लोतोव ने फुसफुसाकर कहा।

"क्या कहा?" जोया ने अपनी भौंहें उठा कर पूछा। वह अब भी अपने काम पर झुकी हुई थी।

कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बात को दोहरा दिया।

"हां, अच्छा।" ऐसा प्रतीत होता था कि जोया को उससे अधिक प्रशंसात्मक वाक्य की आशा थी। "जहां के तुम हो, यदि वहां कोई कढ़ाई नहीं करता तो इसका अर्थ है वहां दुकानों पर तारकशी की अधिकता होती होगी।"

"वह क्या है?"

"तारकशी, ये धागे! हरे, नीले, काले और पीले। यहां इनका मिलना बड़ा ही कठिन है।"

"तारकशी, मैं भूलूंगा नहीं, अवश्य ढूढूंगा, और यदि मिल गये तो तुम्हें अवश्य भेजूंगा और यदि पता चला कि वह सीमित मात्रा में हैं तो आसान बात यह होगी कि तुम वहीं चली जाओ।"

"तुम कहां के रहने वाले हो? क्या जगह है?"

"मेरे विचार में तुम उसे "अछूती धरती" का नाम दे सकती हो।"

"तो तुम "अछूती धरती" के निवासी हो।"

"मेरा मतलब है जब मैं वहां गया था तो किसी को नहीं सूझा था कि वह धरती अछूती है, लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह अछूती धरती ही है? और "अछूती धरती के वासी" हमारे पास आते हैं। जब तुम स्नातक बन जाओ तो वहां जाने का प्रार्थनापत्र क्यों न दे दो। मेरे विचार में वे मना नहीं करेंगे। जो व्यक्ति हमारे वहां जाने को तैयार हो उसे भला कौन रोकता है?"

"क्या वहां जाना इतना बुरा है?"

"हरगिज़ नहीं ! लेकिन अच्छे और बुरे के सम्बन्ध में लोगों के विचार बड़े ही बेढब हैं। एक पांच मंजिला पिंजरे में रहना अच्छा समझा जाता है, जहां लोग तुम्हारे सिर के ऊपर धमक-धमक चल-फिर रहे हों और रेडियो हर ओर शोर मचा रहा हो। और मरुस्थल के किनारे मिट्टी के घरोंदे में श्रमिक की तरह जीवन व्यतीत करना दुर्भाग्य की चरम-सीमा समझा जाता है।"

वह मजाक नहीं कर रहा था। उसके शब्दों से प्रकट होता था कि वह उन विश्वासपूर्ण और कट्टर व्यक्तियों में है जो अपनी दलील को वजनदार बनाने के लिये अपनी आवाज़ को ऊंची करना बिलकुल आवश्यक नहीं समझते।

"लेकिन यह धरती मरुस्थल है या रेगिस्तान ?"

"मरुस्थल। वहां रेत के टीले बिल्कुल नहीं। थोड़ी-सी घास भी उगती है, झंझट अर्थात् ऊंट झाड़ी। यह एक झाड़ी है लेकिन जुलाई में इसमें गुलाबी-गुलाबी फूल लगते हैं और उनमें से बड़ी हल्की-हल्की सुगन्ध भी निकलती है। कज्ज़ाक इनसे सैंकड़ों प्रकार की दवाइयां बना लेते हैं।"

"तो क्या यह कज़ाकिस्तान में है।"

"हां।"

"इसका क्या नाम है ?"

"उशतेरेक।"

"क्या यह कोई आल है ?"[1]

"हां। यदि तुम यही कहना चाहो तो आल।"

या उसे क्षेत्रीय प्रशासनिक केन्द्र का नाम भी दिया जा सकता है। वहां एक अस्पताल है, बस डाक्टर ही कम हैं। अवश्य आना।"

उसने अपनी आंखों को नीचा कर लिया।

"क्या वहां अन्य कोई चीज नहीं उगती ?"

"हां अवश्य। वहां खेती होती है, लेकिन सिंचाई से। गन्ना, मकई। रसोई के पीछे निजी बाग हैं, वहां तो जो चाहो मिल जाता है। केवल बेलचे से कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। और बाजार में यूनानियों को ताजा दूध मिल जाता है, कुरदों को बकरी का मांस और जर्मनों को सूर का।[2] वहां के बाजार बड़े ही सुन्दर हैं, तुम्हें अवश्य देखने चाहिएं। प्रत्येक व्यक्ति देशी वस्त्र पहनता है और ऊंटों की सवारी करता है।"

"क्या तुम किसान हो ?"

"नहीं ! मैं भू-सर्वेक्षक हूं।"

---

१. रूस के उस भाग में, जहाँ तुर्की बोली जाती है, गांव को आल कहते हैं।

२. यूनानी कुरदा और जर्मन उन लोगों में थे जिन्हें युद्ध में और उसके तुरन्त बाद कज्ज़ाक मरुस्थलीय क्षेत्रों में देश निकाला दे दिया गया था।

"तुम वहां रहते क्यों हो ? मेरा मतलब है कि इसका मूल कारण क्या है ?"

कोस्तोग्लोतोव ने अपनी नाक खुजाई "बात केवल इतनी है कि मुझे वहां का जलवायु बहुत पसन्द है।"

"और वहां यात्रा की सुविधाएं बिल्कुल नहीं हैं ?"

"अवश्य हैं। मोटर कारें जितनी चाहिएँ उतनी मिल सकती हैं।"

"लेकिन मैं वहां जाऊं क्यों ?"

उसने कनखियों से उसकी ओर देखा। उनकी बात-चीत के बीच कोस्तोग्लोतोव का चेहरा अधिकाधिक और अधिकाधिक दयालु होता गया।

"तुम वहां क्यों जाओ ?" वह अपने माथे पर उंगलियां फेरने लगा। जैसे किसी के स्वास्थ्य कामना के लिये उचित शब्द ढूंढ रहा हो। "ज़ोयेन्का तुम यह बता सकती हो कि संसार के किस भाग में प्रसन्न रहोगी और किस भाग में अप्रसन्न। कौन कह सकता है कि वह अपने सम्बन्ध में यह जानता है।"

४. रोगियों की उलझन

जिन रोगियों का ऑपरेशन होना था, और जिनकी रसौलियों को ऑपरेशन द्वारा रोका जाना था, उनके लिए निचली मंजिल के वार्डों में काफी स्थान नहीं था, उन्हें ऊपर के वार्डों में उन रोगियों के साथ रख दिया गया था जिनका इलाज एक्स-रे या रेडियो विकिरण से या फिर औषधियों से होना था। इस कारण ऊपर के वार्डों में प्रत्येक सुबह दो राउंड लगते थे। एक उन रोगियों के लिए जिनका इलाज रेडियाई लहरों से होना था और दूसरा रोगियों लिए के जिनका ऑपरेशन होना था।

४ फरवरी को शुक्रवार था। शुक्रवार को ऑपरेशन किए जाते हैं और ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर राउंड नहीं लगाते। इसलिए रेडियो चिकित्सक वेरा कोर्निलएवना गैंगार्त ने ५ मिनिट के निर्देशों के तुरन्त ही बाद अपना राउंड आरम्भ नहीं किया। उसने केवल इतना किया कि पुरुषों के कक्ष के आगे से निकलते हुए केवल अन्दर झांक लिया।

डॉक्टर गैंगार्त एक सुडौल अंगों वाली औरत थी और कोई विशेष लम्बी नहीं थी। उसकी पतली कमर ने जो उनके शरीर के सभी भागों में सबसे अधिक महत्व की थी, जिसने उसे और भी सुन्दर बना दिया था। उसने अपने बाल, जो सामान्य प्रचलित फैशन के विपरीत अपने सिर के पीछे बांध रखे थे, बिल्कुल काले नहीं थे, लेकिन इन्हें भूरा भी नहीं कहा जा सकता था।

अहमदजान ने उसे देखते ही खुशी-खुशी सिर के इशारे से अभिवादन किया। कोस्तोग्लोतोव को भी अपनी बड़ी पुस्तक से सिर उठाकर दूर से ही उसे नमस्ते कहने का अवसर मिल गया। वह दोनों की ओर देखकर मुस्कराई और उंगली उठा दी, जैसे बच्चों को सावधान कर रही हो कि उन्हें उसकी अनुपस्थिति में शोर नहीं मचाना चाहिए और चुप-चाप बैठे रहना चाहिए। इसके बाद वह दरवाज़े से आगे बढ़ गई और चली गई।

आज उसने राउंड पर अकेले नहीं बल्कि लुदमिला अफानासएवना दोन्तसोवा के साथ जाना था जो रेडियो-उपचार विभाग की इंचार्ज थी, लुदमिला अफानासएवना को बड़े डॉक्टर निज़ामुद्दीन बहरामोविच ने बुला लिया था और वह अब तक वहीं थी।

सप्ताह में एक बार जब दोन्तसोवा को राउंड लगाने होते थे, तो उसे एक्स-रे द्वारा जांच की बैठकों में सम्मिलित नहीं होना पड़ता था। प्रायः सुबह के पहले दो घंटे, जो दिन का सर्वोत्तम भाग होते हैं, जब मनुष्य की आंख तेज होती है और दिमाग बिलकुल साफ, वह एक सहायक के साथ, एक्स-रे के पर्दे के सामने बैठने में लगा देती थी। उसका विचार था कि उसके समस्त कर्त्तव्यों में यह सबसे कठिन काम है। बीस वर्ष के अनुभव के बाद उसे पता चल गया था कि रोग के निदान के दौरान जो भूलें हो जाती हैं, वह बहुत महंगी पड़ती हैं। उसके विभाग में तीन डाक्टर थीं और तीनों ही नवयुवतियां। दोन्तसोवा चाहती थी कि रोग-निदान के विषय में, इन तीनों में कोई भी पीछे न रहे और सभी अनुभवी बन जाएं। इसलिए वह प्रति तीन महीने के बाद उनकी ड्यूटी बदल देती थी। वे या तो बाहरी रोगियों के विभाग में काम करती थीं या एक्स-रे द्वारा जांच के कमरे में या अस्पताल में इंचार्ज डाक्टर के रूप में।

डाक्टर गैंगार्त के जुम्मे अब तीसरा काम था। उसका महत्वपूर्ण और सतर्कतापूर्ण भाग इस बात की देखभाल करता था कि रोगियों को रेडियो किरणों की जो मात्रा दी जाए वह बिल्कुल ठीक हो। यह कार्य अधिक कठिन इसलिए था क्योंकि इसके विषय में अब तक कुछ विशेष खोज भी नहीं की गई थी। रेडियो किरणों की उचित मात्रा का अनुमान लगाने का ऐसा कोई विशेष फार्मूला नहीं था जिसके द्वारा यह निर्णय किया जा सकता कि किरणों की इतनी मात्रा जहां रसौली के लिए घातक सिद्ध होगी वहां उससे शरीर के शेष भागों को कोई हानि नहीं पहुंचेगी। हालांकि पहले का बना बनाया कोई फार्मूला नहीं था, फिर भी अनुभव, अन्तर्ज्ञान और विश्लेषण की सहायता से रोगी की दशा को देखकर किसी निर्णय पर अवश्य पहुंचा जा सकता था। बहरहाल, यह भी तो एक ऑपरेशन ही था लेकिन यह रेडियो किरणों से किया जाने वाला ऑपरेशन था जो एक अंधेरे कमरे में किया जाता था और जिसमें काफी समय भी लगता था। इसमें शरीर के स्वस्थ कोशाणुओं को कोई क्षति न पहुंचाने या पूरी तरह उन्हें नष्ट होने से बचा पाना असंभव होता था।

जहां तक शेष कामों का सम्बन्ध हैं, इंचार्ज डाक्टर का काम केवल इतना था कि वह विधिवत् कार्य करे, जांच का समय पर प्रबन्ध कर दे, जाँच के नतीजों को परखे और तीस रोगियों के चार्टों को भर दे। कई डाक्टरों को फार्म भरने का काम पसन्द नहीं आता था, लेकिन वेरा कोर्निलएवना यह सहन कर लेती थी, क्योंकि इन तीनों महीनों के लिए वे उसके अपने मरीज हो जाते थे। इस दौरान वे एक्स-रे के परदे पर रोशनी और परछाईं के पीले सम्मिश्रण मात्र ही नहीं होते थे बल्कि जीवित इन्सान होते थे जो स्थाई रूप में उसकी देख-रेख में थे, उस पर विश्वास करते थे और उसकी साहस बढ़ाने वाली आवाज और शांतिदायक दृष्टि के लिए प्रतीक्षा करते रहते थे। जब इंचार्ज डाक्टर के रूप में

उसका कार्यकाल समाप्त हो जाता था तो अपने रोगियों से बिछुड़ते हुए उसे हमेशा दुख होता था कि वह उन्हें स्वस्थ किए बिना ही जा रही है।

नर्स व्लादिस्लावोव्ना, जिसकी आज ड्यूटी थी, भूरे बालों वाली एक भारी-भरकम बूढ़ी स्त्री थी जो कई डाक्टरों से अधिक प्रभावशाली दिखाई देती थी। उसने अभी-अभी वार्डों का राउंड लगाया था और रोगियों को बताकर आई थी कि वे अपने-अपने स्थानों पर रहें। ऐसा प्रतीत होता था कि स्त्रियों के बड़े वार्ड के रोगी जैसे इस घोषणा की प्रतीक्षा में ही रहे थे। एक के बाद एक वे अपने एक जैसे भूरे गाउनों में सीढ़ियों के बीच के चबूतरे पर और सीढ़ियों के नीचे खड़ी हो गईं। लड़का खट्टी क्रीम लाया और दूध लाने वाली दूध। परन्तु वे वहां से नहीं टलीं। वे अस्पताल के चबूतरे पर से ऑपरेशन कक्ष की खिड़कियों में से झांकती रहीं (खिड़कियों के शीशों के आधे निचले हिस्सों पर सफेदा मला हुआ था लेकिन ऊपर के हिस्से में से नर्सों और ऑपरेशन करने वाले डाक्टरों की टोपियों और छत से लगे हुए लैम्पों को देख सकती थीं) कुछ स्त्रियां नांद में कपड़े धोने चली गईं और कुछ दूसरियों से मिलने चली गईं।

उनके बेढंगे भूरे गाउन मोटे सूती कपड़े के बने हुए थे। जब उनके गाउन बिल्कुल साफ होते थे, तब भी भद्दे दिखाई पड़ते थे, इस पर यह कि उनके ऑपरेशन होने वाले थे। इस सबने उन्हें उनके स्त्रित्व और आकर्षण से बिल्कुल वंचित कर दिया था। गाउन का कोई भी विशेष माप नहीं था। वे सब इतने बड़े थे कि कोई भी स्त्री आसानी से उन्हें अपने गिर्द लपेट सकती थी। उनकी लटकती हुई आस्तीनें इतनी बड़ी थीं कि उन पर चिमनियों के मुंह का धोखा होता था। पुरुषों की प्याजी और सफेद धारियों वाली जैकिटें इनसे कहीं अच्छी थीं। सच पूछो तो स्त्रियों को कपड़े मिलते ही नहीं थे। उन्हें केवल ये गाउन ही मिलते थे जिनमें न बटन होते थे न काज। कुछ स्त्रियां इन्हें लम्बा कर लेती थीं कुछ छोटा। अपने रात्रि-लिबास को छुपाने के लिए सूती पेटियों को बांधने का उनका एक ही ढंग था और अपने सीनों पर गाउनों के ऊपरी भाग को एक ही ढंग से लपेटती थीं। कोई भी स्त्री, जो इस प्रकार की बीमारी में ग्रस्त हो और साथ ही इस प्रकार के बेढंगे गाउन पहने हो, आंखों को प्रिय नहीं लग सकती थी और उन सबको इस बात का आभास था।

पुरुषों के वार्ड में रूसानोव के अलावा प्रत्येक रोगी को डाक्टरों के राउंड की प्रतीक्षा थी और वहां कोई हलचल नहीं थी।

एक वृद्ध उज्बेक मुरसालीमोव, जो एक सरकारी खेती का दरबान था, अपने साफ-सुथरे बिस्तरे पर पीठ के बल लेटा हुआ था। हमेशा की तरह उसने अपनी फटी-पुरानी मखमली टोपी पहन रखी थी। उसे एक बात की प्रसन्नता थी कि उसकी खांसी उसे परेशान नहीं कर रही थी। उसने अपने दोनों हाथ अपनी छाती पर, जहां उसे दम घुटता हुआ प्रतीत हो रहा था, बांध रखे थे

ग्रौर छत को घूरे जा रहा था। इसके नाक की छोटी हड्डियां, जबड़े की हड्डी ग्रौर उसकी नुकीली दाढ़ी के पीछे ठोड़ी की हड्डी सब साफ-साफ दिखाई देती थीं। उसके कान इतने पतले थे कि हड्डी के छोटे छोटे टुकड़े बन कर रह गये थे। यदि वह थोड़ा-सा ग्रौर सूख जाता ग्रौर उसकी चमड़ी कुछ ग्रौर काली हो जाती, तो उस पर ममी का भ्रम होता।

उसके ग्रागे एगनबरदेव था। बीच की ग्रायु का काजक गडरिया। वह ग्रपने बिस्तर पर लेटा हुग्रा नहीं था बल्कि ग्रालती-पालती मारे बैठा हुग्रा था, जैसे चटाई पर बैठा हो। ग्रपने बड़े-बड़े सुदृढ़ हाथों से उसने ग्रपने गोल ग्रौर बड़े-बड़े घुटनों को पकड़ रखा था। उसका शरीर इतना सख्त ग्रौर तना हुग्रा था कि उसके लिये हिलना-डुलना कठिन था। यदि कभी वह थोड़ा-सा हिलता भी तो ऐसा प्रतीत होता कि कोई मीनार या किसी कारखाने की चिमनी हिल रही है। उसकी गुलाबी ग्रौर सफेद जैकिट उसकी पीठ ग्रौर कन्धों पर बिल्कुल कसी हुई थी ग्रौर उसकी बड़ी-बड़ी कलाईयों पर जैकिट के कफ फटने-फटने को थे। उसके होंठ पर एक छोटा-सा फोड़ा था जिसके कारण वह ग्रस्पताल में ग्राया था। रेडियो किरणों ने उसे एक बड़े ग्रौर गुलाबी खुरंट में बदल दिया था। उस खुरंट ने उसका मुँह लगभग बन्द कर दिया था। ग्रौर उससे खाना-पीना कठिन हो गया था, परन्तु न तो वह कष्ट से करवटें बदलता था, न चीखता-चिल्लाता था ग्रौर ना ही बेचैनी का कोई प्रदर्शन करता था। उसकी प्लेट में जो कुछ भी डाला जाता वह खा लेता ग्रौर उसके पश्चात घन्टों तक बड़ी शान्ति से शून्य में देखता रहता।

उससे ग्रागे दरवाजे के नज़दीक के पलंग पर १६ वर्षीय द्योमा था। उस की बीमार टांग ग्रागे को फैली हुई थी। वह ग्रपनी पिंडली को उस स्थान पर, जहां कष्ट था लगातार थपथपाता ग्रौर सहलाता रहता था। ग्रपनी दूसरी टांग उसने बिल्ली की तरह मरोड़ रखी थी ग्रौर प्रत्येक चीज से बेपरवाह, पढ़ने में व्यस्त था। सच तो यह है कि उस समय के ग्रतिरिक्त जब वह सोता था या उसका इलाज किया जाता था वह हमेशा पढ़ता रहता था। प्रयोगशाला में, जहां हर प्रकार की जांच की जाती थी, प्रयोगशाला के उच्च सहायक के पास एक ग्रलमारी थी जो पुस्तकों से भरी थी। द्योमा को इस बात की ग्रनुमति प्राप्त थी कि वह जब चाहे वहां जाकर नयी पुस्तक ले ग्राये। यह ग्रावश्यक नहीं था कि नई पुस्तक उसे तभी मिले जब वार्ड के दूसरे रोगियों को नई पुस्तकें दी जाएं। इस समय वह नीले रंग[1] के कवर वाली एक मोटी पत्रिका पढ़ रहा

१. तात्पर्य रूस के प्रसिद्ध उदारवादी मासिक "नोवीमीर" से है। जिसमें लेखक की रचनाएँ प्रायः प्रकाशित होती हैं। पत्रिका का नाम वह जानबूझ कर नहीं लिखता यद्यपि कोई भी पढ़ा लिखा रूसी यह भाँप जायेगा कि उसका तात्पर्य इसी पत्रिका से है। (ग्रनुवादक की टिप्पणी)

था। पत्रिका नई नहीं थी, फटी पुरानी थी। प्रयोगशाला के सहायक की अलमारी में नई पत्रिकाएँ थी ही नहीं।

प्रोश्का अपने बिस्तर पर ठीक ढंग से बैठा था। वह न बड़बड़ा रहा था और न ही उसके माथे पर सलवटें थीं। वह फर्श पर पांव रखे चुपचाप और शान्ति से बैठा था, जैसे वह बिल्कुल स्वस्थ हो। और यह सच भी है कि वह काफी स्वस्थ था। उसे वार्ड में किसी से भी कोई शिकायत नहीं थी। रोग का कोई वाह्य चिन्ह दिखाई न देता था और उसके गालों की रंगत भी स्वस्थ आदमियों जैसी थी। उसके माथे पर बालों की एक नरम लट लहरा रही थी। वह स्वस्थ युवक दिखाई पड़ता था, इतना स्वस्थ कि नाच में भी शामिल हो सकता था।

उससे आगे अहमद जान था। खेलने को कोई साथी न मिला तो उसने अपने आगे कम्बल पर शतरंज बिछा कर अपने ही विरुद्ध बाजी लगा दी थी।

येफ़ेम ने जिसकी पट्टियों ने उसे कवच की तरह जकड़ रखा था और जिसके लिये अपने सिर को हिलाना, भी असम्भव था, गलियारे में चक्कर काटना और निराशा पूर्ण बातें करते फिरना बन्द कर दिया था। इसके बजाय वह अब दो तकियों का सहारा लिये वह पुस्तक पढ़ने में तल्लीन था, जो एक दिन पहले कोस्तोग्लोतोव ने उस पर थोप दी थी। वह पुस्तक के पन्ने इतने धीरे-धीरे उलट रहा था कि ऐसा लगता था कि वह पढ़ नहीं रहा बल्कि पुस्तक पर ऊंघ रहा है।

अजोव्किन पिछले दिन ही की तरह कष्ट से घिरा हुआ था। शायद वह रात भर सोया भी नहीं था। उसकी सारी चीजें खिड़की और पलंग के पास की मेज पर बिखरी पड़ी थीं और उसका बिस्तर बुरी तरह मुड़ा हुआ था उसके माथे और कनपटियों पर पसीने की बूंदें थीं और उसका पीला चेहरा प्रकट करता था कि वह सख्त कष्ट में है। कभी कभी वह फर्श पर खड़ा हो जाता और दोहरा होकर अपनी कोहनियों को मेज पर रख लेता और कभी वह अपनी पीठ को दोनों हाथों से पकड़ कर अपने समस्त शरीर को दोहरा कर लेता। कई दिन तक उसने किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था। उसने अपने बारे में कुछ नहीं बताया था और उसने अपने बोलने की सम्पूर्ण शक्ति को केवल इस उद्देश्य के लिये रख छोड़ा था कि वह डाक्टरों और नर्सों से और दवाएं मांग सके। जब उसके घर वाले उससे मिलने आते तो वह उन्हें और दवाएं खरीदने भेज देता जो उसने अस्पताल में देख रखी थीं।

बाहर दिन उदास और बेरंग था। कोस्तोग्लोतोव सुबह के एक्स-रे से लौटा तो उसने पावेल निकोलाएविच की अनुमति के बिना सिर के ऊपर की छोटी-सी खिड़की खोल दी। जो हवा अन्दर आई, वह नम अवश्य थी परन्तु ठंडी नहीं थी।

पावेल निकोलाएविच को भय था कि कहीं उसकी रसौली को ठंड न लग जाए। उसने अपनी गर्दन पर कपड़ा लपेट लिया और दीवार के पास होकर बैठ गया। वह सब कितने गूंगे और पराधीन थे, जैसे लकड़ी के बुत हों। अजोव्किन को छोड़कर कोई भी ऐसा नहीं लगता था जैसे वह कष्ट में हो। वह इसके हकदार ही नहीं थे कि स्वस्थ हो जायें। शायद गोर्की ही ने यह कहा है कि केवल वही लोग स्वतन्त्रता के हकदार हैं जो सदैव इसके लिये लड़ने को तैयार हों। जहां तक पावेल निकोलाएविच का सम्बन्ध है उसने सुबह ही से कुछ सोचे हुए कदम उठाने का निश्चय कर रखा था। जैसे ही रजिस्ट्रार का दफ्तर खुला, उसने अपने घर फोन किया और रात भर में उसने जो निर्णय लिये थे उनसे अपनी पत्नी को अवगत करा दिया। हर ओर आवेदन पत्र भेजे जाने थे। यह आवश्यक था कि उसे मास्को में स्थानान्तरित कर दिया जाये। यह खतरा मोल लेने के लिये वह कदापि तैयार न था कि यहां ठहरा रहे और मर जाये। कापा जानती थी कि काम कैसे निकाला जाता है। वह काम में जुट चुकी होगी। सच पूछो तो, यह उसकी कमजोरी ही थी। उसे रसौली से डरना नहीं चाहिए था और ऐसी जगह दाखिला लेने से इन्कार कर देना चाहिए था। इस बात को कोई मुश्किल ही से मानेगा लेकिन यह थी वास्तविकता ही कि कल दोपहर के ३ बजे से किसी ने भी यह मालूम करने का प्रयास नहीं किया कि उसकी रसौली बढ़ रही है या नहीं। किसी ने उसे कोई दवा न दी थी। सफेद वर्दी वाले हत्यारे[1], किसी ने क्या खूब कहा है। उन्होंने केवल इतना किया था कि उसके सिरहाने बुखार अंकित करने का एक चार्ट लटका दिया था, बेवकूफों के पढ़ने के लिये। इतना भी नहीं हुआ था कि अर्दली आकर उसका बिस्तर ठीक कर जाये। यह भी उसे खुद करना पड़ेगा। हे भगवान्! हमारी चिकित्सा संस्थाओं को सुधरने में अभी कितना समय लगेगा?

अन्त में डाक्टर दिखाई दिये, परन्तु अब भी वे कमरे में नहीं आ रहे थे। वे जहां दरवाजे के दूसरी ओर काफी समय रुके रहे, सिबगातोव के पास जिसने उन्हें दिखाने के लिये अपनी पीठ नंगी कर ली थी। (इस बीच कोस्तोग्लोतोव ने अपनी पुस्तक गद्दे के नीचे छुपा दी थी।)

अन्त में वे वार्ड में आ गये। डाक्टर दोन्तसोवा, डाक्टर गैंगार्त और भूरे बालों वाली, भारी भरकम नर्स, जिसने अपने हाथ में नोटबुक संभाल रखी थी और बाजू के नीचे तौलिया। कई सफेद कोट, जब एक ही समय अन्दर आयें तो, भय और आशा की लहर दौड़ जाती है। गाउन और टोपियां जितनी

---

१. सन् १९५३ में स्तालिन के अन्तिम शुद्धि अभियान में जब डाक्टरों को षड्यन्त्र का दोषी ठहराया गया तो उनके लिए इसी शब्दावलि का प्रयोग किया गया था।
(अनुवादक की टिप्पणी)

अधिक सफेद हों, और चेहरे जितने अधिक कठोर हों, उतने ही रोगियों के चेहरों पर ऐसी भावनाएं तीव्र होती रहती हैं। सबसे अधिक कठोर और गंभीर चेहरा नर्स, ओलमपियादा व्लादिस्लावोव्ना का था। उसके निकट सुबह का राउंड उतना ही महत्त्व का था जितना किसी पादरी के लिये धार्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति। वह एक ऐसी नर्स थी जिसके समीप डाक्टरों का स्थान साधारण प्राणियों से कहीं ऊंचा था। उसके समीप डाक्टर हर बात समझते थे। कभी कोई भूल नहीं करते थे और न कभी कोई गलत निर्देश देते थे। वह अपनी नोट-बुक पर हर निर्देश बड़ी उमंग से लिखती जैसे उसे बहुत अधिक प्रसन्नता हो रही हो। इस प्रकार की भावनाओं से आजकल की नौजवान नर्सें अनभिज्ञ थीं।

लेकिन वार्ड में आ जाने पर भी डाक्टरों ने रूसानोव के बिस्तर की ओर बढ़ने में कोई जल्दी नहीं की। लुदमिला जो एक भारी भरकम, साधारण और मोटे नैन-नक्श वाली लेडी डाक्टर थी, जिसके बाल मटियाले होने लगे थे परन्तु इसके बावजूद वह उन्हें कंघी से बना संवार कर रखती थी, सरसरी तौर से सुबह का अभिवादन किया और इसके पश्चात् पहले बिस्तर के समीप, जो द्योमा का था, रुक गई। उसने उसकी ओर देखा और कहा :

"तुम क्या पढ़ रहे हो द्योमा ?" (क्या वह कोई अक्ल की बात नहीं पूछ सकती थी ? उसे पता होना चाहिये कि वह ड्यूटी पर है।)

द्योमा ने पत्रिका का नाम नहीं बताया। उसने वही किया जो अधिकतर लोग करते हैं। मटियाले नीले आवरण वाली पत्रिका लुदमिला को दिखा दी। उसने अपनी आंखें सिकोड़ लीं :

"अरे यह कितनी पुरानी है। दो वर्ष पुरानी। क्यों ?"

"इसमें एक दिलचस्प लेख है।" द्योमा ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"किस पर ?"

"सद्भाव पर।" उसने उत्तर दिया। उसका स्वर और भी दृढ़ हो गया था। "इसमें लिखा है कि सद्भाव के बिना साहित्य···।" वह अपनी बीमार टांग को फर्श पर नीचे लटकाने लगा था लेकिन लुदमिला अफानासएवना ने तुरन्त ही उसे रोक दिया। "ऐसा न करो, पांयचा ऊपर कर लो।"

उसने अपना पांयचा ऊपर कर लिया और वह बिस्तर के किनारे पर बैठ गई। बड़ी सावधानी से अपनी दो या तीन उंगलियों की सहायता से वह प्रभावित स्थान को टटोलने लगी।

वेरा कोर्निलएव्ना पलंग के पाये की ओर झुकी और लुदमिला के कन्धे के ऊपर से झांक कर शान्तभाव से कहा, "पन्द्रह बैठकें, तीन हजार किरणें।"

"क्या यह दुखता है ?"

"हां दुखता है।"

"और यहां ?"

"इसके ऊपर तक दुखता है।"

"अच्छा। तो तुमने बताया क्यों नहीं ? इतने बहादुर न बनो। जब दुखने लगे मुझे बता दिया करो।"

उसने घाव के किनारों को धीरे से छुआ और पूछा, "क्या यह हाथ लगाये बिना भी दुखता है ? रात के समय ?"

द्योमा का चेहरा बहुत नम्र था। उस पर अभी एक भी बाल न उगा था, परन्तु उसके चेहरे पर जो स्थाई खिंचाव रहता था उसके कारण वह अपनी आयु से कहीं ज्यादा बड़ा दिखाई देता था।

"यह मुझे दिन रात सताता है।" लुदमिला अफानासएवना और गैंगार्त ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

"परन्तु क्या तुमने यह अनुमान लगाया है कि जब तुम यहां आये थे उस समय से ज्यादा दुखता है या कम ?"

"मैं नहीं जानता। शायद हालत कुछ बेहतर है। संभव है, यह केवल मेरा अनुमान ही हो।"

"रक्त का निरीक्षण ?" लुदमिला ने पूछा। गैंगार्त ने रोग विवरण कार्ड थमा दिया। लुदमिला अफानासएवना ने उस पर एक दृष्टि डाली और फिर लड़के से पूछा ;

"तुम्हारी भूख कैसी है ?"

"खाना मुझे हमेशा अच्छा लगता है," द्योमा ने शान से उत्तर दिया।

"इसे विशेष खुराक दी जा रही है।" वेरा कोर्निलएवना ने बड़े लाड, के साथ कहा जैसे वह कोई धात्री हो। वह द्योमा की ओर देखकर मुस्कुराई और वह भी उत्तर में मुस्करा दिया।

"क्या खून दिया गया ?" गैंगार्त ने दोन्तसोवा से बड़े शान्त भाव से पूछा। उसने रोग विवरण कार्ड वापस ले लिया।

"अच्छा तो द्योमा तुम्हारा क्या विचार है ?" लुदमिला अफानासएवना ने उस पर एक और खोजती हुई दृष्टि डाली। "क्या हम एक्स किरणें जारी रखें ?"

"अवश्य जारी रखें।" लड़के का चेहरा चमक उठा और उसने उसकी ओर कृतज्ञता से देखा।

उसका विचार था कि एक्स किरणें ऑपरेशन का विकल्प होंगी और यह कि दोन्तसोवा का अभिप्राय यही है। (वास्तव में उसका अभिप्राय यह था कि सूजी हुई हड्डी का ऑपरेशन करने की बजाय पहले उसे एक्स किरणों से शिथिल किया जाना चाहिये ताकि बाद में वरम पैदा न हो।)

ऐगन बरदेव कुछ समय से प्रतीक्षा में खड़ा था। वह नजर लगाये था, और जैसे ही लुदमिला अफानासएवना पास के बिस्तर से उठी वह उचक कर रास्ते

में खड़ा हो गया। उसने अपने सीने को फैला रखा था और उसका डीलडौल सिपाही जैसा था।

दोन्तसोवा उसकी ओर देखकर मुस्कुराई, उसके होंठ की तरफ झुकी और उसके खुरंट का निरीक्षण किया। गैंगार्त बड़ी शान्ति से उसका हाल विस्तार-पूर्वक बता रही थी।

"हां, बहुत खूब," उसने उत्साहवर्धक स्वर में कहा। उसकी आवाज आवश्यकता से अधिक ऊंची थी जैसे साधारणतः उस समय हो जाती है जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा हो जिसकी मातृभाषा उससे भिन्न हो। "ऐगन बरदेव, तुम बहुत जल्दी ठीक हो रहे हो। बहुत जल्दी तुम घर जा सकोगे।"

अहम द जान जानता था कि उसे क्या करना है? उसका कर्त्तव्य यह था कि जो कुछ दोन्तसोवा कहे उसका उजबेक में अनुवाद कर दे। (वह और ऐगन बरदेव दोनों ही एक-दूसरे की भाषा समझते थे परन्तु हर एक का विचार था कि दूसरा भाषा को बिगाड़ रहा है)[1]

ऐगन बरदेव लुदमिला अफानासएवना की ओर टकटकी बांधे देख रहा था। उसकी आंखों से आशा, विश्वास और प्रसन्नता प्रकट होती थी। ऐसी प्रसन्नता जो सीधे-साधे लोगों को भली-भांति शिक्षित और लाभदायक लोगों की बात सुनकर होती है। फिर भी उसने अपने खुरंट की ओर हाथ बढ़ा कर कुछ कहा, "यह बढ़ गया है, बड़ा हो गया है।" अहमदजान ने अनुवाद किया।

"यह दूर हो जायेगा, आशा है कि ऐसा अवश्य होगा।" दोन्तसोवा अपने शब्दों पर विशेष जोर देकर ऊंची आवाज में कह रही थी। "यह दूर हो जायेगा, तीन महीने तुम घर पर आराम करना फिर हमारे पास आ जाना।"

वह आगे बढ़कर वृद्ध मुरसालीमोव के पास गई। जो पहले ही अपने पांव नीचे लटकाए बैठा था, उसने उसका अभिवादन करने के लिये उठने का प्रयास किया लेकिन दोन्तसोवा ने उसे रोक दिया और उसके पास ही बैठ गई। दुर्बल, मटियाली चमड़ी वाले वृद्ध ने उसकी ओर इस तरह देखा जैसे वह उसे सर्व-सामर्थ्यवान समझता हो। अहमदजान के माध्यम से उसने उसकी खांसी के बारे में पूछा और उससे कहा कि वह अपनी कमीज उठा ले। उसने उसके सीने को जहां से वह दुखता था, छुआ और अपने दूसरे हाथ के ऊपर से अपनी उंगलियों से उसे ठोकने लगी। इस बीच में वेरा कोर्निलएवना उसे बताती रहीं कि वह एक्स किरणों के सामने कितनी बार बैठा है, उसे कितने इंजेक्शन दिये जा चुके हैं और उसके खून की क्या हालत है? इसके बाद उसने रोगी के विवरण

---

1. अहमदजान उजबेक है और ऐंगन बरदेव कज्जाक। दोनों ही दो भिन्न तुर्की बोलियां बोलते हैं।
(अनुवादक की टिप्पणी)

कार्ड का निरीक्षण किया। किसी समय उसके शरीर का हर भाग ठीक था। उसके स्वस्थ शरीर में हर चीज अपने स्थान पर थी। परन्तु ऐसा लगता था कि अब हर चीज फालतू और बेकार हो गई है। मांसपेशियों की गिरहें और हड्डियों के किनारे उसकी चमड़ी में से बाहर को निकले पड़ते थे।

दोन्तसोवा ने कुछ नये इंजेक्शन बताये। फिर उसने उससे कहा कि उसके पलंग के साथ मेज पर जो बोतलें रखी हैं उन्हें देखकर वह बताये कि आजकल वह कौन-सी गोलियां खा रहा है। मुरसालीमोव ने मल्टीविटामिन्स की एक खाली बोतल उठा ली।

"ये तुमने कब खरीदी थीं?" दोन्तसोवा ने पूछा।

अहमदजान ने उसके उत्तर का अनुवाद करके बताया, "दो दिन पहले।"

"तो गोलियां कहां है।"

वे सब उसने खा ली थीं।

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है? सब गोलियां खा लीं? एक ही बार में?" दोन्तसोवा ने हैरान होकर कहा।

"नहीं, दो बार में।" अहमदजान ने मुरसालीमोव की बात उस तक पहुंचाई।

डाक्टर, नर्सें, रूसी रोगी और अहमदजान सब खिलखिलाकर हंस पड़े। परन्तु मुरसालीमोव दांत निकाल रहा था। वह अब भी कुछ नहीं समझा था।

पावेल निकोलाएविच एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो इस मूर्खतापूर्ण, असामयिक, और दुष्टतापूर्ण हंसी पर दुःख महसूस कर रहा था। खैर, वह बहुत शीघ्र इन सबको होश में ले आयेगा। वह दिल ही दिल में इस प्रश्न पर तर्क-वितर्क कर रहा था कि डाक्टरों का सामना करने के लिये उसे कौन-सा रुख अपनाना चाहिये। अन्त में उसने निर्णय किया कि सर्वोत्तम रुख यह होगा कि वह अपनी टांगें समेटकर अधलेटी अवस्था में उनसे वार्तालाप करे।

"खैर, कोई विशेष बात नहीं।" दोन्तसोवा ने मुरसालीमोव को तसल्ली दी। उसने उसे विटामिन सी और लेने के लिये कहा। एक नर्स ने बड़े जोश से उसे एक तौलिया दिया जिससे उसने हाथ पोंछे और दूसरे पलंग की ओर बढ़ गई। उसके चेहरे पर बड़ी गम्भीरता छाई हुई थी। अब जब वह खिड़की के सामने खड़ी थी तो उसके चेहरे का अप्रिय भूरापन साफ दिखाई पड़ रहा था। उसके चेहरे से साफ पता चलता था कि वह बहुत थकी हुई है, लगभग बीमार।

पावेल निकोलाएविच अपने गंजे सिर पर मखमली टोपी रखे और ऐनक लगाये बिस्तर पर तन कर बैठा था। कोई वृद्ध स्कूल अध्यापक नहीं, बल्कि एक ऐसा महत्त्वपूर्ण स्कूल अध्यापक जिसने सैंकड़ों विद्यार्थियों को पढ़ाया हो। वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि लुदमिला अफानासएवना उसके बिस्तर

के काफी समीप आ जाये। उसके आते ही उसने अपनी ऐनक को ठीक किया और घोषणा की—"कामरेड दोन्तसोवा इस अस्पताल में कार्य जिस प्रकार चलते हैं उसके विषय में मुझे बाध्य होकर स्वास्थ्य विभाग को सूचित करना पड़ेगा। मुझे कामरेड ओस्तापेन्को को टेलीफोन करना पड़ेगा।"

वह न तो कांपी और न ही पीली पड़ी परन्तु उसका चेहरा किसी सीमा तक फूल अवश्य गया। उसने अपने कंधों को विचित्र ढंग से हिलाया। गोल घेरे की-सी शक्ल में हिलाया जिससे प्रकट होता था कि वे बहुत थके हुए हैं। और जो बोझ इन पर लादा गया है उससे छुटकारा पाने के इच्छुक हैं।

"यदि स्वास्थ्य विभाग के साथ तुम्हारे सम्बन्ध वास्तव में अच्छे हैं।" वह तुरन्त ही उससे सहमत हो गई, "और यदि तुम इस स्थिति में हो कि कामरेड ओस्तापेंको को टेलीफोन कर सको तो मैं ऐसी अनेक चीजें बता सकती हूं जिनके विषय में तुम्हें उनको सूचित करना चाहिये। क्या मैं बताऊं कि वे बातें क्या हैं?"

"और कुछ बताने की कोई आवश्यकता नहीं। जिस लापरवाही का प्रदर्शन किया जाता रहा है वह बहुत काफी है। मैं यहां १८ घण्टे से हूं और कोई मेरा इलाज नहीं कर रहा, और मैं एक···(उसे इससे अधिक बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह यकीनन ही वाक्य स्वयं ही पूरा कर सकती है।)

कमरे में हर कोई खामोश था और रूसानोव की ओर खामोशी से देख रहा था। आघात गैंगार्त को पहुंचा, दोन्तसोवा को नहीं। उसके होंठ सिकुड़कर पतली-सी लकीर बन गये और उसने त्योरियां चढ़ा लीं जैसे उसने कोई हाथ से निकलती हुई परिस्थिति देख ली हो जिसे रोकना उसके बस में न हो। दोन्तसोवा का भारी-भरकम शरीर बैठे हुए रूसानोव पर छा रहा था। उसके माथे पर बल तक नहीं पड़ा। उसने अपने कन्धों को घेरे की-सी शक्ल में एक बार और हिलाया और शान्त तथा मित्रतापूर्ण स्वर में कहा, "मैं यहां इसीलिये आई हूं कि मैं तुम्हारा इलाज करूं।"

"नहीं अब बहुत देर हो चुकी है।" पावेल निकोलोएविच ने उसकी बात काट कर कहा, "मैंने अच्छी तरह देख लिया है कि यहां काम किस तरह होता है और मैं जा रहा हूँ। कोई व्यक्ति तनिक भी रुचि नहीं लेता। कोई भी इलाज करने की तकलीफ गवारा नहीं करता।" उसका स्वर अनचाहे कांप गया। उसे वाकई क्रोध आ रहा था।

"तुम्हारे रोग का निदान हो चुका है।" दोन्तसोवा ने दोनों हाथों से उसके पलंग के पाये को धीरे से पकड़ कर कहा। "और ऐसा कोई स्थान नहीं जहां तुम जा सको। गणराज्य में ऐसा अन्य कोई अस्पताल नहीं जहां तुम्हारे विशेष रोग का उपचार होता हो।"

"परन्तु तुमने कहा था मुझे कैंसर नहीं···तुम्हारे हिसाब से मुझे क्या

बीमारी है ?"

"साधारणत: हम रोगियों को बताते नहीं कि क्या बीमारी है। परन्तु यदि इससे तुम्हें लाभ पहुंच सकता है तो बता देती हूं—तुम्हारे पुट्ठे में पानी भर गया है।"

"तुम्हारा मतलब है यह कैंसर नहीं है ?"

"कैंसर हरगिज नहीं है।" उसके स्वर में ऐसी कोई कटुता नहीं थी जो झगड़े में साधारणत: हो जाती है। क्योंकि उसके जबड़े के नीचे मुट्ठी भर रसौली उसे साफ दिखाई दे रही थी। वह गुस्सा किसके विरुद्ध महसूस करे ? रसौली के विरुद्ध ?

"किसी ने तुम्हें यहां आने पर बाध्य नहीं किया। तुम जहां चाहो जा सकते हो। परन्तु याद रखो···" उसने रुकते-रुकते कहा, "लोग केवल कैंसर ही से नहीं मरते।" यह एक मित्रतापूर्ण चेतावनी थी।

"यह क्या है ? क्या तुम मुझे डराने का प्रयत्न कर रही हो ?" पावेल निकोलाएविच चिल्लाया "तुम यह क्यों कर रही हो ? यह व्यावसायिक सभ्यता के विरुद्ध है।" वह अब भी पूरे जोर से चीख रहा था। परन्तु शब्द "मरने" ने उसके अन्दर प्रत्येक चीज़ को जमा दिया था। जब उसने बाद में यह कहा "तुम ? क्या तुम यह कहना चाहती हो कि मेरी हालत वास्तव में इस हद तक भयानक है ?" तो उसका स्वर अत्यधिक नरम पड़ गया था।

"हां ! यदि तुम एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में भागते रहे तो अवश्य भयानक हो जायेगी। अपना स्कार्फ उतारो और कृपा करके खड़े हो जाओ।"

उसने अपना स्कार्फ उतार दिया और फर्श पर खड़ा हो गया। दोन्तसोवा ने नर्मी से रसौली को छुआ और उसके बाद गर्दन के उस भाग को जो स्वस्थ था और इन दोनों की आपस में तुलना की। फिर रूसानोव से कहा कि वह अपने सिर को पीछे की ओर हिलाये जितना भी उसके लिये संभव हो (वह अपने सिर को कुछ अधिक पीछे की ओर न ले जा सका। तुरन्त ही रसौली रुकावट डालने लगी) इसके बाद उसे अपनी गर्दन को जहां तक संभव हो सका आगे को झुकाना पड़ा और फिर दांई व बांई ओर झुकाना पड़ा।

तो यह बात थी। ऐसा मालूम होता था कि उसका सिर हिलने-डुलने की स्वतन्त्रता से वंचित हो गया था। यह एक ऐसी स्वतन्त्रता होती है जो जब तक हमें प्राप्त होती है हम इसकी परवाह नहीं करते।

"कृपया, अपनी जैकिट उतार दो।"

हरी और भूरी जैकिट ठीक नाप की थी और उसके बड़े-बड़े बटन थे। यह बात ख्याल में भी नहीं आ सकती थी कि उसे उतारना कठिन होगा लेकिन जब पावेल निकोलाएविच ने अपने बाजू फैलाए और सिर को हिलाया तो आह भर कर रह गया। हालत सचमुच ही नाजुक थी। भूरे बालों वाली नर्स ने

उसकी सहायता की।

"क्या तुम्हारी बगलें दुखती हैं ?" दोन्तसोवा ने पूछा। "क्या तुम्हें कोई और तकलीफ है ?"

"तो क्या यह वहां तक भी फैल सकती है ?" रूसानोव का स्वर अब मद्धम पड़ चुका था और लुदमिला अफानासएवना के स्वर से भी अधिक नरम था।

"अपने बाजुओं को बाहर की ओर फैलाओ।" उसने उसकी बगलों को छुआ और दबा-दबाकर देखने लगी।

"इलाज किस किस्म का होगा ?" पावेल निकोलाएविच ने पूछा।

"इंजैक्शन, मैं तुम्हें बता चुकी हूं।"

"कहां, सीधे रसौली में ?"

"नहीं, अन्तःशिरा में" (intraveneously)

"कितनी बार ?"

"हफ्ते में तीन बार। अब तुम कपड़े पहन सकते हो।"

"और ऑपरेशन···असम्भव है ?"

(इस प्रश्न के पीछे ऑपरेशन के मेज पर लेटने का भय काम कर रहा था। सभी रोगियों की तरह वह भी किसी अन्य लम्बे इलाज को प्राथमिकता देता।)

"ऑपरेशन बेकार होगा।" वह तौलिये से, जो नर्स ने उसे दिया था, हाथ पोंछ रही थी।

मैं यह सुन कर प्रसन्न हुआ हूं। पावेल निकोलाएविच ने दिल-ही-दिल में सोचा। फिर उसे कापा से परामर्श अवश्य करना पड़ेगा। घुमा फिरा कर किसी पर प्रभाव डलवाना आसान कभी नहीं होता। वास्तविकता यह है कि उसका प्रभाव उतना था ही नहीं जितने का वह इच्छुक था और न वह प्रभाव इतना अधिक था जितने का वह दावा कर रहा था। कामरेड ओस्तापेंका को टेलीफोन करना इतना आसान कदापि नहीं था।

"बहुत अच्छा, मैं इस बारे में सोचूंगा और कल हम किसी निर्णय पर पहुंच जायेंगे।"

"नहीं," दोन्तसोवा ने निर्दयता से कहा। "तुम्हें अभी निर्णय करना होगा। कल हम इंजैक्शन नहीं दे सकते। शनिवार का दिन है।"

फिर नियम की बात। यह बात उसकी समझ में क्यों नहीं आती कि नियम तोड़ने के लिये होते हैं। "आखिर क्या कारण है कि मैं शनिवार को इंजैक्शन नहीं ले सकता।"

"क्योंकि हमें तुम पर होने वाली इंजैक्शन की प्रतिक्रियाओं को बड़ी सावधानी से देखना पड़ेगा—इंजैक्शन लगाने के दिन भी और इसके बाद के दिन

थी। और रविवार को हम यह नहीं कर सकते।"

"तुम्हारा मतलब है···क्या मामला वास्तव में इतना नाजुक है ?"

लुदमिला अफानासएवना ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह कोस्तोग्लोतोव के पलंग की ओर बढ़ चुकी थी।

"क्या हम सोमवार तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते ?"

"कामरेड रूसानोव तुमने हम पर अभियोग लगाया था कि हम १८ घण्टे प्रतीक्षा करते रहे और तुम्हारा कोई इलाज नहीं किया। अब तुम हमें ७२ घण्टे प्रतीक्षा करने की सलाह दे रहे हो।" (उसने युद्ध जीतना आरम्भ कर दिया था। उसका स्टीमरोलर रूसानोव को कुचल रहा था और वह बेबस था) "या तो हम तुम्हें इलाज के लिये दाखिल करेंगे, या नहीं। यदि तुम हां कहोगे तो पहला इंजैक्शन आज ही सुबह ११ बजे लगेगा। यदि नहीं, तो तुम्हें लिख कर देना पड़ेगा कि तुम्हें हमारा इलाज स्वीकार नहीं और मुझे तुम्हें आज ही छुट्टी देनी पड़ेगी। हमें यह अधिकार कदापि प्राप्त नहीं कि तुम्हें तीन दिन तक यहां रखें और कुछ भी न करें। जितने समय में मैं इस कमरे में अपना राउंड पूरा करूं तुम सोच सकते हो। उसके बाद मुझे बताना कि तुमने क्या निर्णय लिया है।"

रूसानोव ने अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया।

गैंगार्त जिसका सफेद कोट गर्दन तक उसके शरीर से कसा हुआ था चुपचाप उसके पास से निकल गई। ओलमपियादा व्लादिस्लावोव्ना उनके पीछे यूं चली जैसे जहाज चलना शुरू करता है।

दोन्तसोवा तर्कों से थक चुकी थी और आशा कर रही थी कि अगले बिस्तर पर उसका दिल खुश होगा।

"अच्छा तो कोस्तोग्लोतोव तुम क्या कहना चाहते हो ?"

कोस्तोग्लोतोव ने अपने बालों के गुच्छों को ठीक किया और ऊंचे स्वर में, जो एक स्वस्थ व्यक्ति की आशापूर्ण आवाज थी, उत्तर दिया, "मैं बहुत अच्छा हूं लुदमिला अफानासएवना। इससे अधिक अच्छी हालत का तो अनुमान लगाना भी संभव नहीं।

डाक्टरों ने एक-दूसरे की ओर देखा। वरा कोर्निलएवना के होठों पर हल्की-सी मुस्कान फैल गई और उसकी आंखें तो लगभग हंस रही थीं।

"तो बहुत अच्छा।" दोन्तसोवा उसके बिस्तर पर बैठ गई। "जो कुछ तुम महसूस करते हो उसे शब्दों में बयान करो। यहां आने के बाद तुमने क्या परिवर्तन महसूस किया है ?"

"बड़ी खुशी से" कोस्तोग्लोतोव मानो इसके लिये तैयार ही बैठा था। "दूसरी बैठक के बाद कष्ट कम होना शुरू हुआ और चौथी बैठक के बाद बिल्कुल ही जाता रहा। मेरा बुखार भी कम हो गया। अब मैं सोता भी अच्छी

तरह हूं, रात में दस घण्टे। जैसे भी चाहूं लेट सकता हूं। कोई तकलीफ नहीं होती। पहले मुझे किसी पहलू भी चैन नहीं आता था। पहले मैं खाने की ओर देख भी नहीं सकता था, अब जो भी मिले खा लेता हूं और दूसरी बार भी मांगता हूं। और यहां तकलीफ भी नहीं होती" गैंगार्त की हंसी फूट पड़ी।

"और वे तुम्हें दूसरी बार भी खाना दे देते हैं" दोन्तसोवा भी हंस रही थी।

"कभी-कभी। अब और क्या कहूं? संसार के विषय में मेरा दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। जब मैं आया था तो बिल्कुल मुर्दा था, अब मैं जिन्दा हूं।"

"उबकाई नहीं आती?"

"नहीं!"

दोन्तसोवा और गैंगार्त ने एक-दूसरे की ओर देखा और उनके चेहरे दमक उठे। जैसे कोई अध्यापक अपने होनहार विद्यार्थी की ओर देख रहा हो और यह अनुभव करे कि वह प्रश्नों का उत्तर इतने अच्छे ढंग से देता है जो उसके अपनी शिक्षा और तजुर्बे से भी ऊपर हैं। अध्यापक ऐसे विद्यार्थियों पर मोहित हो जाते हैं।

"तुम्हें रसौली महसूस तो होती होगी?"

"अब में उसकी कोई परवाह नहीं करता।"

"लेकिन क्या यह महसूस होती है?"

"बात यह है कि जब मैं लेटता हूँ तो मुझे एक वजनी-सी चीज महसूस होती है। कोई चीज जो फड़फड़ा रही हो, परन्तु मैं उसकी कोई परवाह नहीं करता" कोस्तोग्लोतोव ने पुन: बल दिया।

"बहुत अच्छा, अब लेट जाओ!" कोस्तोग्लोतोव अपने रोजाना के काम पर लग गया। (पिछले माह कई अस्पतालों में कई डाक्टरों और डाक्टरी के विद्यार्थियों ने उसका निरीक्षण किया था। कई बार ऐसा भी होता कि रसौली को दिखाने के लिये वे दूसरे कमरों से अपने साथियों को बुला लेते। हर कोई उसे देखकर चकित रह जाता था) उसने अपनी टांगों को बिस्तर पर उठा लिया। घुटने समेट लिए और तकिए के बिना कमर के बल लेटकर अपना पेट नगा कर लिया। उसे उसी समय महसूस हुआ कि उसके अन्दर की मेंडक की-सी आकृति वाली रसौली जो उसके जीवन की साथी बन गई थी और उसके अन्दर से हटने का नाम न लेती थी, गड़बड़ पैदा कर रही है।

लुदमिला अफानासएवना उसके पास बैठ गई। उसका हाथ हल्के वृत्त बनाता हुआ रसौली के नजदीक जाने लगा।

"अकड़ो नहीं, अकड़ो नहीं!" वह उसे याद दिलाती रही।

वह यह जानता था, लेकिन फिर भी वह अकड़ता ही गया। अन्त में

अफानासएवना उसे अपना पेट ढ़ीला छोड़ने पर सहमत करने में सफल हो गई और उसने पेट के पीछे रसौली का किनारा महसूस कर लिया। फिर वह अपने हाथ से हर ओर से टटोलने लगी। पहले आहिस्ता-आहिस्ता, फिर जरा मजबूती से और तीसरी बार और भी ज्यादा मजबूती से।

गैंगार्त उसके कन्धे के ऊपर से देख रही थी। और कोस्तोग्लोतोव गैंगार्त की ओर देख रहा था। उसका व्यक्तित्व बड़ा ही लुभावना था। वह सख्ती करना चाहती थी लेकिन कर नहीं सकती थी। जल्दी ही मरीजों से घुलमिल जाती थी। वह वृद्ध नज़र आना चाहती थी परन्तु इसमें भी उसे सफलता नहीं मिलती थी। उसके बर्ताव में छोटी लड़कियों जैसी कोई बात न थी।

"मैं इसे स्पष्ट रूप में महसूस कर सकती हूँ। पहले ही की तरह।" लुदमिला अफानासएवना ने घोषणा की। "यह पहले से कुछ चपटी अवश्य हो गई है, इसमें कोई शक नहीं। यह जरा आगे चली गई और पेट को अपनी पकड़ से आजाद कर दिया है। इसीलिये यहां कष्ट नहीं होता। यह नरम पड़ गई है लेकिन उसका आकार उतना ही है। क्या देखना चाहोगी ?"

"नहीं, मेरे विचार में आवश्यक नहीं। रोज ही देखती हूं। एक दिन न सही। रक्त की दशा—पच्चीस—सफेद—कोष्ठ—पांच आठ सौ—तिलछट बनने की प्रक्रिया··तुम यहां स्वयं देख सकती हो।"

रूसानोव ने अपने सिर को हाथों पर उठाया और फुसफुसाकर नर्स से पूछा "वे इंजैक्शन, क्या वे बहुत कष्टदायक हैं ?"

कोस्तोग्लोतोव भी प्रश्न पूछ रहा था "लुदमिला अफानासएवना मुझे एक्स-रे के सामने कितनी बार और बैठना पड़ेगा ?"

"इसका निर्णय हम अभी से नहीं कर सकते।"

"न सही लेकिन लगभग ? मुझे छुट्टी कब मिलेगी ?"

"क्या ?" उसने नुस्खे पर से आंखें उठा कर कहा, "क्या कहा तुमने ?"

"तुम मुझे छुट्टी कब दे रही हो ? कोस्तोग्लोतोव ने उसी विश्वास से अपना प्रश्न दोहराया। उसने अपने हाथों से पिंडलियों को पकड़ लिया और चेहरे पर ढिटाई पैदा कर ली। दोन्तसोवा की नजरों में अपने लायक शागिर्द के लिए जो प्रशंसाभाव था उसका लेशमात्र भी शेष न रहा। अब वह केवल एक पेचीदा मरीज था जिसके चेहरे से जिद्दीपन प्रकट होता था।

"मैंने तुम्हारा इलाज शुरू ही किया है," उसने बात को संक्षिप्त करते हुए कहा, "जो कल से शुरू होगा। अब तक तो हम केवल जाँच-पड़ताल ही कर रहे थे।"

लेकिन कोस्तोग्लोतोव हार मानने वाला नहीं था। लुदमिला अफानास-एवना में अपनी बात को थोड़ा स्पष्ट करना चाहता हूं। मुझे एहसास है कि मैं अभी ठीक नहीं हुआ परन्तु पूर्ण स्वास्थ्य की तो मेरी कामना भी नहीं।"

"कैसे-कैसे मरीज़ हैं—एक से बढ़कर एक" लुदमिला अफानासएवना की त्योरी चढ़ी हुई थी और इस बार वह नाराज़ होकर बोली—"तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ?"

"लुदमिदा अफानासएवना" कोस्तोग्लोतोव ने अपना बड़ा-सा हाथ हिलाकर उसे कुछ और कहने से रोक दिया "इस युग के मनुष्य का दिमाग ठीक होने या पागल होने की बहस, हमें वास्तविक विषय से बहुत दूर ले जायेगी··· मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूं कि तुम्हारे कारण मैं इतनी अच्छी हालत में आ गया। अब मैं इससे लाभ उठाना चाहता हूं और जीना चाहता हूं। लेकिन यदि मैंने इलाज जारी रखा तो क्या होगा···? मैं नहीं जानता" जब वह बोल रहा था तो लुदमिदा अफानासएवना का निचला होंठ आतुरता तथा घृणा से फड़क रहा था। गैंगार्त की भवें तन गई थीं। वह कभी एक की ओर देख रही थी कभी दूसरे की ओर। वह चाहती थी कि बीच में पड़कर उनकी सुलह करा दे। ओलमपियादा व्लादिस्लावोवना बागी की ओर ध्यान से देख रहा थी। "वास्तविकता यह है कि मैं यह नहीं चाहता कि भविष्य के जीवन की आशा में अब बहुत बड़ा मूल्य दूं। मैं शरीर की प्राकृतिक रक्षात्मक क्षमता पर भरोसा करना चाहता हूं।"

"तुम और तुम्हारे शरीर की प्राकृतिक रक्षात्मक क्षमता इस क्लिनिक में पेट के बल रेंगते हुए आए थे।" दोन्तसोवा ने कड़ाई से कहा और बिस्तर से उठ खड़ी हुई। "जो कुछ तुम करना चाहते हो उसका तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं। मैं तुमसे बात तक नहीं करूंगी।"

उसने अपना हाथ लहराया और अजोवकिन की ओर मुड़ गई। कोस्तोग्लोतोव कम्बल के नीचे अपने घुटनों को समेटे लेटा रहा। वह कुत्ते की तरह गुर्रा रहा था। उसको तसल्ली नहीं हो रही थी।

"लुदमिला अफानासएवना मैं अब भी इस विषय पर तुमसे बात करना चाहता हूं। तुम्हें इस परीक्षण में रुचि हो सकती है, यह जानने के लिए कि इसका परिणाम क्या होगा ? लेकिन मैं मज़े से जीना चाहता हूं चाहे एक ही वर्ष सही। बात केवल इतनी है।"

"बहुत अच्छा" दोन्तसोवा ने उसके कंधे पर से अपना वाक्य फैंका "तुम्हें बुला लिया जायेगा।"

अब वह अजोवकिन की ओर देख रही थी। उसके चेहरे व आवाज़ में जो नाराजगी पैदा हो गई थीं, उससे छुटकारा पाना उसके लिए कठिन हो रहा था।

अजोवकिन खड़ा नहीं हुआ, वह अपने पेट को पकड़े बैठा रहा और केवल अपना सिर हिलाकर उसने डाक्टरों का अभिवादन किया। उसके दोनों होंठ मिलकर पूरा मुंह नहीं बनाते थे। प्रत्येक होंठ अपने कष्ट को अलग-अलग प्रकट

करता था। उसकी आंखों में प्रार्थना के सिवा और कोई भाव नहीं था, सहायता की प्रार्थना, सबसे, उनसे भी जो उसकी बात सुन भी नहीं सकते थे।

"तो कोल्या क्या हाल है ?" लुदमिला अफानासएवना ने उनके कंधों को अपनी बाहों के घेरे में लेते हुए कहा।

"बुरा," उसने नर्मी से कहा। जब वह बोलता था तो केवल अपना मुंह हिलाता था। वह कोशिश करता था कि उसकी छाती से हवा न निकले क्योंकि उसके फेफड़ों का थोड़ा-सा हिलना भी उसके मेंदे और रसौली को प्रभावित कर जाता था। छ: माह पहले की बात है कि वह युवक कम्युनिस्टों की इतवार को काम करने वाली टोली में अपने कंधे पर कुदाल रखे, ऊंची आवाज में गाता हुआ आगे-आगे चल रहा था—अब यह दशा थी कि वह अपने कष्ट को भी फुसफुसा कर बता सकता था।

"बहुत अच्छा कोल्या—आओ हम मिलकर सोचें," दोन्तसोवा अत्यधिक नर्मी से बोल रही थी। "ऐसा लगता है तुम इलाज से तंग आ गए हो। तुम अस्पताल में रहते-रहते तंग आ चुके हो। सच है ना ?"

"हां..."

"इस शहर में तुम्हारा घर है। शायद घर पर आराम करना, तुम्हारे लिए लाभदायक हो। क्या तुम यह पसन्द करोगे ? हम तुम्हें एक महीने या छ: सप्ताह के लिए छुट्टी दे सकते हैं।"

"और इसके बाद...तुम मुझे फिर दाखिल कर लोगी ?"

"हां, हम तुम्हें अवश्य ले लेंगे। अब तुम हममें से एक हो। इससे तुम्हें इंजैक्शनों से छुट्टी मिल जायेगी। और तुम केवल कैमिस्ट से दवाई खरीद कर दिन में तीन बार अपनी जीभ के नीचे रख सकते हो।"

"सन्सट्रोल ?"

"हां।"

दोन्तसोवा और गैंगार्त को पता नहीं था कि कई महीने से अजोवकिन ड्यूटी देने वाली हर नर्स और रात को ड्यूटी देने वाले हर डाक्टर से और दवा की भीख मांगता ही रहता था। नींद की गोलियां, कष्ट निवारक दवाईयां और प्रत्येक प्रकार का पाउडर और गोली। दवाईयों के इस संग्रह को वह अपने कपड़ों के छोटे-से थैले में एकत्रित करता रहता था। इन्हें वह उस दिन के लिए बचा रहा था जब डाक्टर उसकी सहायता नहीं करेंगे।

"तुम्हें आराम की आवश्यकता है, मेरे प्यारे कोल्या, आराम की।"

वार्ड में पूर्ण, खामोशी। रूसानोव थी ने आह भरी और अपना सिर अपने हाथों पर उठा लिया। उसकी आवाज सारे कमरे में गूंज गई "डाक्टर मैं हार मानता हूं। मुझे इंजैक्शन लगा दो।"

५. डाक्टरों की उलझन

उसे क्या नाम दिया जा सकता है ? हताशा ? खिन्नता ? जब उदासी छा जाती है—जब एक अदृश्य और घना गाढ़ा कुहरा दिल पर छा जाता है—शरीर को अपने घेरे में ले लेता है और फिर उसकी पोर-पोर को भीगे कपड़े की तरह उमेठने-निचोड़ने लगता है। हम सब इस उमेठने को—अपने चारों ओर छाए कुहरे को अनुभव तो करते हैं लेकिन शुरू-शुरू में तो हम यह तक नहीं समझ पाते जिस चीज़ ने हमें जकड़ रखा है आखिर वह है क्या ?

अपना राउण्ड पूरा करने के बाद दोन्तसोवा के साथ सीढ़ियाँ उतरते समय वेरा कोर्निलएवना इसी अनाम-सी मन:स्थिति से गुज़र रही थी। उसके दिल दिमाग में एक अजीब उथल-पुथल मची हुई थी।

ऐसी परिस्थितियों में यह अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है कि अपना लेखा-जोखा लिया जाए—यह सोचा जाए कि यह सब आखिर है क्या—और अगर संभव हो तो कोई सुरक्षात्मक दीवार भी खड़ी कर ली जाए।

लेकिन उसके पास इतना समय ही कहां था कि वह इस सबका लेखा-जोखा ले सके—उसके बारे में सोच सके।

स्थिति यह थी कि वह "अम्मा" के बारे में चिन्तित और बेचैन थी। (रेडियोथैरेपी विभाग में काम करने वाली सहयोगी डाक्टर आपस में लुदमिदा अफानासएवना को "अम्मां" कहकर ही पुकारते थे।) वह उनके लिए अम्मां कुछ तो इसलिए थी कि उन तीनों की ही आयु लगभग तीस वर्ष थी, जबकि लुदमिला लगभग पचास वर्ष की थी—और कुछ इसलिए कि उन तीनों को ही उसने विशेष लगन के साथ काम सिखाया था। वह स्वयं भी काम के पीछे दीवानी थी और यह चाहती थी कि उसकी तीनों "बेटियां" भी उसी लगन और दीवानगी को अपना लें। वह डाक्टरों के अन्तिम वर्ग में से थी जो एक्स-रे माध्यम से रोग का निदान करने का विशेषज्ञ था और एक्स-रे चिकित्सा का भी। पिछले कुछ दिनों से सामान्य प्रवृत्ति यह थी कि ज्ञान को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर दिया जाए लेकिन इसके बावजूद लुदमिला का प्रयत्न यही था कि उसके अधीन काम करने वाली डाक्टरनियां दोनों ही क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त करें।

उसके जीवन में कहीं कोई रहस्य नहीं था। ऐसी कोई बात नहीं थी जिसे वह अपने तक रखें और उसमें दूसरों को भागीदार न बनाए।—और जब कभी गैंगार्त अपनी "अम्मां" की तुलना में अपने आपको अधिक कुशाग्र और तेज दिखलाने का प्रयत्न करती तो लुदमिला अफानासएवना को इससे बेहद खुशी ही होती। मैडिकल कॉलेज छोड़ने के बाद से ही वेरा उसके साथ काम करती चली आ रही थी और अब उसे उसके साथ काम करते हुए आठ वर्ष हो चुके थे!—और आज उसमें जो भी क्षमता थी—जो रोगी जीवन की भीख मांगते हुए उसके पास आते हैं, उन्हें मौत के मुंह में से खींच कर जीवन-दान दे देने की क्षमता—उसका अणु-अणु उसे लुदमिला अफानासएवना के सम्पर्क और संसर्ग ही से प्राप्त हुआ था।

यह रूसानोव "अम्मां" के लिए एक अच्छी-खासी मुसीबत बन सकता था। धड़ पर सर तो कोई जादूगर ही लगा सकता है, लेकिन उसे धड़ से अलग कोई भी मूर्ख कर सकता है।

वह दिल से यही चाहती थी कि काश, रूसानोव जैसा व्यक्ति एक ही होता! जिस भी रोगी के मन में कटुता हो वह ऐसा आचरण कर सकता है—और जब कुत्ते पूरे जोर से भौंक रहे हों तो आप उन्हें केवल अपनी इच्छा-शक्ति से ही चुप नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार की धमकियां पानी पर चाहे कोई चिन्ह न छोड़ें, लेकिन मन-मस्तिष्क को तो गहरे तक काटती चली जाती हैं। ऐसा नहीं है कि इस कटाव को भरा न जा सके, लेकिन जब कोई दीवाना शिकारी यह पुकारने लगता है कि "डाक्टर मुर्दाबाद" या "इंजीनियर मुर्दा-बाद", तो निशाना मिलने में देर नहीं लगती।

सफेद कोटवालों[1] पर संदेहों के जो काले बादल छाए थे, उनकी परछाइयां कहीं-कहीं अब भी बाकी थीं। हाल ही की बात थी कि एम० जी० बी०[2] का एक ड्राइवर क्लिनिक में दाखिल हुआ था। उसके पेट में रसौली थी। उसका ऑपरेशन होना था। इसलिए वह ऑपरेशन का केस था और वेरा कोर्निलएवना का उसके मामले से अगर कोई सम्बन्ध था दो सिर्फ इतना कि एक रात जब वह रात की ड्यूटी पर थी तो राउंड के दौरान मरीज़ ने उससे कहा था कि उसे नींद नहीं आती। उसने उसे नींद की एक दवा दे देने को कहा था और जब दवा देने वाली नर्स ने उसे बताया था कि उस दवा की छोटी-छोटी खुराकें ही स्टॉक में हैं तो वेरा ने कह दिया था कि उसे "दो छोटी पुड़ियां एक साथ दे दो।" मरीज़ ने दवा ले ली और वेरा कोर्निलएवना

---

१. 'डाक्टरों के षड्यन्त्र' की ओर एक और संकेत (अनुवादक की टिप्पणी)

२. राज्य सुरक्षा मन्त्रालय : यह संगठन इन दिनों के० जी० बी० अर्थात् राज्य-सुरक्षा-समिति के नाम से प्रसिद्ध है। (अनुवादक की टिप्पणी)

को यह अहसास तक नहीं हुआ कि दवा लेते वक्त मरीज़ ने उसे खास नज़रों से देखा है। किसी को कुछ पता भी न चलता लेकिन हुआ यह कि लबोरेटरी में काम करने वाली एक लड़की उसी फ्लैट में रहती थी जिसमें ड्राइवर रहता था और वह वार्ड में उससे मिलने आई थी। वह घबराई हुई भागी-भागी वेरा कोर्निलएवना के पास आई। ड्राइवर ने दवा खाई नहीं थी। आखिर दो पुड़ियां एक साथ क्यों दी जा रही थीं ? सारी रात जागता रहा था और अब वह उस लड़की से पूछ रहा था कि "डाक्टर का खानदानी नाम गैंगार्त क्यों है ? उसके बारे में और अधिक बताओ। उसने मुझे ज़हर देने की कोशिश की थी। बेहतर यही है कि उसके बारे में पूरी-पूरी खोज-बीन की जाए।"

वेरा कई सप्ताह तक जांच-पड़ताल की प्रतीक्षा करती रही। इन कई हफ्तों के दौरान उसने रोग-निदान का कार्य पूरे विश्वास, पूरी जागरूकता और यहां तक कि पूरे जोश और उत्साह के साथ किया। वह अपनी नज़रों और मुस्कान से मरीज़ों का दिल भी बढ़ाती रही ताकि इस बदनाम कैंसर वार्ड में आकर उन्हें जो तकलीफ महसूस हो रही है वह कुछ कम हो जाए। लेकिन इस तमाम अर्से में उसे यह भी लगता रहा कि उन मरीज़ों में से कोई-न-कोई उसकी ओर इस तरह देखेगा जैसे वह कह रहा हो कि "तुम ज़हर देती हो।"

एक और बात, जिसने आज के राउण्ड को विशेष रूप से मुश्किल बना दिया था, यह थी कि कोस्तोग्लोव, जो काफी तेजी से अच्छा हो रहा था और जिसका इलाज वेरा कोर्निलएवना ने किसी-न-किसी कारण से विशेष उदारता एवं सहृदयता से किया था, "अम्माँ" से कुछ ऐसे लहजे में बहस कर रहा था जैसे उसे यह संदेह हो कि उस पर कोई बहुत ही निर्दयतापूर्ण परीक्षण किया जा रहा है।

लुदमिला अफानासएवना भी राउण्ड करने के बाद बहुत ही खिन्न और उदास थी। उसे वह अप्रिय हंगामा याद था जो एक झगड़ालू औरत पोलीना ज़वोदचिकोवा ने किया था। बीमार, वह खुद नहीं, बल्कि उसका बेटा था। वह क्लिनिक में केवल उसके साथ रहने आई थी। उन्होंने आपरेशन करके लड़के की एक अन्दरूनी रसौली निकाल दी थी लेकिन गलियारे में वह सर्जन पर बरस पड़ी थी। उसने मांग की थी कि उसके बेटे का रसौली का एक टुकड़ा दिया जाये। अगर लेव लिओनिदोविच की बजाय कोई दूसरा सर्जन हुआ होता तो उसने वह टुकड़ा ले भी लिया होता। उसका इरादा उस टुकड़े को किसी दूसरे क्लिनिक में ले जाकर रोग-निदान के सही होने की पुष्टि कराना था और अगर दूसरे क्लिनिक में किया गया निदान दोन्तसोवा द्वारा किए गए निदान से भिन्न पाया जाता तो वह या तो पैसे की मांग करती या फिर उन्हें अदालत में खींच ले जाती।

अस्पताल के कर्मचारियों में से हरेक को कोई-न-कोई ऐसा कांड याद था।

अब, जबकि उन्होंने अपना राउंड पूरा कर लिया था, वे कुछ उन बातों पर आपस में विचार-विमर्श कर लेना चाहती थीं जिनका ज़िक्र मरीज़ों के सामने नहीं किया जा सकता था। किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए यह विचार-विमर्श आवश्यक था।

कैंसर वार्ड में कमरों की कमी थी। कोई ऐसा छोटा-सा कमरा भी नहीं था जिस पर रेडियोथैरैपी की डाक्टरों का अधिकार हो। आतशिक के इलाज के यूनिट या उस यूनिट में भी, जहां दूर से फोटो लेने वाली एक्स-रे की १२०००० और २००००० वॉल्ट की बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हुई थीं, कोई गुंजाइश नहीं थी। एक्स-रे के जिस यूनिट में रोग निदान किया जाता था वहां एक कमरा ज़रूर था लेकिन उसमें हमेशा अंधेरा रहता था, इसलिये उन्हें इसी पर संतोष करना पड़ा था एक्स-रे के जिस यूनिट में समीप से फोटो लिए जाते हैं, वहीं एक मेज़ पर बैठ जायें। अपनी दिन-प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान वे यहीं खोजती थीं और यहीं बैठकर वे रोगियों और उनके रोगों के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण लिखा करती थीं। जैसे कि यह काफी नहीं था कि वे वर्षों से एक्स-रे के तकलीफदेह माहौल में, जहां एक विशेष प्रकार की गन्ध और गर्मी होती थी, काम करती रही थीं—उन्हें लिखने का काम भी वहीं करना पड़ता था।

वे आईं और खुरदरी सतह वाली मेज़ पर, जिसमें कोई दराज़ भी नहीं थी, एक-दूसरे के पास बैठ गईं। वेरा कोर्निलएवना अस्पताल में दाखिल मरीज़ों के कार्डों को छांटने में लगी—वह पुरुषों और स्त्रियों दोनों ही के कार्डों को छांट रही थी। उनमें से उन मरीज़ों के कार्ड उसने एक तरफ रखे जिनका इलाज वह खुद करना चाहती थी और दूसरी तरफ उन मरीज़ों के कार्ड जिनके बारे में उन्हें मिलकर फैसला करना था। लुदमिला अफानासएवना ने उदास निगाहों से मेज़ को देखा और फिर अपनी पेंसिल से उसे ठकठकाने लगी। उसका निचला होंठ थोड़ा-सा आगे को निकला हुआ था।

वेरा कोर्निलएवना ने उसकी ओर सहानुभूतिपूर्ण निगाहों से देखा लेकिन वह यह फैसला न कर पाई कि रूसानोव और कोस्तोग्लोतोव के बारे में कुछ कहे या डाक्टरों के बारे में सामान्य बातें करे क्योंकि उन बातों को दुहराना उन सबको मालूम थीं, उसे अजीब-सा लग रहा था। उसे काफी सतर्कता से जो काम लेना था और शब्दों के चुनाव में काफी सावधानी बरतनी थी—क्योंकि ऐसा न करने पर उसकी बातों से सांत्वना मिलने की बजाय उलटे उसे ठेस लग सकती थी।

लुदमिला आफानासएवना ने बात शुरू की—"यह सब बहुत ही भयानक है—है न ? हम कितने असहाय और बेबस हैं।" (यह बात उन मरीजों में से बहुतों के बारे में भी कही जा सकती थी जिनका उन्होंने आज मुआइना किया

था।) वह अपनी पेंसिल से मेज को फिर ठकठकाने लगी। "निस्संन्देह हमारी ओर से कोई गलती नहीं हुई।" (यह बात अजोवकिन पर भी लागू हो सकती थी और मुरसालीमोव पर भी।) "एक रोग निदान के मामले में हमारा ध्यान थोड़ा-सा इधर-उधर हो गया था, फिर भी इलाज हमने ठीक ही किया था। हम शायद इतनी कम मात्रा की खुराक न दे पातीं, लेकिन हमारा काम शीशी ने कर दिया।"

निस्संदेह वह सिबगातोव के बारे में सोच रही थी। कुछ ऐसे मरीज होते हैं कि हर प्रयत्न अकारथ हो जाता है—फिर चाहे आप अपनी सामान्य निपुणता से तीन गुनी निपुणता इस्तेमाल कीजिए लेकिन फिर भी मरीज को बचाया नहीं जा सकता। जब सिबगातोव को स्ट्रेचर पर डाल कर पहली बार एक्स-रे के सामने ले जाया गया तो ऐसा मालूम होता था जैसे उसके सैक्रम (त्रिकास्थि) की लगभग तमाम की तमाम हड्डियां नष्ट हो चुकी हैं। गलती सैक्रम की हड्डी का पता लगाने में हुई थी—हालांकि उन्होंने एक प्रोफेसर से भी परामर्श किया था। यह बात तो धीरे-धीरे बाद ही में पता चली कि मुसीबत की जड़ तो बड़ी-बड़ी कोशिकाओं वाली एक ऐसी रसौली थी जो हड्डी में पानी भर देती है और फिर उसे झिल्ली जैसे ऊतक (टिश्यू) में परिवर्तित कर देती है। फिर भी इलाज दोनों हालतों में एक ही था।

सैक्रम को न तो काटा जा सकता है और न ही निकाला जा सकता है। वह तो शरीर की आधारशिला ही है। सिर्फ एक ही रास्ता रह गया था—और वह यह है कि एक्स-रे से इलाज किया जाए—इलाज तत्काल ही होना चाहिए था और एक्सरेथिरैपी भी काफी मात्रा में की जानी चाहिए थी—कम मात्रा से तो कोई लाभ ही न होता। सिबगातोव की हालत बेहतर हो गई और सैक्रम सबल हो गई। सिबगातोव को फायदा तो हुआ लेकिन जिस मात्रा में एक्स-रे इस्तेमाल की गई थी, वह एक घोड़े के लिए भी कुछ अधिक ही होती इसलिए आसपास के टिश्यू आवश्यकता से अधिक संवेदनशील हो गए और उनमें नई रसौलियां बनाने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई। उसके खून और टिश्युओं पर रेडियोथिरैपी का अब कोई प्रभाव नहीं हो रहा था। एक नई रसौली बढ़ रही थी और उसे पराजित कर पाना सम्भव नहीं था। अधिक-से-अधिक यह किया जा सकता था कि उसके बढ़ने पर रोक लगा दी जाए।

डाक्टरों के लिए इसका अर्थ था—एक असाहायता की अनुभूति इलाज के जो तरीके इस्तेमाल किए जा रहे हैं वे तनिक भी प्रभावकर नहीं हैं—हार्दिक करुणा—एक साधारण करुणा की अनुभूति। उधर सिबगातोव था—भद्र, सभ्य और शोकाकुल तातार जो कृतज्ञता ज्ञापित करने को हर समय उद्यत रहता था और उधर उसके लिए इससे अधिक और कुछ किया ही नहीं जा सकता था कि उसकी यातना को और बढ़ाया जाए।

आज सुबह निज़ामुद्दीन बहरामोविच ने दोन्तसोवा को एक विशेष कारण से बुलाया था। इस भेंट का उद्देश्य यह था कि अधिक मरीजों के लिये गुंजाइश निकाली जाए। उन सभी रोगियों को जिनका मामला संदेहास्पद था और जिनकी हालत में सुधार होने की गारंटी नहीं थीं, डिसचार्ज किया जाना था। दोन्तसोवा इसके लिए तैयार हो गई थी। प्रतीक्षालय में दाखिले का आवेदनपत्र देने वालों की लाइन लगी रहती थी—कभी-कभी तो कई-कई दिन तक लोग लाईन में लगे रहते थे। इसके साथ ही प्रान्तीय कैंसर क्लिनिकों की ओर से भी यह निरन्तर मांग की जा रही थी कि उन्हें रोगियों को भेजने की अनुमति दी जाए। वह सिद्धान्ततः इसके लिए राज़ी हो गयी थी और इस प्रकार के रोगियों में सर्वप्रमुख था सिबगातोव। लेकिन उसे डिसचार्ज करना उसके बस की बात नहीं थी। इस एक रोगी के लिए अत्यधिक लम्बा और थका देने वाला संघर्ष किया गया था। हाँलाकि यह आशा अपने आपमें बहुत ही कम थी कि गलती डाक्टर की बजाय मौत से होगी, फिर भी इस मामले में वह बुद्धिमत्ता की इस साधारण-सी बात मानने को तैयार नहीं थी और ना ही अपने प्रयासों को छोड़ देने को तैयार थी। सिबगातोव ने उसकी वैज्ञानिक रुचि तक में परिवर्तन कर दिया था। हड्डी की बीमारियों में उसकी दिलचस्पी का केवल एक कारण था—और वह था जैसे भी हो उसे बचाना। दाखिले की प्रतीक्षा करनेवाले रोगियों में ऐसे लोग हो सकते हैं, जिन्हें इलाज की इतनी ही तात्कालिक आवश्यकता हो लेकिन ऐसा होने पर भी वह सिबगातोव को जाने नहीं दे सकती थी। वह उसकी सुरक्षा के लिए वरिष्ठ डाक्टरों के साथ अपनी हर सम्भव चालाकी का इस्तेमाल करने के लिए तैयार थी।

निज़ामुद्दीन बहरामोविच इस बात का आग्रह कर रहा था कि जिन रोगियों के बचने की कोई आशा ही नहीं है, उन्हें भी डिसचार्ज कर दिया जाए। जहां तक सम्भव हो मौतें क्लिनिक के बाहर होनी चाहिएं, अन्दर नहीं। इससे पलंग भी खाली हो सकते थे और बाकी मरीज़ों के लिए भी यह कम निराशजनक होता तथा आंकड़ों के मामले में भी यह लाभदायक ही होता क्योंकि जिन रोगियों को डिसचार्ज किया जाता उनके नाम 'मृत' व्यक्तियों की सूची की बजाय "गिरती हुई हालत" वालों की सूची में लिखे जाते।

अज़ोवकिन इसी प्रकार के रोगियों में आता था और उसे आज डिसचार्ज किया जाना था। गत कई महीनों में इसकी बीमारी की विवरण-पुस्तिका बढ़ते-बढ़ते बादामी कागजों की एक अच्छी-खासी मोटी किताब बन गई थी। उन कागजों में लकड़ी के महीन-महीन भूरे रेशे रह जाने से उन पर आंकड़े या इबारत लिखते वक्त पेन कभी-कभी अटक जाता था। ये इंदराज जामुनी या नीली स्याही से किये जाते थे। कागजों के इस पुलिंदे के पीछे दोनों डाक्टरों को एक कसबाई लड़का नजर आ रहा था जो अपने बिस्तर में दुहरा होकर

लेटा दर्द से तड़प रहा था। कागज पर दर्ज विवरण को हालांकि अत्यधिक शान्तिपूर्ण और नर्म लहजे में पढ़ा जा रहा था, लेकिन वह कोर्ट-मार्शल की उन तूफानी तकरीरों से भी कहीं अधिक निर्ममतापूर्ण था, जिनके विरुद्ध कोई अपील नहीं हो सकती। उसके अन्दर कैंसर के फोड़े की २६००० जड़ें थीं जिनमें से १२००० जड़े पुराने फोड़े की थीं। उसे सिनेस्ट्रोल के पचास इंजैक्शन लगाये जा चुके थे और उसके शरीर में सात बार खून चढ़ाया जा चुका था। इसके बावजूद उसके रक्त में श्वेत कोषों की संख्या कुल ३४०० ही थी और लाल रक्त कोषों···। की रोगाणु उसकी रक्षा-क्षमता के परखचे उड़ा रहे थे। वे उसके सीने की दीवार को सख्त बना रहे थे, उसके फेफड़ों में दाखिल हो रहे थे और उसकी हंसली के आस-पास सूजन पैदा कर रहे थे। उसका शरीर कमजोर होता जा रहा था और बीमारी को रोकने का कोई तरीका नहीं था।

डॉक्टर अब भी कार्डों की छान-बीन में जुटी हुई थीं। अब वे उन कार्डों को देख रही थीं जिन्हें पहले एक तरफ रख दिया गया था। एक्स-रे लैबोरेटरी की एक नर्स बाहरी मरीजों के इलाज में जुटी रही। इस समय वह नीले कपड़ों वाली एक चार वर्षीय बच्ची को देख रही थी जो वहां अपनी मां के साथ आई थी। बच्ची के चेहरे पर सूजन थी। सूजन अभी कम ही थी और जहरीली भी नहीं थी, लेकिन उसे जहरीला होने से बचाने के लिए रेडियो-तरंगों से उसका इलाज किया जाये। जहां तक नन्हीं बच्ची का सम्बन्ध है वह एकदम निश्चिन्त दिखाई दे रही थी। उसे तो यह ख्याल तक नहीं था कि उसके नन्हें से होंठ पर मृत्यु की छाया मंडरा रही है। वह यहां पहली बार नहीं आई थी और यहां आने पर लगने वाला डर भी उसके दिल से निकल चुका था। वह एक चिड़िया की तरह चहचहा रही थी और रेडियो-मशीन के चमकते हुए हिस्सों की तरफ हाथ बढ़ा रही थी। अपने आस-पास की चमकदार दुनिया उसे काफी दिलचस्प नजर आ रही थी। उसे मशीन के सामने केवल तीन मिनिट बैठना पड़ा, लेकिन फिर भी उसे यह गवारा नहीं था कि वह तंग-सी नली के नीचे, जो उसके चेहरे के रोगग्रस्त भागों पर केन्द्रित थी, चुपचाप बैठी रहे। वह अपने को छुड़ाने की कोशिश करती रही और अपना चेहरा इधर-उधर घुमाती रही। एक्स-रे मशीन का तकनीशियन बेचैन हो गया था और उसने कई बार करंट बंद किया और उसके चेहरे पर कई बार नली को केन्द्रित किया। उसकी माँ उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसे खिलौना दिखा रही थी और उसने यह वायदा भी कर दिया था कि अगर वह चुपचाप बैठ जाए तो उसे और बहुत से खिलोने और तोहफे दिए जाएंगे।

फिर एक उदास-सी बूढ़ी औरत आई और उसने अपना स्कार्फ खोलने और अपनी जैकिट उतारने में ही सदियां लगा दीं। उसके बाद भूरे रंग का ड्रेसिंग-

गाउन पहने एक ऐसी औरत आई जो अस्पताल में दाखिल थी। उसके पाँव के तलुवे में एक गोल-सी रंगदार रसौली थी। हुआ सिर्फ यह था कि उसके तलुवे में उसके जूते की कील चुभ गई थी। वह नर्स से हंसी-खुशी बातें कर रही थी और उसे इस बात का अहसास तक नहीं था कि यह छोटी-सी गेंद जो एक सेंटीमीटर से अधिक चौड़ी नहीं थी, सर्वाधिक खतरनाक रसौली है! भले ही उन्हें यह पसन्द हो या नापसन्द फिर भी डाक्टरों को इन मरीजों पर भी अपना वक्त लगाना पड़ता था। वे उन्हें देखती और नर्स को हिदायतें देती रहती। इस तरह देर होती गई—और इस समय वह वक्त कभी का गुजर चुका था जबकि वेरा कोर्निलएवना को रूसानोव को एम्बीक्वाइन का इंजैक्शन देना था। उसने आखिरी कार्ड निकाला और लुदमिला अफानासएवना के सामने रख दिया। यह कार्ड, जो उसने जान-बूझकर एक विशेष उद्देश्य से अब तक रोके रखा था, कोस्तोग्लोतोव का था।

"यह मरीज अफसोसनाक लापरवाही का शिकार रहा है," उसने कहा, "लेकिन हमारे इलाज की शुरुआत बहुत अच्छी हुई है। सिर्फ इतनी-सी बात है कि वह बेहद जिद्दी आदमी है। मुझे डर है कि वह इस इलाज को जारी रखने से कहीं सचमुच ही इन्कार न कर दे।"

"वह करके तो देखे," लुदमिला अफानासएवना ने मेज पर हाथ मारते हुए कहा, "कोस्तोग्लोतोव की बीमारी वही है जो अजोवकिन की—फर्क सिर्फ इतना है कि उसके मामले में इलाज कारगर सिद्ध हो रहा है। वह इन्कार करने की आखिर जुर्रत कैसे कर सकता है?"

"जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, वह शायद जुर्रत न करे," गैंगार्त तत्काल मान गई। "लेकिन मुझे शक है कि मैं जिद में उससे बाजी मार ले जा सकती हूँ। क्या तुमसे मिलने के लिए मैं उसे बुलवा लूँ?" अपने नाखूनों को साफ करते हुए उसने कहा "इस समय हमारे संबंधों में कुछ तनाव-सा है... मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं इस समय उससे साधिकार ढंग से बात नहीं कर सकती हूँ—न जाने क्यों!"

वैसे उनके संबंध उसी दिन से तनाव पूर्ण थे जिस दिन उनकी पहली मुलाकात हुई थी।

वह जनवरी का बादलों से घिरा दिन था और जोर की बारिश हो रही थी। क्लिनिक में गैंगार्त की रात की ड्यूटी थी और उसने अभी अपना काम शुरू किया ही था। निचली मंजिल में काम करने वाला एक मोटा और स्वस्थ दिखाई देने वाला अर्दली नौ बजे के करीब उसके पास शिकायत लेकर आया—"डॉक्टर! एक मरीज अच्छा-खासा बखेड़ा फैला रहा है। मैं अकेला उस पर काबू नहीं पा सकता हूँ, यदि कुछ न किया गया तो सब मरीज हमारी गरदनों पर सवार हो जाएंगे।"

वेरा कोर्निलएवना बाहर आई और उसने देखा कि मैट्रन के छोटे-से अंधेरे दफ्तर के ताले लगे दरवाजे के सामने सीढ़ियों के पास एक आदमी फर्श पर लेटा हुआ है। वह एक दुबला-पतला व्यक्ति था। उसने बड़े-बड़े बूट, सिपाहियों वाला एक पुराना ओवरकोट और शहरियों वाला फर का कनटोप पहन रखा है। यह कनटोप उसके लिये बहुत छोटा पड़ता था लेकिन किसी-न-किसी-तरह उसने वह पहन लिया था। उसके सिर के नीचे एक थैला था और ऐसा लगता था जैसे वह अब सोने ही वाला है। गैंगार्त सीधी उसके पास गई। गैंगार्त अपने लिबास के मामले में कभी भी लापरवाही नहीं बरतती थी। उसकी टांगें सुडौल थीं और उसने ऊंची एड़ी के सैंडिल पहन रखे थे। फर्श पर लेटे पड़े आदमी के पास पहुँचकर उसने उसे कठोर निगाहों से घूरा।—उसने ऐसा यह सोच कर किया था कि उसकी कठोर निगाहों को देखकर उसे अपने ऊपर शर्म आयेगी और वह उठ खड़ा होगा। लेकिन गैंगार्त को देख लेने के बावजूद उसने उस पर ऐसी निगाहें डालीं जैसे उसे उससे कुछ लेना-देना ही न हो। वह अपनी जगह से एक इंच भी न हिला और सच पूछिए तो ऐसा लगता था जैसे उसने अपनी आंखें भी बंद कर ली हों।

"कौन हो तुम ?" गैंगार्त ने उससे पूछा।

"एक मनुष्य।" उसने तनिक भी विचलित हुए बिना शांतिपूर्वक कहा।

"क्या तुम्हारे पास दाखिले का कार्ड है ?"

"हां।"

"तुम्हें यह कार्ड कब मिला ?"

"आज।"

फर्श पर जो निशान थे उससे साफ पता चलता था कि उसका कोट भीगा हुआ है और उसके बूट और उसका थैला भी भीगे हुए होंगे।

"खैर, तुम यहाँ नहीं लेट सकते। इसकी···इसकी इजाज़त नहीं है। इसके अलावा यह उचित भी नहीं···"

"यह एकदम उचित है," उसने मंद स्वर में कहा—"यह मेरा देश है। आखिर मैं शर्मिंदा क्यों होऊं ?"

वेरा कोर्निलएवना की समझ में ही न आ रहा था कि वह आखिर करे तो करे क्या। उसने अनुभव किया कि वह संभवत: उस पर चिल्ला और उसे उठने का हुक्म नहीं दे सकती है।—और अगर वह ऐसा करे भी तो उसका उस पर कोई असर नहीं पड़ने जा रहा है।

उसने प्रतीक्षालय की ओर देखा। दिन में यह मिलने आने वालों और इंतज़ार करने वालों से भरा हुआ था। यहां मरीज़ों के सम्बन्धियों के लिये तीन बेंचें रखी हुई थीं जिन पर वे मरीज़ों से बातचीत करते हुए बैठ सकते थे। लेकिन रात को जब क्लिनिक बंद होता था तो वे उन लोगों को लेटने के लिये

दे दी जाती थीं, जो दूर से आते थे और जिनके रहने की कोई व्यवस्था नहीं होती थी। इस समय वहां केवल दो बैंचें थीं। उनमें से एक पर एक बूढ़ी औरत लेटी हुई थी और दूसरी पर एक नौजवान उज़बेक ने अपने बच्चे को लिटा रखा था और खुद उसके पास बैठी हुई थी।

गैंगार्त उसे प्रतीक्षालय के फर्श पर लेटने की अनुमति दे सकती थी, लेकिन उन तमाम जूतों का कीचड़ जिनके तले वह रौंदा गया था, फर्श पर बिखरा हुआ था और शीशे के दरवाज़े के इस तरफ हर वस्तु कीटाणुनाशक औषधि से साफ की हुई थी। इधर केवल वही आ सकता था जिसने या तो अस्पताल का लिबास पहन रखा हो या सफेद कोट।

एक बार फिर वेरा कोर्नील्येव्ना ने उस जंगली से दिखाई देने वाले मरीज़ पर नजर डाली। उसका नोकीला और कमज़ोर चेहरा चुगली खा रहा था कि वह स्वास्थ्य के प्रति एकदम लापरवाह रहा है।

"क्या शहर में ऐसा कोई नहीं है जिसके पास तुम जा सको ?"

"नहीं।"

"क्या तुम किसी होटल में जगह पाने की कोशिश कर चुके हो ?"

"हां, कर चुका हूं !" ऐसा लगता था जैसे कि वह उसके सवालों के जवाब देते-देते थक चुका है।

"यहां पांच होटल हैं।"

"वे मेरी बात तक नहीं सुनते," उसने अपनी आंखें बंद कर लीं जैसे कि वह जाहिर कर रहा हो कि बातचीत खत्म हो गई।

काश, वह कुछ पहले आ गया होता—गैंगार्त ने सोचा—"हमारी कुछ नर्सें मरीज़ों को रात को अपने घरों में ठहरा लेती हैं—वे कोई बहुत मुआवज़ा नहीं लेतीं।"

वह अपनी आंखें बन्द किये लेटा रहा।

"यह कहता है कि 'मुझे परवाह ननीं—चाहे मुझे यहां एक हफ्ते तक क्यों न लेटे रहना पड़े"—अर्दली ने रौब जमाते हुए कहा—"यह कहता है—जब तक मुझे पलग नहीं मिलता मैं यहीं सबके रास्ते में लेटा रहूँगा।" मरीज की तरफ बढ़ते हुए अर्दली चिल्लाया—"यह बड़े शर्म की बात है। उठो—मूर्खता छोड़ो ! इस फर्श को कीटाणुनाशक दवाओं से साफ किया जा चुका है।"

"यहां सिर्फ दो बैंचें कैसे रह गईं ? क्या यहां एक और बैंच नहीं थी ?" गैंगार्त ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

"वहां—तीसरी बैंच को वे वहां ले गये हैं।" अर्दली ने शीशे के दरवाज़े की ओर इशारा किया।

यह सच था—वे तीसरी बैंच को मशीनों वाले कमरे की ओर जाने वाले

गलियारे में ले गये थे। अब उसे उन बाहरी मरीज़ों को बिठाने के लिये काम में लाया जा रहा था जो दिन में मशीनों के सामने बैठने को आते थे।

वेरा कोर्निलएवना ने अर्दली से गलियारे के दरवाजे का ताला खोलने को कहा और फिर वह मरीज़ से बोली—"मैं तुम्हें किसी ज्यादा आरामदह जगह पर ले चलती हूँ—मेहरबानी से ज़रा उठो!"

मरीज़ ने उसकी तरफ देखा। शुरू-शुरू में उसकी निगाहों में सन्देह था। लेकिन फिर दर्द से तड़पते हुए वह अपने पांवों पर खड़ा होने लगा। यह तो एकदम स्पष्ट ही था कि उसे अपने शरीर को थोड़ा-सा हिलाने-डुलाने के लिये भी भारी कोशिश करनी पड़ रही थी। वह उठ खड़ा हुआ लेकिन उसने अपना थैला फर्श पर ही पड़ा रहने दिया। झुककर थैला उठाने में उसे जो पीड़ा होती वह उसके लिये एकदम असह्य थी।

वेरा कोर्निलएवना ने झुककर अपनी सफेद उंगलियों से वह गंदा और भीगा हुआ थैला उठाकर उसे दे दिया।

"धन्यवाद!" उसके होठों पर एक कुटिल मुस्कान थी। "सब कुछ बहुत खूबसूरत ढंग से हो रहा है..."

फर्श पर वह जहां लेटा रहा था वहां एक गीला आयताकार निशान पड़ गया था।

"तुम बारिश में भीगते रहे हो?" गैंगार्त ने उसकी ओर सहानुभूतिपूर्ण निगाहों से देखा। "अपना कोट उतार दो। गलियारे में अधिक ठंड नहीं है। तुम्हें बुखार तो नहीं महसूस हो रहा? तुम्हें टैम्परेचर तो नहीं है न? उसका माथा उस भौंडे काले कनटोप से एकदम ढंका हुआ था, इसलिये उसने अपनी उंगलियों से माथे की बजाय उसके गालों को छुआ। छूते ही गैंगार्त को पता चल गया कि उसे बुखार है।

"क्या तुम कोई दवा ले रहे हो?"

"ऐनलजिन!"

"क्या इस समय भी उसकी कोई टिकिया तुम्हारे पास है?"

"हां!"

"क्या तुम्हारे लिए कुछ नींद की गोलियां लाऊं?"

"अगर ला सकती हो तो।"

"अरे हाँ," गैंगार्त को यकायक याद आया—"क्या मैं तुम्हारा दाखिले का कार्ड देख सकती हूँ?"

शायद वह मुस्कराया या शायद दर्द की उमेंठ के कारण ही उसके होंठ मुड़ गये थे। "अगर वह कागज मेरे पास न हो तो मुझे फिर से बारिश में जाना होगा—क्यों, यही न?" उसने अपने ओवरकोट के ऊपर के बटन खोले और अपनी फौजी कमीज़ की जेब से, जो कोट से नज़र आ रही थी, कार्ड

निकाला। हां, यह कार्ड ओ० पी० डी० से सचमुच ही आज ही जारी किया गया था। गैंगार्त ने कार्ड पर नज़र डाली। वह उसके अपने मरीज़ों में से था—रेडियोथैरेपी विभाग का मरीज़। उसने कार्ड ले लिया और नींद की गोलियां लेने चल दी। "मैं गोलियां लेकर अभी आती हूँ—आओ, तुम यहां लेट जाओ!"

"एक मिनिट ठहरो, एक मिनिट ठहरो!" जैसे उसमें यकायक जान आ गई थी। मेरा कार्ड मुझे दो—मैं इन चालों को खूब समझता हूँ।"

"आखिर तुम्हें डर किस बात का है?" वह कुछ नाराज़ होकर उसकी ओर मुड़ी। "क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?"

उसने शंकालु निगाहों से उसकी ओर देखा और गुर्राया—"मैं तुम पर आखिर विश्वास करूं क्यों? तुमने और मैंने एक ही प्याले से शोरबा तो पिया नहीं है...।" और वह जाकर लेट गया।

अचानक वह क्रुद्ध हो गई। वह उसे देखने वापस नहीं आई इसकी बजाय उसने नींद की गोलियां और उसका दाखिले का कार्ड एक अर्दली के हाथ भेज दिये। उसने कार्ड के ऊपरी सिरे पर 'अर्जेण्ट' शब्द लिखा, उसके नीचे लकीर खींची और फिर विस्मयादिबोधक चिह्न लगा दिया था।

दूसरी बार जब वह उसके पास से गुज़री तो रात हो चुकी थी। वह सो रहा था। सोने के लिये बैंच काफी अच्छा था—वह उस पर से लुढ़क कर गिर नहीं सकता था। सीट की गोलाई के कारण उसकी कमर भी मुड़ी हुई थी। उसने अपना भीगा हुआ कोट उतार दिया था, लेकिन उसने वह अपने ऊपर ओढ़ लिया था। कोट का एक सिरा उसकी टांगों पर था और दूसरा कंधे पर। उसके बूट बैंच के किनारे पर लटक रहे थे और उनके तले दिखाई दे रहे थे। बूटों का कोई भी हिस्सा सलामत नहीं था—उन पर सब ओर काले और लाल चमड़े की पत्तियां लगी हुई थीं। बूटों की ठोकरों पर धातु की टोपियां चढ़ी हुई थीं और एड़ियों में नालें ठुकी हुई थीं।

सुबह वेरा कोर्निलएवना ने मैट्रन से उसका जिक्र किया जिसने उसे ऊपर की मंजिल में जगह दे दी।

इस पहले दिन से बाद कोस्तोग्लोतोव फिर कभी गैंगार्त से बेढंगेपन से पेश नहीं आया। वह जब भी कभी उससे बोला—अत्यधिक नम्रता और सामान्य सभ्य ढग से बोला। सुबह अभिवादन करने में वह हमेशा पहल करता—यहां तक कि वह उसका अभिवादन एक मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ करता, लेकिन गैंगार्त को हमेशा यही लगता रहता कि वह कोई न कोई अजीबो-गरीब हरकत कर सकता है।

—और हुआ भी बिल्कुल यही। परसों उसने उसके रक्त-वर्ग जानने के

लिए उसे परीक्षा के लिए बुलाया था। उसने उसकी नस से खून लेने के लिए अभी सिरंज तैयार ही की थी वह अपनी आस्तीन नीचे गिरा कर पूरी दृढ़ता से बोला—"मुझे अत्यधिक खेद है वेरा कोर्निलएवना तुम्हें खून के नमूने के बिना ही काम चलाना होगा।"

"लेकिन ईश्वर के लिए—आखिर क्यों?"

"वे पहले ही मेरा काफी खून पी चुके हैं। मैं अब और अधिक नहीं देना चाहता। कोई और दे देगा—जिसके पास ढेरों खून हो।"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए! तुम पुरुष हो—नहीं हो क्या?" उसने उसकी ओर उस विशेष उपहासात्मक स्त्रैण दृष्टि से देखा जिसका सामना कोई भी पुरुष कर ही नहीं सकता है। "मैं सिर्फ तीन क्यूबिक सैंटीमीटर खन लूंगी।"

"तीन सी० सी०? उसका तुम क्या करोगी?"

"हम तुम्हारे रक्त-वर्ग का निर्धारण करेंगे और उसकी अनुरुपता-प्रतिक्रिया का भी। अगर हमारे पास तुम्हारे रक्त-वर्ग का खून हुआ तो हम तुम्हें २५० सी० सी० खून देंगे।"

"मुझे? मेरे शरीर में खून चढ़ाया जाएगा? ईश्वर बचाए! मुझे किसी के खून की क्या जरूरत है! मैं किसी और का खून नहीं चाहता और ना ही अपना एक बूंद भी खून दूंगा। मेरा रक्त-वर्ग नोट कर लो। मैं जब युद्ध में मोर्चे पर था—वह मुझे तभी से याद है।"

उसकी किसी बात का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उसने अपनी राय नहीं बदली। वह लगातार इन्कार करता रहा और नए-नए और अनपेक्षित तर्क देता रहा। उसे विश्वास था कि ये सब वक्त बरबाद करने वाली बातें हैं।

आखिर वह खफा हो गई। "तुम मुझे एक मूर्खतापूर्ण और उपहासास्पद स्थिति में डाल रहे हो। बस अन्तिम बार—कृपया—"

अपने आपको इस तरह अपमानित करना निस्संदेह उसकी गलती थी। आखिर वह इस तरह अनुरोध और अनुनय-विनय क्यों करे? लेकिन तत्काल ही उसने अपनी बांह नंगी करके आगे करदी—"बहुत अच्छा, लेकिन सिर्फ तुम्हारे लिए! तुम तीन सी० सी० खून ले सकती हो।"

यह एक सच्चाई है कि वह उसकी वजह से काफी परेशान-सी थी और एक दिन तो एक अजीबो-गरीब घटना ही हो गई। कोस्तोग्लोतोव ने कहा—"तुम जरमन नहीं लगती हो। तुमने अपने पति के कुल का कुल-नाम अपने साथ जोड़ लिया होगा।"

"हां," बेध्यानी में उसके मुंह से निकल गया।

उसने आखिर यह क्यों कहा? शायद इसलिए कि उस समय और कुछ कहना उसके लिए कष्टदायक होता।

उसने उससे और कोई प्रश्न नहीं पूछा।

सच्चाई यह है कि ग्रैंगार्त उसके पिता का भी कुल-नाम था और उसके दादा का भी। वे रूसीकृत जर्मन थे। लेकिन वह और कहती भी क्या—"मैं शादीशुदा नहीं हूं? मेरी अभी शादी नहीं हुई?"

ऐसे किसी जवाब का तो सवाल ही नहीं उठता था।

९. एक विश्लेषण की गाथा

पहले लुदमिला अफानासएवना, कोस्तोग्लोतोव को उपचार-कक्ष में लेकर गई - एक महिला रोगी एक्स-रे के सामने बैठकर अभी-अभी वापस आई थी। तारों के साथ छत से लटकती हुई १८०००० वोल्ट की एक्स-रे-ट्यूब सुबह आठ बजे से व्यस्त थी। कमरे में ताज़ी हवा के आने की कोई व्यवस्था नहीं थी और अन्दर की हवा एक्स-रे की मीठी-मीठी लेकिन कुछ-कुछ विकर्षक गर्मी से भरी हुई थी।

यह गर्मी (हालांकि जिसे गर्मी का नाम दिया जा रहा है वह गर्मी के अतिरिक्त भी कुछ थी) फेफड़ों में महसूस होने लगती थी और लगभग आधा दर्जन बार मशीन के सामने बैठने के बाद रोगी विकर्षण-सा अनुभव करने लगते थे। लेकिन लुदमिला अफानासएवना उसकी अभ्यस्त हो गई थी और उसने इस ओर ध्यान देना ही छोड़ दिया था कि वह सुखद है या नहीं। उसने बीस वर्ष पूर्व उस समय यहां काम करना शुरू किया था जब मशीन के सामने कोई सुरक्षात्मक प्लेट भी नहीं होती थी। एक बार तो वह एक ऐसे तार के नीचे भी आ गई थी, जिसमें बिजली का खतरनाक करंट दौड़ रहा था, और मरते-मरते बची थी। वह प्रतिदिन एक्स-रे के कमरों में सांस लेती। वह स्क्रीनिंग की बैठकों में उससे भी कहीं अधिक समय तक बैठी रहती जितने की अनुमति थी। आधुनिक सुरक्षात्मक प्लेटों और दस्तानों के बावजूद उसने अपने अन्दर निश्चित ही इतने अधिक रक्तारगु ले लिए थे जितने बड़े से बड़े आज्ञाकारी और गम्भीरतम रोगी ने भी जज्ब नहीं किए होंगे। फर्क था तो सिर्फ यह कि किसी ने कभी न तो उनकी गिनती की थी और न कभी उनका मीज़ान लगाया था।

वह जल्दी में थी—सिर्फ इसलिए नहीं कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो बाहर निकल जाना चाहती थी बल्कि इसलिए भी कि एक्स-रे के कार्यक्रम में एक मिनट का विलम्ब भी सम्भव नहीं था। उसने कोस्तोग्लोतोव से कहा कि वह एक्स-रे-प्लेट के नीचे सख्त कोच पर लेट जाए और अपना पेट नंगा कर ले। इसके बाद वह एक ठंडे से गुलगुली पैदा करने वाले ब्रुश के साथ उसके पेट पर झुक गई। उसने वहां ब्रुश से एक नक्शा-सा बनाया जैसे कि वह उस पर कुछ अंक बना रही हो।

इसके बाद उसने नर्स को 'चतुर्थांश योजना' (क्वाड्रैंट स्कीम) के बारे में बताया और यह भी बताया कि उसे प्रत्येक चतुर्थांश पर मशीन किस ढंग से इस्तेमाल करनी है। इसके बाद उसने मरीज को पेट के बल लेट जाने का आदेश दिया और ब्रुश से उसने उसकी पीठ पर भी कुछ लकीरें खींचीं। "इस बैठक के बाद आकर मुझसे मिलना!" उसने कहा।

जब वह कमरे से चली गई तो नर्स ने कोस्तोग्लोतोव से कहा कि वह फिर पीठ के बल लेट जाए और उसने उसके प्रथम चतुर्थांश के चारों ओर चादरें डाल दीं। फिर वह सीसा मिश्रित रबड़ की भारी-भारी चटाइयां लाई और उनसे आस-पास के उन सब भागों को ढांप दिया जिन पर फिलहाल एक्स-रे की सीधी किरणें नहीं डाली जाने वाली थीं। अपने गिर्द लिपटी हुई उन लचकदार चटाइयों का बोझ कोस्तोग्लोतोव को सुखद लग रहा था।

इसके बाद नर्स भी बाहर चली गई और दरवाजा बंद कर दिया गया। अब वह मोटी दीवार में से छोटी-सी खिड़की ही से उसे देख सकती थी। एक शान्त भनभनाहट शुरू हुई। सहायक लैंप जल उठे और फिर मुख्य ट्यूब भी पूरी तेजी से जगमगा उठी।

एक्स-रे की रश्मियों या बिजली और चुम्बकीय घेरे से निकलने वाली कांपती लकीरें पेट की खाल के उस वर्गाकार भाग से, जिसे नंगा छोड़ दिया गया था, गोश्त की तहों में से गुजर रही थीं और शरीर के उन अवयवों में से जिनके नाम स्वयं कोस्तोग्लोतोव तक को, जिसके वे शरीरायव थे, मालूम नहीं थे। ये किरणें मेंढकनुमा रसौली में से होती हुईं उसके पेट, उसकी अंतड़ियों और उसकी शिराओं और नसों में बहते हुए खून में से गुजर रही थीं। वे उसकी कोशिकाओं, लसीकाग्रन्थि, उसकी रीढ़ की हड्डी और दूसरी हड्डियों में से होती हुई गोश्त की अन्य तहों से गुजरकर उसकी पीठ की कोशिकाओं और खाल में से गुजर गईं। वहां से वे कोच की सख्त लकड़ी में से गुजरीं, उसके पायों में से गुजरीं और फर्श के तख्तों में से होती हुई इमारत की पत्थर की नींव को पार करती हुई जमीन में समा गईं। ये किरणें तोपों में से निकलने वाले गोलों की तरह हर उस चीज को तोड़ती-फोड़ती चली गईं जो उनके रास्ते में आई।

और इस बर्बर और बेआवाज गोलाबारी ने, जिसका उन कोशिकाओं ने, जो उसके निशाने में आई थीं, नोटिस तक नहीं लिया था, बारह बैठकों के बाद कोस्तोग्लोतोव को फिर से जीवन की अभिलाषा और उसके आनन्द से परिचित करा दिया। उसकी भूख भी लौट आई थी और हिम्मत और हौसला भी। दूसरी और तीसरी गोलाबारी के बाद उसे उस कष्ट से मुक्ति मिल गई जिसने उसके अस्तित्व तक को असह्य बना रखा था। अब वह यह जानने के लिए बेचैन था कि ये भेदक गोले शरीर के शेष अंगों को छुए बिना उस रसौली को

ही निशाना कैसे बना लेते हैं। कोस्तोग्लोतोव निर्द्वन्द्व होकर उस समय तक इस इलाज के लिए अपने आपको सौंप देने को तैयार नहीं था जब तक कि वह सिद्धान्त उसकी समझ में न आ जाए और उसे उस पर विश्वास न हो जाए जो उसके पीछे काम कर रहा था।

उसने एक्स-रे उपचार के सिद्धांत के बारे में वेरा कोर्निलएवना से जानने की कोशिश की थी, जो एक आकर्षक स्त्री थी और जिसने पहले ही दिन, जब वह सीढ़ियों के नीचे यह प्रण करके लेटा हुआ था कि चाहे फायर ब्रिगेड आ जाए या सेना वह अपनी मर्ज़ी से इस जगह से हिलेगा तक नहीं, उसके पूर्वाग्रहों और आशंकाओं को एकदम निरस्त्र कर दिया था। "डरो नहीं, सिर्फ बता दो!" वह उसे आश्वस्त करता—"मैं एक ऐसे बुद्धिमान सैनिक की तरह हूं जो युद्ध में कूद पड़ने से पहले अपने लक्ष्य और उद्देश्य को समझना चाहता है। आखिर यह कैसे होता है कि एक्स-रे की किरणें अन्य शिराओं को छूती तक नहीं हैं और रसौली को नष्ट कर देती हैं?"

वेरा कोर्निलएवना की भावनाएं आंखों की बजाय पहले होंठों से प्रकट होती थीं। उसके होंठ कितने आकर्षक और नाजुक थे—छोटे-छोटे परों जैसे। उसकी झिझक भी पहले होंठों पर ही प्रकट हुई—वे संदेह से फड़फड़ा रहे थे।

(वह उसे उस अंधी गोलाबारी के बारे में क्या बता सकती थी जो अपने जवानों को भी उसी आनन्द के साथ काट फेंकती है जिस आनन्द के साथ शत्रु के जवानों को!

"वास्तव में मुझसे यह अपेक्षा नहीं की जाती···खैर! वास्तविकता यह है कि एक्स-रे किरणें हर वस्तु को नष्ट कर देती हैं जिस पर भी वे पड़ती हैं, अन्तर केवल यह है कि जहाँ सामान्य शिराएं तेजी से फिर से स्वस्थ हो जाती हैं वहां रसौली की शिराएं दोबारा जीवित नहीं हो पातीं।"

बहुत संभव है कि उसने जो कुछ कहा वह सही हो और यह भी हो सकता है कि गलत हो। फिर भी उसकी बात सुनकर कोस्तोग्लोतोव को प्रसन्नता हुई थी। "ठीक है, अगर ऐसा है तो मैं इलाज कराऊंगा। धन्यवाद—अब मुझे विश्वास है कि मैं अच्छा हो जाऊंगा।"

—और वास्तविकता भी यही है कि वह अच्छा हो रहा था। वह बड़ी उत्सुकता और आतुरता के साथ एक्स-रे मशीन के नीचे लेटता और बैठक के दौरान रसौली की शिराओं को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करता कि वे टूट रही हैं। अन्य अवसरों पर वह एक एक्स-रे की ट्यूब के नीचे लेटा हर वह बात सोचता रहता जो उसके दिमाग में आती और कभी-कभी तो ऊंघ भी जाता।

इस समय उसकी आंखें लटकते हुए पाइपों और तारों पर केन्द्रित थीं और वह यह जानना चाहता था कि उनकी संख्या इतनी अधिक क्यों है?—और अगर

ठंडा करने वाला कोई सिस्टम है तो वह पानी से चलता है या तेल से ? लेकिन इसप्रश्न पर उसके विचार अधिक समय तक केन्द्रित न रह पाए—वह किसी भी स्पष्टीकरण से अपनी जिज्ञासा शांत नहीं कर सकता था।

यकायक उसने वेरा गैंगार्त के बारे में सोचना शुरू कर दिया। उशतेरेक में ऐसी मोहक स्त्री कभी नहीं दिखाई दी। ऐसी स्त्रियाँ सदैव ही विवाहित होती हैं। बहरलाल वह उसके पति को एक अवांतर या अप्रासंगिक मानकर केवल गैंगार्त के बारे में सोच रहा था। वह सोच रहा था कि यह कितना अच्छा हो कि वह एक क्षण के लिये उससे बातचीत करे और वह क्षण बहुत लम्बा हो या फिर वह उसके अस्पताल के अहाते में उसके साथ चहल कदमी करे। कभी-कभी वह अपनी कटु बातों से उसे आघात भी पहुँचा देता था। अपनी परेशानी की हालत में वह कितनी अजीब और हास्यास्पद लगती थी! वह जब भी मुस्कराती उसकी भलमनसाहत एक सूरज की तरह चमकने लगती-फिर भले ही संयोगवश गलियारे में आपको मिल गई हो या कि वार्ड में आई हो। उसकी सुशीलता और सहृदयता का कारण उसका पेशा नहीं था—यह उसकी प्रकृति थी—वह स्वभावतः सहृदय एवं सौम्य थी। उसकी मुस्कान अत्य-धिक सौम्य एवं सहृदय थी बल्कि सहृदय उसकी मुस्कान नहीं, उसके होंठ थे। उसके होंठों में जीवन था और वे एक-दूसरे से इस ढंग से अलग थे जैसे वे उसके चेहरे से अलग होकर लवा पक्षी की तरह आकाश में उड़ान भरना चाहते हों। अन्य होंठों की तरह वे भी बने इसीलिये थे कि उनका चुम्बन लिया जाए—लेकिन उनके ऊपर कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी था—प्रकाश और सौन्दर्य के गीत गाना।

ट्यूब मध्यम स्वर में भनभना रही थी और इस भनभनाहट में एक संगीत भी था।

वह वेरा गैंगार्त के बारे में सोच रहा था लेकिन साथ ही वह जोया के बारे में भी सोच रहा था। जो चीज पहली रात से बार-बार उसके मस्तिष्क में घूम रही थी वे उसके सुन्दर स्तन थे जो समानांतर छज्जों की तरह सजे हुए थे। कल जब वे गपशप में लगे हुए थे तो रजिस्टरों पर लकीर खींचने वाला एक भारी रूलर रजिस्टरों के पास मेज पर रखा हुआ था। यह रूलर प्लाईवुड का नहीं बल्कि चिनार की लकड़ी का था। सारी शाम उसके दिल में यह लालच सिर उठाता रहा कि यह रूलर उठाकर उसके स्तनों के छज्जे पर रख दे—यह देखने के लिये कि वह रूलर लुढ़कता है कि नहीं। उसका अपना ख्याल यह था कि वह लुढ़केगा नहीं।

पेंट के नीचे उसके शरीर पर जो सीसा-मिश्रित भारी चादर पड़ी हुई थी वह भी उसे याद आ रही थी और कृतज्ञता की भावना पैदा कर रही थी। यह चादर उसे सुखद आश्वासन दे रही थी—"मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी—तुम डरो

मत !"

लेकिन हो सकता है कि यह चादर रक्षा न कर सके। बहुत संभव है कि यह पर्याप्त मोटी न हो या यह कि उसे सही ढंग से सही स्थान पर न रखा गया हो।

पिछले बारह दिनों के दौरान सिर्फ यही नहीं कि कोस्तोग्लोतोव जीवन की तरफ लौट आया, उसके दिल में खाने की इच्छा पैदा हुई, घूमने-फिरने को जी चाहने लगा और वह उल्लासपूर्वक बातें करने लगा, बल्कि उसके हृदय में जीवन की वह सुन्दरतम भावना भी लौट आई जो गत कुछ महीनों के संताप एवं शारीरिक कष्ट में पूरी तरह गायब हो चुकी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि सीमा-मिश्रित चादर वास्तव में उसकी रक्षा कर रही है।

फिर भी उसके लिये आवश्यक यही था कि वह उसी समय क्लिनिक से जाए जबकि उसका स्वास्थ्य ठीक हो।

उसने इस ओर ध्यान तक नहीं दिया कि ट्यूब की भनभनाहट खत्म हो गई है और लाल तार ठंडे होने लगे हैं। नर्स अन्दर आई और उसने प्लेटें और चादरें हटानी शुरू कर दीं। वह कोच से उठकर अपने पांवों पर खड़ा हुआ और उसके पेट पर जो जामुनी वर्ग और अंक बने हुए थे उन्हें ध्यान से देखा।

"इस सबके साथ मैं नहा कब सकता हूं?" उसने नर्स से पूछा।

"केवल डॉक्टर की अनुमति से!"

"क्या ही सुखद स्थिति है! आखिर इसका उद्देश्य क्या है? क्या यह सब एक महीने तक यों ही रहेगा।"

वह दोन्तसोवा से मिलने गया। वह समीप के एक्स-रे लेने वाली मशीनों के कमरे में बैठी हुई थी और अपने चश्मे के चौकोर शीशों से, जिनके कोने गोलाए हुए थे, रोशनी में कुछ बड़ी-बड़ी एक्स-रे फिल्मों की जांच-पड़ताल कर रही थी। दोनों मशीनों के स्विच बन्द थे, दोनों खिड़कियां खुली हुई थीं और कमरे में और कोई नहीं था।

"बैठ जाओ!" दोन्तसोवा ने रुखाई से कहा।

वह बैठ गया और वह एक्स-रे फिल्मों की जांच-पड़ताल करती रही।

कोस्तोग्लोतोव उससे तर्क-वितर्क अवश्य करता था, लेकिन उसका उद्देश्य दवाओं की बहुलता से बचना था जो कि निर्देशानुसार उसे दी जानी थीं। जहां तक स्वयं लुदमिला अफानासएवना का सम्बन्ध है, वह केवल आत्म-विश्वास प्रदान करती थी। इस आत्म-विश्वास प्रदान करने में उसके पुरुषोचित निर्णयात्मक ढंग का ही नहीं, बल्कि उन स्पष्ट आदेशों का भी हाथ था जो वह अंधेरे में एक्स-रे के परदे को देखते समय दिया करती थी। इस आत्मविश्वास प्रदान करने में उसकी आयु और अपने काम के प्रति निर्विवाद लगन का ही हाथ नहीं था, बल्कि उसके आत्मविश्वासपूर्ण ढंग का भी हाथ था जिसका अन्दाज़ा

कोस्तोग्लोतोव को पहले ही दिन हो गया था जब उसने अपनी रसौली के किनारों को छुआ और रसौली की परिधि का एकदम ठीक अन्दाजा लगा लिया था। रसौली पर एकदम ठीक-ठीक हाथ रखा गया है। कुछ-कुछ उसने भी महसूस कर लिया था। यह बात एक मरीज ही बता सकता है कि डॉक्टर अपनी उंगलियों से रसौली को ठीक-ठीक भांप रहा है या नहीं। दोन्तसोवा ने उसकी रसौली को इतने सही तौर पर महसूस कर लिया था कि एक्स-रे फोटो की जरूरत ही नहीं रही थी।

उसने एक्स-रे के चित्रों को एक ओर रख दिया, चश्मा उतार लिया और कहा —"कोस्तोग्लोतोव तुम्हारे रोग के विवरण में एक बहुत बड़ी खाई है। तुम्हारी प्राथमिक रसौली की प्रकृति निश्चयात्मक रूप से जान लेना हमारे लिए अत्यावश्यक है।"

जब दोन्तसोवा डॉक्टरों की तरह बात करती थी, तो वह कहीं अधिक जल्दी-जल्दी बोलती थी। एक ही सांस में वह बड़े-बड़े वाक्य और कठिन शब्द-पद बोल जाती। "अपने गत वर्ष से पहले वर्ष हुए ऑपरेशन और वर्तमान दूसरी रसौलियों के बारे में जो कुछ तुमने बताया है वह हमारे अपने रोग-निदान में मेल खाता है, लेकिन कुछ और संभावनाएं भी हो सकती हैं जिन्हें रद्द नहीं किया जा सकता और यह बात हमारे लिए तुम्हारे इलाज को पेचीदा बना रही है। यह बात तो तुम समझते ही हो कि तुम्हारी दूसरी रसौलियों का नमूना लेना अब हमारे लिये संभव नहीं है।"

"खुदा का शुक्र है! मैं तुम्हें लेने भी न दूंगा।"

"मेरी समझ में अब भी यह बात नहीं आ रही है कि तुम वे स्लाइडें क्यों प्राप्त नहीं कर सकते हो जिन पर तुम्हारी पहली रसौली के फोटो हैं। क्या तुम्हें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास है कि तन्तुशास्त्रीय (हिस्टोलौजिकल) विश्लेषण हुआ था ?"

"हां, मुझे पूरा विश्वास है।"

"उस स्थिति में तुम्हें विश्लेषण का परिणाम क्यों नहीं बताया गया था ?"

वह एक व्यस्त व्यक्ति के लहजे में जल्दी-जल्दी बोली, कुछ शब्द वह छोड़ गई—जिनके बारे में अनुमान ही लगाया जा सकता था।

लेकिन कोस्तोग्लोतोव जल्दबाजी की आदत छोड़ चुका था। "परिणाम—? लुदमिला अफानासएवना जहां हम थे वहां ऐसी तूफानी घटनाएं हो रही थीं, वे एक ऐसी असाधारण स्थिति थी, तुम मुझ पर यकीन करो कि अपने रोग-निदान जैसी साधारण बात के लिए पूछताछ करना मेरे लिये शर्मनाक होता। सिर लुढ़क रहे थे। और मैं यह भी तो नहीं समझता था कि यह जीवोतिपरीक्षा (बाइप्सी) है किस चीज की। डॉक्टरों से बात करते समय कोस्तोग्लोतोव को डाक्टरी शब्दावली बोलना अच्छा लगता था।

"यह तो ठीक है कि तुम खुद नहीं समझे, लेकिन डाक्टर तो समझ गए होंगे। ये बातें ऐसी नहीं हैं जिन्हें साधारण समझा जाये और जिनके साथ खिलवाड़ की जा सके।"

"डॉक्टर ?"

उसने उसकी तरफ देखा—उसके सफेद होते हुए बालों की तरफ देखा, जिन्हें वह न तो छुपाती थी ना ही रंगती थी, और उसके चेहरे की, जिसकी गाल की हड्डियां काफी उजागर थीं, व्यावसायिक एवं गम्भीर मुद्रा पर ध्यान दिया।

क्या यह जीवन का विचित्र पहलू नहीं था ? यह उसकी अपनी देशवासी उसकी समकालीन और उसकी शुभचिंतक बैठी है। वे दोनों अपनी भाषा में बात-चीत कर रहे हैं—यह भाषा उन दोनों की ही अपनी भाषा है, लेकिन इसके बावजूद वह उसे एक साधारणतम बात नहीं समझ पाया है। ऐसा लगता है कि बात बहुत पीछे से शुरू करनी होगी—नहीं तो स्पष्टीकरण का सिलसिला फौरन ही खत्म करना होगा।

"लुदमिला अफानासएवना ! डाक्टर कुछ भी नहीं कर सकते थे। पहला सर्जन यूक्रेनी था। उसने निर्णय किया कि मेरा ऑपरेशन होना चाहिए और उसके लिए मुझे तैयार किया, लेकिन ऑपरेशन से सिर्फ एक रात पहले उसे कैदियों की गाड़ी में बिठा दिया गया।"

"फिर ?"

"फिर कुछ भी नहीं—वे उसे ले गए।"

"मुझे अफसोस है···उसे वार्निंग तो दी गई होगी। वह यह कर सकता था कि···"

कोस्तोग्लोतोव की हँसी फूट पड़ी। लुदमिला की बात उसके लिए बेहद मनोरंजक थी। "लुदमिला अफानासएवना गाड़ी के सम्बन्ध में कोई चेतावनी नहीं देता। महत्त्वपूर्ण बात तो यही है। वे तुम्हें अचानक ही झपट ले जाना चाहते हैं।"

दोन्तसोवा के चौड़े माथे पर शिकन पड़ गई—कोस्तोग्लोतोव निश्चय ही बकवास कर रहा है।

"लेकिन उस सूरत में भी जबकि उसके एक मरीज का ऑपरेशन होने वाला था···?"

"हुंह ! मेरी बात सुनो—वे एक लिथुआनियन को लेकर आए जिसकी हालत मुझसे भी ज्यादा ख़राब थी। उसने एक चम्मच निगल लिया था—मेज़ पर इस्तेमाल करने का ऐल्युमुनियम का चम्मच।"

"लेकिन आखिर यह मुमकिन कैसे हुआ ?"

"उसने यह जान-बूझ कर और एक खास मकसद से किया था। वह

एकांत से छुटकारा पाना चाहता था। यह बात उस बेचारे को कैसे मालूम हो सकती थी कि वे डाक्टर को दूर ले जा रहे हैं।"

"तो आगे क्या हुआ ? क्या तुम्हारी रसौली तेज़ी से बढ़ रही थी ?"

"हां, सुबह से शाम तक बिल्कुल यही हो रहा था। फिर पाँच दिन बाद वे एक दूसरे कंपाउण्ड से एक नया सर्जन ले आए। वह जर्मन था—कार्ल फाईदोरोविच। वह अपने नए काम में लग गया और एक या दो दिन बाद उसने मेरा ऑपरेशन कर दिया। लेकिन 'घातक रसौली' और 'दूसरी रसौलियों' के बारे में मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया। मैंने तो उनका नाम तक नहीं सुना था।"

"लेकिन उसने कीटाणुपूर्ण मवाद मुआइने के लिए तो भेजा होगा ?"

"उस समय मुझे कुछ पता नहीं था। मुझे कीटाणुपूर्ण मवाद जैसा किसी चीज की कोई खबर नहीं थी। मैं ऑपरेशन के बाद सिर्फ वहाँ लेटा रहा था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मेरे ऊपर रेत के वज़नी थैले रखे हों। सप्ताह के अन्त तक मैं अपने पांवों को हिलाने-डुलाने और बिस्तर से उठकर फर्श पर खड़ा होने योग्य हो गया। यकायक वे कैदियों की एक और गाड़ी भरने के लिए कैम्प का चक्कर लगाने लगे।

उनका कहना था कि उन्हें लगभग सात सौ 'उत्पातियों' की तलाश है और कार्ल फाईदोरोविच, जो एक भद्रतम व्यक्ति था, उन सात सौ में से एक था। वे उसे उसके निवास स्थान से सीधा ही ले गए। उसे इसकी भी अनुमति नहीं दी गई कि वह अपने मरीजों को आखिरी बार देख सके।"

"बेहूदगी !"

"खालिस बेहूदा बात सुनने के लिए अभी कुछ और इन्तजार करो।" कोस्तोग्लोतोव जोश में आता जा रहा था—"एक मित्र दौड़ा-दौड़ा आया और फुसफुसाकर बोला कि मेरा नाम भी उन लोगों की सूची में है जिन्हें गाड़ी में भरा जाना है। अस्पताल की इंचार्ज—मादाम दुबिन्स्काया—ने अपनी सहमति दे दी थी—हालांकि वह अच्छी तरह जानती थी कि मैं चल भी नहीं सकता था और अभी मेरे टांके भी नहीं खोले गये थे।—कुतिया कहीं की ! माफ करना··· खैर मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया। पशुओं के ट्रक में सफर करना—और वह भी तब जबकि मेरे टांके भी नहीं खुले थे—छूत और मृत्यु को निमंत्रण देना था।—इसलिए मैंने सोचा कि जब वे मुझे लेने आएंगे तो मैं उनसे कह दूंगा कि मुझे यहीं बिस्तर पर ही गोली मार दो—मैं कहीं जाऊंगा नहीं। मैं उनसे बिलकुल यही कहता, लेकिन वे मुझे लेने आये ही नहीं। इसमें मदाम दुबिन्स्काया की सहृदयता का कोई हाथ नहीं था—वह तो यह सुनकर उलटे हैरान हुई थी कि मुझे बुलाया नहीं गया। बात यह थी कि उन्होंने रजिस्ट्रेशन विभाग में छान-बीन कर ली थी और उन्हें मालूम हो गया था कि मेरे अव-

काश प्राप्त करने में एक वर्ष से भी कम समय बाकी है। लेकिन मैं असल नुक्ते से हट गया हूँ ··· बहरहाल, मैं खिड़की के पास गया और बाहर झांका। अस्पताल की इमारत के पीछे कोई बीस मीटर की दूरी पर एक परेड ग्राउंड था—वहां सब लोगों को उनकी छोटी-मोटी चीजों के साथ गाड़ी में भरने के लिए वे उन्हें जमा कर रहे थे। कार्ल फाईदोरोविच ने मुझे खिड़की में खड़े देख लिया और वह जोर से चीखा—'कोस्तोग्लोतोव, खिड़की खोलो!' गार्ड ने उसे गाली दी—ओ हरामी चुप रह!' लेकिन वह पूरे जोर से चीखा—'कोस्तोग्लोतोव इसे याद रखना, यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है। मैंने तुम्हारी रसौली का कुछ भाग तंतुशास्त्रीय विश्लेषण के लिए ओम्स्क भेजा है—रोगनिदान-विश्लेषण-विभाग में—याद रखना!' खैर वे उन्हें गाड़ी में भर कर ले गए। ये थे मेरे पहले डॉक्टर—तुम्हारे पूर्वाधिकारी—क्या तुम उन पर दोषारोपण कर सकती हो?"

कोस्तोग्लोतोव अपनी कुर्सी में पीछे की ओर गिर पड़ा। अपने पहले अस्पताल के वातावरण में उलझ कर वह बुरी तरह थक गया था।

अनिवार्य को अप्रासंगिक से अलग करते हुए (मरीजों की कहानियों में बहुत कुछ अप्रासंगिक होता है) दोन्तसोवा ने अपने मतलब का सिरा पकड़ा—

"ओम्स्क से क्या उत्तर आया? क्या वहां कुछ था? क्या उन्होंने तुम्हें कुछ बताया?"

कोस्तोग्लोतोव ने अपने कंधे उचका दिए—"मुझे किसी ने कुछ नहीं बताया और मैं समझ नहीं सकता था कि कार्ल फाईदोरोविच ने मुझे वह बात चिल्ला कर क्यों बताई थी लेकिन देश निकाले के दौरान पिछले पतझड़ में जब मेरी बीमारी मुझ पर सचमुच हावी हो गई थी तो स्त्री-रोगों के एक पुराने विशेषज्ञ ने, जो मेरा मित्र था, आग्रह करना शुरू किया कि मैं पूछताछ करूं। इसलिए मैंने अपने कैम्प को लिखा, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। तब मैंने कैम्प के प्रशासन विभाग को शिकायत लिखी। लगभग दो महीने बाद वहां से उत्तर मिला—'तुम्हारी व्यक्तिगत फाइल की सावधानीपूर्वक जांच पड़ताल कर लेने के बाद ऐसा लगता है कि तुम्हारी बीमारी के विश्लेषण के बारे में कुछ भी पता चलना संभव नहीं है।' इस समय तक यह रसौली इतनी खराब हो चुकी थी और मैं इतना बीमार था कि मैं हर प्रकार के पत्राचार को तिलांजलि दे देने को तैयार था। लेकिन देश निकाला भुगत रहे लोगों की निगरानी करने वाला पुलिस अधिकारी मुझे इलाज के लिए भेजने को तैयार ही नहीं था इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न ओम्स्क को लिख दिया जाए। मैंने रोग-निदान विश्लेषण विभाग को लिखा और कुछ ही दिन में मुझे वहां से उत्तर भी मिल गया। यह जनवरी की बात है—उससे पहले की जब उन्होंने मुझे यहां आने की अनुमति दी।"

"खैर, लाओ दिखाओ! उन्होंने क्या लिखा है? उनका क्या उत्तर है?"

"लुदमिला अफानासएवना! जब मैं यहां आया था तो मुझे और किसी चीज़ की क्या चिन्ता हो सकती थी! वह कागज का एक पुर्जा भर था। वह उत्तर न तो अस्पताल के किसी लेटर हैड पर आया था और ना ही उस पर कोई मुहर लगी हुई थी—वह तो विभाग की प्रयोगशाला में काम करने वाली एक कर्मचारी का पत्र था। उसने बड़ी कृपा करके यह लिख दिया था कि ठीक उस तारीख को जो मैंने लिखी थी, ठीक उस स्थान से, जहां मैं उन दिनों था, एक नमूना मुआइने के लिए आया था और विश्लेषण के बाद इस बात की पुष्टि हो गई थी कि जिस प्रकार की रसौली का मुझे हमेशा शक रहा था वह वही थी और यह कि जिस अस्पताल ने पूछताछ की थी उसे—अर्थात हमारे कैम्प के अस्पताल को—जवाब भेज दिया गया था। इसके बाद वही हुआ जो इस किस्म के मामलों में आमतौर पर होता है। मुझे पूरा-पूरा विश्वास है कि जवाब ज़रूर आया होगा, लेकिन किसी को यह मालूम करने की ज़रूरत ही नहीं थी कि क्या जवाब आया है और मादाम दुबिन्स्काया···"

नहीं, दोन्तसोवा के लिए इस प्रकार के तर्क को समझना संभव नहीं था। उसने अपनी बाहें एक दूसरी पर रखी हुई थीं और कुहनियों के ऊपर के भाग को उंगलियों से थपथपा रही थी।

"लेकिन उस पत्र का अर्थ यह होना चाहिए था कि तुम्हें तुरन्त ही एक्स-रे उपचार की आवश्यकता है।"

"क्या?" कोस्तोग्लोतोव ने अपनी आंखें मज़ाकिया ढंग से सिकोड़ीं और उसकी ओर देखते हुए पूछा—"एक्स-रे उपचार?"

अच्छा तो मामला यह है! वह चौथाई घंटे से उससे बात कर रहा था—और परिणाम यह निकला था—वह अब भी कुछ नहीं समझ रही थी।

"लुदमिला अफानासएवना," उसने उससे सानुरोध कहा—"वहां की स्थिति को समझने के लिए···सच यह है कि उसकी कल्पना बहुत ही कम लोग कर सकते हैं। तुम एक्स-रे उपचार की बात करती हो? जहां उन्होंने आपरेशन किया था मैं वहां अभी तक दर्द अनुभव कर रहा था—उदाहरणार्थ जैसा कि अब अहमदजान अनुभव कर रहा है। लेकिन मैं अपनी ड्यूटी पर पहुंच चुका था—कंक्रीट फेंकने के काम पर—और मुझे यह तक नहीं सूझा था कि मुझे असंतुष्ट होने का अधिकार था। क्या तुम्हें मालूम है कि पतले कंक्रीट का गहरा पीपा, जो दो व्यक्तियों को उठाना पड़ता है, कितना भारी होता है?"

दोन्तसोवा ने अपना सिर झुका लिया जैसे कि उसे कंक्रीट ढोने उसी ने भेजा हो। हां, उसके रोग के पूरे विवरण की जानकारी प्राप्त कर पाना वास्तव ही में एक कठिन काम था।

"खैर, लेकिन रोग-निदान-विश्लेषण विभाग के उत्तर के बारे में तुम क्या

कहते हो ? उस पर कोई मुहर क्यों नहीं थी और वह एक निजी पत्र क्यों था ?"

"मैं तो निजी पत्र तक पाने पर कृतज्ञ था," कोस्तोग्लोतोव अब भी उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न कर रहा था—"प्रयोगशाला में काम करने वाली कर्मचारी संयोग से एक कृपालु एवं सहृदय महिला थी। वैसे भी पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ अधिक कृपालु और सहृदय तो होती ही हैं—कम-से-कम मेरा तो यही अनुभव है···पत्र निजी क्यों था ? इसलिए क्योंकि हम गोपनीयता के पीछे पागल हैं। बाद में उसने लिखा था—'रसौली का नमूना हमें गुमनाम भेजा गया था। उस पर किसी रोगी का कुल-नाम नहीं लिखा था। इस स्थिति में हम तुम्हें सरकारी सर्टिफिकेट नहीं दे सकते हैं और ना हम तुम्हें नमूने की स्लाइडें ही दे सकते हैं।'" कोस्तोग्लोतोव नाराज होता जा रहा था। उसके चेहरे पर अन्य भावों की अपेक्षा क्रोध कहीं अधिक जल्दी प्रकट हो जाता था। "क्या ही सरकारी रहस्य है! उन्हें डर है कि किसी विभाग में वे पता लगा लेंगे कि किसी कैम्प में कोस्तोग्लोतोव नाम का एक कैदी सड़ रहा है। फ्रांस नरेश का जुड़वां भाई! इसलिए गुमनाम खत वहां पड़ा रहेगा और तुम यहां अपना सिर खपाती रहोगी कि मेरा इलाज कैसे किया जाए। बहरहाल, उन्होंने तो अपना रहस्य छुपा ही लिया है।"

दोन्तसोवा की नजरें अब भी दृढ़ एवं स्पष्ट थीं। वह अपनी बात पर अड़ी हुई थी—"फिर भी, वह पत्र तो मुझे तुम्हारी रोग-विवरण-पुस्तिका में लगाना ही होगा।"

"ठीक है, जब मैं अपने गांव वापस जाऊंगा तो तुम्हें भेज दूंगा।"

"नहीं, मुझे उसकी पहले ही जरूरत है। क्या यह संभव नहीं है कि स्त्री-रोगों का विशेषज्ञ तुम्हारा मित्र ढूंढ़ कर उसे भेज दे ?"

"हां, मैं समझता हूं कि वह ऐसा कर सकता है···लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं खुद वहां कब वापस जा सकूंगा ?"—कोस्तोग्लोतोव ने गंभीरता से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"तुम घर जाओगे," दोन्तसोवा ने अपने एक-एक शब्द को तोलते हुए बल देकर कहा, "तब जब मैं यह समझूंगी कि उपचार कुछ दिन के लिए रोका जा सकता है। तब भी तुम केवल अस्थायी रूप से ही जा सकोगे।"

कोस्तोग्लोतोव वार्तालाप में इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था। वह इस क्षण को बिना लड़े गुज़र जाने देना नहीं चाहता था।

"लुदमिला अफानासएवना! क्या तुम बातचीत के अपने इस ढंग से मुक्ति नहीं पा सकती हो ? तुम्हारा यह ढंग ऐसा है जैसे कि कोई बुजुर्ग किसी बच्चे से बात कर रहा हो। इस तरह बात क्यों न की जाए जैसे एक वयस्क एक वयस्क से करता है। सच मानो, यह बात मैं पूरी गंभीरता से कह रहा हूँ कि

आज सुबह जब तुम राउंड पर थीं तो…"

"हां, आज सुबह जब मैं राउंड पर थी," दोन्तसोवा ने धमकी भरे स्वर में कहा, "तो तुमने एक शर्मनाक हरकत की थी। आखिर तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो, मरीजों को घबरा देना ? तुम उनके दिल-दिमाग में क्या कुछ भर रहे हो ?"

"क्या करने की कोशिश कर रहा हूं।" वह गर्म हुए बिना लेकिन पूरी दृढ़ता से बोला। वह तन कर बैठ गया उसकी पीठ मजबूती से कुर्सी से लगी थी। "मैं तुम्हें सिर्फ यह याद दिला रहा था कि मुझे यह अधिकार प्राप्त है कि अपनी जिन्दगी के साथ जो चाहूँ, करूं। एक आदमी अपनी जिन्दगी के साथ जो चाहे कर सकता है—क्यों, नहीं कर सकता क्या ? तुम इससे तो सहमत हो न कि मुझे यह अधिकार तो प्राप्त है ही ?"

दोन्तसोवा ने उसके घाव के रंगहीन घुमावदार निशान की ओर देखा और खामोश रही। कोस्तोग्लोतोव ने अपनी दलील को जारी रखते हुए कहा—

"देखो, तुम शुरूआत ही एकदम गलत नुक्ते से करती हो। जैसे ही कोई मरीज़ तुम्हारे पास आता है, तुम उसकी ओर से सब कुछ खुद ही सोचना शुरू कर देती हो। इसके बाद हर बात का निर्णय, तुम्हारी योजनाओं और तुम्हारे चिकित्सा विभाग के सम्मान पर निर्भर होता है। इस तरह एक बार फिर मैं बालू का एक कण मात्र बनकर रह जाता हूँ—जैसा कि मैं कैम्प में था। एक बार फिर कोई भी बात मुझ पर निर्भर करती।"

"क्लिनिक हर ऑपरेशन से पहले मरीज़ से लिखित सहमति लेता है।" दोन्तसोवा ने उसे याद दिलाया।

(उसने ऑपरेशन का जिक्र क्यों किया ? वह अपना ऑपरेशन कभी भी और किसी भी कीमत पर नहीं होने देगा।)

"धन्यवाद ! इसके लिए, खैर, तुम्हारा धन्यवाद ! चाहे अपनी ही सुरक्षा के लिए सही, लेकिन क्लिनिक कम-से-कम इतना करता अवश्य है। अगर ऑपरेशन न होना हो तो मरीज़ से कुछ भी नहीं पूछा जाता और तुम लोग हो किसी चीज को समझाते नहीं। लेकिन एक्स-रे किरणों का भी कुछ असर तो अवश्य ही होता होगा ?"

"एक्स-रे किरणों के बारे में ये सब अफवाहें तुम्हें कहां से मिलीं ?" दोन्तसोवा ने अनुमान लगाते हुए पूछा—"क्या राबिनोविच से ?"

"मैं किसी राबिनोविच को नहीं जानता," उसने दृढ़ता के साथ अपना सिर हिलाते हुए कहा—"मैं तो उसके सिद्धांतों की बात कर रहा हूँ।"

(सचाई यह है कि एक्स-रे किरणों के परिणामों के बारे में ये निराशा जनक कहानियां उसने राबिनोविच ही से सुनी थीं, लेकिन उसने वचन दे रखा था कि वह किसी को उसका नाम नहीं बताएगा। राबिनोविच एक बाहरी

(आउटडोर) मरीज़ था जो अब तक दो सौ बार से अधिक एक्स-रे मशीन के सामने बैठ चुका था। इससे उसे काफी नुकसान पहुंचा था और प्रतिदर्जन बैठकों के बाद उसने अनुमान किया था कि वह स्वास्थ्य लाभ की अपेक्षा मृत्यु के कहीं अधिक निकट पहुंच रहा है। जहाँ वह रहता था वहां कोई भी उसे जानता न था—न उसके फ्लैट मे, न उसके ब्लाक में, और न उसकी गली में। वे सब स्वस्थ लोग थे जो सुबह से शाम तक भाग दौड़ करते और सफलताओं व असफलताओं के बारे में सोचते रहते। उनके लिए ये ही चीजें सर्वाधिक महत्वपूर्ण थीं। उसके घर वाले भी उससे आजिज़ आ चुके थे। कैंसर क्लिनिक की सीढ़ियां ही एकमात्र जगह थी जहां मरीज़ उसकी ओर ध्यान देते, घंटों उसकी बात सुनते और उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते। इन्हीं को यह मालूम था कि जब किसी व्यक्ति के शरीर का एक छोटा-सा तिकोना भाग हड्डी जैसा कठोर हो जाता है और खाल के उन भागों पर, जिनमें एक्स-रे किरणें घुपती हैं, मोटे मोटे चकत्ते पड़ जाते हैं तो आदमी क्या कुछ अनुभव करता है।)

निस्संदेह वह 'सिद्धांतों' की ही बातें कह रहा था। दोन्तसोवा और उसकी सहयोगियों को यही चाहिए था कि वे कई-कई दिन तक मरीजों के साथ उन सिद्धांतों पर बातचीत करती रहें जिनके अनुसार उनका उपचार किया जा रहा था। लेकिन तब उनके पास उपचार करने के लिए समय कहां बचता?

कभी-कभी कोई जिद्दी और ज्ञान का सतर्क प्रेमी, जैसा कि राबिनोविच या यह कोस्तोग्लोतोव था, पचास मरीज़ों की टोली में से निकल खड़ा होता, उसे पकड़ता और और अपनी बीमारी के सिलसिले में उससे स्पष्टीकरण मांगने लगता। जब कभी भी ऐसा होता तो स्पष्टीकरण देना टाल पाना असंभव हो जाता। काम कठिन सही, लेकिन उससे बच निकलना तो संभव नहीं था।—और कोस्तोग्लोतोव का मामला तो चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से भी एक विशेष महत्व रखता था क्योंकि अब तक उसके प्रति साधारण उपेक्षा और लापरवाही बरती गई थी। उस समय तक, जब उसे उपचार कराने की अनुमति मिली, और उसका केस दोन्तसोवा के हाथ में आया, ऐसा मालूम होता था कि उसके विरुद्ध कोई विद्वेषपूर्ण षड्यंत्र चलाता रहा था जिसका उद्देश्य उसे मृत्यु की सीमा के अधिकाधिक समीप धकेल देना था। उसका केस इसलिए भी एक विशेष प्रकार का था क्योंकि एक्स-रे किरणों से उपचार प्रारंभ होते ही उसे असाधारण गति से स्वास्थ्य लाभ होना शुरू हो गया था।

"कोस्तोग्लोतोव! एक्स-रे किरणों में बारह बार बैठने से किरणों ने तुम्हें एक लाश से एक जीवित व्यक्ति में परिवर्तित कर दिया है। आखिर तुम इस उपचार-विधि की आलोचना कैसे कर सकते हो? तुम्हें शिकायत है कि कैम्प में या देश निकाले के दौरान तुम्हारा कोई उपचार नहीं किया गया, तुम्हारी उपेक्षा की गई और एक ही सांस में तुम इसकी भी शिकायत करते हो कि अब लोग

तुम्हारा उपचार कर रहे हैं, तुम पर ध्यान दे रहे हैं। यह कौन-सी तर्क पद्धति है ?"

"निश्चय ही कोई तर्क-पद्धति नहीं है," कोस्तोग्लोतोव ने अपना मोटे-मोटे बालों वाला सिर हिला दिया। "लेकिन लुदमिला अफानासएवना तर्क संभवतः आवश्यक भी नहीं। आखिर तो व्यक्ति एक उलझी हुई हस्ती ही तो है— क्या जरूरी है कि तर्क से उसका विवेचन-विश्लेषण या स्पष्टीकरण किया ही जा सके ? —या अर्थशास्त्र या फिर शरीर विज्ञान के माध्यम से उसे समझा ही जा सके ? हाँ, यह सच है कि जब मैं यहां आया था तो एक लाश था। मैंने भीख मांगी थी कि मुझे दाखिल कर लिया जाए और सीढ़ियों के नीचे फर्श पर लेटा हुआ था और उससे तुमने यह तर्क संगत निष्कर्ष निकाल लिया कि मैं यहां इसलिए आया हूं कि मुझे हर कीमत पर बचा लिया जाए। लेकिन मैं हर कीमत पर बचना नहीं चाहता। दुनिया में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसके लिए मैं हर कीमत देने को तैयार हो जाऊं।" वह ज्यादा ज़ल्दी-जल्दी बोलने लगा था। यों जल्दी-जल्दी बोलना उसे पसंद नहीं था, लेकिन दोन्तसोवा बीच में टोकने की कोशिश कर रही थी जबकि उसे इस विषय पर अभी बहुत कुछ कहना था। "मैं तुम्हारे पास इसलिए आया था कि कष्ट से मुझे मुक्ति दिलाई जाये। मैंने कहा था कि मैं भयंकर कष्ट में हूं, मेरी सहायता कीजिए।— और तुमने सचमुच सहायता की। मुझे कोई कष्ट नहीं है। धन्यवाद ! मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ और ऋणी हूँ। लेकिन अब कृपया मुझे जाने दो। मुझे इजाज़त दो कि मैं कुत्ते की तरह घिसटता हुआ अपनी मोरी में जा लेटूं और जब तक ठीक न हो जाऊं आराम से अपने घावों को चाटता रहूं।"

"और जब बीमारी तुम्हें फिर से आ दबोचे तो तुम घिसटते हुए फिर हमारे पास लौट आओ ?"

"शायद ! शायद मैं घिसटता हुआ फिर तुम्हारे पास आ जाऊं।"

"—और हमें तुम दाखिल करने पड़ोगे ?"

"हां, तुम्हारी सहायता का प्रमाण यही तो है। आखिर तुम्हें चिन्ता किस बात की है ? स्वास्थ्य लाभ के प्रतिशत की ? अपने रिकार्डों की ? इस बात की कि तुम इस बात का क्या स्पष्टीकरण दोगी कि मुझे पन्द्रह बैठकों के बाद ही जाने की अनुमति दे दी गई जबकि चिकित्सा विज्ञान अकादमी ने कम-से-कम साठ बैठकों का निर्देश दिया था।"

उसने अपने जीवन में इतना ऊल-जलूल और एकदम असंगत प्रलाप पहले कभी नहीं सुना था। सचाई यह है कि जहां तक रिकार्डों का प्रश्न था इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तो यह बात कहीं अधिक लाभदायक थी कि कोस्तोग्लोतोव को अब डिसचार्ज कर दिया जाए और रिकार्डों में लिख दिया जाए— 'उल्लेखनीय सुधार।' पचास बैठकों के बाद तो यह लिखना संभव होगा नहीं।

लेकिन कोस्तोग्लोतोव अपनी बात पर ज़ोर देता रहा।

"जहां तक मेरा संबंध है, मेरे लिए इतना पर्याप्त है कि तुमने रसौली को आगे बढ़ने से रोक दिया है। वह अब सुरक्षात्मक रुख अपनाए हुए है। मेरा रुख भी सुरक्षात्मक ही है। गुड! एक सिपाही के लिए सुरक्षा का जीवन बेहतर होता—यों भी चाहे कुछ भी किया जाए, तुम मुझे पूरी तरह स्वस्थ तो कभी कर नहीं पाओगी। कैंसर के मामले पूर्ण स्वास्थ्य लाभ जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। प्रकृति की समस्त प्रक्रियाओं में कुछ देर के बाद धीमापन आ जाता है और फलदेयता में कमी आने लगती है। एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब जितने प्रयत्न किये जाते हैं उतने ही कम सुफल प्राप्त होते हैं। शुरू-शुरू में मेरी रसौली बड़ी तेजी से टूट रही थी, अब वह धीरे-धीरे टूटेगी। इसलिए मुझे जाने दो जिससे कि खून की जो बूंदें मुझमें रह गई हैं उनसे फायदा उठा सकूँ।"

"मैं यह जानना चाहूंगी कि सब जानकारी तुमने कहां से प्राप्त की है?" दोन्तसोवा की त्यौरियां चढ़ गईं।

"मुझे बचपन ही से चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकें पढ़ने का शौक रहा है।"

"लेकिन हम तुम्हारा जो इलाज कर रहे हैं उसमें तुम ठीक किस बात से डरते हो?"

"लुदमिला अफानासएवना, मुझे किस बात से डरना चाहिए, मैं यह नहीं जानता। मैं कोई डाक्टर नहीं हूं। शायद तुम जानती हो—लेकिन तुम मुझे बताना नहीं चाहतीं। उदाहरणार्थ वेरा कोर्निलएवना चाहती हैं कि मुझे ग्लूकोज़ के इन्जैक्शन दिए जाएं।"

"एकदम अनिवार्य है।"

"लेकिन मैं नहीं चाहता।"

"लेकिन आखिर क्यों?"

"पहली बात यह कि यह अप्राकृतिक क्रिया है। अगर मुझे ग्लूकोज़ की ज़रूरत है तो वह मुँह के रास्ते क्यों न खिलाया जाए। यह बीसवीं शताब्दी का आडम्बर क्यों? यह क्यों ज़रूरी है कि हर दवा इन्जैक्शन से ही दी जाए? तुम्हें प्रकृति में और पशुओं में कोई चीज़ समान नहीं दिखाई देती है—नहीं न? सौ साल के बाद लोग हम पर हंसेंगे और हमें जंगली कहेंगे।—और इन्जैक्शन देने का तरीका भी तो अजीब है। एक नर्स इन्जैक्शन तैयार करती है और दूसरी उसे नस में घोंप देती है। नहीं, मैं यह नहीं कराना चाहता। और हां, अब मुझे पता चला है कि तुम मेरे शरीर में खून चढ़ाने की तैयारियां क्यों कर रही हो..."

"इससे तो तुम्हें खुश होना चाहिए। कुछ लोग तुम्हें अपना खून देने को तैयार हैं। खून चढ़ाने का अर्थ होगा—स्वास्थ्य, जीवन!"

"लेकिन मैं यह नहीं चाहता। उन्होंने एक बार मेरे सामने चेचन को खून

चढ़ाया था। उसके बाद वह तीन घंटे तक अपने बिस्तर पर पड़ा तड़पता रहा था। उनका कहना था कि खून पूरी तरह अनुरूप नहीं था। उसके बाद उन्होंने उसे किसी और का खून दिया, लेकिन इस बार नस ही उनकी पकड़ में नहीं आ पाई। उसकी बांह पर एक बड़ा-सा गुमड़ भर आया। अब एक महीने के लिए पट्टियाँ बंधेंगी और भाप से स्नान कराया जाएगा। मैं यह नहीं चाहता।"

"लेकिन खून चढ़ाए बिना ऐक्स-रे किरणों से प्रभाव कर उपचार असंभव है।"

"तो मत करो! तुम यह क्यों मान लेती हो कि तुम्हें दूसरों के लिए फैसले करने का अधिकार प्राप्त है? क्या तुम यह नहीं मानतीं कि यह अधिकार अत्यधिक खतरनाक है जिसका अच्छा परिणाम शायद ही कभी निकलता हो। तुम्हें सावधान रहना चाहिए। किसी को भी यह अधिकार प्राप्त नहीं है—डाक्टरों को भी नहीं।"

"लेकिन डाक्टरों को यह अधिकार प्राप्त है—चाहे दूसरे लोगों को न हो, डाक्टरों को तो है ही!" दोन्तसोवा ने पूर्ण निष्ठा के साथ कहा। इस वक्त तक वह सचमुच ही नाराज हो गई थी। "इस अधिकार के बिना तो उपचार नाम की कोई चीज़ संभव ही नहीं है।"

"लेकिन यह देखो कि इसका परिणाम क्या निकलता है। बहुत जल्द ही तुम रेडियो-तरंगों के प्रभावों से पैदा होने वाले रोगों पर भाषण करोगी—क्यों, क्या नहीं?"

"तुम्हें यह कैसे पता है?" लुदमिला अफानासएवना सचमुच ही आश्चर्य-चकित थी।

"वास्तव में यह जानना कोई इतना मुश्किल काम तो नहीं। मैंने यह कल्पना कर ली…"

(सच यह है कि बात एकदम सीधी-सादी थी। उसने मेज पर टाइप किये हुए कागज़ों का एक पुलिंदा देख लिया था। हालांकि लेख का शीर्षक उसकी ओर उलटा पड़ता था फिर भी अपनी बातचीत के दौरान वह उसे पढ़ने में सफल हो गया था और उसका अर्थ भी उसने समझ लिया था।)

"…या यह समझलो कि अनुमान लगा लिया। एक नया नाम दिखाई दिया—'रेडियो-तरंगों से पैदा होने वाले रोग', इससे यह निष्कर्ष निकाला कि उनके संबंध में भाषण होंगे। लेकिन ज़रा सोचो—आज से बीस वर्ष पहले तुमने किसी बूढ़े कोस्तोग्लोतोव को रेडियो-तरंगों का शिकार बना दिया—हालांकि वह प्रतिरोध करता रहा कि वह इस इलाज से डरता है। उस समय तुमने उसे आश्वस्त किया था कि यह इलाज एकदम ठीक है क्योंकि उस समय तुम्हें मालूम ही नहीं था कि रेडियो-तरंगों से पैदा होने वाले किसी रोग का भी अस्तित्व है। आज मेरे सामने भी ठीक वही स्थिति है। मैं नहीं जानता कि मुझे किस चीज

से भयभीत समझा जा रहा है। मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मुझे जाने दिया जाए। मैं अपने ही तरीकों से स्वस्थ होना चाहता हूँ। तब सभव है कि मेरी हालत बेहतर हो जाए। क्यों, क्या यह सही नहीं है ?"

डॉक्टरों का केवल एक ही पुनीत सिद्धांत होता है—मरीज़ को भयभीत न किया जाये, उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। लेकिन जब कोस्तोग्लोतोव जैसे ज़िद्दी मरीज़ से पाला पड़ जाये तो एक एकदम उलटी चाल ही चलनी होती है—और वह चाल होती है—सदमा पहुंचाना।

"बेहतर ? नहीं, तुम कभी भी बेहतर नहीं हो पाओगे ! मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ," उसने अपनी चार उंगलियां मेज़ पर इस तरह मारीं जैसे मुरछल से मक्खी को मारा जाता है—"मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूं कि तुम अच्छे नहीं होगे। तुम तो···" उसने कुछ रुककर आघात को मापते हुए कहा—"मरने वाले हो !"

उसने उसकी तरफ यह जानने के लिये देखा कि उसके चेहरे पर कोई बेचैनी या अशांति प्रकट होती है कि नहीं। लेकिन वह सिर्फ खामोश हो गया था—एकदम ख़ामोश !

"तुम्हारा हाल वही होगा जो अज़ोवकिन का है। वह जिस हालत में है, तुम देख चुके हो। बात यह है कि तुम्हें एकदम वही बीमारी है जो अज़ोवकिन को है और तुम दोनों ही एक-सी लापरवाही का शिकार रहे हो। हम अहमदजान को इसलिये बचा पाये हैं क्योंकि ऑपरेशन के तत्काल बाद ही रेडियो-तरंगों से उसका इलाज शुरू कर दिया था। लेकिन जहां तक तुम्हारे केस का संबंध है, दो वर्ष बर्बाद हो चुके हैं—क्या तुम इनकी कल्पना कर सकते हो ? जहां तुम्हारा ऑपरेशन हुआ था उसके पास ही एक-दूसरी नस का भी ऑपरेशन तत्काल ही कर दिया जाना चाहिए था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दिया और फिर शीघ्र ही दूसरी रसौलियां पैदा होने लगीं। तुम्हारी रसौली कैंसर की सर्वाधिक खतरनाक किस्म की है। यह रसौली बड़ी तेज़ी से बढ़ती है, अत्यधिक घातक है और उसकी सहायक दूसरी रसौलियां भी बड़ी तेज़ी से उभर आती हैं। अभी कुछ ही दिन पहले हिसाब लगाया गया था कि इस किस्म की रसौली के ९५ प्रतिशत मरीज़ मर जाते हैं। क्या अब तुम संतुष्ट हो ? देखो, मैं तुम्हें दिखाती हूँ···"

उसने मेज़ पर लगे अंबार में से एक फोल्डर निकाला और उसके पन्ने उलटने लगी।

कोस्तोग्लोतोव खामोश था। फिर उसने बोलना शुरू किया, लेकिन शांतिपूर्वक। अब उसके स्वर में वह आत्म-विश्वास नहीं था जो कुछ ही मिनिट पहले तक दिखाई देता था।

"सच पूछो तो मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो जिन्दगी से चिपके रहना

चाहते हैं। न केवल यह कि मेरे आगे कोई नहीं है, बल्कि मेरे पीछे भी कोई नहीं है। अगर छः महीने की जिन्दगी की भी संभावना हो तो मैं उसे पूरी तरह जीना चाहता हूँ। लेकिन दस या बीस वर्ष तक की योजना बनाना मेरे लिये सम्भव नहीं है। अतिरिक्त उपचार का अर्थ होगा—अतिरिक्त यंत्रणा। रेडियो-तरंगों से पैदा होने वाली बीमारी, उलटियां···आखिर इस सबसे फायदा क्या है?"

"तो, ठीक है! मुझे पता चल गया। ये रहे हमारे आंकड़े!" और उसने एक कापी का दुहरा पृष्ठ उसके आगे कर दिया। पृष्ठ के एकदम ऊपर उसकी रसौली का नाम लिखा हुआ था। उसके बाद बाईं ओर एक शीर्षक था—'मृत' और दाईं ओर शीर्षक था—'अभी तक जीवित'। नामों के तीन कॉलम थे। ये नाम अलग-अलग समय पर लिखे गये थे—कुछ पेंसिल से और कुछ स्याही से। बाईं ओर कोई काट-छांट नहीं की गई थी लेकिन दाईं ओर जगह-जगह पर कलम फेरी गई थी और कट्टे के निशान लगे हुए थे। "हम यह करते हैं। जब किसी मरीज़ को डिसचार्ज किया जाता है तो उसका नाम हम दाईं ओर की सूची में लिख लेते हैं, लेकिन बाद में उसका नाम बाईं ओर वाली सूची में डाल दिया जाता है। फिर भी कुछ ऐसे भाग्यवान होते हैं जिनका नाम दाईं ओर की सूची में ही रहता है। तुम देख रहे हो न?"

उसने उसे सूची पर नज़र डाल लेने और उसके बारे में सोचने के लिये एक क्षण और दिया।

"तुम समझते हो कि तुम स्वस्थ हो गये हो," उसने और भी ज़ोर से वार करते हुए कहा—"तुम इस समय भी उतने ही वीर हो जितने पहले कभी थे। अब तक केवल इतनी-सी बात स्पष्ट हो पाई है कि तुम्हारी रसौली का मुकाबला किया जा सकता है—अभी खेल खतम नहीं हुआ है।—और इसी समय तुम यह घोषणा कर रहे हो कि तुम जा रहे हो! ठीक है! चले जाओ! आज ही चले जाओ! मैं तुम्हें डिसचार्ज कराने की व्यवस्था किये देता हूं और तब मैं तुम्हारा नाम उस सूची में लिख दूंगी जिसका शीर्षक है—'अभी तक जीवित'।"

वह खामोश रहा

"अब जो भी निर्णय करना है, कर लो!"

लुदमिला अफानासएवना!"—कोस्तोग्लोतोव समझौते के लिये तैयार था—"देखो, अगर बैठकें उचित सीमा तक हों, जैसे कि पांच या दस···"

"पांच या दस नहीं। या तो बैठकें होंगी ही नहीं या फिर उतनी होंगी जितनी आवश्यक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि आज से प्रतिदिन एक की बजाय दो बैठकें और हर वह इलाज, जो ज़रूरी है।—और धूम्रपान निषेध!—और एक और अनिवार्य शर्त—तुम्हें हमारे इलाज पर केवल विश्वास ही नहीं करना

होगा बल्कि उसे आनंद के साथ स्वीकार करना होगा। तुम्हारे स्वस्थ होने का एकमात्र यही तरीका है।"

कोस्तोग्लोतोव ने अपना सिर झुका लिया। आज डाक्टरों से जो सौदेबाजी हुई थी उसकी तो उम्मीद ही थी। वह डर रहा था कि वे एक और ऑपरेशन का प्रस्ताव रखेंगी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। एक्स-रे किरणों का उपचार सहा जा सकता था—वह कोई बहुत बुरा नहीं था।

कोस्तोग्लोतोव के पास एक ऐसी चीज थी जिसे वह अपनी सुरक्षित पूंजी समझता था—और वह थी इस्स्यक कुल से लाई गई विशाखमूल जड़ी—एक गुप्त दवा। उसने जब वह अपने जंगली क्षेत्र में वापस चले जाने का निर्णय किया था तो उसके पीछे एक उद्देश्य था। वह उस जड़ी से अपना इलाज करना चाहता था। क्योंकि उसके पास वह जड़ी थी, इसलिये कैंसर क्लिनिक में तो वह सिर्फ यह देखने आया था कि वह होता कैसा है।

डॉक्टर दोन्तसोवा ने अनुभव किया कि उसने मैदान जीत लिया है—अब वह अपनी हृदय-विशालता दिखा सकती थी।

"अच्छा, ठीक है, मैं तुम्हें ग्लूकोज़ के इंजैक्शन नहीं दूंगी। उनके बजाय तुम्हें एक और इंजैक्शन दिया जाएगा, जो पुट्ठों में लगाया जाता है।"

कोस्तोग्लोतोव मुस्करा दिया—"मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अब हथियार डालने ही वाला हूँ।"

"और देखो, अगर तुम ओम्स्क से जल्दी जवाब मंगवा सकते हो तो ज़रूर कोशिश करना।"

जब वह कमरे से बाहर निकला तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह दो शाश्वत सत्यों के बीच चल रहा हो—एक ओर जीवित व्यक्तियों की सूची थी, जिस पर कट्टे लगना अपरिहार्य था, और दूसरी ओर था चिरंतन देश-निकाला इतना शाश्वत और चिरंतन जितने कि तारे और आकाशगंगा है।

७. उपचार करने का अधिकार

विचित्र बात तो यह है कि अगर कोस्तोग्लोतोव अपनी ज़िद पर अड़ा रहता और अपने सवालों का सिलसिला जारी रखता— जैसे कि यह इंजैक्शन किस प्रकार का था, इसका उद्देश्य क्या था और क्या यह सचमुच ही आवश्यक और नैतिक दृष्टि से औचित्यपूर्ण था—अगर वह लुदमिला अफानासएवना को नये उपचार की क्रिया पद्धति और उसके संभावित परिणामों के बारे मे विस्तार से बताने को विवश करता, तो बहुत संभव है कि वह हमेशा-हमेशा के लिये बगावत कर जाता।

लेकिन ठीक उस समय जब कि इंजैक्शन का सवाल उठा था, उसके बुद्धिमत्तापूर्ण तर्कों के तर्कश के सारे के सारे तीर खत्म हो चुके थे और उसने हथियार डाल दिये थे।

लुदमिला अफानासएवना ने जान-बूझकर चालाकी से काम लिया था। वह सब चीजों का स्पष्टीकरण करते-करते थक चुकी थी—उसने इंजैक्शन का ज़िक्र ऐसे किया था जैसे कि वह किसी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु का जिक्र कर रही हो। इसके अतिरिक्त, उसे यह भी विश्वास था कि जब एक्स-रे की शुद्ध किरणों की क्रिया को मरीज़ पर परखा जा चुका है तो अब वह समय आ चुका है जब रसौली पर एक और निर्णायक आक्रमण किया जाए। उपचार का यह ऐसा तरीका था जिसकी आधुनिकतम विशेषज्ञों ने इस प्रकार के कैंसर के लिये पुरज़ोर शब्दों में सिफारिश की थी। अब, जबकि उसे यह विश्वास हो गया था कि कोस्तोग्लोतोव के उपचार में उसे आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी, उसके लिये यह संभव नहीं था कि वह उसकी ज़िद के सामने कमजोर पड़े और हर संभव हथियार से उसकी बीमारी पर आक्रमण करने से कतराए। यह सच है कि वे स्लाइडें मिल नही रहीं थीं जिनसे उसकी पहली रसौली का विस्तृत विवरण मिल सकता, लेकिन उसकी समूची अन्त:स्फूर्ति, उसकी प्रेक्षण शक्तियां और उसकी समूची स्मृति उसे आश्वस्त कर रही थी कि कोस्तोग्लोतोव की रसौली ठीक उसी तरह की है जैसी कि उसने समझी है। वह न तो सार्कोमा है और न ही टेराटोमा···!

यह रसौली ठीक उसी प्रकार की थी और उसकी सहायक दूसरी रसौलियाँ भी उसी रसौली की थीं जिन पर दोन्तसोवा अपना डाटक्रेट का शोधग्रन्थ लिख

रही थी। शोध-ग्रन्थ का काम वह पूरे समय नहीं करती थी उसने काफी समय पहले यह काम शुरू किया था, बीच में छोड़ दिया था और फिर समय-समय पर उसमें कुछ जोड़ती रही थी। उसके प्राध्यापक डाक्टर ओरेश्चेन्कोव और उसके मित्रों ने उसे विश्वास दिलाने की कोशिशें की थीं कि उसका शोध-ग्रन्थ बहुत ही अच्छा होगा लेकिन परिस्थितियां हमेशा उस पर दबाव डालती रहीं और उसे विवश करती रहीं—और अब तो वह किसी ऐसे समय की कल्पना भी नहीं कर सकती थी जब वह अपना शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत करने की स्थिति में हो सकेगी। इसका कारण अनुभव या सामग्री की कमी नहीं था—सच तो यह है कि इन दोनों ही चीज़ों की भरमार थी। प्रतिदिन ही उसे या तो एक्स-रे स्क्रीन पर बुलाया जाता या प्रयोगशाला में या जाँच-पड़ताल के लिये किसी मरीज़ के बिस्तर के पास। इसके साथ ही घन्टों तक एक्स-रे चित्रों को छांटना, उसका विवरण पेश करना और उनका नियोजन व व्यवस्थापन करना। प्राथमिक परीक्षाएं पास करना इस सबके अतिरिक्त था। ये सब काम मिलकर इतने हो जाते थे कि उन सबको कर पाना मानवीय शक्ति के सामर्थ्य से बाहर की बात थी।

वह शोध-कार्य के लिये छ: महीने की छुट्टी ले सकती थी लेकिन ऐसा कोई दिन आया ही नहीं कि जब उसके मरीज़ बिलकुल ठीक चल रहे हों। उसके अधीन प्रशिक्षण पा रहे तीन नवयुवकों के काल को भी कम नहीं किया जा सकता था—इसलिये छ: महीने की छुट्टी ले पाना उसके लिये संभव ही न हो सका था।

लुदमिला अफानासएवना को विश्वास था कि यह बात लिओ तॉलस्तॉय ने अपने भाई के बारे में कही थी—उसमें एक सच्चे लेखक की तमाम क्षमताएं थीं लेकिन लेखकों का कोई दुर्गुण नहीं था। सम्भवत: उसमें भी एक पी० एच० डी० वाला कोई अवगुण नहीं था। उसे इस बात की कोई विशेष इच्छा नहीं थी कि जब वह गुज़रे तो लोग सरगोशियों में कहें—'यह कोई साधारण डॉक्टर नहीं, यह डाक्टर आफ फिलासोफी (पी० एच० डी) है; यह दोन्तसोवा है।' और न उसे इसकी कोई इच्छा थी कि वह अपने लेखों पर अपने नाम के साथ ये छोट-छोटे लेकिन इतने भारी-भरकम शब्द जुड़े देखे। (उसके लगभग एक दर्जन से भी अधिक लेख तो प्रकाशित भी हो चुके थे—वे सभी विभिन्न विषयों पर लिखे गये लेकिन आत्मसंगति-पूर्ण लेख थे।) अगर थोड़ा बहुत ज्यादा पैसा मिल जाता तो अच्छा ही था, लेकिन अगर पैसा न भी आता तो भी कोई खास बात न थी।

जहां तक उस चीज का संबंध है जिसे दिन-प्रतिदिन का वैज्ञानिक काम कहा जाता है, उसकी उसके पास पहले ही भरमार थी और वह शोध-ग्रन्थ के काम के बिना भी काफी व्यस्त रहती थी। उनके अस्पताल में शरीर-रचना

और रोग-निदान पर सम्मेलन होते थे जिनमें रोग-निदान और उपचार की गलतियों का विश्लेषण किया जाता था और उपचार के नये तरीकों के संबंध में रिपोर्टें तैयार की जाती थीं। इन बैठकों में उपस्थित होना और सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक था। (रेडियो तरंगों से उपचार करने वाले और सर्जन गलतियों का पता लगाने और उपचार के नए तरीकों के सम्बन्ध में निर्णय करने के लिए तो प्रतिदिन आपस में परामर्श किया ही करते थे—लेकिन ये सम्मेलन इस दिन प्रतिदिन के पारस्परिक परामर्शसे अलग होते थे।) शहर में एक्स-रे विशेषज्ञों का एक वैज्ञानिक संघ भी था जो भाषणों का आयोजन भी करता था और वैज्ञानिक प्रदर्शनों का भी। इस सबसे ऊपर रसौलियों का इलाज करने वालों की एक संस्था भी हाल ही में बनाई गई थी और दोन्तसोवा उसकी केवल सदस्य ही नहीं थी बल्कि सचिव भी थी। जैसा कि तमाम नए कामों में होता है। इस संस्था में काम विशेष उत्साह के साथ हो रहा था। फिर उच्च चिकित्सा प्रशिक्षण संस्थान था और रेडियो-तरंगों से चिकित्सा करने वालों की पत्रिका, रसौलियों का इलाज करने वालों की पत्रिका, चिकित्सा विज्ञान अकादमी और सूचना-केन्द्र से पत्राचार भी करते रहना पड़ता था। इस प्रकार ऊपर से हालांकि ऐसा लगता था कि 'बड़ा विज्ञान' केवल मास्को और लेनिनग्राद तक ही सीमित है और यहां उन्हें लोगों का सिर्फ इलाज ही करना है लेकिन ऐसा दिन शायद ही कभी गुज़रता था जो पूरी तरह इलाज पर ही लगे और उस दिन विज्ञान और वैज्ञानिक समस्याओं पर सोच-विचार न किया जाता हो।

आज का दिन तो विशेष रूप से व्यस्त था। उसे अपने अगले भाषण के सिलसिले में रेडियोलॉजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष को फोन करना था, फिर उसे दो छोटे-छोटे लेखों पर, जो एक पत्रिका के लिए लिखे गये थे, नजर डालनी थी, मास्को से आये हुये एक पत्र का उत्तर देना था, उस पत्र का उत्तर देना थी जो एक दूर दराज़ के इलाके के कैंसर क्लिनिक से आया था और जिसमें कुछ स्पष्टीकरण मांगे गए थे। कुछ ही मिनटों में वरिष्ठ सर्जन आने वाली थी जो ऑपरेशन थियेटर में दिनभर का काम खत्म करने के बाद एक औरत को, जिसे कोई स्त्री-रोग था, परामर्श के लिए दोन्तसोवा के पास ला रही थी इसके बाद बाहरी मरीज़ों का शल्य-क्रिया से निपट कर उसे अपनी एक सहायिका को साथ लेकर तशाउज़ के एक मरीज को देखने जाना था जिसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि उसकी अंतड़ियों में रसौली है। बाद में उसे एक्स-रे प्रयोगशाला के कर्मचारियों की एक बैठक में जाना था जिसका आयोजन स्वयं उसी ने किया था। इस बैठक में इस बात पर विचार-विमर्श किया जाना था कि उपकरणों को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाया जाए जिससे कि अधिक मरीज़ों को निपटाया जा सके। फिर रूसानोव का इंजैक्शन भी नहीं

भुलाया जा सकता था। उसे ऊपर जाकर देखना था। इस प्रकार के मरीज़ों का इलाज उन्होंने हाल ही में शुरू किया था। इसके पहले उन्हें ऐसे मरीज़ों को मास्को भेजना पड़ता था।

उसने अपना बहुत-सा कीमती वक्त कूढ़ मगज़ कोस्तोग्लोतोव के साथ मूर्खतापूर्ण बहस में बर्बाद कर दिया था। अगर सैद्धान्तिक दृष्टि से देखा जाए तो इसे उसकी ओर से गैर मामूली लिहाज़ का नाम ही दिया जा सकता है। तकनीकी विशेषज्ञ, जिन्होंने एक्स-रे की छोटी मशीन को नए सिरे से लगाया था, उनकी बातचीत के दौरान दरवाज़े में से दो बार झांक चुके थे। दोन्तसोवा को दिखाना चाहते थे कि कुछ चीज़ें ऐसी थीं जो तखमीना लगाते वक्त शामिल होने से रह गई थीं और अब उनकी जरूरत महसूस हो रही थी। वे उससे एक चिट पर हस्ताक्षर कराना चाहते थे जिससे कि वरिष्ठ डाक्टर को रज़ामन्द करने की कोशिश की जा सके। अब आखिर उन्होंने उसे पकड़ लिया था और उसे मशीन दिखाने ले जा रहे थे। वे अभी गलियारे में ही थे कि एक नर्स ने दोन्तसोवा के हाथ में एक टेलिग्राम थमा दिया। यह तार नोवोचरकास्क से अन्ना ज़त्सिर्को ने भेजा था। गत पन्द्रह वर्षों में न तो वे एक-दूसरी से मि ली थीं और ना उन्होंने एक दूसरी को पत्र ही लिखे थे लेकिन वे दोनों पुरानी सहेलियां थीं। उनकी मुलाकात १६२४ में हुई थी जब मैडिकल कॉलेज में जाने से पहले वे दोनों सारातोव में दाईगीरी की शिक्षा ग्रहण कर रही थीं अन्ना के तार में लिखा था कि उसका सबसे बड़ा बेटा वादिम उसी दिन या उससे अगले दिन क्लिनिक में आ गया। वह एक भूगर्भीय अभियान के दौरान बीमार पड़ गया था। तार में पूछा गया था कि क्या लुदमिला अफानासएवना उसपर विशेष ध्यान दे सकेगी और अन्ना को साफ-साफ लिख देगी कि वादिम को क्या हुआ है? दोन्तसोवा तार को पढ़ कर परेशान हो उठी और तकनीकी विशेषज्ञों को वहीं छोड़ कर मैट्रन के पास यह अनुरोध करने चली गई कि अज़वोकिन का पलंग आज के लिए वादिम ज़त्सिर्को के लिए सुरक्षित रखा जाए। मैट्रन—मीता—हर वक्त क्लिनिक में इधर-उधर भाग-दौड में व्यस्त रहती थी, उसे ढूंढ पाना कोई आसान काम नही था। आखिरकार उसे ढूंढ़ लिया गया और उसने वादिम के लिए एक पलंग दे देने का वचन भी दे दिया लेकिन इसके साथ ही उसने लुदमिला अफानासएवना के सामने एक नई समस्या भी रख दी। रेडियो-चिकित्सा विभाग की सवत्तम नर्स—ओलम्पिआडा व्लादिस्लिावोव्ना—से यह कहा गया था कि वह शहर में श्रमिक संघों के कोषाध्यक्षों के दस दिवसीय सम्मेलन में भाग ले। इसका अर्थ है कि इन दस दिनों के लिए उसके स्थान पर काम कर सकने वाली किसी नर्स को ढूंढना होगा। यह काम अपने आपमें इतना असम्भव और इतना अनुचित था कि कि मीता और दोन्तसोवा उसी वक्त एक के बाद दूसरे कमरों

को पार करती हुई रजिस्ट्रार के दफ्तर में जा पहुंची जिससे कि पार्टी की जिला समिति के दफ्तर को फोन करके ओलम्पिग्राडा को सम्मेलन में भाग लेने के लिए बुलाने की मांग को रद्द कराया जा सके, लेकिन पहले फोन इधर व्यस्त था और फिर दूसरी तरफ।—और काफी देर के बाद जब फोन मिला तो उन्हें बताया गया कि वे यूनियन की क्षेत्रीय समिति को फोन करें। क्षेत्रीय समिति के अधिकारियों ने डाक्टरों की राजनैतिक गैर-जिम्मेदारी पर अत्यधिक आश्चर्य प्रकट किया—क्या ये डाक्टर सचमुच यह मानते हैं कि श्रमिक संघों के आर्थिक मामलों को एकदम नजर अन्दाज किया जा सकता है? स्पष्ट है कि पार्टी कमेटी के सदस्यों, यूनियन कमेटी के सदस्यों या उनके रिश्तेदारों को न तो अब तक कैंसर हुआ था और ना ही उन्हें ऐसा होने की कोई उम्मीद थी। लुदमिला अफानासएवना ने रेडियोलॉजिकल सोसायटी को फोन किया और फिर भाग कर वरिष्ट डाक्टर के पास गई कि वह हस्तक्षेप करे, लेकिन उसके पास बाहर के कुछ लोग बैठे हुए थे और इस बात पर बहस हो रही थी कि इमारत के एक बाजू की मरम्मत कम-से-कम खर्च में किस तरह हो सकती है। इस तरह हर बात हवा में ही अटकी रह गई और वह अपने कमरे की ओर जाती हुई एक्स-रे रोग-निदान विभाग से गुजरी जहाँ आज उसे काम नहीं था। विभाग के कर्मचारी उस समय रोग-निदान का काम नहीं कर रहे थे और लाल लैम्प की रोशनी में रोग-निदानों के परिणाम लिखने में व्यस्त थे। उन्होंने वहीं लुदमिला अफानासएवना को बताया कि उन्होंने बची हुई फिल्मों को गिन लिया है और कि जिस रफ्तार से फिल्में इस्तेमाल हो रही हैं, उससे तो वे अधिक-से-अधिक तीन सप्ताह के लिए ही काफी होंगीं। इसका मतलब था आपत्कालीन स्थिति क्योंकि फिल्म के लिये जो आर्डर दिए जाते थे उनकी पूर्ति एक महीने से कम में नहीं होती थी। दोन्तसोवा ने महसूस किया कि उसी दिन या अगले दिन उसे फार्मेसी के इन्चार्ज और वरिष्ठ डाक्टर के बीच एक मीटिंग का इन्तजाम करना होगा (जो आसान काम हरगिज नहीं था) ताकि उनसे ऑर्डर भिजवाया जा सके।

इसके बाद एक्स-रे की छोटी मशीन के तकनीकी विशेषज्ञों ने गलियारे में फिर उसका रास्ता रोक लिया और उसने उनकी चिट पर हस्ताक्षर कर दिए। उसने महसूस किया कि अब उसे एक्स-रे-प्रयोगशाला के सहायकों से भेंट करनी चाहिए। वह बैठ गई और कुछ तखमीने लगाने लगी। मूलभूत तकनीकी निर्देशों के अनुसार एक मशीन को एक घंटे काम करने के बाद तीस मिनट तक आराम मिलना चाहिए था। लेकिन यह नियम बहुत पहले ही ताक पर रखा जा चुका था और लगभग सभी मशीनें लगातार नौ घंटे काम करती रहती थीं जिसका अर्थ था कि तमाम मशीनें एक्स-रे की डेढ़ पारी (शिफ्ट) तक काम करती थीं। लेकिन मशीनों पर इतना बोझ लादने के बावजूद और इसके बावजूद

पूरी तरह प्रशिक्षित सहायक मरीज़ों को पूरी मुस्तैदी के साथ मशीनों के नीचे ले जाते रहते थे वे कोई ऐसा तरीका ढूंढ निकालने में असफल रहे थे जिससे कि वे उतनी बैठकों का प्रबन्ध कर सकें जितनी वे चाहते थे। उन्हें बाहरी मरीज़ों के लिए भी दिन में एक बार गुंजाइश निकालनी पड़ती थी और कुछ मरीज़ों के लिए, जैसा कि अब कोस्तोग्लोतोव के मामले में होना था, दिन में दो बार जिससे कि उनकी रसौलियों पर भरपूर आक्रमण किया जा सके और अस्पताल के बिस्तरों पर मरीज़ बदलते रहें। इसके लिए वे तकनीकी सुपरवाइज़र से छुपा कर दस मिली एम्पीयर की बजाय बीस मिली एम्पीयर करंट इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था। इससे काम दो गुना होने लगा था—हालांकि स्पष्ट ही है कि एक्स-रे की ट्यूबों को भी तेजी से काम करना पड़ता था, लेकिन फिर भी हर मरीज के लिए गुंजाइश निकालना मुश्किल था। इसीलिए आज लुदमिला अफानासएवना सूचियों पर निशान लगाये बैठी थी। यह फैसला करने के लिए कि कौन-कौन से मरीजों के लिए कितनी बैठकों में खाल की रक्षा करने वाले तांबे के मिलीमीटर फिल्टर को एकदम तिलाँजली दी जा सकती है (जिससे कि बैठक की अवधि आधी रह जाती है) और कितने मरीज़ ऐसे हैं जिनके लिये एक मिलीमीटर फिल्टर की बजाय आधा मिलीमीटर फिल्टर से काम लिया जा सकता है।

इससे बाद वह ऊपर पहली मंजिल पर देखने गई कि इंजैक्शन के बाद रूसानोव का क्या हाल है। फिर वह छोटे फोकस की मशीनों के कमरे में गई जहां मरीज़ों का किरणों से इलाज किया जा रहा था। इससे निपट कर अपने पत्रों और लेखों की ओर ध्यान देने ही लगी थी कि दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक हुई। एलिज़ावेता अनातोल्येव्ना उससे बातचीत की अनुमति माँग रही थी।

एलिज़ावेता अनातोल्येव्ना रेडियो-चिकित्सा विभाग में सिर्फ एक अर्दली थी लेकिन ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था जो उसे बेतकल्लुफी से लिजा या आँटी लिजा कह कर पुकार सकता—हालाँकि नौजवान डाक्टर भी बड़ी उम्र की अर्दलियों को इसी तरह से पुकारने के अभ्यस्त थे। वह एक सुशिक्षित महिला थी, जो अपनी रात की ड्यूटी पर घंटों फ्रैंच पुस्तकें पढ़ती रहती थी। न जाने क्या कारण था जो वह कैंसर क्लिनिक में एक अर्दली के रूप में काम कर रही थी और अपना काम भी बहुत ही सलीके से करती थी। यह तो सही है कि इस काम में वेतन जितने वक्त काम किया जाता था उससे ड्योढ़े वक्त का दिया जाता था और क्लिनिक कुछ समय तक रेडियाई खतरे के भत्ते के रूप में वेतन का पचास प्रतिशत और देता रहा था। अब यह भत्ता घटा कर वेतन का पन्द्रह प्रतिशत कर दिया गया था, लेकिन एलिज़ावेता एनातोल्येव्ना फिर भी अपने काम से लिपटी रही थी।

"लुदमिला अफानासएवना," उसने अपनी गर्दन को क्षमा याचना करने के अन्दाज में कुछ झुका कर कहा, जैसा कि अत्यधिक विनम्र व्यक्ति कभी-कभी किया करते हैं, "मुझे खेद है कि मैं एक बहुत ही साधारण सी बात के लिये तुम्हें तकलीफ दे रही हूं, लेकिन यह ऐसी बात है जिससे मैं सचमुच ही तंग आ चुकी हूं---झाड़न बिल्कुल नहीं हैं - एक भी नहीं। मैं सफाई किससे करूँ ?"

अच्छा तो एक और नई समस्या आ गई ! मंत्रालय ने कैंसर क्लिनिक को रेडियम की सूइयाँ दी थीं, एक्स-रे की मशीनें दी थीं, खून चढ़ाने के नवीनतम उपकरण दिए थे और आधुनिकतम औषधियाँ दी थीं लेकिन उस आलीशान सूची में मामूली झाड़नों और ब्रुशों की कोई जगह नहीं थी। निजामुद्दीन बहरामोविच कहा करता था 'अगर मंत्रालय ने इसकी कोई व्यवस्था नहीं की तो मैं क्या कर सकता हूं। ये चीजें मेरे निजी पैसे से खरीद लो!' एक समय था जब वे पुरानी चादरों को फाडकर झाड़न बना लिया करते थे लेकिन बाद में आम इस्तेमाल की वस्तुओं के विभाग ने ऐसा करने पर पाबंदी लगा दी। उसे सन्देह था कि चादरों को बरबाद किया जा रहा है। अब उनके लिए आवश्यक था कि वे तमाम पुरानी चादरों को उठाकर एक दफ्तर में ले जाएं जहाँ एक अधिकारिक आयोग उन्हें फाड़ने की अनुमति देने से पहले उनकी छानबीन करता था कि वे पुरानी ही हैं न !

"मेरे दिमाग में एक योजना है," एलिज़ावेता अनातोल्येवना ने कहा, "हम सब लोगों को जो रेडियोथैरैपी विभाग में काम करते हैं, अपने-अपने घरों से एक-एक झाड़न लेकर आना चाहिए। इस तरह हम समस्या को सुलझा लेंगे -- क्यों, क्या नहीं ?"

"खैर मैं कह नहीं सकती," दोन्तसोवा ने निःश्वास छोड़ते हुए कहा। लेकिन मैं समझती हूं कि और कोई रास्ता भी नहीं है। ठीक है—मैं सहमत हूं। कृपया यह प्रस्ताव ओलम्पिआडा व्लादिस्लावोव्ना तक पहुंचा देना।"

अरे हाँ, ओलम्पिआडा व्लादिस्लावोव्ना के बारे में क्या किया जाए? वह उसे उस दस दिवसीय सम्मेलन से कैसे अलग रखे? क्या यह निरा पागलपन नहीं कि वे उनकी सर्वोत्तम और सर्वाधिक अनुभवी नर्स को दस दिन के लिए काम से हटा रहे थे।

वह उसके बारे में फोन करने गई, लेकिन एक बार फिर उसे कोई सफलता नहीं मिल पाई। तब वह सीधी तशाउज के मरीज को देखने चली गई। पहले कुछ देर तक वह अंधेरे में बैठी जिससे उसकी आंखें अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हो जाएँ। तब उसने उसकी अंतड़ी में बेरियम चूर को देखा। पहले उसने कमीज को खड़ा करके देखा फिर सुरक्षा-परदे को मेज की तरह नीचे किया और कमीज को पहले एक करवट से लिटा कर और फिर दूसरी करवट से लिटा कर उसके फोटो लिए। फिर उसने अपने हाथों को, जिन पर उसने रबड़ के दस्ताने पहन

रखे थे, उसके पेट पर फेरा और उसकी 'दर्द होता है,' की चीखों और फिल्म के धुंधले धब्बों और छायाओं में समन्वय स्थापित करके रोग की जांच करने लगी। इसके बाद उसने इस सबके आधार पर रोग-निदान कर दिया।

इन व्यस्तताओं के बीच वह अपने लंच का वक्त भी भूल गई थी—लंच के अवकाश का उसे कभी ध्यान रहता ही नहीं था। गर्मी के दिनों में भी वह अपना सैंडविच लेकर हमेशा बाग में नहीं पहुंच पाती थी।

उसने रोग-निदान का अपना काम खत्म किया ही था कि परामर्श करने के लिये उसको ड्रैसिंग रूम से बुलावा आ गया। पहले वरिष्ठ सर्जन ने उसे मरीज की बीमारी का विवरण दिया फिर मुआइने के लिए मरीज औरत को अन्दर बुलाया गया। मुआइने के बाद दौन्तसोवा इस निष्कर्ष पर पहुंची कि मरीज की जिन्दगी बचाने का एक ही तरीका है कि उसकी बच्चेदानी निकाल दी जाये। मरीजा, जिसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक नहीं थी, फूट-फूट कर रोने लगी। उन्होंने कुछ मिनट तक उसे रोने-चिल्लाने दिया। "लेकिन यह तो मेरा अंत होगा ....मेरा पति निश्चय ही छोड़ देगा ...."

"तुम अपने पति को बताना ही मत कि आपरेशन किस प्रकार हुआ है।" लुदमिला अफानासएवना ने उसे परामर्श दिया। "उसे कैसे पता चलेगा? उसे तो कभी कुछ मालूम ही नहीं हो पाएगा। तुम सारी घटना को पूरी तरह छुपा सकती हो।"

वह वहां लोगों का जीवन बचाने के लिए थी—बस। इसके अलावा इधर-उधर की और कोई बात उसके लिए विशेष महत्व नहीं रखती थी। वैसे उनके क्लीनिक में दांव पर लगभग सदैव जीवन ही होता था—उससे कम कुछ नहीं। लुदमिला अफानासएवना का यह दृढ़ विश्वास था कि शरीर को पहुंची कोई भी क्षति न्यायसंगत है—बशर्ते कि उससे जीवन बच गया हो।

लेकिन क्लिनिक में आज की सारी भागदौड़ के बावजूद कोई चीज ऐसी थी जो उसके आत्म-विश्वास और उसकी उत्तरदायित्व एवं सत्ताधिकार की भावना को घुन की तरह चाट रही थी। क्या यह वह दर्द था जो अपने पेट में स्पष्टः अनुभव हो रहा था? कुछ दिन उसे यह दर्द बिल्कुल भी महसूस न होता और अन्य दिनों में वह हलका-हलका होता, लेकिन आज दर्द जोर से हो रहा था। अगर वह रसौलियों के रोग की विशेषज्ञ न होती तो वह उसकी एकदम उपेक्षा कर देती या बिना किसी खतरे के उसकी जांच-पड़ताल करा लेती। लेकिन वह इस रास्ते से इतनी अधिक परिचित थी कि उस पर पहला कदम रखना—अपने सम्बन्धियों और सहयोगियों को उसके बारे में बताना—उसके लिये कोई आसान काम नहीं था। अपने मामले में उसकी प्रकृति शुद्ध रूसी थी—अर्थात् टालते रहना। वह अपने आपको कुछ इस प्रकार समझाती

रहती—संभव है यह दर्द चला जाये, संभव है कि यह सिर्फ मेरी स्नायविक बेचैनी का परिणाम हो।

लेकिन बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। यह दर्द कुछ दूसरी किस्म का था—जो सारे दिन उसके अन्दर चुभन-सी पैदा करता रहा था—हाथ में लगे कांटे की तरह धीमी-धीमी लेकिन निरन्तर रूप से। अब जब उसे एकांत मिला था और वह अपनी मेज़ पर बैठी 'रेडियो-किरणों से पैदा होने वाली बीमारियों' से सम्बन्धित एक पैम्फलेट की ओर हाथ बढ़ाने वाली थी, जिसे कोस्तोग्लोतोव की तेज़ निगाहें देख चुकी थीं, कि उसे अहसास हुआ कि आज सारे दिन वह कुछ अधिक ही बेचैन रही है। यह सच है कि उपचार करने के अधिकार के बारे में कोस्तोग्लोतोव के साथ उसकी जो बहस हुई थी, उससे उसे वास्तव में ठेस लगी थी।

उसके शब्द अब भी उसके कानों में गूंज रहे थे—'बीस वर्ष पहले तुमने किसी बूढ़े कोस्तोग्लोतोव का रेडियो-किरणों से इलाज़ किया का—उसके इस अनुरोध और अनुनय-विनय के बावजूद कि ऐसा न किया जाए। उस समय उन्हें रेडियो-किरणों से होने वाली बीमारियों का कोई ज्ञान नहीं था।'

और वास्तव ही में वह जल्दी ही एक्स-रे विशेषज्ञों की संस्था में रेडियो चिकित्सा के बाद में पड़ने वाले प्रभावों पर एक भाषण देने वाली थी। यह बिलकुल वही बात तो थी जिस पर कोस्तोग्लोतोव ने उसकी भर्त्सना की थी।

यह हाल ही की तो बात थी—मुश्किल से एक या दो वर्ष पहले की—जब उसने और यहां के और मास्को एवं बाकू के एक्स-रे विशेषज्ञों के देखने में कुछ ऐसी बीमारियां आने लगी थीं जो तत्काल ही समझी नहीं जा सकती थीं।

एक संदेह उठ खड़ा हुआ। फिर अनुमान लगाये जाने लगे। वे एक-दूसरे को पत्र लिखने लगे और आपस में इस संबंध में भी बातचीत करने लगे। —इसका उल्लेख अभी भाषणों में नहीं आता था—सिर्फ लैक्चरों के बीच अवकाश के समय में ही इस पर बातचीत होती थी? फिर किसी ने एक अमरीकी पत्रिका में इस विषय पर एक लेख पढ़ा और किसी दूसरे ने एक और लेख पढ़ लिया। अमरीका में भी इसी तरह की खिचड़ी पक रही थी। इन रोगों के मरीज़ों में वृद्धि होती गई। आने वाले मरीज़ों को लगभग एक ही किस्म की शिकायत थी। तब यकायक इस बीमारी का नाम रखा गया—'रेडियो-चिकित्सा के बाद में पड़ने वाले प्रभाव।' अब समय आ गया था कि उनके बारे में मंच से बातचीत की जाये और किसी निर्णय पर पहुँचा जाए।

इसका सार-संक्षेप यह था कि किरण के भारी मात्रा में प्रयोग से दस या पन्द्रह वर्ष पूर्व जो एक्स-रे उपचार पूरी सुरक्षा, सफलता और विलक्षणता के साथ किए गए थे, उनके परिणामस्वरूप अब शरीर को अप्रत्याशित क्षति पहुंच

रही थी या विकिरणित अंगों का अंगभंग हो रहा था।

जिन मरीज़ों की रसौलियां अत्यधिक घातक थीं, उनके मामले में तो यह इतना बुरा नहीं था—और कम-से-कम अनौचित्यपूर्ण तो नहीं ही था; आज भी उनके लिये कोई दूसरा इलाज न होता। उन्होंने एकमात्र उपलब्ध उपचार पद्धत्ति से रोगियों को अपरिहार्य मृत्यु से बचा लिया था। भारी मात्रा में विकिरण का प्रयोग इसलिए किया गया था क्योंकि कम मात्रा से काम नहीं चलता था। अगर आज वही मरीज़ यह शिकायत लेकर आता है कि उसके शरीर का कोई अंग भंग हो गया है तो इतनी सी बात तो उसकी समझ में आ ही जानी चाहिए थी कि विकिरण-उपचार से अब तक उसे जो जीवन मिला है और जितने वर्ष वह अभी और जीवित रहेगा, वर्तमान बीमारी उसका अनिवार्य मूल्य है।

लेकिन यह भी तो था कि दस-पन्द्रह या अठारह वर्ष पहले जब 'विकिरण रोग' जैसे किसी शब्द का अस्तित्व ही नहीं था और एक्स-रे विकिरण को एक सीधा, विश्वसनीय और एकदम निर्दोष उपचार पद्धति माना जाता था, जब उसे आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की एक ऐसी महान् उपलब्धि समझा जाता था कि उसका प्रयोग करने की बजाय किसी दूसरी समानान्तर और उलझी हुई पद्धति की ओर प्रवृत्त होने को प्रतिक्रियावादी ही नहीं, वरन् जन-स्वास्थ्य का विध्वंस करने वाला कदम भी माना जाता था। उन्हें केवल एक ही डर होता था कि नसों या हड्डी को कोई गंभीर और तत्काल क्षति न पहुंचे, लेकिन इसके बचाव का ढंग उन दिनों भी उन्होंने बड़ी आसानी से सीखा था। इसलिये वे विकिरण से उपचार करने लगे थे। उन्होंने पागलपन की सीमा तक पहुंच गये उत्साह के साथ विकिरण का प्रयोग किया था—साधारण रसौलियों और छोटे-छोटे बच्चों तक का उपचार उन्होंने एक्स्-रे विकिरण से किया था।

अब वे बच्चे वयस्क हो गये थे। युवक और युवतियां आ रहे थे—उनमें कभी-कभी तो विवाहित व्यक्ति होते थे। उनके शरीर के जिन भागों पर विकिरण किया गया था वे इतने क्षतिग्रस्त हो चुके थे कि उनका उपचार संभव नहीं था।

पिछले पतझड़ में एक पन्द्रह वर्षीय लड़का आया। वह कैंसर वार्ड की बजाय सर्जिकल वार्ड में आया था लेकिन लुदमिला अफानासएवना को उसके बारे में पता चल गया था और उसने उसे देखा था उसकी एक बांह और एक टांग का विकास शेष शरीर के विकास की गति से नहीं हो रहा था और यही स्थिति उसकी खोपड़ी की हड्डियों की थी। वह सिर से पांव तक एक मनुष्य की तरह लगता था और उसका शरीर एक कार्टून जैसा था।

लुदमिला अफानासएवना ने उसके पिछले रिकार्ड की छानबीन कराई तो उसे पता चला कि जब वह ढाई वर्ष का था तो अपनी मां के साथ क्लिनिक में

आया था। उसकी हड्डियों और चयापचयन (मेटाबोलिज्म) में अनेक विकार थे। कोई भी उन विकारों के मूल से परिचित नहीं था, फिर भी उसे रसौली तो नहीं ही थी।

इस विचार से कि एक्स-रे विकिरण से शायद कुछ मदद मिल सके सर्जनों ने वह दोन्तसोवा के पास भेज दिया था। दोन्तसोवा ने केस अपने हाथ में ले लिया। एक्स-रे किरणों से उसे इतना अधिक फायदा हुआ कि उसकी मां की आंखों से आंसू आ गये—वह कहती थी कि वह उस औरत को, जिसने उसके बच्चे की जान बचाई है, कभी नहीं भूलेगी। अब मां मर चुकी थी और लड़का अस्पताल अकेला ही आया था—उसके लिये कुछ कर सकने वाला भी कोई नहीं था। उसकी हड्डियों में पहले जो विकिरण किया जा चुका था उसे उनमें से बाहर निकाल लेना किसी के भी बस में नहीं था।

पिछले ही दिनों—अधिक-से-अधिक जनवरी के अंत की बात होगी, उससे ज्यादा देर की नहीं—एक नौजवान माँ यह शिकायत लेकर आई थी कि उसके स्तनों में दूध नहीं आता। यह सीधी दोन्तसोवा के पास नहीं आई थी। उसे एक के बाद दूसरे कई विभागों में भेजा गया था और वह अन्ततः दोन्तसोवा के पास पहुंची थी। दोन्तसोवा को उसके बारे में कुछ भी याद नहीं था लेकिन क्लिनिक में मरीजों की कार्ड-सूची स्थायी रूप से रखी जाती थी। इसलिये किसी को रिकार्डों के कमरे में भेजा गया और उसने छानबीन के बाद उसका कार्ड ढूंढ निकाला जो १६४१ का था। पता चला कि वह अपने बचपन में वहां आई थी और बड़े विश्वास के साथ एक्स-रे ट्यूब के नीचे लेटी रही थी। उसकी जिस रसौली का एक्स-रे विकिरण से उपचार किया गया था वह इतनी साधारण थी कि आज उस पर विकिरण की बात कोई सोच भी नहीं सकता था।

दोन्तसोवा केवल इतना कर सकी कि उसके पुराने कार्ड पर कुछ और लिख दे। उसने लिखा कि उसके शरीर की नाजुक शिराएं सूखनी शुरू हो गयीं हैं और जहां तक वह समझती है यह रेडियो-विकिरण के बाद में पड़ने वाले प्रभावों का परिणाम है। स्पष्ट ही है कि किसी ने भी विकृत शरीर वाले युवक या छली गयी मां को यह नहीं बताया कि उसके बचपन में उसका इलाज गलत ढंग से किया गया था। इस प्रकार का स्पष्टीकरण जहां एक ओर व्यक्तिगत दृष्टि से निरर्थक होता वहां दूसरी ओर सार्वजनिक दृष्टि से यह हानिकारक था और स्वास्थ्य विभाग के प्रचार को उससे अत्यधिक क्षति पहुंच सकती थी।

लेकिन इन घटनाओं से लुदमिला अफानासएवना को जबरदस्त सदमा पहुंचा था। इनसे उसके मन में एक गम्भीर अक्षम्य अपराध भावना पैदा हो गई थी जो अन्दर-ही-अन्दर उसे घुन की तरह चाटे जा रही थी—और कोस्तोग्लोतोव ने आज ठीक उसी दुखती रग पर भरपूर वार किया था।

उसने अपने बाएं हाथ से अपना दायां और दाएं हाथ से बायां कन्धा पकड़ लिया और कमरे में दो मशीनों के बीच, जिनके स्विच बन्द किये जा चुके थे, फर्श पर जो जगह खाली बची थी उसमें टहलने लगी—दरवाजे से खिड़की तक और खिड़की से दरवाजे तक !

क्या यह संभव था ? क्या डॉक्टर के उपचार के अधिकार पर प्रश्न चिह्न लगाया जा सकता है ? एक बार तुम इस तरह सोचना शुरू कर दो और आज ही वैज्ञानिक दृष्टि सर्वमान्य से तरीकों पर सिर्फ इसलिये संदेह करना शुरू कर दो, कि भविष्य में वे दोषपूर्ण या बेकार ठहराये जा सकते हैं, तो फिर ईश्वर ही जानता है कि तुम कहां जाकर रुकोगे। आखिर रिकार्डों में ऐसे केस भी तो थे जिनकी मृत्यु एस्पिरिन से हुई थी। संभव है कि कोई व्यक्ति अपने में पहली बार एस्पिरिन खाये और मर जाये। इस तर्क पद्धत्ति से तो किसी का भी इलाज कर पाना असंभव हो जायेगा। इस तर्क पद्धति से तो चिकित्सा विज्ञान से दिन-प्रति-दिन जो लाभ पहुँचते हैं, उनकी बलि देनी होगी।

यह एक सार्वभौम नियम है—जब कोई क्रिया करेगा तो उससे अच्छे परिणाम भी सामने आएंगे और बुरे भी। कुछ मामलों में अच्छे परिणाम अधिक होंगे तो कुछ में बुरे।

जितना भी उसके लिये संभव था उसने अपने आपको आश्वस्त किया—वह जानती थी कि इस प्रकार की दुर्घटनाएं, अगर उनमें गलत रोग-निदान और या गलत या भ्रामक उपचार की घटनाओं को भी सम्मिलित कर लिया जाये तो, उसके चिकित्सीय कार्य-कलापों का सम्भवत: दो प्रतिशत से अधिक नहीं होगी जबकि उन लोगों की संख्या जिन्हें उसने स्वास्थ्य और जीवन प्रदान किया है हजारों तक पहुँचती है। उनमें युवक भी हैं और वृद्ध भी, पुरुष भी हैं और स्त्रियां भी। उनमें से कुछ आज खेतों में हल चला रहे थे तो कुछ सड़कों की मरम्मत कर रहे थे, कोई हवा में उड़ान भर रहा था तो कोई तार के खंबों पर चढ़ रहा था कोई कपास चुन रहा था तो कोई सड़कें साफ कर रहा था, कोई दुकान के काउन्टर पर खड़ा था तो कोई दफ्तर या चाय घर में बैठा था और कोई थल सेना या जल सेना में अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा था। वे न तो उसे आज तक भूले थे और न भूल सकते थे, लेकिन अपने आप को तसल्ली देने की हजार कोशिशों के बावजूद वह जानती थी कि वह उन सभी को शीघ्र ही भूल जाएगी जिनका उसने सफलतापूर्वक इलाज किया था, जिन्हें उसने मौत के मुंह में से खींचकर जीवन-दान दिया था। वह अपनी सफलताओं, अपनी जीतों को भूल जाएगी। लेकिन वह अपने जीवन के अन्तिम दिन तक उन मुट्ठी भर अभागों को हरगिज नहीं भूल पाएगी जिन्होंने काल-चक्र के नीचे आकर दम तोड़ दिया था।

यह उसकी स्मृति की अपनी विशेषता थी।

नहीं, वह अपने भाषण के लिये आज और कोई तैयारी नहीं कर पायेगी। दिन लगभग खत्म हो चुका था। बेहतर शायद यही होगा कि वह इस पैंफ्लेट को घर ले जाए। लेकिन नहीं, वह उसे सैकड़ों बार घर ले जा चुकी है और फिर ज्यों-का-त्यों वापस ले आती रही है। वह जानती थी कि इससे कोई फायदा नहीं होगा।

फिर भी उसके लिए समय तो निकालना ही पड़ेगा। उसे 'मैडिकल रेडियोलॉजी' नामक पुस्तक खत्म करके लाइब्रेरी को लौटानी थी। कुछ छोटे-छोटे लेख पढ़ने थे, फिर कुछ लिखना था और ताहता-कूपिर वालों ने जो पूछा था उसका उत्तर भी देना था।

खिड़कियों से आता प्रकाश काफी कम हो चुका था इसलिए उसने टेबिल लैम्प जला लिया और बैठ गई। उसकी एक सहायक ने, जिसने अब तक अपना सफेद कोट उतार दिया था, अन्दर झांका। "लुदमिला अफानासएवना क्या तुम चल नहीं रहीं?" फिर वेरा गैंगार्त भी अन्दर आ गई—'क्या तुम चल नहीं रहीं?"

"रूसानोव कैसा है?"

"वह सो रहा है। उसने उल्टी तो नहीं की, लेकिन उसे बुखार है।" वेरा कोर्निलएवना ने अपना सफेद कोट उतार दिया। अब उसके शरीर पर भूरे और सफेद रंग की रेशमी पोशाक रह गई थी। यह पोशाक काम के दौरान पहनने की पोशाक के मुकाबले कुछ बेहतर थी।

"तुम्हारे विचार में क्या यह एक दयनीय स्थिति नहीं है कि यह हर रोज पहननी पड़े?" दोन्तसोवा ने पोशाक की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं इसे क्यों बचाऊं?...मैं इसे किसलिये बचा कर रखूं?" गैंगार्त ने मुस्कराने की कोशिश की लेकिन परिणाम यह हुआ कि वह और भी अधिक दयनीय हो उठी।

"अच्छा वीरोच्का, ऐसी स्थिति में अगली बार हम उसे पूरी मात्रा देंगे—दस मिलीग्राम!" लुदमिला अफानासएवना ने निर्णायक ढंग से कहा। वह जो कुछ कहना चाहती थी, तत्काल कह डालती थी। अधिक प्रयोग करना उसकी दृष्टि में समय बर्बाद करना ही था। वह बोलती भी जा रही थी और तहाता कूपिर से आई इन्क्वायरी का जवाब भी लिखती जा रही थी।

"कोस्तोग्लोतोव का क्या बना?" गैंगार्त ने शान्त स्वर में पूछा। वह दरवाजे तक पहुंच चुकी थी।

"अच्छा खासा युद्ध हुआ था, लेकिन वह हार गया और उसने हथियार डाल दिये," लुदमिला अफानासएवना ने हंसते हुये कहा।—और हंसी के दौरान जैसे ही उसने पहला सांस अन्दर खींचा तो एक बार फिर उसने अपने पेट के समीप एक काटता हुआ दर्द महसूस किया। उसके मन में यहां तक आई कि

वह तत्काल उसी वक्त वेरा को अपने विश्वास में ले ले और उसे अपने दर्द के बारे में बता दे। उसने अपनी आंखों को सिकोड़ कर वेरा की ओर उठाया। लेकिन तब कमरे के धुंधलके में उसने देखा कि उसने बाहर जाने की पोशाक और ऊंची ऐड़ी के सैंडिल पहन रखे हैं जैसे वह थियेटर जा रही हो।

—और उसने फैसला किया—फिर कभी!

सब लोग जा चुके थे, लेकिन वह रुकी रही। यह उसके लिए अच्छा हरगिज नहीं था कि वह उन कमरों में आधा घंटा भी अधिक रुके जो प्रतिदिन विकिरण से भरे रहते थे, लेकिन हमेशा होता यही था। उसकी वार्षिक छुट्टी का समय आने तक उसका रंग पीला पड़ चुका होता था। उसके रक्त में सफेद रक्तकोशों की मात्रा पूरे वर्ष घटती रहती थी और कई बार तो वह घट कर केवल दो हजार रह जाती थी। किसी मरीज को रक्तकोशों की इतनी कमी तक पहुंचा देना एक अपराध होता। एक्स-रे विशेषज्ञों का प्रतिदिन का सामान्य कोटा तीन 'पेटों' का मुआइना करना था, लेकिन वह दस 'पेटों' का मुआइना करती थी और युद्ध काल में तो यह संख्या पच्चीस हो गई थी। छुट्टियों के पहले उसे हमेशा ही अपने शरीर में खून चढ़वाना होता था, और छुट्टियों के बाद जब वह वापस आती थी तो गत वर्ष में वह जो कुछ गंवा चुकी होती थी उसकी क्षतिपूर्ति कभी भी नहीं हो पाती थी।

उसके लिए तेज़ी से काम करना अनिवार्य था और उससे बचा नहीं जा सकता था। प्रतिदिन जब दिन खत्म होने को होता तो उसे यह देखकर बड़ी उलझन होती कि एक बार फिर वह हर काम के लिए समय निकालने में असफल रही है। आज दिन भर के काम के दौरान उसे सिबगातोव की कष्टदायक स्थिति याद आई थी। उसने अपनी स्मृति में लिख लिया था कि जब सोसाइटी में उसकी मुलाकात डाक्टर ओरेश्चेन्को से होगी तो वह उनसे उसके बारे में परामर्श करेगी। जिस तरह आज वह अपने सहायकों का पथ-प्रदर्शन कर रही थी उसी तरह डाक्टर ओरेश्चेन्को ने युद्ध से पहले उसका पथ-प्रदर्शन किया था। उसने अत्यधिक ध्यानपूर्वक उसे निर्देश दिये थे और उनकी इच्छा थी कि वह भी उन्हीं की तरह अपने व्यवसाय के प्रत्येक क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करे। 'लुडोच्का,' उन्होंने उसे चेतावनी दी थी—'आवश्यकता से अधिक विशेषज्ञ बनने का प्रयत्न कभी न करना। बाकी लोगों को वे जितना चाहें विशेषज्ञ बनने दें, लेकिन तुम अपने क्षेत्र में डटी रहना—एक ओर एक्स-रे-रोगनिदान पर ध्यान केन्द्रित रखना और दूसरी ओर एक्स-रे-उपचार पर। तुम इसी तरह की डाक्टर बनना...भले ही दुनिया में तुम्हें इस प्रकार की अन्तिम डाक्टर ही क्यों न होना पड़े।' वह अभी तक जीवित थे और इसी शहर में रहते थे।

उसने टेबुल लैम्प बुझा दिया, लेकिन दरवाजे से फिर कमरे में लौट गई—

उसे कुछ बातें नोट करनी थीं जिनका अगले दिन किया जाना ज़रूरी था। उसने अपना नीला ओवरकोट पहन लिया—वह अब नया नहीं रह गया था। वापस क्लिनिक से चलते हुए वह बड़े डाक्टर के आफिस की ओर मुड़ गई लेकिन वहां ताला लगा हुआ था।

आखिर वह सीढ़ियां उतर गई और चिनार के पेड़ों के बीच मैडिकल सेंटर की पगडंडी पर चलने लगी। उसके विचार अब भी उसके काम पर केन्द्रित थे लेकिन उसने न तो उन विचारों से मुक्ति पाने का कोई प्रयत्न किया और न ऐसी कोई इच्छा ही उसके मन में पैदा हुई। मौसम कुछ अजीब-सा था—उसने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया कि वह कैसा था। झुटपुटे का वक्त था। पगडंडी पर उसे ऐसे कई व्यक्ति मिले जिन्हें वह जानती नहीं थी, लेकिन यहां भी उसके दिल में औरतों वाली ऐसी कोई दिलचस्पी पैदा नहीं हुई कि वह यह देखे कि उन्होंने किस प्रकार की पोशाकें पहन रखी हैं, उनके सिरों पर क्या है और उन्होंने कैसे जूते पहन रखे हैं। वह चलती गई। उसकी भौंहें तनी हुई थीं और वह सब लोगों को तेज़ निगाहों से देख रही थी जैसे कि यह अनुमान लगा रही हो कि उनके रसौलियां कहां-कहां हैं—हालांकि वे आज तो दिखाई दे नहीं रहीं, लेकिन कल तो दिखाई दे जा सकती हैं।

वह मैडिकल सेंटर के चाय घर को पार कर गई। रास्ते में उसे एक छोटा-सा उज़बेक लड़का मिला जो अखबारी कागज़ की पुड़ियों में बादाम बेच रहा था। आखिर वह मुख्य द्वार पर पहुंच ही गई।

चिड़चिड़ी थुल-थुल दरबान, जिसे ठीक से नींद नहीं आती थी, केवल स्वस्थ और अपने काम से फारिग होकर लौटने वाले लोगों को ही दरवाज़े में से गुजरने देती थी और मरीजों को चीख-चिल्ला कर लौटा देती थी। एक बार जब लुदमिला अफानासएवना दरवाजे में से गुज़र गई तो यह जरूरी था कि वह दिन प्रतिदिन की काम की जिन्दगी से निकल कर घरेलू जिन्दगी में—अपने परिवार में लौट आए। लेकिन नहीं, उसका समय और शक्ति काम और घर के बीच समान रूप से बटे हुए नहीं थे। अपनी जागती ज़िन्दगी के बेहतर और ताज़ादम घन्टे वह मैडिकल सेंटर में गुज़ारती थी। अपने काम से संबंधित विचार दरवाजे से निकलकर भी मक्खियों की तरह उसके सिर के चारों ओर भनभनाते रहते थे और सुबह दरवाजे तक जाने से बहुत पहले ही ये विचार मंडराना शुरू कर देते थे।

उसने तहाता कूपिर को लिखा पत्र लैटर बॉक्स में डाला और सड़क पार कर ट्रामवे के अड्डे पर पहुंच गई। वांछित नम्बर की ट्राम खड़खड़ाती हुई अड्डे पर आकर रुकी। आगे के और पीछे के दोनों दरवाजों पर भीड़ लग गई। लुदमिला अफानासएवना ने जल्दी से सीट झपटने की कोशिश की। अपने अस्पताल के काम के अलावा यह पहला छोटा-सा विचार था जो उसके दिमाग

में आया था और उसने उसे मानवीय भाग्यों के बनाने वाली से एक साधारण यात्री में परिवर्तित कर दिया जो अन्य किसी भी यात्री की तरह ट्राम में धक्के खा रही थी।

तब भी, जब ट्राम लड़खड़ाती हुई चल रही थी या कि वन-वे मार्ग पर रास्ते में रुक-रुक कर सामने आती ट्राम को रास्ता देने के लिए रुकती रही थी, लुदमिला अफानासएवना सूनी-सूनी निगाहों से खिड़की के बाहर देखती रही और मुर्सालिमोव की दूसरी रसौलियों और रूसानोव पर इन्जैक्शन के संभावित प्रभावों के बारे में सोचती रही। उसका आपत्तिजनक उपदेशात्मक रवैया और सुबह के राउंड के दौरान उसकी धमकियां दिन भर तो दूसरे विचारों और कामों के नीचे दबी रही थीं लेकिन अब दिन की समाप्ति पर दारुण तलछट ऊपर आ गई थी जो अब उसे सारी शाम और सारी रात परेशान करेगी।

लुदमिला अफानासएवना की तरह ट्राम में बैठी दूसरी बहुत-सी औरतों के पास भी हैंड बैगों की बजाय छोटे-से सूटकेस जैसे बड़े-बड़े थैले थे जिनमें सूअर का बच्चा या चार बड़ी-बड़ी डबल रोटियां समा सकती थीं। ट्राम के हर स्टॉप पर और खिड़की से दिखाई देने वाली हर दुकान को देखकर लुदमिला अफानासएवना का ध्यान अपने घर और घर के काम काज की ओर अधिकाधिक मुड़ने लगा। घर उसका—और एकमात्र उसका उत्तरदायित्व था, क्योंकि पुरुषों से आखिर क्या उम्मीद रखी जा सकती है? जब भी वह कभी किसी कान्फ्रेंस के सिलसिले में मास्को जाती तो उसका पति और उसका बेटा हफ्ते-हफ्ते भर तक प्लेटें ही साफ न करते। इसका मतलब यह नहीं कि वे उन्हें इसलिए जोड़ते रहते थे कि वह आयेगी तो साफ कर लेगी—उन्हें तो इस कभी खत्म न होने वाले और बार-बार किए जाने वाले काम में कोई तुक ही नज़र नहीं आती थी।

आज शुक्रवार था। इतवार को उसे हर हालत में कपड़ों का वह अंबार निपटाना ही होगा जो धोने के लिए लग गया था। इसका मतलब था कि आधे सप्ताह का खाना शनिवार की शाम को हर हालत में बन जाना चाहिए। (वह सप्ताह में दो बार खाना बनाती थी।) जहां तक धोने वाले कपड़ों को पानी में डालने का संबंध है, यह काम तो आज ही हो जाना चाहिए। हालांकि देर हो रही थी, लेकिन बाज़ार में आज ही जाया जा सकता था। स्टॉल आमतौर पर काफी शाम गए ही भरते थे।

वह ट्राम बदलने के लिए उतरी, लेकिन उसके पास ही की एक किराना स्टोर की खिड़की के शीशे में से अन्दर झांका तो उसने अपना इरादा बदल दिया और दूसरी ट्राम लेने की बजाय स्टोर में चली गई। गोश्त विभाग खाली पड़ा था और विभाग का सहायक तो जा भी चुका था। मछली विभाग में भी कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जिसे खरीदा जा सके। वह शराब की बोतलों के पास से गुज़री जिन्हें पिरामिड़ों की तरह सजाया गया था। उसकी नज़र पनीर की बड़ी-

बड़ी सलाखों पर भी गई। वह सूरजमुखी के बीजों के तेल की दो बोतलें खरीदना चाहती थी और कुछ चीजें छांटकर वह भुगतान करने काउंटर पर गई और फिर उन्हें उठाने अन्दर चली गई।

वह लाइन में दो पुरुषों के पीछे खड़ी थी कि यकायक दुकान में गुलगपाड़ा शुरू हो गया। लोग सड़क से दुकान में घुसे चले आ रहे थे और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के काउंटर और भुगतान-काउंटर के आगे लाइनों में खड़े हो रहे थे। लुदमिला अफानासएवना अपनी चीजें संभाले बिना ही जल्दी जल्दी-जल्दी चल दी और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के काउन्टर के आगे लगी लाइन में जा खड़ी हुई। इस वक्त तक शीशों के पीछे कुछ भी नजर नहीं आ रहा था लेकिन शोर मचाने वाली औरतों को पूरा-पूरा विश्वास था कि आज मसालेदार कीमा मिलेगा और हर व्यक्ति अधिक से अधिक एक किलो खरीद सकता है।

एक और किलो कीमा लेने के लिए अगर लाइन में दूसरी बार भी खड़ा होना पड़े तो क्या हर्ज़ है!

क्या छींका टूटा है!

८. व्यक्ति किसके सहारे जीते हैं

उसकी गर्दन को अगर कैंसर ने न दबोच लिया होता तो येफ़्रेम पोदुएव इस समय अपने जीवन के चरमोत्कर्ष पर होता। वह पचास वर्ष से कुछ ही ऊपर था। वह चौड़े-चकले कंधों और एक स्वस्थ मस्तिष्क वाला व्यक्ति था। वह एक सशक्त व्यक्ति था—ठेले के घोड़े जैसा बलवान नहीं, दो टांठों वाले ऊंट जैसा। एक पारी में आठ घंटे काम करने के बाद वह इतने ही घंटे तक एक और पारी में भी काम कर सकता था। अपने यौवन-काल में जब वह कामा में था, वह दो सौ पौण्ड की बोरी घसीट कर ले जाया करता था और उस समय से उसकी ताकत में कोई कमी मुश्किल ही से आई थी। अब भी अगर उसे प्लेटफार्म पर कंक्रीट मिलाने वाली मशीन को चढ़ाने के लिए मजदूरों का हाथ बंटाना पड़ता तो वह उससे कतराने वाला नहीं था। वह हर जगह रहा था और उसने ढ़ेर सारे काम किए थे। पुराने जर्जर मकानों को गिराया था, खुदाई की थी, पल्लेदारी की थी और राजगीरी की थी। दस रूबल का नोट देकर रेज़गारी वापस लेना उसकी दृष्टि में एक घटिया और ओछी बात थी। वोद्का की पूरी बोतल पी जाने पर भी लड़खड़ाने का कोई सवाल ही नहीं था, लेकिन तीसरी बोतल की ओर हाथ बढ़ाने को वह तैयार नहीं होता था। येफ़्रेम पोदुएव किसी प्रकार की सीमाओं या आत्म-नियंत्रण को मानने को तैयार नहीं था और समझता था कि वह हमेशा ऐसा ही रहेगा। कसरती और शक्तिशाली होने के बावजूद वह युद्ध के मोर्चे पर कभी नहीं गया था। युद्ध-काल में वह भवन निर्माण के कार्य में ही अत्यधिक व्यस्त रहा था इसलिए घावों और सैनिक अस्पतालों का उसे कोई अनुभव नहीं हो सका था। अपनी ज़िन्दगी में वह कभी एक दिन के लिए भी बीमार नहीं हुआ था—न उसे कभी फ्लू हुआ न किसी महामारी का हमला। उसके तो कभी दांत तक में दर्द नहीं हुआ था।

गत वर्ष से पहले वर्ष वह पहली बार बीमार हुआ और बीमारी धमाके की तरह आई।

बीमारी थी—कैंसर!

'कैंसर'—अब वह अपनी बीमारी को इस नाम से पुकार सकता था। लेकिन एक मुद्दत तक तो वह अपने आपको यही विश्वास दिलाता रहा था कि

यह कुछ भी नहीं है। जब तक वह सहन कर सकता था वह डाक्टरों के पास जाना टालता रहा, लेकिन एक बार जब वह वहां चला गया तो डाक्टर उसे एक कोने से दूसरे कोने तक घुमाते रहे और अंततः उसे कैंसर क्लिनिक भेज दिया गया। वहां के मरीज़ों को अलबत्ता बताया यही जाता था कि उन्हें कैंसर नहीं है। फिर भला येफ्रेम को कैसे पता चलता कि उसे क्या बीमारी है। वह अपनी जन्मगत बुद्धि पर विश्वास ना कर सका और वही मानता रहा जो मानना चाहता—यही कि उसे कैंसर नहीं है, कि अंततः वह एकदम ठीक हो जाएगा।

आक्रमण उसकी जीभ पर हुआ था जो हमेशा से तेज-तर्रार रही थी और हमेशा उसके काम आई थी। पूरे पचास वर्ष तक उसने उससे भरपूर काम लिया था। जीभ के बल पर उसने बिना काम किए मेहनताना वसूल किया था, ऐसे कामों का कसमें खा खाकर दावा किया था जो उसने कभी नहीं किए थे, ऐसी-ऐसी बातों की कसमें खाई थीं जिन पर उसने कभी विश्वास नहीं किया था। इस जीभ से उसने अपने अफसरों पर आवाज़ें कसी थीं और मज़दूरों को गालियां दी थीं। उसने प्रत्येक प्रिय और पवित्र चीज़ पर गेंद उछाली थी। वह जीवन-भर बुलबुल की तरह चहकता रहा था। उसने अश्लील कहानियां तो ढ़ेरों सुनाई थीं, लेकिन राजनीति के बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा था। उसने वोलगा के गीत गाये थे। यहां-वहां उसने सैकड़ों औरतों से झूट बोला था कि न उसके बच्चे हैं और न उसकी शादी हुई है और कि वह एक ही सप्ताह में लौट आएगा और फिर वे अपना गृहस्थ जीवन शुरू करें। एक बार एक अस्थाई सास ने उसे गाली दी थी—'तेरी जीभ में कीड़े पड़ें।" लेकिन येफ्रेम की जीभ ने उन क्षणों के अतिरिक्त, जब वह नशे में धुत्त होता था, उसे कभी धोखा नहीं दिया था।

लेकिन यकायक वह सूजने लगी। ब्रुश की तरह उसके दांतों से टकराने लगी और ऐसा लगने लगा कि उसका रसीला और कोमल हलक उसके लिए छोटा पड़ता जा रहा है।

लेकिन येफ्रेम ने भय और चिन्ता को धूल की तरह झाड़ दिया। वह अपने साथियों के सामने मुस्कराते हुए कहता—"पोदुएव भला किससे डरने वाला है? उसे कोई भी चीज़ नहीं डरा सकती!"

और वे कहते—"हां, यह सच है। पोदुएव की इच्छाशक्ति सचमुच ही अत्यधिक बलवती है।"

लेकिन यह इच्छा-शक्ति नहीं थी। यह तो जड़ कर देने वाला आतंक था। वह अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर नहीं बल्कि डर के कारण जितने दिन संभव हो सका अपने काम से चिपटा रहा था और आपरेशन को टालता रहा था। वह उम्र भर ज़िन्दा रहने की तैयारी करता रहा था, मरने की नहीं। इस रवैये में परिवर्तन कर पाना उसकी सामर्थ्य के बाहर की बात थी। यह बात उसकी

समझ में नहीं आती थी कि वह अपने रवैये में परिवर्तन कैसे करे। डर से मुक्त होने का यही तरीका था कि वह अपने कदमों पर दृढ़ता से खड़ा रहे। वह प्रतिदिन अपने काम पर जाता रहा, जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं था, और लोगों से अपनी इच्छा-शक्ति की प्रशंसा सुनता रहा।

चूँकि उसने ऑपरेशन कराने से इंकार कर दिया था, इसलिए उसका इलाज सुइयों से किया जाने लगा। वे उसकी जीभ में सुइयां घोंप देते, जैसे वह कोई नर्क में पड़ा हुआ पापी हो, और उन सुइयों को कई-कई दिन तक वहीं घुंपी रहने देते। येफ्रेम का दिल कितना चाहता था कि बात यहीं रुक जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसकी जीभ की सूजन बढ़ती रही। आखिर उसके लिए अपनी इच्छा-शक्ति को बनाये रखना संभव नहीं रहा। उसने अपना भैंसे जैसा सिर क्लिनिक की सफेद मेज पर रख दिया और हथियार डाल दिए।

ऑपरेशन लेव लिओनिदोविच ने किया। उसने ऑपरेशन आश्चर्यजनक कुशलता से किया था—जैसा वायदा किया था, ठीक वैसा ही। जीभ पतली और छोटी कर दी गई। फौरन ही जीभ फिर चलने लगी। येफ्रेम सब बातें फिर कहने लगा जो पहले कहता रहा था—हालांकि अब उसकी आवाज पहले की तरह स्पष्ट नहीं थी। उन्होंने उसकी जीभ में सुइयों से फिर छेद किए।—उसे वापस भेज दिया गया, और फिर बुला लिया गया। लेव लिओनिदोविच ने उससे कहा—"अब तीन महीने के बाद वापस आना, हम एक और ऑपरेशन करेंगे—तुम्हारी गर्दन पर यह ऑपरेशन एकदम मामूली होगा।"

लेकिन येफ्रेम गर्दन के ऑपरेशन पहले ही काफी देख चुका था। वह निर्धारित समय पर वापस नहीं आया। उन्होंने डाक से उसे सम्मन भेजे, उसने उनकी भी अवहेलना कर दी। इसका तो वह आदी ही था कि एक जगह पर अधिक न ठहरे। वह एक दिन के नोटिस पर कोलीमा या काकाशिया तक उड़ कर जा सकता था। जायदाद, घर या खानदान—कोई भी चीज उसे एक जगह बांध कर नहीं रख सकता थी। उसे सिर्फ दो चीजें पसंद थीं—मुक्त जीवन और जेब में पैसा। क्लिनिक से वे उसे लिखते रहे—"अगर तुम अपने आप नहीं आए तो तुम्हें पुलिस पकड़ लाएगी।" क्लिनिक को वास्तव में ही ये अधिकार प्राप्त थे और ये अधिकार उसे उन लोगों पर भी प्राप्त थे जिन्हें कैंसर था ही नहीं।

वह क्लिनिक गया। ऑपरेशन कराने पर सहमत होने से वह अब भी इनकार कर सकता था लेकिन लेव लिओनिदोविच ने उसकी गर्दन टटोल कर उसे दो टूक शब्दों में समझा दिया कि ऑपरेशन में इतना विलंब करने से क्या नुकसान हुआ है। उन्होंने येफ्रेम की गर्दन दाईं और बांई ओर से काट दी जैसे कि गुंडे चाकुओं से काटते हैं। वह काफी लंबे समय तक पट्टियों में कसा लेटा रहा और जब उसे डिसचार्ज किया गया तो डॉक्टर अपने सिर हिला रहे थे।

अब उसे उन्मुक्त जीवन का चस्का नहीं रहा था। उसने काम से में भी हाथ खींच लिया था और मौज-मस्ती से भी। अब वह न सिगरेट पीता था न शराब। उसकी गर्दन नर्म नहीं हो रही थी, उलटे फूलती जा रही थी। वह दुखती भी थी और दर्द की टीसें सिर तक जाती थीं। बीमारी गर्दन से ऊपर की ओर जा रही थी और लगभग कानों तक पहुंच चुकी थी।

तब लगभग एक ही महीने पहले वह लम्बे-लम्बे पेड़ों के बीच चलता हुआ, हजारों कदमों तले रौंदी जा चुकी ड्योढ़ी को पार करके भूरी ईंटों की इसी पुरानी इमारत में लौट आया। सर्जनों ने फौरन ही उसे हाथों हाथ लिया जैसे वह कोई पुराना मित्र हो और उसे अस्पताल का वही धारीदार पाजामा पहना कर उसे ऑपरेशन थियेटर के पास के उसी वार्ड में रखा गया जिसकी खिड़कियां पीछे की ओर खुलती थीं और वहां वह अपनी बेचारी गर्दन पर दूसरे आपरेशन का इन्तजार करने लगा जो एक तरह से तीसरा आपरेशन भी था। अब येफ्रेम पोदुएव के लिए अपने आपको धोखा देना सम्भव नहीं था—और उसने धोखा दिया भी नहीं। वह जान गया था कि उसे कैंसर है।

अब तो वह वार्ड के अपने पड़ौसियों के दिमाग में बिना किसी प्रकार के ऐंच-पेच के यह बिठाने की कोशिश करने लगा था कि उन्हें कैंसर है। उनमें से किसी के भी बच निकलने की कोई सम्भावना नहीं है और वे सब लौट कर फिर वहीं आ जाएंगे। ऐसा नहीं है कि उसे लोगों को रौंदने में आनंद आता था—वह तो केवल यह चाहता था कि वे अपने आपको धोखा देना छोड़ दें। आखिर वे सच्चाई का सामना क्यों न करें?

उन्होंने उसका तीसरा आपरेशन किया। यह आपरेशन अधिक गहरा और अधिक कष्टप्रद था, लेकिन आपरेशन के बाद जब वे पट्टियां बांध रहे थे तो डाक्टरों के चेहरों पर कोई प्रसन्नता नहीं थी। वे एक-दूसरे से कुछ कहते रहे थे जो रूसी भाषा में था। उन्होंने उसके सिर को उसके धड़ के साथ पूरी तरह बांध दिया था और इससे उसकी पट्टियां अधिक मोटी और अधिक ऊंची हो गई थीं। दर्द अधिक से अधिक तेज होता गया था और बार-बार उठने लगा था, बल्कि करीब-करीब हर वक्त बना ही रहता था।

तो फिर अपने आपको धोखा देने से क्या फायदा? कैंसर के बाद जो कुछ होगा उसे भी सहन करना चाहिए। दो वर्ष तक उसने अपनी आंखें बंद रखी थीं और इस ओर से मुंह मोड़े रहा था। अब वक्त आ गया था कि खेल खत्म हो जाये। वह जब इस बात को इस तरह—दुर्भावनापूर्ण ढंग से कहता था तो वह उतनी बुरी नहीं लगती थी। यह मरना नहीं था—जिन्दगी का खेल खत्म हो रहा था।

बहरहाल, यह कहना आसान था, लेकिन उसका मन-मस्तिष्क उसे उतनी आसानी से स्वीकार नहीं कर रहा था। येफ्रेम के साथ यह कैसे हो सकता है?

क्या होगा और क्या किया जाना चाहिए ?

अब तक वह काम और दूसरे लोगों के पीछे अपने आपको छुपाता रहा था, लेकिन अब तो उसे अकेले ही उसका सामना करना था। उसकी गर्दन की पट्टियां उसका दम घोंट रहीं थीं।

वार्ड में, गलियारे में, ऊपरी मंजिल में, निचली मंजिल में उसके पड़ोसी थे तो बहुत लेकिन वे न तो उसे कुछ बता सकते थे और न उसकी कोई सहायता ही कर सकते थे। उससे बहुत कुछ बहुत बार कहा जा चुका था—और वह सब गलत था।

तब वह दरवाज़े और खिड़की के बीच बार-बार चक्कर लगाने लगा। चक्कर लगाने का यह क्रम एक दिन में पांच-पांच घंटे—और कभी-कभी तो छः-छः घंटे तक चलता रहता। ऐसा लगता था जैसे वह किसी सहारे की तलाश में दौड़े जा रहा था।

येफ्रेम के सारे जीवन में—फिर वह चाहे कहीं भी रहा हो (वह बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर शेष सभी जगह रहा था—वह सभी प्रान्तों को छान चुका था) उसे और अन्य सभी को यह हमेशा पता होता था कि व्यक्ति से क्या आशा की जाती है। उसका काम अच्छा होना चाहिए और जीवन पर उसकी पकड़ मज़बूत होनी चाहिए। इन दोनों का मतलब था—पैसा। जब लोग मिलते तो इस प्रश्न के तत्काल बाद, कि तुम्हारा नाम क्या है, यह पूछा जाता था कि आय कितनी है ? अगर आय स्तर के अनुकूल न होती तो या तो वह व्यक्ति मूर्ख था या अभागा—और मनुष्य कहलाने का वह मुश्किल ही से अधिकारी होता था।

पोदुएव ने वोर्कुता में, येनीसेई नदी पर, सुदूर पूर्व में और मध्य एशिया में इसी प्रकार का जीवन देखा और उसे वह पूरी तरह समझता भी था। लोग खूब रुपया कमाते थे और फिर शनिवार को खर्च कर डालते या छुट्टियों में लुटा देते।

यह सब ठीक भी था और जब तक उन्हें कैंसर या इसी प्रकार की कोई और घातक बीमारी न हो जाती उनके लिए यह सब उनके अनुकूल भी पड़ता था। लेकिन जब ऐसी कोई बीमारी उन्हें सचमुच आ दबोचती तो उनकी कीमत दो कौड़ी की थी—उनका पैसा, जीवन पर उनकी पकड़, उनका धंधा और उनका वेतन सब निरर्थक थे। उन सबकी विवशता सामने आ जाती। बेचारे अंतिम क्षण तक अपने आपको धोखा देते रहे कि उन्हें कैंसर नहीं हैं। वे सब उन ढेरों-ढेर मूर्खों की तरह थे जो जीवन से वंचित रहे थे।

लेकिन वे वंचित किस चीज़ से रहे थे ?

जब येफ्रेम युवक था तो उसने सुना था—और वह जानता था कि यह सच है कि बूढ़े लोगों की तुलना युवक अधिक चुस्त-चालाक बनते जा रहे हैं। बूढ़े

लोग तो इतने डरपोक थे कि कभी कस्बे तक में भी नहीं गये थे लेकिन येफ्रेम जब वह कुल तेरह वर्ष का ही था घोड़े की सवारी करता था और पिस्तौल से निशाना लगाता था और जब वह पचास वर्ष का हुआ तो वह सारे देश में घूम चुका था। लेकिन अब जब वह वार्ड में इधर-से-उधर चक्कर काट रहा था तो उसे याद आने लगा कि बूढ़े लोग—फिर वे चाहे रूसी हों या तातार, कामा में रहने वाले हों या वोत्याक में या किसी और जगह—जान किस तरह देते थे। वे न शोर मचाते थे न मृत्यु के विरुद्ध लड़ते थे और न इस तरह की शेखी बघारते थे कि वे हरगिज़ नहीं मरेंगे। बस चुपचाप शांतिपूर्वक मर जाते थे। वे मामलों को निपटाने से कतराते थे और उचित समय पर शांतिपूर्वक तैयारी कर लेते थे। वे अत्यधिक शांतिपूर्वक यह निर्णय कर देते थे कि घोड़ी किसे मिलेगी, बछेड़ा किसे, कोट किसे और जूता किसे।—और वे दुनिया से इतनी आसानी से रवाना हो जाते जैसे कोई नये मकान में जाता है। उनमें से किसी को भी कैंसर का डर नहीं था। खैर, उनमें से किसी को कैंसर हुआ भी नहीं।

लेकिन वह यहां क्लिनिक में लेटा ऑक्सीजन का गुब्बारा चूस रहा है, आंखों तक में जुंबिश नहीं, लेकिन जीभ लगातार यही कहे जा रही है—'मैं मरूंगा नहीं ! मुझे कैंसर नहीं है !"

बिल्कुल चूजों की तरह ! छुरी तैयार थी और उन सबकी प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन कुड़कुड़ा रहे थे और दाने-दुनके के लिये धरती कुरेद रहे थे। जब एक को ज़िबह करने के लिये लाया गया तब भी बाकी उसी तरह धरती कुरेदते रहे।

इस तरह एक के बाद दूसरे दिन पोदुएव पुराने फर्श पर इधर-से-उधर और उधर-से-इधर चक्कर लगाता रहा और फर्श के तख्तों पर खड़-बड़ करता रहा, लेकिन उसका मस्तिष्क इस मामले में तनिक भी साफ नहीं हुआ कि इस मृत्यु का मुकाबला किस प्रकार करना चाहिए। इस मामले में न तो उसका अपना अस्तिष्क कोई सहायता कर रहा था और न कोई ऐसा था जो इस मामले में उसे कुछ बता सकता। वह यह तो विश्वास कर ही नहीं सकता था कि इस प्रश्न का उत्तर उसे किसी पुस्तक में मिलेगा।

बहुत समय पूर्व उसने स्कूल में चौथी श्रेणी तक शिक्षा पाई थी—और उसने भवन-निर्माण की शिक्षा भी प्राप्त की थी, लेकिन उसके दिल में पढ़ने की उमंग कभी पैदा नहीं हुई थी। वह अखबार नहीं पढ़ता था, रेडियो सुनता था। दिन-प्रति-दिन के जीवन में पुस्तकों का उपयोग और प्रयोजन उसकी समझ ही में नहीं आता था। बहरहाल, देश के सुदूर जंगली क्षेत्रों में, जहां वह जीवन-भर हाथ-पांव मारता रहा था क्योंकि वहां मेहनताना अच्छा मिलता था, किताबी कीड़ा कोई-कोई ही था। पोदुएव ने किताबें केवल तभी पढ़ी थीं जब पढ़ना आवश्यक था—उदाहरणार्थ उसने उत्पादन संबंधी पुस्तिकाएं, भारवाही मशीनों

संबंधी पुस्तिकाएं, मशीन चलाने संबंधी निर्देशों की पुस्तिका, प्रशासनिक आदेश और चौथे अध्याय तक संक्षिप्त इतिहास[1] ही पढ़े थे। उसके मतानुसार पुस्तकों पर पैसा खर्च करना या उनके लिये किसी लाइब्रेरी तक जाना एक शुद्ध हास्यास्पद काम है। अगर वह कभी किसी लम्बी यात्रा पर जाता या किसी जगह उसे प्रतीक्षा करनी पड़ जाती और कोई किताब उसके हाथ आ जाती तो संभव था कि वह बीस-तीस पृष्ठ पढ़ लेता लेकिन फिर हमेशा ही उसे फेंक देता। उसे किसी पुस्तक में ऐसी कोई चीज़ मिली ही नहीं थी जो किसी बुद्धिमान व्यक्ति के लिये रुचिकर हो सके।

यहां अस्पताल में पलंगों के पास रखी मेजों पर खिड़कियों में किताबें रखी रहती थीं, लेकिन उसने उन्हें कभी हाथ तक नहीं लगाया था।—और वह इस नीली जिल्द वाली पुस्तक को भी, जिस पर सुनहरी अक्षरों में पुस्तक और लेखक का नाम लिखे हुए थे, कभी पढ़ना शुरू न करता अगर एक उदास और वीरान-सी शाम को कोस्तोग्लोतोव ने वह उसके हाथों में ठूंस न दी होती। येफ्रेम ने अपनी पीठ के पीछे दो तकिये रख लिये और उसके पृष्ठ उलटने-पलटने लगा। अगर वह कोई उपन्यास होता तब भी वह उसे पढ़ना शुरू न करता, लेकिन वह एक बहुत ही छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह था। ऐसी स्थिति में तो यह देखा ही जा सकता था कि उन पांच-पांच, छः-छः पृष्ठों की कहानियों में लेखकों ने आखिर कहा क्या है—कुछ कहानियां तो एक-एक पृष्ठ की ही थीं। विषय सूची वाले पृष्ठ पर उनके शीर्षक इस तरह छपे हुए थे जैसे पथरियां एक-दूसरे के ऊपर चुनी हुई हों। येफ्रेम कहानियों के शीर्षक पढ़ने लगा। उसे फौरन ही अहसास हो गया कि पुस्तक लाभदायक होगी। शीर्षक थे—'काम, बीमारी और मृत्यु', 'बुनियादी कानून', 'स्रोत', ''अग्नि की उपेक्षा करो और यह तुम्हें दबोच लेगी', 'तीन बूढ़े', 'प्रकाश में जाओ जबकि वहां प्रकाश हो'।

येफ्रेम ने पुस्तक को वहां से खोला जहां एक संक्षिप्ततम कहानी थी। उसने वह पढ़ी और ऐसा महसूस किया कि उसे सोचना चाहिए—और वह सोचने लगा। उसने महसूस किया कि उसे वह छोटी-सी कहानी एक बार और पढ़नी चाहिए—और उसने पढ़ी। एक बार फिर महसूस किया कि उसे सोचना चाहिए—और वह सोचने लगा।

दूसरी कहानी के साथ भी बिलकुल यही हुआ।

ठीक इसी वक्त उन्होंने बत्तियां बुझा दीं। येफ्रेम ने किताब अपने गद्दे के नीचे रख ली जिससे कि कोई उसे उड़ा न ले जाये—वर्ना सुबह उसे फिर

---

१. स्टालिन का सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का संक्षिप्त इतिहास। इस इतिहास को चौथे अध्याय तक पढ़ना प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य होता था। चौथा अध्याय मार्क्सवादी दर्शन पर था। आगे के अध्याय उच्च श्रेणियों के छात्रों के लिये थे।

तलाश करनी पड़ेगी। रात के अंधेरे में उसने अहमदजान को एक पौराणिक कथा सुनाई कि ईश्वर ने आयु किस प्रकार वितरित की थी और मनुष्य को किस प्रकार आवश्यकता से अधिक वर्ष मिल गये थे। (इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है कि उसे इस कहानी के एक शब्द पर भी विश्वास नहीं था। वह इसकी कल्पना ही नहीं कर सकता था कि जब तक वह स्वस्थ है तब तक कोई भी वर्ष अनावश्यक हो सकता है।) आज उसने जो कुछ पढ़ा था उसके बारे में सोने से पहले उसने एक बार फिर सोचा।

हां, उसके सिर के दर्द की टीसें उसके सोचने में अवश्य व्यवधान डाल रही थीं।

शुक्रवार की सुबह उदास और अस्पताल की हर सुबह की तरह भारी और बेरंग थी। वार्ड में हर सुबह येफ्रेम के निराशाजनक भाषणों से शुरू होती थी। अगर कोई आशा या अभिलाषा की बात करता भी तो येफ्रेम उस पर तुषारा-पात कर देता और उसके हौसले को पस्त करके ही छोड़ता। लेकिन उस सुबह उसने अपने मुँह से एक शब्द तक न निकाला बल्कि चुपचाप अपनी किताब पढ़ने लगा। हाथ-मुंह धोना बेकार था क्योंकि उसके तो जबड़ों तक पर पट्टियां बंधी थीं। वह नाश्ता अपने पलंग पर कर सकता था और सर्जिकल वार्ड के मरीज़ों का मुआइना आज होना नहीं था। येफ्रेम किताब के खुरदरे और मोटे पन्नों को धीरे-धीरे उलटता रहा, खामोश रहा और पढ़ता और सोचता रहा।

रेडियो-चिकित्सा के मरीज़ों का मुआइना खत्म हो चुका था। सुनहरे फ्रेम की ऐनकवाला डाक्टर कुछ पर चीखा-चिल्लाया लेकिन फिर उसने हिम्मत हार दी और इंजैक्शन लगवा लिया। कोस्तोग्लोतोव अपने अधिकारों के लिये झगड़ता रहा और कमरे से आता जाता रहा। अजोव्रकिन को डिसचार्ज कर दिया गया—उसने अलविदा कही और चला गया। वह अब भी दर्द से दुहरा हो रहा था और उसने दोनों हाथों से अपना पेट पकड़ रखा था। दूसरे मरीज़ों को एक्स-रे और खून चढ़ाने के लिये बुलाया गया लकिन पोदुएव अब भी पलंगों के बीच इधर-से-उधर और उधर-से-इधर घूमने को नहीं उठा और चुपचाप पढ़ता रहा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि किताब उससे बातें कर रही है। पढ़ते वक्त उसने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। किताब ने उसे सचमुच ही जकड़ लिया था।

उसने अपना पूरा जीवन बिता दिया था और इतनी महत्त्वपूर्ण और गंभीर पुस्तक उसके हाथ में इससे पहले कभी नहीं आई थी।

फिर भी इसकी संभावना बहुत ही कम थी कि अगर वह अस्पताल के बिस्तर में न होता और उसकी गर्दन से उठकर उसके सिर तक पहुंच रही दर्द की टीसें न होतीं तो वह उसे पढ़ना शुरू करता। ये छोटी-छोटी कहानियां एक स्वस्थ व्यक्ति तक मुश्किल ही से पहुंच सकती थीं।

येफ्रेम यह शीर्षक तो कल ही देख चुका था—'व्यक्ति किसके सहारे जीते हैं'। शीर्षक का ढंग कुछ ऐसा था कि येफ्रेम को यह महसूस हुआ कि यह शीर्षक स्वयं उसी ने रखा है। अस्पताल के फर्श पर चक्कर काटते हुए, अनाम से विचारों के बारे में सोचते हुए वह गत कुछ सप्ताहों से इसी प्रश्न पर तो विचार करता रहा था कि व्यक्ति जीते किस चीज़ के सहारे हैं।

कहानी कोई बहुत छोटी नहीं थी, लेकिन वह शुरू ही से बहुत आसान और सुकोमल और सीधे-सादे ढंग से दिल से सीधे बातें करती थी।

'एक ज़माने में एक मोची अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक किसान के घर में रहता था। उसके पास न अपना घर था, न जमीन। वह अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण जूते गांठ कर करता था। रोटी महंगी थी और काम का मेहनताना कम—अपनी मेहनत से वह जो कुछ भी कमाता वह खाने पर ही खर्च हो जाता। मोची और उसकी पत्नी के पास फर का सिर्फ एक ही कोट था अब वह भी चिथड़ा होता जा रहा था।''

यहां तक बात एकदम स्पष्ट थी और इसके आगे जो कुछ था वह भी एकदम स्पष्ट था—सेम्योन दुबला-पतला था, नवसिखुआ मिखाइलो और भी दुबला-पतला और मरियल-सा था लेकिन जागीरदारी—

'ऐसा लगता था जैसे किसी दूसरी दुनिया का रहने वाला हो। उसकी थूथनी खूब लाल थी और गर्दन बैल जैसी। उसका समूचा शरीर इस तरह गठा हुआ था जैसे कि इस्पात का पिण्ड हो।...वह जैसा जीवन जी रहा था उसमें यह स्वाभाविक ही था कि उसने जीवन की हर ऊंच-नीच और मौजमस्ती देखी हो। ऐसे व्यक्ति का मृत्यु भी भला क्या बिगाड़ सकती थी!''

येफ्रेम ने ऐसे अनेक व्यक्ति देखे थे। कोयले की खानों का सर्वोच्च अधिकारी कराश्चुक इसी तरह का व्यक्ति था। एंटोनोव भी इसी किस्म का आदमी था और चेचेव और कुल्तिकोव भी। स्वयं येफ्रेम ने भी तो उन्हें टोकना और झाड़ना शुरू कर दिया था!

धीरे-धीरे येफ्रेम ने पूरे ध्यान के साथ एक-एक शब्द पढ़ते हुए कहानी पूरी पढ़ डाली।

इस वक्त तक लंच का समय हो चुका था।

येफ्रेम के मन में न तो चलने की इच्छा थी और न बोलने की। ऐसा लगता था जैसे कोई चीज़ फांस की तरह उसके अन्दर चुभ गई है और अन्दर ही अन्दर उमेठे दे रही है। जहां कभी उसकी आंखें हुआ करती थीं वहां अब आंखें नहीं थीं और जहां कहीं उसका मुंह होता था वहां मुंह नहीं था।

अस्पताल ने येफ्रेम को अब तक एक निश्चित राह पर डाल दिया था और अब उसे शांत और सहमत करना एकदम आसान था।

वह उसी स्थिति में बैठा रहा—तकियों का सहारा लिये और घुटनों को

सिकोड़े। बन्द किताब उसके घुटनों पर रखी थी। वह खाली सफेद दीवार की तरफ देख रहा था। बाहर दिन सूना और उदास था।

सामने के पलंग पर पीले चेहरे वाला मरीज लेटा हुआ था जो अपनी मर्ज़ी से ही अस्पताल में छुट्टी मनाने चला आया था। शेखी बघारते-बघारते वह अब सो गया था। अस्पताल वालों ने उस पर कम्बलों की एक अच्छी-खासी मोटी तह जमा दी थी क्योंकि उसे बुखार था।

अपने पलंग पर अहमदजान सिबगातोव के साथ ड्राफ्ट[1] खेल रहा था। उनकी भाषा एक नहीं थी और वे एक-दूसरे से रूसी भाषा में बात कर रहे थे। सिबगातोव अत्यधिक सावधानीपूर्वक बैठा हुआ था जिससे कि उसे न तो झुकना पड़े और न उसे अपनी बीमार पीठ हिलानी पड़े। वह अभी नौजवान था लेकिन उसके सिर पर बाल कहीं-कहीं ही रह गये थे।

जहां तक येफ्रेम का संबंध है, उसका अब तक बाल भी नहीं उड़ा था। उसके सिर पर भूरे घने बालों का जंगलनुमा एक बहुत बड़ा छत्ता था—इतना घना कि उसमें कंघा घुमाना भी संभव नहीं था। उसकी पौरुष शक्ति अब भी ज्यों की त्यों थी—हालांकि अब उसे उसका कोई फायदा नहीं था।

कोई भी यह नहीं कह सकता था कि येफ्रेम अब तक कितनी औरतों को भुगता चुका है। शुरू-शुरू में उसने उनकी एक सूची बना रखी थी—हालांकि अपनी पत्नियों को दिखाने के लिये उसने एक अलग सूची तैयार कर रखी थी। लेकिन बाद में उसने इस मामले में अपना सिर खपाना छोड़ दिया। उसकी पहली पत्नी का नाम अमीना था। वह चेलाबूगा की तातार लड़की थी। उसका चेहरा साफ-शफ्फाफ था। वह एक अत्यधिक संवेदनशील लड़की थी। उसके चेहरे की खाल इतनी सुकोमल थी कि अगर उसे उंगलियों की गांठों से छू भी दिया जाता तो उससे खून टपकने लगता। वह उच्छृंखल भी थी। वह उसे छोड़कर चली गई और अपनी छोटी बच्ची को भी अपने साथ ले गई। इसके बाद येफ्रेम ने फैसला कर लिया कि वह इस प्रकार का अपमान दुबारा नहीं सहन करेगा—अब हमेशा अपनी पत्नी को पहले वह स्वयं ही छोड़ता था। उसका जीवन उन्मुक्त था और कहीं बंधकर रहना उसकी प्रकृति ही नहीं थी। वह आज एक जगह नौकरी करता और कल किसी दूसरे स्थान पर अनुबंध पर हस्ताक्षर कर देता। अगर अपने परिवार को भी उसे साथ घसीटना पड़ता तो उसकी राह में बाधा ही पड़ती। वह जहां कहीं भी जाता, उसे घर चलाने के लिए कोई-न-कोई औरत मिल ही जाती। बाकी औरतों से वह बस यूं ही सा संबंध रखता था—कभी इच्छा से और कभी अनिच्छापूर्वक भी—वह उनके नाम तक न पूछता—सिर्फ तय किया गया पैसा अदा कर देता। उन औरतों के

---

१. शतरंज की तरह का एक खेल। (अनुवादक की टिप्पणी)

चेहरे, उनकी आदतें और यह कि उनसे भेंट किस तरह हुई थी—ये सब बातें उसके ज़ेहन में गड्ड-मड्ड हो गई थीं। उसे केवल असाधारण बातें ही याद रह गई थीं—उदाहरणार्थ उसे इंजीनियर की पत्नी येव्दोश्का के बारे में याद था। वह अलमा-आता-औन के प्लेटफॉर्म पर उसकी गाड़ी की खिड़की के नीचे खड़ी थी और अपने कूल्हों को इस तरह हिला रही थी जैसे कुछ करने का निमंत्रण दे रही हो। यह युद्ध-काल की बात है। उसकी पूरी गैंग इली जा रही थी जहां भवन-निर्माण का नया काम शुरू होने वाला था और उनके पुराने साथियों का एक अच्छा-खासा हुजूम उन्हें विदा करने आया था। येव्दोश्का का पति, जो एक फटीचर किस्म का ठिगना-सा व्यक्ति था, पास ही खड़ा था और किसी व्यक्ति से किसी बहुत ही मामूली-सी बात पर झगड़ रहा था। इंजन ने रवानगी की सीटी बजाई तो येफ्रेम ने अपनी बांहें फैलाकर ज़ोर से पुकारकर कहा—"देखो, अगर तुम्हें मुझसे प्यार है तो आओ, गाड़ी में उछल आओ! साथ चलते हैं!" उसने उसकी बांहें जकड़ लीं और अपने पति तथा प्लेटफॉर्म पर खड़े सारे हुजूम के देखते-देखते खिड़की में से अन्दर आ गई और दो सप्ताह तक उसके साथ रही। उसने येव्दोश्का को गाड़ी के अन्दर किस तरह खींचा था—यह बात उसकी स्मृति में पत्थर की लकीर की तरह खिची रह गई थी।

एक बात जो येफ्रेम ने अपने जीवन में औरतों के बारे में पाई थी वह यह थी कि वे चिपक जाती हैं। एक औरत को पाना बहुत आसान काम था, लेकिन उससे छुटकारा पाना बहुत ही मुश्किल था। इन दिनों 'समानता' शब्द को बहुत उछाला जा रहा था और येफ्रेम ने उसके विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा था लेकिन अपने दिल की गहराइयों में उसने औरतों को पूरा इंसान अब तक कभी नहीं समझा था—सिवाय अपनी पहली पत्नी अमीना के। फिर भी अगर कोई व्यक्ति पूरी गंभीरता से उसे यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करता कि वह औरतों से बुरा सुलूक करता है तो उसे उस पर आश्चर्य अवश्य होता।

लेकिन इस विचित्र पुस्तक के अनुसार हर चीज़ के लिए स्वयं येफ्रेम ही उत्तरदायी था।

आज उन्होंने बत्तियां कुछ पहले ही जला दीं।

वह फटीचर-सा नाटा व्यक्ति जिसके जबड़े के नीचे गांठ थी जग गया। उसने कंबलों के नीचे से अपने छोटे से गंजे सिर को निकाला और जल्दी से अपना चश्मा लगा लिया जिससे वह अच्छा-खासा प्रोफेसर लगने लगा। उसने तत्काल सबको शुभ सूचना दे दी—इन्जैक्शन इतना बुरा नहीं था, वह तो समझता था कि उससे अत्यधिक कष्ट होगा। फिर उसने पलंग के पास रखी मेज की ओर अपना हाथ बढ़ाया, जैसे कि वह गोता लगा रहा हो, और चूजे के गोश्त की बोटियाँ उठाने लगा।

येफ्रेम को ध्यान आया कि उस जैसे बोदे व्यक्ति हमेशा चूजे का ही गोश्त

माँगते हैं। मेमने के गोश्त को भी ये लोग 'सख्त और भारी' बताते हैं।

येफ़्रेम के बस में होता तो वह अपनी निगाहें किसी और चेहरे की ओर घुमा लेता, लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अपने पूरे शरीर को घुमाना पड़ता। सीधा देखते हुए तो वह सिर्फ यही देख सकता था कि यह गोबर गणेश चूजे की हड्डी पर भेड़िये की तरह मुँह मार रहा है। पोदुएव कुछ बुड़बुड़ाया और तेज़ी से दांई ओर मुड़ा। "सुनो—यह कहानी सुनो! "उसने ऊंची आवाज में घोषणा की। इसका शीर्षक है "लोग किस चीज़ के सहारे जाते हैं।" उसने दांत निपोरे—"भला यह कोई कैसे जान सकता है कि लोग किस चीज़ के सहारे जीते हैं?"

सिबगातोव और अहमदजान ने खेल छोड़कर सिर ऊपर उठाए। अहमदजान चूंकि कुछ जीत रहा था इसलिए उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ प्रसन्नतापूर्वक कहा—"अपने राशन, अपनी वर्दी और रसद के सहारे!"

सेना में भर्ती होने से पहले वह हमेशा गांव में रहता रहा था और केवल उज़बेक बोलता था। उसके रूसी भाषा के शब्द, विचार, अनुशासन और मित्रों के साथ उसकी घनिष्टता—ये सब उसके सैनिक जीवन की ही देन थे।

"और कोई?" येफ़्रेम टर्राया। पुस्तक की पहेली ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था और अब दूसरे भी उस गोरखधंधे में फंस गए थे। "और कोई? बताओ—लोग किस चीज के सहारे जीवित रहते हैं?"

बूढ़ा मुर्सालिमोव रूसी भाषा नहीं समझता था, अगर समझता होता तो सम्भव था कि वह अन्य लोगों के मुकाबले कोई बेहतर जवाब देता। लेकिन ठीक उसी वक्त चिकित्सा-सहायक तुर्गुन, जो अभी विद्यार्थी ही था, उसे इंजैक्शन देने आ गया। "अपने वेतन के सहारे!"—उसने कहा।

कोने से काले प्रोश्का ने इस तरह देखा जैसे वह किसी दुकान की खिड़की में से अन्दर झांक रहा हो। मुंह तो उसका भी खुला लेकिन उसने कहा कुछ नहीं।

"अरे, बताओ!" येफ़्रेम ने मांग की।

द्योमा ने अपनी किताब रख दी और सवाल पर त्यौरी चढ़ाई। सच यह है कि वार्ड में किताब वही लाया था, लेकिन वह उसे कुछ अधिक पढ़ नहीं सका था। उसमें जो बातें थीं वे सच भी नहीं लगती थीं। उस किताब को पढ़ना किसी बहरे आदमी से बातें करना था जो आपके प्रश्नों के गलत उत्तर देता है। यह किताब उसे कमज़ोर बनाती थी और हर चीज़ को गड्ड-मड्ड कर देती थी जबकि उसे आवश्यकता इस बात की थी कि उसे कोई परामर्श दिया जाए कि वह क्या करे। उसने 'लोग किस चीज के सहारे जीते हैं' शीर्षक वाली कहानी नहीं पढ़ी थी, इसलिए उसे वह उत्तर नहीं मालूम था जिसकी येफ़्रेम प्रतीक्षा कर रहा था। वह तो उसका उत्तर अपने ढंग से सोच रहा था।

"छोटे मियां तुम ?" येफ्रेम ने उसे उकसाया।

"हां......मेरे विचार से," द्योमा ने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया जैसे ब्लैक बोर्ड के पास खड़े किसी मास्टर के सवाल का जवाब दे रहा हो और शब्दों को नाप-तोल रहा हो, कि कोई गलती न हो जाए और शब्दों के बीच-बीच में सोचता भी जा रहा हो "......सबसे पहले हवा, फिर—पानी और फिर—खाना।"

अगर किसी ने पहले पूछा होता तो येफ्रेम ने भी यही उत्तर दिया होता। उसमें अगर वह कुछ जोड़ता तो बस शराब और जोड़ देता। लेकिन पुस्तक का आशय यह नहीं था।

उसने अपने होंठों पर जीभ फिराते हुए कहा—"और कोई ?"

प्रोश्का ने भी बोलने का फैसला कर लिया। "अपनी व्यावसायिक निपुणता," उसने कहा।

यह फिर वही बात थी जो स्वयं येफ्रेम जीवन-भर सोचता रहा था।

सिबगातोव ने निःश्वास छोड़ी और झेंपते-झेंपते बोला—"अपनी मातृभूमि से प्यार !"

"क्या मतलब ?" येफ्रेम ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"मतलब है वह स्थान जहां तुम पैदा हुए......अपने जन्म स्थान पर रहना !"

"अरे नहीं, उसकी तुम्हें ज्यादा जरूरत नहीं है। मैंने कामा उस वक्त छोड़ा जब मैं युवक ही था—और मुझे लेशमात्र भी चिन्ता नहीं है कि वह अब है भी कि नहीं। कोई भी नदी दूसरी नदी की तरह ही बहती है और हर जगह एक ही सी होती है।

"जिस स्थान पर तुम्हारा जन्म हुआ है," उसने शान्तिपूर्वक साग्रह कहा—"वहां तुम बीमार नहीं होते। जहां तुम पैदा हुए हो वहां हर बात आसान होती है।"

"खैर, और कोई ?"

"यह सब क्या है ?" रूसानोव ने पूछा। वह अब फिर खुश था। "आखिर समस्या क्या है ?"

येफ्रेम गुर्राया और बाईं ओर मुड़ गया। पीले चेहरे वाले मरीज़ के पलंग के अलावा खिड़कियों के पास के सभी पलंग खाली थे। वह चूजे की टांग खा रहा था और हड्डी के सिरे उसने दोनों हाथों में पकड़ रखे थे।

वे दोनों एक-दूसरे के सामने बैठे थे जैसे शैतान ने दुर्भावनापूर्ण आनन्द के लिए उन्हें वहां रख दिया हो। येफ्रेम ने अपनी आंखें सिकोड़ीं।

"समस्या यह है प्रोफेसर कि लोग किस चीज़ के सहारे जीते हैं ?"

पावेल निकोलाईविच ज़रा भी ऊपर नहीं उठा। उसने चूजा खाते-खाते ही

बस ज़रा-सी निगाह ऊपर उठाई। यह तो कोई मुश्किल प्रश्न नहीं," उसने कहा। "याद रखो, लोग अपने वैचारिक सिद्धान्तों के सहारे और अपने समाज के हितों के लिए जीते हैं।"—और वह सबसे नर्म हड्डी को चूसने लगा। अब सिर्फ पांव की मोटी खाल और पुट्ठों की नसें बाकी रह गई थीं। उसने वे मेज़ के ऊपर एक कागज़ के टुकड़े पर रख दीं।

येफ्रेम ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने झुंझलाहट-सी महसूस की कि यह बोदा आदमी कितनी चालाकी से कन्नी काट जाने में सफल हो गया है। वैचारिक सिद्धान्तों की बात चल निकली है तो बेहतर यही है कि आदमी अपना मुंह बंद रखे।

उसने किताब खोल ली और एक बार फिर उसमें नज़रें गड़ा दीं। वह सही उत्तर स्वयं ही खोज लेना चाहता था।

"यह क्या किताब है?—किसके बारे में है? क्या कहती है?" सिबगातोव ने ड्राफ्ट के खेल पर से नज़रें उठा कर पूछा।

"लो सुनो……!" पोदुएव ने शुरू की कुछ पंक्तियां पढ़ीं—"किसी ज़माने में एक मोची अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक किसान के घर में रहता था। उसके पास न अपना घर था, न ज़मीन……"

लेकिन ऊंची आवाज़ में पढ़ना बहुत मुश्किल काम था और उसमें वक्त भी बहुत लगता, इसलिए उसने तकिए का सहारा ले लिया और कहानी अपने ही शब्दों में सुनाने लगा। इसके साथ ही वह उसका भावार्थ समझने का एक और प्रयत्न भी कर रहा था।

"बहरहाल, मोची ने पीनी शुरू कर दी। एक रात जब वह नशे में धुत्त घर जा रहा था तो रास्ते में उसे एक लड़का मिखाइलो मिला। यह लड़का ठिठुरन से मरा जा रहा था। मोची उसे घर ले आया। उसकी पत्नी ने उसे लताड़ा "क्या?—अब एक और पेट भी भरना पड़ेगा? उसने कहा। लेकिन मिखाइलो ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करना शुरू कर दिया और मोची से भी बेहतर जूते सीने लगा। सर्दी के मौसम में एक दिन जागीरदार उनके पास आया। उसके पास एक कीमती चमड़ा था। यह चमड़ा देते हुए उसने उन्हें हुक्म दिया—'इस चमड़े का एक जोड़ी जूता बना दो जो न तो सिकुड़े और न फटे—और मोची ने अगर चमड़ा खराब कर दिया तो उसके बदले में उसे अपनी खाल देनी पड़ेगी। मिखाइलो ने एक अजीब-सी हंसी हंसी, क्योंकि जागीरदार की पीठ के पीछे उसने कोने में कोई चीज़ देख ली थी। जागीरदार दरवाजे के बाहर निकला ही था कि मिखाइलो ने चमड़ा काट डाला। इस तरह बर्बाद होने के बाद चमड़े से अब जूतों की जोड़ी नहीं बन सकती थी। अब तो उससे स्लीपरों की जोड़ी ही बन सकती थी। मोची ने अपना सिर धुन लिया 'तुमने मुझे बर्बाद कर दिया," उसने कहा—"तुमने मेरी गर्दन पर छुरी फेर

दी है। यह तुमने क्या किया ?" मिखाइला ने कहा—'आदमी साल भर का सामान करता है और उसे मालूम यह भी नहीं होता कि शाम तक ज़िदा भी रहेगा कि नहीं।'

—और यही हुआ। जागीरदार रास्ते ही में मर गया और उसकी पत्नी ने एक लड़का मोची के पास यह कहने भेजा कि 'अब जूते बनाने की जरूरत नहीं है—जितनी जल्दी हो सके लाश के लिए एक जोड़ी स्लीपर बना दो।'

"उफ ! क्या बकवास है ?" रूसानोव ने गुस्से से दांत पीसते हुए कहा—"अब ग्रामोफोन का रिकॉर्ड बदलना चाहिए। क्या दृष्टांत है ! यह नैतिकता हमारे यहाँ की नहीं—हमारी चिन्तन पद्धति से कोसों दूर की है। इससे क्या पता चलता है कि लोग किस चीज़ के सहारे जीते हैं ?"

येफ्रेम ने कहानी सुनाना बंद कर दिया और अपनी सूजी हुई आंखें सामने की गंजी खोपड़ी पर गढ़ा दीं। उसे गुस्सा आ रहा था कि उस गंजे आदमी ने जवाब लगभग भांप लिया था। किताब में बताया गया था कि जिंदा रहने का तरीका यह नहीं कि व्यक्ति अपने बारे में ही चिन्ता करता रहे, बल्कि यह है कि दूसरों से प्यार किया जाए। और उस बोदे आदमी ने कहा था—'समाज के फायदे के लिए।'

—इन बातों में कुछ न कुछ समानता तो है ही।

"लोग किस चीज़ के सहारे जीते हैं ?" बात ऐसी थी कि वह उसे ज़ोर से नहीं कह सकता था—लगभग अशिष्ट थी—"यहां लिखा है प्यार के सहारे।"

"प्यार ?……नहीं, हमारी नैतिकता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं।" सुनहरी फ्रेम के चश्मे वाले ने उसका मजाक उड़ाया। "सुनो, यह सब आखिर लिखा किसने है ?"

"क्या ?" पोदुएव मुंह-ही-मुंह में बड़बड़ाया। वे उसे भटका रहे थे और असली बात से दूर ले जा रहे थे।

"यह किसने लिखी है ? इसका लेखक कौन है ? अरे यह सब वहां लिखा हुआ है—पहले पृष्ठ पर देख लो न !"

नाम का इससे क्या सम्बन्ध है ? नाम का असल बात से क्या सम्बन्ध है?—इनकी बीमारियों, इनकी ज़िन्दगियों और इनकी मौतों से क्या सम्बन्ध है। येफ्रेम जिस किताब को पढ़ता था तो उसका नाम पढ़ने का आदी नहीं था और अगर कभी पढ़ भी लेता था तो फौरन ही उसे भूल भी जाता था। अब उसने फिर प्रथम पृष्ठ पर दृष्टि डाली और ऊंचे स्वर में पढ़ा—"तॉल……स्तॉय !"

"असम्भव !" रूसानोव ने प्रतिरोध किया। "तॉलस्तॉय ?[1] याद रखो कि तॉलस्तॉय केवल आशावादी और देशभक्तिपूर्ण रचनाएं ही लिखता है।—अगर ऐसा न होता तो उसने 'रोटी और पीटर प्रथम' नामक पुस्तक न लिखी होती। और मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि उसे तीन बार स्तालिन पुरस्कार मिला था।"

"यह वह तॉलस्तॉय नहीं ?" द्योमा ने कोने से बड़ी कारवाई के साथ कहा। "यह किताब लियो तॉलस्तॉय ने लिखी है।"

"अच्छा तो वह तॉलस्तॉय नहीं ?" रूसानोव ने शब्दों को चबाते हुए कहा। वह कुछ नर्म पड़ गया था, लेकिन कुछ ऐंठ अब भी रहा था। "अच्छा तो यह कोई दूसरा तॉलस्तॉय है—है न ?···रूसी क्रांति का दर्पण, चावल के कोफ्ते[2]—कष्टकर और आनन्दहीन बातें करने वाला तॉलस्तॉय। ऐसी असंख्य बातें थीं जिन्हें वह समझता ही नहीं था। नौजवानों, तुम्हें बुराई का प्रतिरोध करना चाहिए—तुम्हें उसके विरुद्ध लड़ना चाहिए।"

"मैं पूरी तरह सहमत हूं," द्योमा ने खोखले स्वर में उत्तर दिया।

---

१. रूसानोव ने समझा था कि उसका मतलब अलेक्सी निकोलाएविच तॉलस्तॉय (१८८३—१९४५) से है।

२. तॉलस्तॉय और उसके शाकाहारी सिद्धान्त के सम्बन्ध में लेनिन ने जो कहा था—उसकी ओर संकेत। (अनुवादक की टिप्पणी)

९. दिल का कैंसर

सीनियर सर्जन येवजेनिया उस्तीनोवना में ऐसी कोई विशेषता नहीं थी जो उसके पेशे के सदस्यों से सामान्यत: जोड़ी जाती है। न तो उसकी निगहों से दृढ़ता प्रकट होती थी, न उसके माथे पर ऐसी रेखायें ही थीं जो संकल्प की द्योतक होती हैं और न ही उसका जबड़ा अत्यधिक मजबूत था। वैसे देखने में भी उसमें कोई विशेष बुद्धिमत्ता के लक्षण नहीं दिखाई देते थे। हालांकि उसकी उम्र ५० से ऊपर ही की थी फिर भी अगर वह अपने बालों को सिर के ऊपर डाक्टर की टोपी के नीचे बांध लेती तो यह असम्भव नहीं था कि पीछे से देखने वाले पुरुष उसे कुछ इस प्रकार सम्बोधित करते, "क्षमा करना मिस···" यूं कहा जा सकता है कि अगर पीछे से देखा जाये तो वह एक गर्ल गाईड लगती थी और यदि सामने से देखा जाये तो पेंशनयाफ्ता बूढ़ी औरत। थकी-थकी उदास पलकें, बुझी-बुझी आंखें और स्थाई रूप से मुरझाया हुआ चेहरा। इन सब बातों की कमी को वह भड़कीली लिपिस्टिकों के इस्तेमाल से पूरा करने का प्रयत्न किया करती थी, लेकिन लिपिस्टिक उसे दिन में कई बार लगानी पड़ती थी, क्योंकि सिगरेटों की रगड़ से, जो वह पीती रहती थी, यह मिटती रहती थी।

प्रत्येक क्षण, जब वह आपरेशन कक्ष, मरहम पट्टी के कमरे या वार्ड में न होती, अपने मुंह में सिगरेट लगाये रहती। जैसे ही उसे अवसर मिलता वह बाहर भाग जाती और सिगरेट पर इस तरह झपटती जैसे उसे खा जाना चाहती हो। वह रोगियों की देखभाल कर रही होती तो अनेक बार अपनी पहली दो अंगुलियां उठाकर मुंह तक ले जाती। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वह राउंड करते समय भी सिगरेट पीती रहती थी।

चीफ सर्जन, लेव लिओनिदोविच के अतिरिक्त जो लम्बी-लम्बी बांहों वाला, अत्यधिक लम्बा व्यक्ति था, अस्पताल में सारे आपरेशन यह दुबली-पतली स्त्री ही करती थी। वह मानव शरीर के हिस्सों को चीरती, गले के आपरेशन के लिए हवा की नालियां लगाती, मेदों के बाहर निकालती, अन्तड़ियों के प्रत्येक भाग तक पहुंचती और पेट के अन्दर का कोना-कोना छान मारती और जब दिन के आखिरी आपरेशन हो रहे होते तो उसके कर्त्तव्य में यह भी था कि वह दो-एक कैंसर ग्रस्त छातियां काट दे। यह काम उसके लिये बड़ा ही

आसान था और इस पर उसे दक्षता प्राप्त थी। मंगल अथवा शुक्र का ऐसा कोई ही दिन होता होगा जब येवजेनिया स्त्रियों की छातिया न काटती हो। अपने थके होठों में सिगरेट दबाये कभी-कभी वह आपरेशन-कक्ष को साफ करने वाले अरदली से कहा करती थी कि जितनी छातियां उसने काटी हैं, यदि इकट्ठा करके ढेर लगा दिया जाए तो एक छोटा-सा पहाड़ बन जाय।

येवजेनिया उस्तीनोवना ने जीवन भर सर्जरी ही की थी। सर्जरी के बिना वह कुछ भी नहीं थी। फिर भी तॉलस्तॉय के कोसक येरोश्का के शब्द उसे याद भी थे, जो उसने पश्चिमी यूरोप के डाक्टरों के विषय में कहे थे—

"वह केवल चीर-फाड़ ही कर सकते हैं। खैर, वे बेवकूफ हैं लेकिन पहाड़ों में तुम्हें वास्तविक डाक्टर मिल सकते हैं। उन्हें जड़ी-बूटियों का ज्ञान है।"

और कल यदि किसी दूसरे प्रकार के इलाज का तरीका निकल आये, किरणों का, रासायनिक या जड़ी-बूटियों का या कोई ऐसा तरीका जिसमें रोशनी, रंग या टैलीपेथी से इलाज हो सकता हो, कोई ऐसा तरीका जिससे उसके रोगी डाक्टर की छुरी से बच जायें और सर्जरी को इन्सानी व्यवहार से बिल्कुल ही निकाल दिया जाये तो येवजेनिया उस्तीनोवना अपने पेशे की एक भी क्षण के लिए रक्षा न करती। यह वह अपनी किसी मान्यता के कारण न करती बल्कि केवल इसलिए कि वह जीवन भर चीर-फाड़ ही करती रही थी। अपने सारे जीवन में उसे मांस और खून ही से वास्ता पड़ा था। इन्सानों के बारे में सबसे अधिक थका देने वाली सच्चाई यह है, जिससे बचा भी नहीं जा सकता कि वह अपने जीवन के मध्य में तुरन्त अपना पेशा बदल कर ताजा दम नहीं हो सकते।

प्रात: वह गश्त तीन या चार की टोली बनाकर करते थे। लेव लियोनिदोविच, वह स्वयं और वार्ड में काम करने वाला कर्मचारी। परन्तु कुछ दिन पहले लेव लियोनिदोविच सीने के आपरेशन के सम्मेलन में भाग लेने के लिए मास्को चला गया था और इस शनिवार को किसी कारण से वह ऊपरी मंजिल के पुरुष-वार्ड में बिल्कुल अकेली चली गई थी उसके साथ कोई भी डाक्टर नहीं था—यहाँ तक कि कोई नर्स तक न थी।

वह सीधी अन्दर नहीं गई। लड़कियों की तरह किवाड़ का सहारा लिए चुपचाप वहीं खड़ी रही। एक जवान लड़की किवाड़ का सहारा ले सकती है क्योंकि वह जानती है कि कमर को तान कर, सिर को सीधा रख कर खड़े होने की अपेक्षा यह अच्छा लगता है।

वह वहां खड़ी हुई उदासी से द्योमा को खेलते हुए देखती रही। द्योमा ने अपनी दुखती हुई टांग को बिस्तर पर फैला रखा था और अपनी ठीक टांग के पांव को उसके नीचे रखकर मेज सा बना लिया था। उस पर उसने किताब रखी हुँई थी और उस पर चार पैंसिलों की सहायता से, जो उसने अपने हाथ

में पकड़ रखी थीं, वह कुछ बना रहा था। वह अपनी बनाई हुई आकृति के ख्यलों में मग्न था और ऐसा प्रतीत होता था कि वह शताब्दियों तक इसी तरह मग्न रहेगा। परन्तु ठीक उसी समय किसी ने उसका नाम पुकारा और उसने अपनी बनी हुई पैंसिलों को समेट लिया।

'तुम क्या बना रहे थे द्योमा ?'' येवजेनिया उस्तीनोवना ने उदासी भरे स्वर में पूछा "बीज गणित के सूत्र" उसने खुशी-खुशी जवाब दिया। उसका स्वर जरूरत से ज्यादा ऊंचा था।

उनके बीच केवल इतने ही शब्दों का आदान-प्रदान हुआ। परन्तु एक दूसरे को उन्होंने जिन निगाहों से देखा वे काफी महत्वपूर्ण थीं। स्पष्टतः उनकी वास्तविक दिलचस्पी किसी और ही चीज में थी।

"समय बीत रहा है" द्योमा ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा। परन्तु अब उसके स्वर में न खुशी थी और न ही उसका स्वर ऊंचा था।

येवजेनिया उस्तीनोवना ने सिर को हिलाया। एक पल को वह खामोश रही। वह अब भी किवाड़ का सहारा लिए थी। नहीं, लड़की की तरह नहीं, थके-हारे हुए अन्दाज में।

"आओ जरा तुम्हें देखूं"

द्योमा हमेशा खामोश और आज्ञाकारी होता था परन्तु इस बार उसने कुछ अधिक ही विरोध किया। "लुदमिला अफानासएवना ने कल मेरा निरीक्षण किया था। उसने कहा था कि किरणों का इलाज जारी रहेगा।"

येवजेनिया उस्तीनोवना ने फिर सिर को हिलाया। वह ऐसी निगाहों से देख रही थी जिसमें उदासी भरी हुई थी।

"खैर यह तो अच्छी बात हैं, फिर भी मैं तुम्हें देखूंगी।"

द्योमा के माथे पर बल पड़ गये। उसने अपनी किताब रख दी। स्थान बनाने के लिये पलंग पर सिमट गया और अपनी टांग को घुटने तक नंगा कर लिया।

येवजेनिया उस्तीनोवना उसके समीप ही बैठ गई। किसी विशेष प्रयत्न के बिना उसने झटके से अपनी ऊपरी पोशाक और कोट की आस्तीनों को कोहनी तक चढ़ा लिया और उसके नाजुक एवं सधे हुए हाथ द्योमा की टांग पर ऊपर नीचे चलने लगे, जानदार प्राणियों की तरह।

"क्या तकलीफ होती है ? क्या तकलीफ होती है ?" वह बार-बार पूछती रही।

"हां" द्योमा ने हामी भरी और उसके माथे के बल और गहरे हो गए।

"क्या रात के समय तुम अपनी टांग को महसूस कर सकते हो ?"

"हां ··· परन्तु लुदमिला अफानासएवना ···"

येवजेनिया उस्तीनोवना ने समझते हुए अपने सिर को फिर हिलाया और

उसके कन्धों को थपथपाया।

"बहुत अच्छा, मेरे दोस्त। किरणों का इलाज जारी रखो।"

और एक बार फिर उन्होंने एक-दूसरे की आंखों में झांका।

वार्ड में एकदम खामोशी थी और उनका प्रत्येक शब्द सुना जा सकता था।

येवजेनिया उस्तीनोवना उठ खड़ी हुई और उसका ध्यान अन्य रोगियों की ओर गया। परोश्का को वहां स्टोव के समीप के पलंग पर होना चाहिए था परन्तु कल शाम वह खिड़की के पास के पलग पर चला गया था। (हालांकि ऐसे व्यक्ति के पलग पर जाना, जो बाहर मरने के लिए वार्ड से निकला हो, वहम की बात समझी जाती थी) स्टोव के पास के पलंग पर अब सफेद बालों वाला एक छोटे कद का और खामोश प्रकृति का व्यक्ति फ़ेदरिच फेदेरो था। ऐसा नहीं कि वार्ड में उसके चेहरे को कोई पहचानता हो न हो क्योंकि उससे पहले तीन दिन तक वह बाहर सीढ़ियों पर लेटा रहा था। वह उठ खड़ा हुआ, अपने अंगूठे अपने पाजामे की सिवनों पर रख लिये और आदर भाव से येवजेनिया उस्तीनोवना का स्वागत किया। वह इतना लम्बा न था जितनी वह स्वयं थी।

उसकी सेहत बहुत ही अच्छी थी। कहीं कोई तकलीफ नहीं थी। पहले ऑपरेशन ने हो उसे पूर्ण स्वस्थ कर दिया था। कैंसर क्लीनिक में अब जो वह वापस आया था तो उसका कारण यह नहीं था कि उसे कोई तकलीफ थी, बल्कि यह कि अन्य प्रत्येक काम की तरह नियम की पाबन्दी करना चाहता था। उसके प्रमाण पत्र पर लिखा था; "एक फरवरी, १९५५ को फिर से निरीक्षण कराना है"—और इसीलिए अब वह कठिन सड़कें पार करता हुआ सैंकड़ों मील का सफर तय करके यहां चला आया था। यात्रा के साधन भी काफी कष्ट-दायक थे। पहले उसने लारी के पीछे भेड़ की खाल के कोट और नरम जूतों के साथ सफर किया था और स्टेशन से यहां वह साधारण जूता व हल्का ओवरकोट पहन कर आया था और न तो वह ३१ जनवरी को पहुचा था, न २ फरवरी को, बल्कि उसी बाकायदगी से समय पर पहुंचा था जिस बाकायदगी से चांद को ग्रहण लगता है।

यह उसकी समझ में नहीं आता था कि उन्होंने फिर से अस्पताल में क्यों दाखिल कर लिया है। उसे तो पूर्ण आशा थी कि वह आज ही डिस्चार्ज कर दिया जाएगा।

तुरन्त ही मारिया पहुंच गई, लम्बी मुरझाई, और बुझी आंखों वाली मारिया। उसने तौलिया उठा रखा था। येवजेनिया उस्तीनोवना ने अपने हाथ और बाजू पोंछे जो कोहनियों तक अब भी नंगे थे। उन्हें ऊपर उठाया और पूर्ण खामोशी से फेदेरो की गर्दन पर फेरने लगी। वह काफी देर तक ऐसा करती रही। उसकी उंगलियां गोल घेरे की शक्ल में ऐसा कर रही थीं। तब उसने उससे जैकेट उतारने को कहा और उसकी हंसली की हड्डी के आस-पास

और उसके बाजुओं के नीचे हाथ फेरती रही। अन्त में उसने कहा, "बहुत खूब फेदेरो, जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, प्रत्येक बात बहुत ही अच्छी है।"

उसका चेहरा चमक उठा जैसे उसे कोई इनाम मिल गया हो।

"हर बात बहुत ही अच्छी है" येवजेनिया उस्तीनोवना ने अपने शब्द बहुत ही सहानुभूति से कहे और उसके निचले जबड़े के नीचे फिर अपनी उंगलियां फैरने लगी। "एक छोटा-सा ऑपरेशन औरऔर-फिर सब एकदम ठीक-ठाक हो जाएगा।"

"क्या ?" फेदेरो का चेहरा मुरझा गया। "परन्तु येवजेनिया उस्तीनोवना यदि हर चीज बहुत अच्छी है तो फिर क्यों ?"

"इससे तुम और भी अच्छे हो जाओगे," वह हलकी-सी मुस्कराई।

"यहां ?" उसने अपनी हथेली को गर्दन पर रख कर इधर-से-उधर फेरा जैसे काट रहा हो। उसकी भवें लगभग सफेद थीं।

"हां, यहीं, लेकिन फिक्र न करो। तुम्हारी बीमारी उन लोगों जैसी नहीं जिनकी उपेक्षा की जाती रही है। हम आने वाले मंगल को तुम्हारे ऑपरेशन के लिए तुम्हें तैयार रखेंगे।"—मारिया ने यह बात नोट कर ली—"और फरवरी के अन्त तक तुम इतमीनान से अपने घर चले जाओगे और फिर तुम्हें कभी यहां नहीं आना पड़ेगा।"

"क्या एक और चेक-अप (निरीक्षण) भी होगा ?" फेदेरो ने मुस्कराने का प्रयत्न किया, परन्तु सफल न हो सका।

'हां, शायद चैक-अप होगा।" वह क्षमा याचना के ढंग में मुस्कुराई। अपनी थकी मुस्कराहट के सिवा वह उसकी तसल्ली के लिए कर भी क्या सकती थी ? वह उसे वहीं छोड़कर चली गई। वह बैठ गया और सोचने लगा। कमरे को पार करती हुई वह आगे बढ़ी, अहमदजान के समीप से गुजरी तो उस पर एक हलकी मुस्कुराहट बिखेरी। तीन सप्ताह पहले उसने उसकी वंक्षण का ऑपरेशन किया था। येफ्रेम के पास पहुंचकर वह रुक गई।

जो नीली किताब वह पढ़ रहा था उसे वह अब तक फेंक चुका था और उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसका सिर चौड़ा था, उसकी गर्दन पर पट्टियां बंधी थीं और इस कारण से वह कुछ ज्यादा ही मोटा नज़र आ रहा था। उसके कन्धे चौड़े थे और वह अपनी टांगें समेटे पलंग पर बैठा था। इस तरह वह एक अद्भुत किस्म का बौना नजर आ रहा था। उसने बेजारी से उसकी तरफ देखा तथा चोट का इन्तजार करने लगा।

वह अपनी कोहनियों के बल उसके पलंग के कटहरे पर झुक गई और अपनी दो अंगुलियों को होठों तक ले गई जैसे सिगरेट पी रही हो।

"तो फिर आज हमारा मूड कैसा है, पोदुएव ?"

यहां खड़ी होकर मूड के सम्बन्ध में बातें बनाने के सिवा क्या उसे कोई

काम नहीं है। उसे जो कुछ बातें कहना है, कहे और चली जाए। उसे केवल अपने काम से काम रखना चाहिए।

"मैं इस चीर-फाड़ से तंग आ गया हूं।" येफ्रेम फूट पड़ा।

येवजेनिया उस्तीनोवना ने अपनी भवें ऊपर उठा लीं जैसे इस बात पर हैरान हो रही हो कि कोई चीर-फाड़ से भी तंग आ सकता है।

उसने कुछ कहा नहीं और जहां तक येफ्रेम का सम्बन्ध है वह पहले ही काफी कह चुका था।

वे दोनों ही खामोश थे। जैसे दो प्रेमी नाराजगी के बाद या सम्बन्ध-विच्छेद से पहले होते हैं।

"फिर उसी स्थान पर ?" यह प्रश्न नहीं था। केवल बयान था।

(वह चाहता था कि चीख-चीखकर कहे, "तुमने पहले क्या किया था ? तुम्हारे दिमाग में है क्या ?" अफसरों के साथ बर्ताव के समय वह कभी भी सतर्कता नहीं बरतता था। हमेशा उनकी गर्दन जा दबोचता था, लेकिन येवजेनिया उस्तीनोवना को उसने माफ कर दिया। उसकी भावनाओं का वह स्वयं ही अनुमान लगा लेगी।)

"उसके बिलकुल पास ही", कुछ अन्तर बताते हुए कहा।

(बेचारा ! वह उसे कैसे बताये कि जीभ का कैंसर निचले होंठ का कैंसर नहीं होता। जैसे ही तुम जबड़े के नीचे की गांठें निकालते हो तुरन्त ही पता चलता है कि नीचे की रसनाली भी प्रभावित है। वह पहले वहां ऑपरेशन कर नहीं सकती थी।)

येफ्रेम गुर्राया, एक ऐसे मनुष्य की तरह जो इतना बोझ खींच रहा हो जो उसकी हिम्मत से बाहर हो।

"मुझे इसकी जरूरत नहीं है—मुझे इसकी बिलकुल जरूरत नहीं।"

येवजेनिया उस्तीनोवना ने उसे बातों से बहलाने का प्रयत्न नहीं किया।

"मैं और चीर-फाड़ नहीं चाहता। मैं और कुछ भी नहीं चाहता।"

वह उसकी ओर खामोशी से देखती रही।

"मुझे छुट्टी दे दो।"

येवजेनिया उस्तीनोवना ने उसकी लाल आंखों में झांका। वे इतना डर सह चुकी थीं कि अब वे बिलकुल निडर थीं। उसने स्वयं भी सोचा, आखिर उसे तकलीफ में क्यों डाला जाए, जब सर्जरी के चाकू से भी उसकी दूसरी रसौलियों को नहीं रोका जा सकता है तो उसे तकलीफ क्यों दी जाए ?"

"हम सोमवार को तुम्हारी पट्टियां खोलेंगे, पोदुएव तब देखेंगे, क्यों ठीक है न ?"

(उसने मांग की थी कि उसे छुट्टी दे दी जाए, फिर भी उसे निराशापूर्ण-सी आशा थी कि वह उससे कहेगी, "तुम पागल हो गए हो। पोदुएव, तुम्हारा

मतलब क्या है छुट्टी दे दें ? हम तुम्हारा इलाज करेंगे, तुम्हें स्वस्थ करेंगे।)" लेकिन वह मान गई थी। जिसका मतलब था कि इसका कोई इलाज नहीं है।)

उसने सिर को हिलाने का संकेत करने के लिए पूरे शरीर को हिलाया। केवल अपने सिर को हिलाना उसके लिए संभव न था।

वह परोश्का की तरफ गई। वह उसके स्वागत के लिए उठ खड़ा हुआ और मुस्कराया। उसने उसका निरीक्षण नहीं किया, केवल इतना पूछा, "तो तुम क्या महसूस कर रहे हो ?"

"बहुत बढ़िया।" परोश्का के होठों पर मुस्कान फैल गई। "इन गोलियों ने बड़ा काम किया है।"

उसने मलटी विटामिन की शीशी की ओर इशारा किया। काश, उसे, उसको मोम करना आ जाए। काश वह उसे सहमत कर सके कि वह ऑपरेशन की बात तक न सोचे।

येवजेनिया उस्तीनोवना ने गोलियों की तरफ देखकर सिर को हिलाया फिर उसने उसके सीने के बाईं ओर अपना हाथ फैलाया।

"क्या यहां कभी-कभी तकलीफ होती है ?"

"हां थोड़ी-सी।"

उसने फिर सिर को हिलाया "हम आज तुम्हें छुट्टी देने जा रहे हैं।"

परोश्का का अंग-अंग नाच उठा। उसकी काली भवें ऊपर को उठ गईं जैसे छत को छूना चाहती हों।

"क्या तुम्हारा मतलब है कि ऑपरेशन नहीं होगा ?"

उसने अपने सिर को नकारात्मक ढंग से हिलाया और उसकी तरफ देखकर हल्के से मुस्करा दी।

उन्होंने उसके रोग की जांच पर एक सप्ताह लगाया था। चार बार वे उसे एक्स-किरणों के कमरे में ले गए थे जहां उन्होंने उसे बिठाया था, लिटाया था, खड़ा किया था। वे उसे सफेद कोट पहने हुए वृद्धों के पास ले गए थे और अन्त में उसने अनुमान लगा लिया था कि उसकी दशा कुछ अधिक ही खराब होगी परन्तु अब अचानक वे उसे खुला छोड़ रहे हैं, और वह भी ऑपरेशन के बिना ही।

"तो मैं स्वस्थ हूं, क्यों हूं ?"

"पूरी तरह तो नहीं।"

"ये गोलियां अच्छी हैं, क्यों न ?" उसकी काली आंखें आभार और अचम्भे से चमक रही थीं। उसे यह महसूस करके खुशी हो रही थी कि उसकी बीमारी इतनी जल्दी खत्म हो जाने से येवजेनिया उस्तीनोवना भी खुश थी।

"तुम ये गोलियां कैमिस्ट की दुकान से खरीद सकते हो लेकिन मैं तुम्हारे लिए एक दूसरी चीज भी बताऊंगी जो तुम ले सकते हो...।" फिर नर्स की

ओर मुड़कर उसने कहा, "असकोरविक एसिड ।"

मारिया ने एक खास ढंग से सिर को हिलाया और अपनी डायरी में लिख लिया ।

"तुम्हें केवल सतर्कता बरतनी पड़ेगी ।" येवजेनिया उस्तीनोवना ने परोश्का को समझाते हुए कहा, "तुम्हें जल्दी-जल्दी नहीं चलना चाहिए, और अधिक वजन नहीं उठाना चाहिये और जब तुम नीचे झुको तो सावधानी के साथ ।"

परोश्का ने कहकहा लगाया, उसे प्रसन्नता थी कि संसार में कुछ बातें ऐसी भी हैं जिन्हें वह भी नहीं समझती ।

"मैं बोझ उठाने से कैसे बच सकता हूं ? मैं ट्रैक्टर ड्राइवर हूं ।"

"तुम कुछ समय तक यह काम नहीं कर सकोगे ।"

"क्यों ? क्या मुझे बीमारी की छुट्टी मिल जायेगी ?"

"नहीं, हम तुम्हें सर्टीफिकेट दे देंगे कि तुम काम करने के अयोग्य हो ।"

"काम के अयोग्य ।" परोश्का की निगाहों से लगभग भयावहता बरसने लगी । "काम के अयोग्य होने का सर्टीफिकेट जाए जहन्नुम में । मुझे इसकी क्या जरूरत है ? क्या मैं इसके सहारे जी सकता हूँ ? मैं नवयुवक हूं और काम करना चाहता हूं ।"

उसने अपना स्वस्थ और खुरदरी उंगलियों वाला हाथ आगे फैला दिया । ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह काम की भीख मांग रहा हो ।

लेकिन येवजेनिया उस्तीनोवना सहमत नहीं हुई ।

"आधे घन्टे के अन्दर-अन्दर नीचे सर्जरी के मरहम पट्टी के कमरे में चले जाओ । वे तुम्हारा सर्टीफिकेट तैयार कर देंगे और मैं तुम्हें सब समझा दूंगी ।"

वह कमरे से चली गई और दुबली-पतली मारिया भी उसके पीछे चला गई ।

उसी समय कई रोगियों ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया । परोश्का ने अपने काम के अयोग्य होने के सर्टीफिकेट के बारे में पूछा, उसका क्या मतलब होता है ! परोश्का चाहता था कि अपने साथियों से इस बारे में बातचीत करे लेकिन वे फेदेरो के बारे में बातचीत कर रहे थे । ऐसा प्रतीत होता था जैसे उन पर बिजली गिर पड़ी हो । एक ऐसी गर्दन थी जो नर्म थी, सफेद थी, उस पर कोई निशान नहीं था और कोई कष्ट भी नहीं होता था । फिर भी उसका ऑपरेशन होगा !

पोदुएव ने पलग पर करवट ली । उसने अपनी टांगों को समेट रखा था तथा अपनी बाहों और शरीर को हिलाया । इस प्रकार मुड़ते हुए वह ऐसा लगा जैसे उसकी टांगें हों ही नहीं । वह गुस्से से चिल्लाया, उसका चेहरा लाल हो रहा था, "धोखा न खाना, फ़ेदरिच, बेवकूफ न बनना, एक बार उन्होंने चीर फाड़ आरम्भ कर दी तो मरते दम तक यही करते रहेंगे । मेरे साथ भी उन्होंने

यही किया है।"

परन्तु अहमदजान की राय भिन्न थी, "ऑपरेशन आवश्यक ही होगा फेदेरो। अगर कोई कारण न होता तो भला वे ऐसा क्यों कहते ?"

"जब तकलीफ होती ही नहीं तो आपरेशन क्यों जरूरी है ?" द्योमा ने नफरत भरे स्वर में कहा।

"तुम्हें क्या हुआ है भाई ?" कोस्तोग्लोतोव गरजा, "एक स्वस्थ गर्दन का आपरेशन क्या यह पागलपन नहीं ?"

वार्ड में शोर शराबा व चीख पुकार फैलती गई तो रूसानोव ने अपना चेहरा सिकोड़ लिया, फिर भी उसने सोचा कि वह कहेगा कुछ नहीं कल जो उसे इन्जेक्शन लगा था उसके बाद उसकी तबियत की उदासी काफी सीमा तक दूर हो गई थी क्योंकि उस इन्जैक्शन को उसने किसी विशेष कठिनाई के बिना सहन कर लिया था। परन्तु सारी पिछली रात और आज सुबह भी अपनी गर्दन की रसौली के कारण उसे अपने सिर को हिलाना पहले ही की तरह कठिन रहा था। और आज तो वह और भी कठिनाई में था क्योंकि सिर नीचे जाता ही नहीं था।

बहरहाल डा० गैंगार्त उसे देखने आई थी। उसने उससे विस्तार से पूछा था कि कल, रात के दौरान और आज उसकी कैसी हालत रही ? उसने उसकी बीमारी के हर पहलू पर बात की थी। उसने पूछा था कि वह कितनी कमजोरी महसूस करता रहा था। और बताया था कि यह आवश्यक नहीं कि रसौली पहले ही इन्जैक्शन के बाद घटनी शुरू हो जाये। सच यह है कि यह बिल्कुल साधारण बात थी कि रसौली में कोई फर्क ही न पड़े। इस तरह किसी-न-किसी सीमा तक रूसानोव की तसल्ली हो गई थी। उसने गैंगार्त को बड़े ध्यान से देखा। उसके चेहरे से यह प्रकट नहीं होता था कि वह बेवकूफ है। (केवल उसका खानदानी नाम कुछ शक पैदा करता था।) आखिर इस अस्पताल के डाक्टर बिल्कुल ही तो बेवकूफ नहीं। उन्हें कुछ अनुभव तो होगा ही। आदमी को केवल यह मालूम होना चाहिये कि आदमी से काम किस तरह लिया जाए।

परन्तु उसका दिमाग अधिक समय तक संतुष्ट न रह सका। डाक्टर तो चली गई लेकिन रसौली उसके जबड़े के नीचे पहले ही की तरह उभरी रही और जबड़े पर बोझ-सा डालती रही। मरीज़ बेतुका शोर करते रहे और फिर यह बात भी थी कि एक आदमी की ऐसी गर्दन पर आपरेशन किया जा रहा था जो बिल्कुल स्वस्थ थी। रूसानोव की लौंदे जैसी रसौली इतनी बड़ी थी फिर भी वे उसका आपरेशन नहीं कर रहे थे और न ऐसा करने का उनका कोई इरादा ही था। मामला इतना खराब तो नहीं हो सकता।

परसों जब वह वार्ड में दाखिल हुआ था तो पावेल निकोलाईविच ने यह कल्पना तक न की थी कि वह इतनी जल्दी इन लोगों के साथ एकजुटता अनुभव

करने लगेगा। लेकिन इसका कारण इन सबकी गरदनें ही तो थीं जो दाव पर लगी हुई थी। इन तीनों की गर्दनें दाव पर लगी हुई थीं।

फ्रेदरिच फेदेरो बहुत बेचैन था। वह उनके मशवरे सुनता रहा और बेचैनी से मुसकुराता रहा। वे सबके सब, जो उसे बता रहे थे कि क्या करना चाहिए, पूरी तरह आश्वस्त थे। केवल वही था जिसे अपने बारे में कोई शक था। (बिल्कुल उसी तरह जिस तरह वे स्वयं शक में पड़ जाते थे जब उनकी अपनी समस्या उठ खड़ी होती थी।) आपरेशन खतरनाक था लेकिन आपरेशन न कराना भी खतरनाक हो सकता था। पिछली बार जब वह यहाँ था। तो काफी कुछ देख चुका था। और उसने कुछ छानबीन भी की थी। उस समय उन्होंने उसके निचले होंठ का रेडियो किरणों से इलाज किया था, बिल्कुल उसी तरह जैसे अब वे एगेनबरदेव का कर रहे थे। इसके पश्चात् उसके होंठ का खुरंट सूख गया था और गिर पड़ा था। परन्तु उसे मालूम था कि वे उसकी गर्दन की ग्रन्थि का आपरेशन क्यों कर रहे हैं। वे कैंसर को और फैलने देने से रोकना चाहते थे।

लेकिन मामला इतना साफ नहीं था। उन्होंने पोदुएव का दो बार आपरेशन किया, उससे क्या लाभ हुआ? और फिर यह भी तो हो सकता है कि कैंसर का फैलने का कोई इरादा ही न हो। यदि वह समाप्त ही हो चुका हो तो?

चाहे, कुछ भी हो वह अपनी पत्नी से मशवरा अवश्य करेगा और विशेषतः अपनी बेटी हेनरीता से, जो घर में सबसे अधिक पढ़ी लिखी थी और जिसकी बात निर्णायक होती थी। परन्तु वह तो यहां पलंग पर लेटा हुआ है और अस्पताल वालों से यह आशा नहीं की जा सकती कि वे पत्रों के उत्तर की प्रतीक्षा करें। (मरुस्थल के जिस छोर पर वह रहता था वहां के सबसे समीप के स्टेशन पर अब भी डाक सप्ताह में केवल दो बार पहुंचती थी और वह भी तब जबकि सड़कें ठीक हों।) अस्पताल से छुट्टी लेकर घर जाना बहुत कठिन काम था। इतना कठिन कि न तो डाक्टरों को इसका एहसास था और न उन मरीजों को जो उसको सलाह दे रहे थे। ऐसा करने के लिए उसे कस्बे के कमानदार से अपनी यात्रा के पासपोर्ट पर आखिरी मोहर लगवानी पड़ेगी। इस पासपोर्ट को प्राप्त करने में उसे काफी कठिनाई हुई थी। अब यदि वह जाना चाहे तो उसे अस्थायी रजिस्टर पर से अपना नाम कटवाना पड़ेगा। पहले उसे छोटे रेलवे स्टेशन तक सफर करना पड़ेगा और वहां जाकर अपना फर कोट और नमदे चढ़े जूते पहनने पड़ेंगे, जो कुछ मेहरबान अजनबियों ने, जो उसे मिल गये थे, उसके लिए संभालकर रखे हुए हैं। यह इसलिए आवश्यक था कि वहां का मौसम यहां जैसा नहीं था। वहां अब भी बला की सर्दी है और सुन्नकर देने वाली हवायें चलती हैं। उसके पश्चात् उसे अपने सहकारी खेत के ट्रेक्टर स्टेशन तक हचकोले खाते हुए जाना पड़ेगा और यह भी संभव है कि उसे लारी के अन्दर जगह

मिलने की बजाय उसके पीछे बैठना पड़े और घर पहुँचने के बाद उसे फिर जिले के कमानदार को लिखना पड़ेगा और क्षेत्र को छोड़ने की अनुमति लेने के लिए दो, तीन या चार सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी पड़े। अनुमति मिलने के पश्चात् उसे नौकरी से छुट्टी लेनी पड़ेगी और यह वह समय होगा जब बर्फ पिघलना आरम्भ हो चुकी होगी। सड़कों पर दलदल होगी और आना जाना बहुत ही कठिन हो जाएगा। फिर छोटे स्टेशन पर हर २४ घन्टे के बाद दो गाड़ियां केवल एक मिनट के लिए रुकती थीं। उसे गाड़ी में स्थान प्राप्त करने के लिए एक गाड़ी के सहायक से दूसरे सहायक तक पागलों की तरह भागना पड़ेगा और फिर यहां आकर उसे स्थानीय कमानदार के पास जाकर अस्थाई रजिस्टर में फिर अपना नाम दर्ज कराना पड़ेगा और अस्पताल में दाखिल होने के लिए अपनी बारी की कई दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

इस बीच वे परोश्का के बारे में बातचीत करते रहे। जो कुछ अभी-अभी हुआ था उसके बाद भला कोई अंधविश्वासी कैसे हो सकता था? उसका पलंग तो मनहूस कहलाता था। उन्होंने उसे बधाई दी और मशवरा दिया कि काम के अयोग्य होने का जो सर्टीफिकेट उसे दिया जा रहा है वह उसे ले ले।

'वे यह दे रहे हैं तो ले लो। वे दे रहे हैं तो ज़रूरी ही होगा। अब वे दे रहे हैं फिर शायद वापस ले लें।'' परन्तु परोश्का विरोध करता रहा कि वह काम करना चाहता है। ''अच्छा बेवकूफ, तुम्हारे लिए काम की कमी न होगी। जीवन बहुत लम्बा है।''

परोश्का अपना सर्टीफिकेट लेने चला गया। वार्ड में शन्ति छाने लगी। येफ्रेम ने फिर अपनी पुस्तक खोल ली। परन्तु वह लाइनें पढ़ अवश्य रहा था पर उनका मतलब उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसे शीघ्र ही इसका एहसास हो गया।

जो कुछ वह पढ़ रहा था, वह उसके समझ में इस लिये नहीं आ रहा कि कक्षा में और बाहर गलियारे में जो कुछ हो रहा था उसने उसे बेचैन और परेशान कर दिया था। कुछ समझने के लिये उसे यह बात भली प्रकार समझना आवश्यक थी कि अब कुछ करना उसके लिये संभव नहीं रहा। वह न तो परिस्थिति को बदल सकता है और न किसी व्यक्ति को सहमत कर सकता है। उसके केवल कुछ ही दिन बाकी रह गये हैं जिनमें वह अपने जीवन के बारे में कुछ सोच सकता है।

जब यह बात उसकी समझ में आ जायेगी, किताव का मतलव भी तभी उसकी समझ में आयेगा। किताब के शब्द नियमानुसार सफेद कागज पर काली स्याही ही में छपे थे परन्तु समझने के लिये पढ़ सकना ही काफी नहीं था।

परोश्का सीढ़ियों पर चला आ रहा था और उसने प्रसन्नता से अपना सर्टीफिकेट थाम रखा था। ऊपर की सीढ़ी पर वह कोस्तोग्लोतोव से मिला और

उसे सर्टीफिकेट दिखाया, "देखो, कितनी सारी मोहरें लगी हैं।" उसने कहा, एक सर्टीफिकेट रेलवे स्टेशन के लिये था जिसमें लिखा था कि इस व्यक्ति को टिकट दे दिया जाये क्योंकि इसका आपरेशन हुआ है। (यदि आपरेशन का जिक्र न होता तो रोगियों को स्टेशन पर साधारण लाइन में खड़ा होना पड़ता जिसका मतलब यह था कि वे दो या तीन दिन तक जा नहीं पाते। दूसरा सर्टीफिकेट उसके रहने के स्थान के स्वास्थ्य विभाग की सूचना के लिये था जिस पर लैटिन भाषा में लिखा था 'tumour cordis, casus inoperabilis.'

"मैं समझ नहीं पा रहा," परोश्का ने उस पर अंगुली रख कर कहा, "यह क्या लिखा है ?"

"जरा सोचने दो," कोस्तोग्लोतोव ने अपनी आंखें भींच ली, "इसे हटालो। इसके बिना मैं बेहतर सोच सकता हूं।"

परोश्का ने अपना बहुमूल्य सर्टीफिकेट समेट लिया और अपना सामान बांधने लगा।

कोस्तोग्लोतोव सीढ़ियों की रेलिंग पर झुक गया। उसके माथे के ऊपर से बालों का एक गुच्छा लटक कर झूलने लगा।

उसने लैटिन भाषा नियमित रूप नहीं से पढ़ी थी, कोई अन्य विदेशी भाषा नियमित रूप से नहीं पढ़ी थी। और सच तो यह है कि भूगोल के अतिरिक्त कोई भी अन्य विषय उसने नियमित रूप से नहीं पढ़ा था और भूगोल भी उसी भी सीमा तक जिस सीमा तक सार्जेन्टों को सैनिक नक्शानवीसी के लिये उसकी आवश्यकता होती है। हालांकि सामान्य शिक्षा पर नफरत प्रकट करने का कोई अवसर उसने हाथ से जाने नहीं दिया था, फिर भी अपने कानों और अपनी आंखों को उसने हमेशा खुला रखा था और साधारण से साधारण चीज भी जो उसके दिमाग को विस्तार दे सके, उसने अपनी पकड़ में ले ली थी। १९३८ में उसने १ वर्ष जो भौतिकी पढ़ी थी और १९४६ और १९४७ के मध्य कुछ समय तक—जो शिक्षा ली थी। शिक्षा के इन दोनों समयों के बीच युद्ध हुआ और वह फौज में भरती हो गया। स्पष्टतः इस तरह की स्थिति वैज्ञानिक शिक्षा के लिये कोई विशेष अनुकूल नहीं होती। लेकिन कोस्तोग्लोतोव ने अपने दादा के इस कथन को हमेशा याद रखा था कि बेवकूफ को शिक्षा देने से और एक बुद्धिमान को शिक्षा लेने से प्यार होता है। जो वर्ष उसने फौज में गुजारे उनमें भी उसने लाभदायक जानकारियाँ प्राप्त करने की हमेशा चेष्टा की थी। और अपने कानों को प्रत्येक समझदारी की बातचीत के लिये खुला रखा था— फिर चाहे कोई दूसरी रेजीमेन्ट का अफसर बोल रहा हो और चाहे कोई उसकी पलटन का सिपाही वह प्रत्येक बात पर ध्यान अवश्य देता। परन्तु बातचीत वह इस ढंग से सुनता कि उसके सम्मान को कोई ठेस न लगे। वह प्रत्येक बात पूरी तन्मयता से सुनता परन्तु प्रकट हमेशा यही करता कि वह यूं ही सुन रहा है और इसका कोई

विशेष उद्देश्य नहीं। जब वह किसी को पहली बार मिलता तो आगे बढ़ने का कोई प्रयत्न न करता और न कोई पोज ही बनाता। पहले वह यह जानने का प्रयत्न करता कि उसका नया मित्र कौन है, किस वातावरण से आया है, संसार के किस कौने का रहने वाला है और किस प्रकार का आदमी है? इस तरह वह बहुत सीखता और बहुत कुछ मालूम कर लेता। परन्तु जिस जगह उसे अत्यधिक जानकारी मिली वह ब्यूटरका की जेल थी। जिसकी कोठरियां युद्ध के बाद इतनी भर गई थीं कि तिल धरने को जगह नहीं थी प्रत्येक शाम प्रोफेसर लैक्चर देते जिनमें कुछ दर्शन शास्त्र के डाक्टर थे और कुछ अन्य विषयों के विशेषज्ञ। उदाहरणतः आणुविक भौतिकी, पश्चिमी स्थापत्यकला genetics—काव्य या शहद की मक्खियां पालना। और ये तमाम लैक्चर कोस्तोग्लोतोव पूरे उत्साह से सुनता। क्रास्नाया प्रेस्न्या जेल की कोठरियों में सोने के तख्तों पर, जेल की गाड़ियों के खुरदरे तख्तों पर और जहां जहां ये गाड़ियां रुकतीं, वहाँ फर्श पर आलती-पालती मारकर या कैम्प में मार्च करते समय जहां कहीं भी वह होता, अपने दादा के सिद्धान्तावाक्य का अवश्य अनुसरण करता और वह तमाम जानकारी प्राप्त करने में जुटा रहता जो विद्यालयों में प्राप्त करने का उसे अवसर नहीं मिला था।

कैम्प में भी वह उस व्यक्ति से लगातार बहस करता रहता जो रिकार्ड रखता था। यह एक ढलती आयु का शर्मीला-सा छोटे कद का व्यक्ति था। कैम्प के अस्पताल विभाग में वह काम करता था, परन्तु उससे और काम भी ले लिए जाते थे जैसे गर्म पानी लाना। पता चला कि वह लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में क्लासोकी भाषा-विज्ञान और प्राचीन साहित्य का प्रोफेसर था। कोस्तोग्लोतोव को सूझा कि उससे लैटिन भाषा सीखी जाए। इसके लिये उन्हें बाहर जाकर सुन्न कर देने वाले मौसम में कैम्प में ऊपर-नीचे चलना पड़ता था, किसी पैंसिल या कागज के बिना। रिकार्ड रखने वाला कभी-कभी अपना दस्ताना उतारकर अपनी उंगली से बर्फ पर कुछ लिख देता। (पढ़ाने में उसका कोई स्वयं का लाभ नहीं था। केवल इतनी बात थी कि कुछ देर के लिए उसे महसूस होने लगता कि वह भी एक इन्सान है। कोस्तोग्लोतोव के पास उसे देने के लिये था भी क्या? परन्तु इसका मूल्य दोनों ही को चुकाना पड़ा। कैम्प के मुख्य सुरक्षा अधिकारी ने उन्हें अलग-अलग बुलाकर बाकायदा पूछताछ की। उसे शक था कि या तो वे भाग निकलने की योजना बना रहे हैं या बर्फ पर उस क्षेत्र का नक्शा बना रहे हैं। लैटिन भाषा सीखने की बात पर उसे विश्वास नहीं हुआ और शिक्षा का सिलसिला उन्हें समाप्त करना पड़ा।)

लैटिन भाषा के उन पाठों से उसे जो कुछ याद था और उस पुस्तक से प्राप्त जानकारी के आधार पर, जो जोया ने उसे दी थी, कोस्तोग्लोतोव ने सुगमता से अनुमान लगा लिया कि परीक्षा के सर्टीफिकेट पर जो शब्द लिखे हुए हैं

उनका मतलब है "दिल का कैंसर, ऑपरेशन के अयोग्य।"

नुस्खे में अस्कोरबिक एसिड लिखने का मतलब यह था कि यही नहीं कि बीमारी का ऑपरेशन नहीं हो सकता बल्कि इलाज भी नहीं हो सकता।

कोस्तोग्लोतोव अब भी सीढ़ियों की रेलिंग पर झुका हुआ था। वह लैटिन भाषा के अनुवाद के बारे में नहीं बल्कि अपने सिद्धांत के बारे में सोच रहा था जो उसने पिछले दिन लुदमिला अफानासएवना के सामने पेश किया था। अर्थात् यह कि रोगी को अपनी बीमारी के बारे में हर चीज जानने का अधिकार है।

लेकिन यह एक ऐसा नियम था जो उस जैसे लोगों के लिए था जिन्होंने दुनिया थोड़ी-बहुत देखी हो।

और परोश्का ?

परोश्का के पास ले जाने के लिए कुछ विशेष नहीं था। उसका कुछ भी तो न था। सिबगातोव, द्योमा और अहमदजान उसे छोड़ने गए। यह काम उन तीनों ने बड़ी ही सावधानी से किया। एक ने उसकी पीठ को सहारा दिया और एक ने उसकी एक टांग को और तीसरा उस छोटी-सी बैसाखी को संभाले रहा जिसका वह सहारा ले रहा था। लेकिन परोश्का खुशी-खुशी चल रहा था और उसके सफेद दांत चमक रहे थे।

कोस्तोग्लोतोव को कैम्प की बात याद आ गई, जब कभी कभार वह किसी ऐसे कैदी को विदाई देते थे जिसे रिहाई मिल गई हो।

वह उसे किस मुंह से बताता कि जैसे ही वह कैम्प के दरवाजे के बाहर कदम रखेगा उसे फिर गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

"तो फिर सर्टीफिकेट में क्या लिखा है ?" परोश्का ने उसके पास से निकलते हुए पूछा। उसके स्वर में कोई चिन्ता न थी।

"भगवान जाने।" यह कहते हुए कोस्तोग्लोतोव के चेहरे पर बल पड़ गए और इसके साथ उसके घाव के निशान पर भी। "डाक्टर इन दिनों बहुत चालाक हो गए हैं। इस प्रकार लिखते हैं कि कोई एक शब्द भी न पढ़ सके।"

"भगवान् तुम सबको स्वास्थ्य दे। मित्रो, तुम सब स्वस्थ हो जाओ और अपने घर पत्नियों के पास जाओ।" परोश्का ने उन सबसे हाथ मिलाया। सीढ़ियां उतरकर बीच में वह एक बार और मुड़ा और उन सबकी ओर प्रसन्नता से हाथ हिलाया।

वह बड़े ही विश्वास के साथ सीढ़ियों से नीचे जा रहा था।

मौत की ओर !

१०. बच्चे

उसने केवल इतना किया था, कि द्योमा की रसौली के गिर्द अपनी उंगलियां फेरी थीं और अपने कंधों को थोड़ा-सा हिलाया था। उसके बाद वह आगे बढ़ गई थी, परन्तु जैसे ही वह आगे बढ़ी एक अपशकुन हो गया था! द्योमा ने उसे महसूस कर लिया तथा उसकी आशा का महल छिन्न-भिन्न हो गया।

उसने यह तुरन्त ही महसूस नहीं किया। पहले वार्ड में काफी बातें होती रहीं। प्रत्येक व्यक्ति परोश्का को विदा दे रहा था, फिर वह यह योजना बनाने लगा कि खिड़की के पास परोश्का वाले पलंग पर जो अब भाग्य का द्योतक बन गया था, कैसे पहुंचे। वहां पढ़ने के लिए रोशनी ज्यादा अच्छी थी और यह पलंग कोस्तोग्लोतोव के पलंग के भी समीप था और उसके साथ बातें करने में आसानी थी, परन्तु अचानक एक व्यक्ति अन्दर आया।

वह एक नवयुवक था, कसा हुआ साफ-सुथरे काले बालों वाला, संभवत: बीस साल से कुछ ऊपर। छ: पुस्तकें उसने अपनी दाईं बांह के नीचे दबा रखी थीं और तीन बाईं बांह के नीचे।

दरवाजे में प्रविष्ट होते ही उसने प्रत्येक व्यक्ति को हैलो कहा। द्योमा को वह पसन्द आया। वह बड़ा ही शिष्ट दिखाई पड़ता था, घमन्ड उसमें नाम को नहीं था।

"मैं कहां जाऊं," इधर-उधर देखते हुए उसने कहा। परन्तु पता नहीं क्यों पलंगों की बजाय वह दीवारों की ओर देख रहा था।

"क्या तुम बहुत कुछ पढ़ोगे ?" द्योमा ने पूछा।

"हाँ, हर वक्त !"

द्योमा ने एक मिनट के लिए सोचा।

"व्यावसायिक आवश्यकता के लिए या केवल मनोरंजन के लिए ?"

"व्यावसायिक आवश्यकता के लिए।"

"तो वह खिड़की के पास वाला पलंग संभाल लो, ठीक है न, वह एक मिनट में बिस्तर लगा देगा, तुम्हारी पुस्तकें किस विषय पर हैं ?"

"भू-विज्ञान पर, मित्र"

"द्योमा ने एक पुस्तक का शीर्षक पढ़ा—खनिज पदार्थों की रासायनिक

खोज, "तो फिर खिड़की के पास वाला पलंग संभाल लो, तुम्हें क्या हुआ ?"

"मेरी टांग खराब है।"

"मेरी भी टांग ही खराब है।"

नवागन्तुक अपनी एक टांग को हिलाते समय काफी सतर्कता बरत रहा था, परन्तु उसका पूरा शरीर इतना स्वस्थ और शक्तिशाली था जैसे वह बर्फ पर स्केटिंग करने में प्रवीण हो।

उसके लिए बिस्तर बिछा दिया गया। तुरन्त ही उसने अपनी पांच पुस्तकें अलमारी में रख दीं और तत्काल छठी के अध्ययन में डूब गया। जैसे वह केवल इसी उद्देश्य के लिए अस्पताल में आया हो। वह कोई एक घन्टे तक पढ़ता रहा, न किसी से कोई प्रश्न पूछा और न उसने किसी को कुछ बताया। इसके बाद उसे डाक्टरी निरीक्षण के लिए बुला लिया गया। द्योमा ने भी पढ़ने का प्रयास किया पहले उसने घन विज्ञान की पुस्तक उठाई। उसने पैंसिलों से कुछ मॉडल बनाने का प्रयत्न किया। परन्तु वह उसके दिमाग में न समा सकीं। दौड़ती हुई सीधी लकीरें और खुरदरे किनारों वाले नक्शे उसे बार-बार एक ही बात याद दिलाते रहे।

उसने एक अन्य किताब उठाली जो अपेक्षाकृत कुछ आसान थी। उस पुस्तक का नाम 'जीवन का रस' था जिसे किसी कोफ्षेन्निकोव ने लिखा था, और उस पर उसे स्तालिन पुरस्कार मिल चुका था। लेखक का पूरा नाम ए० कोफ्षेन्निकोव था परन्तु एस० कोफ्षेन्निकोव, और वी० कोफ्षेन्निकोव नाम के लेखक भी थे। द्योमा इस विचार से कुछ डर-सा गया कि लिखने वालों की संख्या इतनी अधिक है। पिछली शताब्दी में कोई दस के लगभग लेखक थे। सबके सब महान् परन्तु इस शताब्दी में हजारों लेखक थे। इनके नाम का एक शब्द बदल देने से नये लेखक का पता चल जाता था। कोई साफ्नोकोव था और कोई साफोनोव। साफोनोव स्पष्टतः एक से अधिक थे परन्तु साफरोनोव एक ही था। स्पष्टतः कोई इन सबकी किताबें नहीं पढ़ सकता था परन्तु यदि कोई एक किताब पढ़ी जाए तो बाद में महसूस होता था कि यदि न भी पढ़ा जाता तो कोई अन्तर न पड़ता। बिल्कुल गुमनाम लेखक सामने आते, स्तालिन पुरस्कार प्राप्त करते और फिर गुमनामी के गड्ढे में जा गिरते। लगभग प्रत्येक पुस्तक, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, अपने प्रकाशन के एक साल बाद पुरस्कार पा लेती। प्रत्येक वर्ष ४० या ५० लेखक इनाम मार लेते थे।

पुस्तकों के नाम द्योमा के दिमाग में गड्डमड्ड होते रहे। दो फिल्मों के विषय में बहुत कुछ लिखा गया था, 'महान् जीवन' और 'महान् परिवार।' एक बहुत ही अच्छा असर डालती थी और दूसरी बहुत ही हानिकारक। परन्तु द्योमा को याद नहीं रहा था कि कौन-सी फिल्म क्या थी। विशेषकर इसलिये क्योंकि उसने उनमें से कोई भी नहीं देखी। वही बात विचारों के बारे में थी।

उनके विषय में जितना पढ़ा जाता, वे उतने ही अधिक उलझे हुए नजर आते। यह बात अभी-अभी उसके दिमाग में आई थी कि वास्तविक तुलना करने का अर्थ यह है कि जो वस्तु जीवन में जैसी है उसे वैसा ही देखा जाये। परन्तु फिर उसने पढ़ा कि एक उपन्यासकार लेखिका पानोवा की इसीलिए भर्त्सना की जा रही है कि "वह वास्तविकता की दलदल में फंस रही है।"

बहरहाल उसे इन सब बातों से निपटना था, समझना था, याद रखना था।

द्योमा 'जीवन का रस' पढ़ रहा था तो यह निर्णय न कर सका कि पुस्तक ही ठस है या उसे अपनी दिमागी हालत के कारण ऐसा लगता है।

थकन और निराशा उस पर अधिक-से-अधिक छाती गई। क्या वह यह चाहता था कि किसी से बात करके दिल का बोझ हल्का कर ले? किसी से शिकायत ही करे या किसी से दिल खोलकर बातें करे जो उसके साथ थोड़ी-बहुत सहानुभूति ही प्रकट करे।

उसने कहीं पढ़ा भी था और सुना भी था कि सहानुभूति या तरस एक ऐसी भावना है जिससे सम्मान को ठेस लगती है। चाहे तुम किसी पर तरस खाओ, चाहे तुम पर कोई तरस खाये।

परन्तु फिर भी वह चाहता था कि कोई उससे सहानुभूति दिखाये, उस पर तरस खाये क्योंकि जीवन भर न तो किसी ने उससे सहानुभूति की थी और न उस पर तरस ही खाया था।

यहां कक्ष में लोगों से बातें करना और उनकी बातें सुनना काफी दिलचस्प था। लेकिन जैसी बातें वह अब करना चाहता था उनसे कर नहीं सकता था। पुरुषों में पुरुषों ही की तरह बात करनी पड़ती है।

अस्पताल में स्त्रियां भी काफी थीं लेकिन द्योमा यह हिम्मत न कर सका कि उनके बड़े और शोर वाले वार्ड की देहलीज पार कर जाये। यदि वह सब स्वस्थ स्त्रियां होतीं तो यह बात कुछ मनोरंजन का कारण हो सकती थी कि पास से निकलते हुए अन्दर झांक लिया जाये। इस आशा में कि शायद कोई दिलचस्प चीज नजर आ जाए, लेकिन बीमार स्त्रियों के इतने बड़े छत्ते को देखकर द्योमा ने यही उचित समझा कि जो कुछ उसकी निगाहों के सामने है उससे दूर ही रहे। उनकी बीमारी एक निषेधात्मक पर्दा थी और यह पर्दा लाज से कहीं अधिक अडिग था। कुछ स्त्रियां जो उसे सीढ़ियों पर या हाल के रास्तों में दिखाई पड़ीं, वे इतनी उदास और उत्साहहीन थीं कि उन्होंने अपनी ड्रैसिंग गाऊनों को अपने गिर्द समेटना भी आवश्यक नहीं समझा था। वह इनकी छातियों के गिर्द और उनके कूल्हों के नीचे उनके रात के कपड़े आसानी से देख सकता था। जब कभी ऐसा होता तो उसे कोई प्रसन्नता नहीं, बल्कि तकलीफ ही महसूस होती।

यही कारण था कि वह जब कभी उन्हें देखता अपनी निगाहें झुका लेता,

यहां मित्र बनाना आसान नहीं था।

आंट स्तीओफा ने उस पर कृपा दृष्टि की। उससे प्रश्न पूछने लगी और कुछ मित्रता बरतने लगी। वह मां ही नहीं दादी बन चुकी थी। सभी दादियों की तरह उसके झुर्रियां थीं और मानव त्रुटियों पर वह सहानुभूतिपूर्वक मुसकरा सकती थी। द्योमा और आंट स्तीओफा जीने की ऊपरी सीढ़ी के समीप घण्टों खड़े रहते और बातचीत करते रहते। आज तक किसी ने द्योमा की बात इतने ध्यान व इतनी सहानुभूति से नहीं सुनी थी। ऐसा प्रतीत होता था द्योमा जैसा और अन्य कोई भी नहीं रहा। और जहां तक द्योमा का सम्बन्ध है वह उसे अपने बारे में और अपनी मां के बारे में ऐसी सब बात आसानी से बता देता था जो उसने आज तक किसी को भी नहीं बताई थीं।

द्योमा दो वर्ष का था जब उसका बाप लड़ाई में मारा गया था। उसके बाद उसे अपने सौतेले बाप से वास्ता पड़ा था। वह स्नेही न सही परन्तु न्याय-संगत अवश्य था। और उसके साथ रहना संभव था। उसकी मां वेश्या बन गई। उसने वेश्या शब्द स्तीओफा के सामने कभी इस्तेमाल नहीं किया था परन्तु उसे इसका बहुत पहले से विश्वास था। द्योमा के सौतेले बाप ने उसकी मां को छोड़ दिया और इस मामले में वह ठीक भी था। इसके बाद उसकी मां पुरुषों को घर लाती रही जिसमें केवल एक ही कमरा था। वे हमेशा शराब पीते। द्योमा को भी शराब पिलाने की कोशिश करते परन्तु उसने कभी पी नहीं। पुरुष उसकी मां के साथ रहते। कोइ आधी रात तक कोई सुबह तक। कमरे में कोई ओट खड़ी नहीं की गई थी और प्रकाश, क्योंकि गली के लैम्प से आता था इसलिए वहां अंधेरा भी नहीं होता था। जो कुछ वह देखता था, उससे द्योमा के हृदय में इतनी घृणा पैदा हुई कि उस चीज के विचार मात्र से भी, जो उसके मित्रों के लिए रोमांचकारी थी, उसे नफरत होती थी।

जब तक द्योमा पांचवीं व छठी कक्षा में रहा, यही होता रहा। परन्तु जब वह सातवीं कक्षा में पहुँचा तो द्योमा स्कूल के बूढ़े दरबान के पास रहने लगा। दो वक्त का खाना उसे स्कूल से मिल जाता था। उसकी मां ने उसे वापस लाने की कभी कोशिश नहीं की बल्कि वह खुश ही हुई थी कि उसके सिर से बला टली।

द्योमा जब भी अपनी मां का जिक्र करता उसे गुस्सा आ जाता। वह उसके सम्बन्ध में शान्ति से बात कर ही नहीं सकता था। आंट स्तीओफा उसकी बात सुनती, अपने सिर को हिलाती। और जब वह अपनी बात सुना चुकता तो विचित्र ढंग में कहती—"संसार प्रत्येक प्रकार के लोगों से मिलकर बनता है। हम सब इसी संसार में हैं।"

पिछले वर्ष द्योमा मकान बनाने वाली एक फैक्ट्री में चला गया। वहां एक रात्रिकालीन स्कूल था और उन्होंने उसे होस्टल में जगह दे दी। वह एक खराद

चलाने वाले के साथ काम सीखने लगा। बाद में उन्होंने उसे द्वितीय श्रेणी का ऑपरेटर बना दिया। यह काम उसे कुछ ज्यादा पसन्द नहीं था लेकिन क्योंकि वह अपनी बुरी मां से कुछ भिन्न बनना चाहता था इसलिए न तो उसने शराब पी और न कभी शोर शराबे में ही उसने दिलचस्पी ली। इसकी बजाय वह अध्ययन में लगा रहा। आठवीं कक्षा में वह अच्छा रहा और नवीं कक्षा की पढ़ाई उसने बीच ही में छोड़ दी।

बस ले देकर फुटबाल थी। वह कभी-कभी लड़कों के साथ फुटबाल खेल लिया करता परन्तु यह छोटी-सी खुशी भी भाग्य ने उससे छीन ली। फुटबाल के लिए छीना-झपटी करते हुए किसी ने अनजाने ही उसकी पिंडली पर बूट से ठोकर मार दी। उस समय द्योमा ने इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। वह थोड़ा-सा लंगड़ाया और तकलीफ दूर हो गई। परन्तु जब पतझड़ आया तो उसकी टांग ज्यादा से ज्यादा दुखने लगीं। डॉक्टर के पास वह कई दिनों बाद गया। पट्टी बांधी गई परन्तु टांग और खराब हो गई। इसके बाद सामान्यतः जैसा कि होता है कई कठिनाइयाँ आईं और कई रुकावटें पैदा हुईं। पहले उसे सूबे के अस्पताल में भेजा गया और फिर यहां।

"ऐसा क्यों होता है?" द्योमा आंट स्तीओफा से पूछता, "स्वयं भाग्य इतना बड़ा अन्याय क्यों करता है? कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिनके लिए जीवन आरम्भ से आखिर तक फूलों की सेज बना रहता है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं और कुछ लोग ऐसे हैं जिनके जीवन में भटकने के सिवा और कुछ नहीं। कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का जीवन स्वयं उसी पर निर्भर करता है। लेकिन ऐसा हरगिज नहीं होता—उस पर कुछ भी तो निर्भर नहीं करता।"

"यह भगवान पर निर्भर करता है।" आंट स्तीओफा ने तसल्ली देते हुए कहा, "भगवान सब कुछ देखता है, द्योमा!" हमें केवल इतना चाहिये कि भगवान के सामने सिर झुका दें।"

"खैर, यदि यह भगवान की ओर से है तो और भी बुरा है। यदि भगवान सब कुछ देखता है तो सारी मुसीबतें एक ही पर क्यों डाल देता है? मेरे विचार में उसे चाहिए कि उन्हें थोड़ा बहुत बांट दे..."

परन्तु इस बारे में दो विचार नहीं हो सकते थे। उसे सिर झुका देना चाहिए। इसके सिवा वह अब और कर भी क्या सकता था?

आंट स्तीओफा उसी शहर की रहने वाली थी। उसकी बेटियाँ, बेटे और बहुएं उससे मिलने आते रहते और उसके लिए खाने की चीजें लाते रहते। उन चीजों में वह अपने पड़ोसियों और अरदलियों को सम्मिलित कर लेती। वह द्योमा को उसके वार्ड से बाहर बुला लेती और एक अण्डा या पेस्टी उसके हाथ में रख देती।

द्योमा की भूख कभी नहीं मिटती थी। उसे जीवन में पेट भर खाने को

कभी नहीं मिला था। खाने के बारे में लगातार सोचते रहने के कारण उसे भूख इतनी महसूस होती थी जितनी वास्तव में होती नही थी। फिर भी आंट स्तीश्रोफा से इतनी चीजें लेते समय उसे घबराहट महसूस होती थी। यदि वह अण्डा ले लेता तो पेस्टी से इन्कार करने का प्रयत्न अवश्य करता।

"ले लो, ले लो," वह उसे उसकी ओर बढ़ा कर कहती, "इसमें मांस है। अभी तो जबकि अभी मांस सप्ताह चल रहा है, तुम यह खा ही सकते हो।"

"क्यों? क्या इसके बाद मैं नहीं खा सकता!"

"हरगिज नहीं क्या तुम यह नहीं जानते?"

"मांस के सप्ताह के बाद क्या आता है?"

"प्रायश्चित के दिन, और क्या?"

"यह और भी अच्छा है, आंट स्तीश्रोफा। प्रायश्चित के दिन तो और भी अच्छे हैं।"

"कई तरह से अच्छे हैं और कई तरह से बुरे। परन्तु मांस नहीं मिलता।"

"फिर तो प्रायश्चित के दिन कभी समाप्त नहीं होते होंगे। क्यों?"

"तुम्हारा क्या मतलब है? कभी समाप्त नहीं होते होंगे? वह तो एक सप्ताह में चले जाते हैं।"

"इसके बाद हम क्या करते हैं?" द्योमा ने घर की बनी हुई स्वादिष्ट पेस्ट्री निगलते हुए खुशी-खुशी कहा। ऐसी स्वादिष्ट पेस्ट्री उसके घर में कभी नहीं बनी थी।

"भगवान बचाये! क्या इन दिनों ईसाई मत को सभी भूल गये? किसी को कुछ मालूम नहीं! अरे, इसके बाद महान उपवास आता है।"

"परन्तु क्यों? महान उपवास किसलिये? उपवास क्यों और महान उपवास क्यों?"

"इसलिये द्योमा क्योंकि अगर तुम पेट को खूब भर लो तो यह तुम्हें नीचे जमीन की ओर खींचेगा। यह ठीक नहीं कि तुम इस तरह हर समय पेट को भरते रहो। कभी-कभी छुट्टी भी होनी चाहिए।"

"छुट्टी क्या होती है?" द्योमा की समझ में यह नहीं आ रहा था। उसे तो छुट्टी होते रहने ही से वास्ता पड़ा था।

"छुट्टियों से दिमाग स्वच्छ होता है। मैदा खाली हो तो ताजगी महसूस होती है। क्या तुमने कभी महसूस नहीं किया?"

"नहीं, आंट स्तीश्रोफा। ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ।"

जब से द्योमा पहली श्रेणी में गया था, उससे कहीं पहले, जब उसे पढ़ना लिखना आया, द्योमा को यह लिखवाया गया था और यह अच्छी तरह उसे याद भी था कि धर्म एक अफीम है। यह एक अत्यधिक प्रतिक्रियावादी विश्वास है जिससे केवल धोखेबाजों और चारसो-बीसों ही को लाभ पहुंच सकता है।

यह इसी विश्वास का नतीजा था कि कुछ स्थानों की श्रमिक जनता नाजायज लूट-खसोट से मुक्ति पाने में असफल रही। जैसे ही वे धर्म से पिंड छुड़ायेंगे, हथियार संभाल लेंगे और स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेंगे। स्पष्ट है कि आंट स्तीओफा जिसके होठों पर सदैव भगवान का नाम रहता था और जिसके होठों पर इस भयानक अस्पताल में भी मुसकुराहट खिलती रहती थी और जो उसे पेस्ट्री भी देती रहती थी, बिल्कुल ही प्रतिक्रियावादी थी।

इसके बावजूद शनिवार के दिन लंच के बाद जब डाक्टर जा चुके थे और प्रत्येक रोगी अपने विचारों में मग्न था, आसमान पर बादल घिरे होने के कारण सीढ़ियों और गलियारे में बत्तियां जला दी गई थीं, जिसके कारण वार्डों में भी कुछ रोशनी थी, द्योमा लंगड़ाता हुआ हर स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बल्कि प्रतिक्रियावादी आंट स्तीओफा को ढूंढ़ रहा था जिसके पास उसके लिए इसके सिवा और कोई सलाह नहीं थी कि सिर झुका दिया जाये।

उसे डर था कि वे उसे अलग कर देंगे, काट देंगे, उस षनकी मर्जी के आगे सिर झुकाना पड़ेगा।

वह सिर झुका दे या न झुकाये ? सर झुका दे या न झुकाये···?

उसे जो भयंकर दर्द महसूस हो रहा था, उसे देखते हुए तो सिर झुकाना कहीं आसान था।

आंट स्तीओफा सामान्यत: जिन-जिन स्थानों पर होती थी इस समय वहां नहीं थी, इसलिये वह नीचे के गलियारे में चला गया, जो छोटे से हाल में, जिसे अस्पताल का 'लाल कोना'[1] कहा जाता था, जा निकला (निचली मंजिल में ड्यूटी देने वाली नर्स की मेज और दवाइयों की अलमारी भी यहीं थी।)। अचानक उसे एक लड़की दिखाई पड़ी, जो करीब-करीब बच्ची ही थी, उसने वही भूरे रंग का गन्दा सा ड्रेस गाउन पहन रखा था लेकिन देखने में वह एक फिल्म अभिनेत्री लगती थी। उसके बाल इतने सुनहरी थे कि कम ही देखने में आते हैं, नर्म नाजुक और सरसराते हुए।

द्योमा पहली बार उसे पिछले दिन देखा था और उसके बालों को देखकर जो फूलों की तरह पीले सुनहरी थे, वह अपनी आंखें झपकने लगा था। वह इतनी सुन्दर दिखाई देती थी कि उसे पूरी तरह देखने की हिम्मत न हो सकी थी। उसने अपनी आंखें फेर ली थीं और आगे निकल गया था। यद्यपि सारे अस्पताल में ऐसा कोई भी नहीं था जो आयु में उसकी तरह जवान हो (उस लड़के, सरहान के सिवा, जिसकी टांग काटी गई थी।) परन्तु वह जानता था

---

१. अधिकतर सोवियत संस्थाओं में लाल कोना अवश्य होता है। यह एक ऐसे कमरे को कहते हैं जहाँ साम्यवादी साहित्य और पत्रिकाएं रखी होती हैं।

(अनुवादक की टिप्पणी)

कि इस किस्म की लड़कियाँ उसकी पहुंच के बाहर हैं।

आज सुबह उसने उसे एक बार फिर देखा, पीछे से, वह जानता था कि वह उससे बोलने की हिम्मत कभी न कर सकेगा। वह जानता था कि उसकी जबान बन्द हो जायेगी, और कोई बड़ी ही बेवकूफी और नासमझी की बात उसके मुंह में से निकल जायेगी, यह प्रयत्न करते हुए कि वह लंगड़ाये नहीं और जहां तक संभव हो सके, उसके पग ठीक ही उठें, वह 'लाल कोने' की ओर बढ़ गया और स्थानीय प्रावदा के ढेर पर दृष्टि डालने लगा। चीजें बांधने और अपनी दूसरी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए रोगी उसके पन्ने ले जाते रहे थे, इसलिये पत्रिका की मोटाई काफी कम हो गई थी।

आधी मेज जिस पर लाल कपड़ा बिछा हुआ था, स्तालिन के ताम्बे के बस्ट ने घेर रखी थी। उसका सिर और उसके कन्धे स्तालिन के असली सिर और कन्धों की अपेक्षा काफी बड़े थे। सामने मेज के किनारे पर एक अरदली खड़ी थी वह भी हृष्ट-पुष्ट और बड़े मुंह वाली थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह स्तालिन का जोड़ है। यह शनिवार का दिन था और उसे यह आशा नहीं थी कि भीड़ होगी इसीलिए उसने मेज पर अपने आगे एक अखबार फैला रखा था और उस पर सूरजमुखी के बीज फैला रखे थे। वह बीजों को छीलने में मग्न थी और उनके छिलके बिना झिझक अखबार पर फेंकती जा रही थी। वह शायद थोड़े ही समय के लिए वहाँ आई थी परन्तु उस थोड़े से समय में भी सूरजमुखी के बीजों को भूल जाना उसके लिये संभव न था।

दीवार पर लगे लाउड स्पीकर से नृत्य संगीत की भोंडी आवाज आ रही थी। एक छोटी-सी मेज पर दो रोगी बैठे ड्राफ्ट खेल रहे थे।

वह लड़की, जिसे द्योमा कनखियों से देख रहा था, दीवार के पास कुर्सी पर बैठी थी। वह कुछ भी नहीं कर रही थी। अपने गाउन के गले को पकड़े सीधी पीठ किये केवल बैठी थी। स्त्रियाँ स्वयं सी लें, तो और बात है वरना इन गाउनों के हुक नहीं होते।

लड़की वहां बैठी थी। नाजुक सुनहरी बालों वाली परी, जिसे छुआ नहीं जा सकता था और ऐसा लगता था मानो अभी पिघल कर अदृश्य हो जायेगी। यदि किसी भी चीज के सम्बन्ध में, चाहे वह उसकी बीमार टांग के संबंध में ही क्यों न हो उससे बात की जा सके तो कितना अच्छा हो!

द्योमा को अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। वह अखबार के पन्ने पलटता रहा। अचानक उसे ख्याल आया कि हजामत बनवाते समय उसने नाई से यह नहीं कहा था कि उसके माथे पर बालों का एक गुच्छा रहने दे। वह चूंकि समय नष्ट नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने उसे सारा सिर मूंड़ने दिया था। अब उसे यह महसूस हो रहा था कि वह बिलकुल ही गंवार नजर आ रहा है।

तब अचानक परी बोली, "तुम इतने शर्मीले क्यों हो ? तुम इधर दिन में दो बार आये हो, लेकिन मुझसे बोले तक नहीं।"

द्योमा उछल पड़ा। उसने इधर-उधर देखा। वह किसी और से तो नहीं कह रही। हाँ, यह वही था जिससे बोल रही थी। उसके सिर पर बालों का गुच्छा फूलों के गुच्छों की तरह लहरा रहा था।

"क्या बात है ? क्या तुम उन लोगों में से हो जो सहमे-सहमे रहते हैं। जाओ कुर्सी ले आओ और हम एक दूसरे से जान-पहचान कर लें।"

"मैं सहमा हुआ नहीं हूँ।" ऐसा मालूम होता था कि कोई वस्तु उसकी आवाज में रुकावट पैदा कर रही है। उसकी आवाज में हमेशा की तरह गूंज नहीं थी।

"तो जाओ कुर्सी ले आओ और मेरे पास आकर बैठ जाओ !"

द्योमा ने कुर्सी उठा ली और विशेष सतर्कता बरतते हुए कि वह लंगड़ाये नहीं उसे एक हाथ में पकड़ कर ले आया और दीवार के समीप ही उसके पास रख दी। उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, "द्योमा।"

"आसिया।" उसने अपना नर्म हाथ उसके हाथ में दे दिया और फिर खींच लिया।

वह बैठ गया। उसे बड़ा ही अजीब लग रहा था। एक दूसरे के पास वे इस तरह बैठे थे जैसे दूलहा दुलहिन। वह उसे अच्छी तरह देख भी नहीं सकता था। वह उठा और उसने अपनी कुर्सी को उठा कर उसके सामने रख लिया।

"क्या कारण है कि तुम यहाँ इस तरह बैठी हो और कुछ भी नहीं कर रही हो" द्योमा ने पूछा।

"मैं कुछ करूं क्यों और फिर कुछ तो मैं कर ही रही हूँ।"

"तुम क्या कर रही हो ?"

"मैं संगीत सुन रही हूँ और दिल ही दिल में नाच रही हूं। क्या तुम ऐसा नहीं कर सकते ?"

"दिल ही दिल में ?"

"तो फिर पाँवों से सही।"

द्योमा ने दांत भींच लिए। जिसका मतलब था 'नहीं।'

"मैंने भांप लिया था कि तुम अनुभवहीन से हो और हम नृत्य का कुछ अभ्यास कर सकते हैं।" आसिया ने इधर-उधर देखा और फिर कहा, "लेकिन यहां जगह ही कहां हैं जहां नृत्य किया जा सके। फिर यह नृत्य है भी क्या ? इसलिये मैं केवल सुनती रहती हूं। खामोशी मुझे खलती है।"

"अच्छा कौन-सा नृत्य अच्छा होता है," द्योमा बात-चीत का मजा ले रहा था। "टांगो ?"

आसिया ने आह भरी, "टांगो ! यह नृत्य तो हमारी दादियां किया करती

थीं। आज की चीज रॉक एण्ड रोल है। यह नृत्य अभी यहां नहीं होता परन्तु मास्को में होता है। स्पष्ट है कि वहाँ भी यह अभी व्यावसायिक लोग ही करते हैं।"

सच यह है कि जो कुछ वह कह रही थी वह सब द्योमा की समझ में नहीं आ रहा था। यह क्या कम था कि वह उससे बात कर रहा था और उसने उसे यह अनुमति दे दी थी कि वह सीधा उसकी ओर देख सके। उसकी आंखें अजीब थीं, कुछ हरी-हरी-सी, फिर भी बला की खूबसूरत!"

"यह नृत्य एक वास्तविक नृत्य है।" आसिया ने अपनी उंगलियाँ चटकाईं, "मैं तुम्हारे सामने इसका प्रदर्शन तो नहीं कर सकती। मैंने उसे कभी नहीं देखा। अच्छा, तुम अपना समय किस तरह व्यतीत करते हो? क्या गीत गाकर?"

"नहीं, मैं गा नहीं सकता।"

"क्यों नहीं? खामोशी अखरने लगती है तो हम गाते ही हैं। तो फिर तुम करते क्या हो?"

"क्या अरगन बजाते हो?"

"नहीं," द्योमा ने कहा। वह शर्म से डूब रहा था। वह उसके मुकाबले में कुछ भी तो नहीं था। वह यह कैसे कह दे कि उसे तो केवल सामाजिक समस्याओं की लग्न है।

आसिया की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। कैसा अजीब व्यक्ति है, उसने सोचा।

"तो क्या तुम्हें कसरत और व्यायाम से लगाव है? वैसे पांच प्रकार की साधारण वर्जिशों में तो मैं भी कुछ बुरी नहीं हूं। मैं १४० मीटर दौड़ सकती हूं, घोड़े की सवारी कर सकती हूं, पिस्तोल चला सकती हूं, तैर सकती हूं।"

"नहीं, वर्जिश और कसरत से भी मुझे कोई लगाव नहीं। "द्योमा को यह कटु अहसास हुआ कि वह उसे बिल्कुल ही बेकार समझ रही होगी। कुछ लोग जीवन को कितनी आसानी से सुचारु बना लेते हैं। वह यह कभी नहीं कर सकेगा। उसने कुछ दिन फुटबाल खेली थी······।

और वह उसे कहां घसीट ले गई।

"तुम कम से कम सिगरेट तो पीते ही होगे और शराब?" आसिया ने पूछा। उसकी आस अभी पूरी तरह टूटी नहीं थी "या केवल बीयर?"

"बीयर······" द्योमा ने आह भरी। (उसने बीयर जीवन में कभी चखी भी नहीं थी लेकिन इतनी बेइज्जती वह कैसे सहन करता।)

"ओह।" आसिया कराही जैसे किसी ने घूंसा मार दिया हो। "तुम भी अपनी मां के खूब ही दुलारे हो। खेल का शौक ही नहीं। स्कूल में भी तुम

ही जैसे हैं। पिछले सितम्बर उन्होंने हमें लड़कों के स्कूल में भेज दिया[1] परन्तु हैडमास्टर ने केवल चन्द किताबी कीड़ों और अध्यापकों के पालतुओं और दयनीय स्थिति के लड़कों ही को वहाँ रखा। जितने भी अच्छे लड़के थे वे लड़कियों के स्कूल में भेज दिये गये।

वह उसे जलील नहीं करना चाहती थी बल्कि वास्तविकता यह है कि उसे उससे सहानुभूति थी। इसके बावजूद उसे इस बात से तकलीफ अवश्य पहुंच रही थी कि वह उसे दयनीय स्थिति वाला समझती है।

"तुम किस श्रेणी में हो?" द्योमा ने पूछा।

"दसवीं में।"

"तुम्हें इस तरह बाल बनाने की अमुमति कौन देता है?"

"अनुमति कौन देता है? अरे भई वह हमसे झगड़ा करते हैं हम उनसे।"

वह बड़ी ही स्पष्टवादिता से बोल रही थी परन्तु वह उसे कितना ही परेशान करे, कितना ही तंग करे, महत्व तो इस बात का था कि वह उससे बातचीत कर रही थी।

नृत्य संगीत समाप्त हो गया और अनाऊनसर ने लज्जाजनक पेरिस की सन्धियों के विरुद्ध जनता के युद्ध का वर्णन शुरू कर दिया। ये सन्धियां फ्रांस के लिये खतरनाक थीं क्योंकि इनके कारण वह जर्मनी की दया पर था और जर्मनी के लिये असह्य थीं क्योंकि उसके कारण वह फ्रांस की दया पर था।

"तो तुम करते क्या हो?" आसिया की जिज्ञासा जारी थी।

"मैं खरादिया हूं।" द्योमा ने साधारण रूप में परन्तु शान से कहा।

परन्तु आसिया इससे भी प्रभावित नहीं हुई। "तुम कमाते कितना हो?"

द्योमा को अपने वेतन पर बड़ा नाज़ था। यह उसकी अपनी आमदनी थी और उसने पहली बार कमाया था। फिर भी वह बताने में हिचकिचा रहा था कि उसका वेतन कितना है।

"अरे कुछ भी तो नहीं," उसने विवश होकर कहा।

"यह बिलकुल समय बरबाद करना है।" आसिया ने दो टूक शब्दों में कहा "यदि तुम खिलाड़ी बन जाओ तो इसके मुकाबले में बहुत अच्छे रहो। खेलों के लिये जो कुछ चाहिये वह तुम में है।"

"परन्तु उन्हें सीखना भी तो आवश्यक होता है।"

"क्या सीखना आवश्यक होता है? कोई भी खिलाड़ी बन सकता है। केवल अभ्यास करना पड़ता है और उसके लाभ बहुत हैं। मुफ्त में सफर होता है, खाने के लिये तीस रूबल प्रतिदिन मिलते हैं और होटल निशुल्क। फिर उस

---

१. सितम्बर १९५४ में रूस में सहशिक्षा फिर से शुरू कर दी गई थी।

(अनुवादक की टिप्पणी)

पर बोनस। उन स्थानों का विचार तो करो जो खिलाड़ी बन कर देखे जा सकते हैं।"

"तुम कहां-कहां गई हो?"

"मैं लेनिनग्राद गई हूं और वोरोनेझ···"

"तुम्हें लेनिनग्राद कैसा लगा?"

"विश्वास करो, वहाँ हर ओर दुकानें ही दुकानें हैं, हर चीज़ के लिये अलग दुकानें हैं। जुराबों के लिये अलग और हाथ के बैगों के लिये और······"

द्योमा इन चीजों के बारे में सोच भी नहीं सकता था और उस पर ईर्ष्या कर रहा था। शायद यह सच था, जिन चीजों के बारे में यह छोटी-सी लड़की इतनी स्वतन्त्रतापूर्वक बातें कर रही थी वे शायद जीवन में अच्छी ही थीं और वे सब बातें जिन पर वह भरोसा किये हुए था, वे सब अप्रचलित और बासी हैं।

अरदली अब भी मेज के पास बुत की तरह खड़ी थी। वह सूरजमुखी के बीजों को छील रही थी परन्तु कुछ इस तरह कि सिर को झुकाती तक नहीं थी।

"तुम एक खिलाड़ी हो फिर यहां कैसे?"

वह साफ-साफ यह पूछने की हिम्मत न कर सका कि उसके शरीर के किस भाग में तकलीफ है। इस प्रकार का प्रश्न परेशानी का सबब होता।

"मैं यहां केवल तीन दिन के लिये आई हूँ? स्वास्थ्य की जांच कराने के लिये।" आसिया ने अपना हाथ हिला कर कहा। उसके ड्रेसिंग गाउन का कॉलर रह-रह कर खुल जाता था। उसे इसे पकड़ कर रखना पड़ता था या एक हाथ से संभाल कर रखना पड़ता था। "यहां इस प्रकार के भद्दे गाउन पहना दिए जाते हैं, इसे पहन कर मुझे शरम आ रही है। यहां एक सप्ताह रहे तो आदमी पागल हो जाये और तुम्हें उन्होंने यहां क्यों पकड़ रखा है?"

"मुझे?" द्योमा ने अपने दांत भींच लिये। वह उसे अपनी टांग के बारे में बताना चाहता था परन्तु यह बात वह उचित ढंग से कहना चाहता था। आसिया के आकस्मिक पूछने के कारण वह अपना सन्तुलन खो बैठा और उसके मुंह से निकल गया, "मेरी टांग।"

उस समय तक "मेरी टांग" के शब्द उसके लिये एक गंभीर और कटु अर्थ रखते थे, आसिया के भोलेपन के कारण अब वह महसूस करने लगा था कि ये शब्द इतने गंभीर और कटु कदापि नहीं थे। अपनी टांग का जिक्र उसने उसी तरह किया जिस तरह अपने वेतन का किया था, कुछ घबराहट के साथ।

"वे इसके बारे में कहते क्या हैं?"

"बात यह है कि वे बताते कुछ नहीं परन्तु वे चाहते हैं कि······इसे काट दिया जाये।"

ये शब्द कहते समय उसका चेहरा काला पड़ गया और उसने आसिया के चमकते चेहरे की तरफ देखा।

"पागल !" आसिया ने उसकी पीठ को थपकाया जैसे वह उसकी कोई पुरानी मित्र हो, "तुम्हारी टांग काटना चाहते हैं ? वे अवश्य पागल होंगे। बात केवल इतनी है कि वे इलाज करना नहीं चाहते। उन्हें अपनी टाँग मत काटने देना। टांग के बिना जीने से अच्छा है आदमी मर जाये, अपाहज की भी क्या जिन्दगी होती है, सोचो तो सही। जीवन तो खुशियों के लिये है।"

हां, बेशक इस बार भी वह सच ही कह रही थी। भला वह जीवन भी क्या जो बैसाखियों पर निर्भर हो। यहां अब वह उसके समीप बैठा हुआ था। बैसाखियां होतीं तो उन्हें कहां रखता। अपनी कटी हुई टांग का ठूंठ कहां रखता। वह तो अपने लिये कुर्सी भी न ला सकता, उसी को लानी पड़ती। नहीं, टांगों के बिना जिन्दगी किसी भी काम की नहीं।

जिन्दगी खुशी के लिये है।

"तुम यहां कब से हो ?"

"कब से ?" द्योमा ने दिल ही दिल में सोचा, "तीन सप्ताह से।"

"कितना भयानक है ?" आसिया ने अपने कन्धों को झटका दिया, "कितना नीरस है। न रेडियो, न अरगन और फिर इस वार्ड में बातचीत कैसी होती होगी, उसका अंदाजा भी मैं लगा सकती हूं।"

एक बार फिर द्योमा स्वीकार करना नहीं चाहता था कि ये सारे दिन उसने पुस्तकें पढ़ने और अध्ययन में गुजारे हैं। उसकी सारी मान्यताएं आसिया के शब्दों की बारिश के सामने कांप रही थीं जैसे उनकी नीवें कमजोर हों, जैसे उसने उन्हें यूं ही महत्व दे रखा हो।

वह खिसयानी-सी हंसी हंसा हालांकि सच यह है कि उसका दिल नहीं हंस रहा था। अपनी बात जारी रखते हुए उसने कहा, "उदाहरण के रूप में हम, इस समस्या पर बातचीत कर रहे थे कि मनुष्य जीता किस चीज के सहारे है ?"

"क्या मतलब ?"

"यही कि वे क्यों जीते हैं ? कुछ इसी किस्म की बात ?"

"अरे !" आसिया के पास हर प्रश्न का उत्तर था "स्कूल में हमें इस पर लेख लिखना था। उन्होंने हमें कपास उगाने वालों, ग्वालों और गृहयुद्ध के सूरमाओं के बारे में बहुत-सी सामग्री दी 'पावेल कोरचागिन की बहादुरी के बारे में तुम्हारा क्या दृष्टिकोण है ? मातरोसोव की बहादुरी के बारे में तुम्हारा

क्या दृष्टिकोण है।"

"हमारा दृष्टिकोण ? क्या हमें वही करना चाहिये जो उन सूरमाओं ने किया ? अध्यापकों का यही विचार था कि हमें ऐसा ही करना चाहिये इसलिये हम सबने लिख दिया कि हम सब भी ऐसा ही करेंगे। परीक्षा से पहले मुसीबत क्यों मोल ली जाये ? परन्तु साश्का ग्रोमोव ने कहा 'क्या यह सब कुछ मुझे लिखना पड़ेगा ? क्या मैं वह नहीं लिख सकता जो वास्तव में सोचता हूं' हमारी अध्यापिका ने कहा 'मैं बताती हूं कि तुम वास्तव में क्या सोचते हो। तुम्हें इतने खराब नम्बर मिलेंगे कि तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।' काश, तुम वहां होते। एक लड़की ने कहा था, 'अभी मुझे पता नहीं कि मैं अपने देश से प्यार भी करती हूं या नहीं ?' हमारी अध्यापिका बत्तख की तरह आंखें झपकने लगी, 'कितनी भयानक बात है। तुम इतनी हिम्मत कैसे कर सकती हो कि अपने देश से प्यार न करो ?' 'शायद प्यार मुझे है परन्तु मैं जानती नहीं। मैं चाहती हूं कि उसे अपने तौर पर मालूम करूं।' 'मालूम क्या करना है ? अपने देश से प्यार तो तुम्हें अपनी मां के दूध के साथ ही हो जाना चाहिये। दूसरा पाठ आरम्भ होने तक इसे फिर से लिखो। हम उसे मेंडकी कहा करते थे। वह कक्षा में आती तो कभी मुस्कराती नहीं थी। वह एक बूढ़ी कुंवारी थी। अपने निजी जीवन में वह कुछ अधिक सफल नहीं रही थी और इसका बदला वह हमसे ले रही थी सबसे अधिक घृणा उसे सुन्दर लड़कियों से थी।"

आसिया अपने शब्द साधारण ढंग में कह रही थी। अपने खयाल में वह खूब जानती थी कि सुन्दर चेहरे का मूल्य क्या होता है ? स्पष्टत: वह बीमारी के दौर से गुजरी ही नहीं थी। उसे पता ही नहीं था कि दर्द क्या होता है, तकलीफ क्या होती है और भूख और नींद कैसे गायब हो जाते हैं। अभी तो उसके गालों की ताजगी और रंग भी फीका नहीं हुआ था। केवल इतना था कि वह किसी व्यायामशाला या नृत्यशाला से निकल कर तीन दिन के लिए स्वास्थ्य-परीक्षा करवाने इधर आ निकली थी।

"परन्तु कुछ अध्यापक अच्छे भी तो होते हैं। क्या नहीं ?" द्योमा ने पूछा। यह प्रश्न उसने केवल इसलिये पूछा था कि कहीं वह चुप न हो जाये। वह चाहता था कि वह बोलती ही रहे और वह वहां बैठा उसे देखती ही रहे।

"नहीं, एक भी नहीं ! वे सब फूले हुए मुर्गे होते हैं। बहरहाल, स्कूल··· स्कूल की बात करना ही कौन चाहता है ?"

उसकी आनन्दवर्द्धक स्वस्थता द्योमा पर भी छाने लगी। वह चहचहाहट

---

१. कोरचागिन, निकोलाई ओस्तरोवस्की के उपन्यास "फौलाद कैसे नरम हुआ" का एक पात्र है। मातरोसोव द्वितीय महायुद्ध का एक हीरो था जिसने अपने आपको एक जापानी मशीनगन पर फेंक दिया था।

के लिए कृतज्ञ था। अब वह भिचा-भिचा नहीं था और कुछ सुख का अनुभव कर रहा था। वह उससे बहस करना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि उसकी प्रत्येक बात से सहमत हो जाए—चाहे उसका अपना दृष्टिकोण कुछ भी हो। अपनी टांग के बारे में भी अब वह कुछ शान्ति और चैन महसूस कर रहा था। यद्यपि वह उसे ठेस लगा रही थी और याद दिला रही थी कि उसने उसको कष्ट पहुंचाया है। अब वह इसका बदला लेगी।" वे काटेंगे कहां से? पिंडली के बीच में से? घुटने तक? या आधी रातन तक? अपनी टांग की बात सोचते हुए यह प्रश्न उसके लिए महत्त्वपूर्ण बना रहा कि मनुष्य जीते किस चीज के सहारे हैं? इसलिए उसने पूछा, "अब गम्भीरता से बताओ तुम्हारा क्या विचार है? लोग जीते किस चीज के सहारे हैं?"

"अरे हां," इस छोटी-सी लड़की को दो-एक बातें पता थीं। उसने अपनी हरे रंग की आंखों को द्योमा की तरफ घुमाया, उसे पूरा विश्वास नहीं था कि वह गम्भीर है या उससे मजाक कर रहा है।

"किस चीज के सहारे? तुम्हारा मतलब क्या है? स्पष्ट है कि प्रेम के सहारे।"

प्रेम के सहारे? तॉलसतॉय ने भी यही कहा था कि प्रेम के सहारे। परन्तु उसका तात्पर्य क्या था? अब लड़कियों की अध्यापिका ने भी उनसे यही लिखवाया था कि प्रेम के सहारे। द्योमा की आदत थी कि वह अपने दिमाग में चीजों का सही-सही अर्थ निर्धारित करने का प्रयत्न करता था। वह अपने ढंग से उनके सही अर्थ तक पहुंचने का प्रयत्न करता था।

"लेकिन···" उसने बैठी हुई-सी आवाज में कहा, (बात काफी सादा थी परन्तु उसे कहने में कुछ घबराहट-सी महसूस हो रही थी) "बहरहाल, प्यार ही तो पूरा जीवन नहीं। यह तो केवल हो जाता है···कभी-कभी। एक विशेष आयु से और एक विशेष आयु तक···"

"कैसी आयु? किस आयु से?" आसिया ने नाराजगी से उससे बहस शुरू कर दी जैसे उसने उसे नाराज कर दिया हो। "हमारी आयु इसके लिए बेहतरीन है। और कौन-सी उमर है? जीवन में प्यार के सिवा और है ही क्या?"

अपनी छोटी-छोटी भवें ऊपर उठाये वहां बैठी वह बिलकुल सन्तुष्ट दिखाई देती थी जैसे उसे पूर्ण विश्वास हो। एतराज की गुंजाइश ही न थी। द्योमा ने एतराज नहीं किया। वह तो केवल उसकी बातें सुनना चाहता था, बहस करना नहीं।

वह उसकी तरफ मुड़ी, आगे को झुकी परन्तु उसने अपनी कोई भी बांह आगे को नहीं बढ़ाई लेकिन फिर भी ऐसा मालूम होता था कि वह अपनी बांहें फैला रही है। बहुत आगे तक। संसार की समस्त ध्वस्त दीवारों से भी आगे।

"यह हमेशा के लिए हमारा है। यह आज है। वे अपनी जुबान कितनी ही

चलाते रहें कि यह होगा या वह होगा उनकी कोई न सुनो। यह प्यार है और केवल प्यार।"

वह उसके साथ इतनी स्पष्टता बरत रही थी कि ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने बातों ही बातों में सैंकड़ों रातें बिता दी हों। और यदि वह अरदली सूरजमुखी के फूल वहां न छील रही होती, वह नर्स वहां न होती, वे दो ड्राफ्ट खेलने वाले वहां न होते, गलियारे में रोगी चल-फिर रहे न होते तो संभव था कि वह इसके लिये तैयार हो जाती कि वहीं उसी समय उस छोटे से कोने में यह बात उसे समझा दे कि आदमी किस चीज के सहारे जीते हैं। उन दोनों की आयु भी तो इसके लिए अत्यधिक उपयुक्त थी।

उसकी टांग उसे निरन्तर वेदना पहुंचाती रहती थी, स्वप्न में भी, एक सैकिण्ड पहले भी उसे दर्द महसूस हुआ था लेकिन अब वह उसे भूल चुका था जैसे टांग का अस्तित्व ही न हो। उसने आसिया के ड्रेसिंग गाउन के खुले कॉलर की ओर देखा और उसके होंठ जरा से खुल गए। जो चीज उसे घृणापूर्ण नजर आती थी, जब उसे उसकी मां किया करती थी, वह अब पहली बार उसे बिल्कुल ही निर्दोष नजर आने लगी, सर्वथा निर्दोष जिसका पलड़ा संसार की सारी बुराई के मुकाबले में भारी रहे और जिस पर सारे संसार के सामने भी कोई नदामत न हो।

"तुम्हारी क्या स्थिति है?" आसिया ने सहानुभूतिपूर्ण कानाफूसी में कहा। परन्तु उसकी हंसी फूट पड़ना चाहती थी, "क्या कभी तुमने···? अरे मूर्ख, क्या कभी तुमने···?"

द्योमा को अपने कानों में, अपने चेहरे पर और अपने माथे पर गर्म-गर्म चिंगारियां महसूस होने लगीं जैसे उसे किसी ने पकड़ लिया हो। बीस मिनट में इस छोटी-सी लड़की ने उसे पछाड़ दिया था और उन सब बातों से जिनसे वह इतने वर्ष तक चिपटा रहा था, उसका मस्तिष्क साफ हो गया था। उसका गला खुश्क हो रहा था जब उसने उससे पूछा, एक ऐसे भिखारी की तरह जो दया की भीख मांग रहा हो, "और तुम्हारी क्या स्थिति है?"

जिस प्रकार उसकी ड्रेसिंग गाउन के नीचे उसके रात की पोशाक, उसकी छातियों और उसकी आत्मा के सिवा अन्य कुछ नहीं था उसी प्रकार उसके शब्दों के पीछे भी ऐसी कोई बात नहीं थी जिसे वह उससे छिपाना चाहती हो। उसे कोई कारण ही दिखाई नहीं देता था कि कुछ छिपाया जाए।

"अरे मैं···नवीं कक्षा से···हमारी आठवीं कक्षा में एक लड़की थी जो गर्भवती हो गई थी। एक लड़की फ्लैट में पकड़ी गई। वह यह पैसे के लिए करती थी। क्या तुम कल्पना कर सकते हो? उसका बैंक में अपना बचत-खाता था। उसे उसने अपनी पाठ्य पुस्तक में छोड़ दिया था और वह अध्यापिका के हाथ लग गई थी। जितनी जल्दी शुरू कर दो उतना ही मजा आता है···प्रतीक्षा क्यों की जाए? यह परमाणु युग है।"

११. बिर्च के पेड़ का कैन्सर

इस सबके बावजूद शनिवार की शाम कैंसर वार्ड में प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रकार की अनदेखी राहत लेकर आती थी, यद्यपि किसी को यह मालूम नहीं था कि आखिर ऐसा क्यों है। स्पष्टत: रोगियों को सप्ताह के आखिरी दिन अपनी बीमारी से छुटकारा नहीं मिल जाता था—और अपनी बीमारी के बारे में सोचने से तो हरगिज़ ही नहीं। लेकिन उन्हें डाक्टरों के साथ बात करने से अवश्य छुटकारा मिल जाता था और बड़ी हद तक इलाज से भी। और शायद यही बात थी जो मानव-स्वभाव के उस पहलू की सन्तुष्टि करती थी जिसे स्थाई और अचल बचपना कहा जाता है।

आसिया से बातचीत के बाद द्योमा किसी-न-किसी तरह सीढ़ियां चढ़ गया, यद्यपि उसकी टाँग की तकलीफ, उसे तंग कर रही थी, और वह तकलीफ बढ़ती ही जा रही थी और उसे विवश कर रही थी कि वह बड़ी ही सावधानी से कदम उठाये। वह वार्ड में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि वहां सामान्य से कुछ अधिक चहल-पहल है। वार्ड के सभी लोग वहां थे। सिबगातोव भी वहीं था और निचली मंजिल से कुछ मेहमान भी वहां आ गए थे—उनमें कुछ नवागन्तुक थे और कई ऐसे भी जिन्हें वह पहले से जानता था। उदाहरणार्थ वृद्ध कोरियाई 'नी' जिसे अभी-अभी वार्ड से बाहर जाने की अनुमति मिली थी (जब तक उसकी जुबान में रेडियम की सूइयां रहीं उन्होंने उसे बड़ी ही सावधानी से कमरे में बन्द रखा—जैसे मूल्यवान चीजों को बैंक के लाकर में रखा जाता है।) नये लोगों में एक रूसी था, काफी मिलनसार और अच्छी प्रकृति का। वह अपने बालों में आगे से कंघी करता था और उसके गले में कुछ खराबी थी। वह फुसफुसा कर ही बात कर सकता था। उस समय वह द्योमा के पलंग पर बैठा हुआ था और लगभग आधा पलंग उसने घेर रखा था। सभी लोग—यहां तक कि मुर्सालीमोव और एगन बरदेव भी, जो रूसी बिल्कुल नहीं समझते थे—उसकी बातें सुन रहे थे।

कोस्तोग्लोतोव भाषण दे रहा था। वह अपने बिस्तर पर नहीं बल्कि खिड़की में बैठा था और इस प्रकार इस पल के महत्त्व पर बल दे रहा था। (यदि कोई उग्र स्वभाव वाली नर्स ड्यूटी पर होती तो उसे वहां बैठने की इजाजत हरगिज न देती, लेकिन आज एक पुरुष नर्स तुर्गुन इन्चार्ज था, जिसे

रोगी अपने ही में से एक समझते थे। उसका विचार था—और वह ठीक ही था कि यह कोई ऐसी बात नहीं जिससे चिकित्सा शास्त्र का तख्ता ही उलट जाए।) कोस्तोग्लोतोव ने अपना एक पांव जिसमें जुराब पहनी हुई थी, पलंग पर रखा हुआ था। और अपनी एक टांग को घुटने के समीप मोड़कर उसने गिटार की तरह अपनी पहली टांग के घुटने पर रखा हुआ था। वह धीरे-धीरे हिल रहा था और इतने जोर और जोश से बोल रहा था कि सारा वार्ड उसे सुन रहा था।

"एक दार्शनिक था डसकार्टस। उसका कहना था कि 'प्रत्येक बात पर शक करो'।"

"लेकिन इस कथन का हमारा जीवन प्रणाली से कोई सम्बन्ध नहीं है।" रूसानोव ने भर्त्सना के ढंग में उंगली उठाकर उसे याद दिलाया।

"नहीं, बिल्कुल नहीं!" कोस्तोग्लोतोव ने कहा। वह रूसानोव की आपत्ति पर भौंचक्का-सा रह गया था, "मेरा मतलब तो यह है कि हमें एकदम खरगोश बनकर नहीं रहना चाहिए। हमें डाक्टरों पर पूरा भरोसा नहीं करना चाहिए। उदाहरण के रूप में मैं यह पुस्तक पढ़ रहा हूं।" उसने खिचड़ी में से बड़ी-सी पुस्तक उठाई, "अबरीकोसोव और स्त्राईडकोव लिखित 'चिकित्सा संबंधी व्याख्या': यह चिकित्सा की पाठ्य पुस्तक है। इसमें लिखा है कि रसौलियों के फैलने और मानव स्नायुतन्त्र के बीच जो सम्बन्ध है, उसका इस समय तक बहुत ही कम अध्ययन किया गया है और यह सम्बन्ध बड़ा ही आश्चर्यचकित करने वाला है। यहां यह स्पष्ट शब्दों में लिखा है।" उसने सही स्थान ढूंढकर पढ़ना शुरू किया, "ऐसा कभी-कभार ही होता है, परन्तु कई रोगियों के संबंध में हुआ अवश्य है, आत्म-प्रेरणा से स्वस्थता, जरा शब्दों पर ध्यान दो—इलाज द्वारा फायदा नहीं, बल्कि वास्तविक स्वस्थता। देखा?"

वार्ड में हर ओर जोश फैल रहा था। ऐसा मालूम होता था कि 'आत्म-प्रेरणा से स्वस्थता' खुली किताब से उड़कर सुनहरी परों वाली तितली की तरह सब की आँखों के सामने फड़फड़ा रही है। वह अपने मस्तकों और अपने गालों को इस तरह ऊपर किए बैठे थे जैसे इस उड़ती हुई तितली के स्वास्थ्यदायक स्पर्श को महसूस ही करने वाले हैं।

कोस्तोग्लोतोव ने किताब को एक ओर रखते हुए कहा, "आत्म-प्रेरणा" अपनी टाँग को उसी गिटार की सी मुद्रा में रखे वह अपने हाथों को हवा में लहरा रहा था और उंगलियों से घेरे बना रहा था, "इसका मतलब यह है कि अचानक किसी ऐसे कारण से, जिसका स्पष्टीकरण संभव नहीं, रसौलियां छोटी होने लगती हैं, घुलने लगती हैं और अन्त में अदृश्य हो जाती हैं। देखा?"

वे सब खामोश थे। इस परी-कथा ने उन्हें गुमसुम कर दिया था। कितने अचम्भे की बात थी कि एक रसौली, स्वयं अपनी रसौली, वह विनाशकारी

रसौली जिसने सारे जीवन को अजीर्ण बना रखा था, अचानक घुलने लगे, खुश्क होने लगे। और अपने आप समाप्त हो जाए।

वे सब खामोश थे। और अपने चेहरे उन्होंने तितली के स्पर्श के लिए ऊपर उठा रखे थे, केवल निराश पोदुएव के चेहरे पर एक निराशापूर्ण और जिद्दी भाव था। वह टर्राया, "मेरा विचार है कि इसके लिए जिसकी आवश्यकता है वह एक पवित्र आत्मा है।"

किसी पर भी यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि उसके उन शब्दों का उनकी बातचीत के साथ कोई सम्बन्ध है या यह विचार स्वयं ही उसके मन में पैदा हो गया है।"

परन्तु पावेल निकोलाएविच जो उस अवसर पर अपने पड़ोसी हड्डीचूस की बात ध्यान, बल्कि किसी सीमा तक सहानुभूति के साथ सुन रहा था, बेचैनी के साथ पोदुएव की ओर मुड़ा और उसे भाषण देना आरम्भ कर दिया।

"क्या ही आदर्शवादी प्रलाप है—आत्मा का इससे क्या सम्बन्ध है? कामरेड पोदुएव तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए।"

"येफ्रेम, तुम बात की तह तक पहुंच गये हो। बहुत खूब! कुछ भी संभव है। आखिर हम जानते ही क्या हैं? उदाहरणार्थ युद्ध के बाद मैंने एक पत्रिका में, शायद उसका नाम ज्वेज्दा[1] था, एक बहुत ही दिलचस्प लेख पढ़ा था। मालूम होता है कि मनुष्य की खोपड़ी के नीचे खून और दिमाग का एक रक्षात्मक पुश्ता होता है। जब तक कोई चीज या सूक्ष्माणु जो मनुष्य के लिए घातक हो, इस रक्षात्मक दीवार तक पहुंच कर दिमाग में प्रविष्ट न हो, उस समय तक वह जीवित रहता है। वहां तक पहुँच सकना या न पहुंच सकना, किस चीज पर निर्भर करता है?"

नवयुवक भू-विज्ञानविद् जब से वार्ड में आया था, उसने पुस्तक हाथ से नहीं रखी थी। वह कोस्तोग्लोतोव के समीप दूसरी खिड़की के पास अपनी पुस्तक लिए पलंग पर बैठा था और बातें सुनने के लिए कभी-कभी अपना सिर ऊपर उठा लेता था। लेकिन अब उसने किताब हाथ से रख दी। वार्ड में आने वाले मेहमान और वे सब लोग जो वार्ड ही के थे, बड़े ध्यान से बातें सुन रहे थे। स्टोव के समीप फेदेरो जिसकी गर्दन पर अभी तक कोई चिन्ह नहीं था, परन्तु जिसके भाग्य का निपटारा हो चुका था, अपने पलंग पर एक पहलू के बल लेटा हुआ था और तकिए पर सर रखे सुन रहा था।

"...तो स्पष्टतः यह इस पर निर्भर करता है कि रक्षात्मक पुश्ते में

---

१. ज्वेज्दा का मतलब है 'सितारा' यह रूस की एक प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका है। युद्ध के बाद यह सरकारी आलोचना का निशाना बन गई थी। इस पर उदारतावाद का अभियोग था।

(अनुवादक की टिप्पणी)

पोटाशियम और सोडियम की मात्रा क्या है ? यदि इनमें से एक नमक की मात्रा अधिक हो, याद नहीं किसकी, यही मान लीजिए कि सोडियम की, तो कोई भी हानिकारक वस्तु रक्षात्मक पुश्ते को पार नहीं कर सकेगी और आदमी जीवत रहेगा। परन्तु दूसरी ओर यदि पोटाशियम की अधिकता हुई तो रक्षात्मक पुश्ता काम नहीं करेगा और वह मर जायेगा। लेकिन सबसे अधिक दिलचस्प बात तो यह है कि पोटाशियम और सोडियम को अनुपात किस चीज पर निर्भर करता है ? इसकी निर्भरता मनुष्य के मानसिक दृष्टिकोण पर है। समझे इसका मतलब यह है कि यदि मनुष्य प्रसन्न है तो रक्षात्मक पुश्ते में सोडियम की अधिकता होगी और कोई रोग, चाहे वह कैसा ही क्यों न हो, उसे खत्म नहीं कर सकता, लेकिन अगर वह दिल हार देगा तो पोटाशियम की मात्रा बढ़ जायेगी। ऐसे मनुष्य के लिए ताबूत का प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

भूविज्ञानविद इसे बड़ी शान्ति से सुन रहा था और उसके शब्दों को तौल रहा था। वह एक ऐसे समझदार और अनुभवी विद्यार्थी की तरह था जो लगभग सही अनुमान लगा लेता है कि अध्यापक ब्लैकबोर्ड पर अब क्या लिखने जा रहा है।

"आशावादिता का सिद्धांत," उसने समर्थात्मक ढंग में कहा, "एक अच्छा विचार है बहुत अच्छा विचार !"

फिर तुरन्त ही, कहीं समय नष्ट न हो जाये, वह फिर से अपनी किताब में डूब गया।

पावेल निकोलाएविच ने फिर कोई आपत्ति नहीं उठाई। हड्डीचूस काफी वैज्ञानिक ढंग से बोल रहा था।

"ऐसी दशा में मुझे इस पर कोई अचम्भा नहीं होगा।" कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "सौ वर्ष बाद यह खोज हो जाये कि अगर आत्मा पवित्र हो तो हमारा शरीर एक प्रकार का कैसियम लवण पैदा करता है, परन्तु यदि आत्मा पर बोझ हो तो वह ऐसा नहीं करती। यह कैसियम पर निर्भर करता है कि आदमी की नसें रसौली में परिवर्तित होती हैं या रसौली घुलती है।"

येफ्रेम ने रुंधे हुए गले के साथ आह भरी। "मैंने बड़ी स्त्रियों को खराब किया है। मैं उन्हें उनके बच्चों के साथ छोड़ आया, वे रोती रहीं······मेरी रसौली कभी नहीं घुलेगी।"

"इसका इससे क्या सम्बन्ध है ?" अचानक पावेल निकोलाएविच क्रोध से चिल्ला उठा।" सारा विचार पूर्णतः धार्मिक कूड़ा करकट है। कामरेड पोदुएव तुम कूड़ा-कबाड़ बहुत पढ़ते हो। तुम्हारे सैद्धान्तिक हथियारों को जंग लग गई है। तुम इस आत्मिक सिद्धि पर बार-बार बल देते रहते हो।"

"आत्मिक सिद्धि इतनी भयानक चीज क्यों है ?" कोस्तोग्लोतोव ने

आक्रामक ढंग से पूछा, आत्मिक सिद्धि की बात सुनकर तुम्हारे पेट में दर्द क्यों होता है ? इससे किसी को हानि नहीं पहुँचती, सिवाय उन लोगों के जो नैतिक दृष्टि से मानवता के विरोधी हों।"

"तुम···तुम्हें मालूम है तुम क्या कह रहे हो ?"

पावेल निकोलाएविच ने अपनी चमकीले फ्रेम वाली ऐनक हवा में लहराई। उसने अपने सिर को दृढ़ता से सीधा कर रखा था जैसे उसकी रसौली उसके जबड़े के दाईं ओर से अब सिर को नीचे न खींच रही हो। "कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिन पर अन्तिम निर्णय लिया जा चुका है। उन पर और बहस नहीं हो सकती।"

"आखिर मैं बहस क्यों नहीं कर सकता ?" कोस्तोग्लोतोव ने अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखों से रूसानोव की ओर हैरानी से देखा।

"जाने भी दो, बहुत हो चुकी।" दूसरे रोगी समझौता कराने के ढंग में बोले।

"तो अच्छा कामरेड," द्योमा के बिस्तर पर बैठे व्यक्ति ने, जिसकी आवाज बुरी तरह बैठी हुई थी, फुसफुसाहट में कहा, "तुम हमें बिर्च की छाल के बारे में बता रहे थे···"

परन्तु न तो रूसानोव ही आसानी से हार मानने वाला था और न कोस्तोग्लोतोव। वे दोनों एक दूसरे को बिल्कुल नहीं जानते थे, फिर भी बड़ी ही कटीली निगाहों से एक दूसरे को देख रहे थे।

"यदि तुम अपना विचार प्रकट करना चाहते हो तो कम से कम इतना तो होना चाहिए कि तुम थोड़ी बहुत बुनियादी जानकारी से काम लो।" पावेल निकोलाएविच ने अपने प्रतिद्वन्द्वी से कहा। वह प्रत्येक शब्द का प्रत्येक अक्षर नाप तोल कर बोल रहा था। "लिओ तालसताय एण्ड को० के आत्मिक सिद्धि के सिद्धांत के बारे में लेनिन, कामरेड स्तालिन और गोर्की अन्तिम निर्णय दे चुके हैं।"

"क्षमा करना" कोस्तोग्लोतोव ने बड़ी कठिनाई से अपने आप पर नियन्त्रण रखते हुए उत्तर दिया, उसने अपनी एक बांह रूसानोव की ओर फैला दी थी। "इस धरती पर कोई भी व्यक्ति कोई ऐसी बात नहीं कह सकता जो हमेशा हमेशा के लिए अन्तिम हो। यदि ऐसा हो तो जीवन रुक जाये और आने वाली पीढ़ियों के पास कहने के लिए कुछ भी न रह जाये।"

पावेल निकोलाएविच भौंचक्का-सा रह गया।

(यह क्या ? वह इस व्यक्ति को मित्रतापूर्ण तरीके से समझा रहा है ? शनिवार की दोपहर को उसके साथ बहस में लगा हुआ है ? उसे तो यह मालूम करना चाहिए कि वह कौन है ? कहां से आया है ? उसकी पृष्ठभूमि क्या है ? और यह भी कि वह जिस पद पर है वहां उसके भयानक सीमा तक गलत

विचारों से कोई हानि तो नहीं हो रही है ?)

"मैं यह दावा नहीं कर रहा।" कोस्तोग्लोतोव ने अपने दिल का बोझ हल्का करने के लिए जल्दी-जल्दी कहा। "मैं यह दावा नहीं कर रहा कि मैं समाज शास्त्र के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानता हूँ। मुझे अध्ययन के लिए बहुत समय नहीं मिल सका। परन्तु अपनी सीमित समझ के आधार पर मेरा विचार यह है कि लेनिन ने तॉलस्तॉय की आत्मिक सिद्धि की खोज की निन्दा केवल इस लिए की थी कि यह समाज को आतंककारी सरकार के विरुद्ध आन्दोलन और आने वाली क्रांति से दूर ले जाती थी। यह ठीक था, परन्तु उस व्यक्ति का मुंह बन्द करने का प्रयत्न क्यों किया जाए ?" कोस्तोग्लोतोव ने अपने दोनों हाथों से पोदुएव की ओर इशारा करते हुए कहा, "जिसने अभी जीवन के सार पर विचार करना आरम्भ ही किया है, जब वह जीवन और मृत्यु के मध्य की सीमा पर है। यदि तॉलस्तॉय के अध्ययन से कुछ सहायता मिलती है तो तुम इस पर नाराज क्यों होते हो ? इससे किसी को क्या नुकसान होता है ? कहीं यह तो नहीं कि तुम यह समझते हो कि तॉलस्तॉय को बल्ली से बांध कर जीवित ही जला देना चाहिए था और सरकारी गिरजा समिति ने उसे पूरी सजा नहीं दी ?"

(कोस्तोग्लोतोव ने क्योंकि समाज शास्त्र का अध्ययन नहीं किया था इस-लिए उसने 'पवित्र' के स्थान पर 'सरकारी' शब्द का प्रयोग किया।)

पावेल निकोलाएविच के दोनों कान अत्यधिक लाल हो गये जैसे अभी उनसे खून टपक पड़ेगा। यह एक सरकारी संस्था पर सीधा वार था (यह सच है कि वह इस सरकारी संस्था का नाम नहीं सुन सका था) इस बात ने यह मामला और भी गम्भीर बना दिया कि यह वार कुछ चुने हुए लोगों के सामने नहीं बल्कि इधर-उधर के साधारण लोगों के सामने किया गया था। अब उसके लिये यही उचित था कि चतुराई से बहस को खत्म कर दे और पहला अवसर मिलते ही कोस्तोग्लोतोव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करे। इसीलिए उसने कोस्तोग्लोतोव की बात पर बहस करते हुए पोदुएव की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसे ओस्त्रोवस्की[1] का अध्ययन करना चाहिए। यह उसके लिए अधिक लाभदायक होगा।"

लेकिन कोस्तोग्लोतोव ने पावेल निकोलाएविच के सलीके की कोई दाद न दी। उसने उसकी बात पर न तो कोई ध्यान दिया और ना ही उसे सुनना जरूरी समझा और अयोग्य श्रोताओं के सम्मुख अपने विचारों को बिना रोक-

---

१. निकोलाई ओस्त्रोवस्की—एक रूसी लेखक जिसके सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र ने अपनी मृत्यु शय्या में भी पार्टी के काम आने का प्रयत्न किया था।

(अनुवादक की टिप्पणी)

टोक कहता चला गया।

"आखिर किसी को सोचने की मनाही क्यों की जाए ? हमारे जीवनदर्शन का निचोड़ आखिर क्या है ? यही न कि अरे जीवन तू कितना अच्छा है ! अरे जीवन में तुझसे प्यार करता हूं। जीवन खुशियों के लिए है, क्या ही गहरी भावनाएं हैं ? ऐसी बातें तो हर जानवर कह सकता है, मुर्गी, बिल्ली, या कुत्ता—और बिना हमारी सहायता के।"

"भगवान के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ" पावेल निकोलाएविच उसे चेतावनी दे रहा था, किसी सरकारी कर्त्तव्य की पूर्ति के रूप में नहीं, इतिहास के मंच के किसी मुख्य पात्र की हैसियत से भी नहीं, बल्कि केवल एक मामूली पात्र की हैसियत से—हमें मौत की बात नहीं करनी चाहिए, हमें किसी को मौत की याद तक नहीं दिलानी चाहिए।"

"प्रार्थना करना बेकार है," कोस्तोग्लोतोव ने खुरपे की तरह हाथ हिलाकर उसे झटक दिया। अगर "हम मौत की बात यहां नहीं कर सकते तो संसार में कहाँ कर सकते हैं ? अरे, अच्छा तो हम हमेशा जिन्दा रहेंगे ?"

"तो हुआ क्या ? क्या मतलब है ? पावेल निकोलाएविच ने तर्क करते हुए कहा, आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्या यह कि हम हर समय मौत की बातें करते रहें, मौत के बारे में सोचते रहें ताकि पोटाशियम को प्राथमिकता मिल जाए।"

"हर समय नहीं," कोस्तोग्लोतोव ने कुछ शान्ति से कहा। शायद उसे अहसास हो गया था कि वह अपनी बात की काट करने लगा है। हर समय कदापि नहीं, सिर्फ कभी-कभी। यह लाभदायक है। क्योंकि जीवन भर तो हम आदमी को यही बताते रहते हैं, तुम एक सहकारी खेत के सदस्य हो, तुम एक सहकारी खेत के सदस्य हो। यह ठीक है लेकिन अभी तक जब तक वह जीवित है। जब उसकी मौत का समय आता है तो हम उसे सहकारी खेत से आजाद कर देते हैं। अब तुम, हाँ तुम्हीं बताओ" उसने बेढंगेपन से अपनी उंगली रूसानोव की ओर तान दी—"बताओ कि अब तुम संसार में सबसे अधिक किस चीज से डरते हो ? मौत से ? तुम सबसे ज्यादा किस चीज की बात करने से डरते हो ? मौत की ? और हम इसे क्या नाम देते हैं ? धूर्तता !"

"किसी सीमा तक यह सही है, "अच्छी प्रकृति वाले भूवैज्ञानिक ने धीमी आवाज में कहा। लेकिन हर व्यक्ति ने उसकी आवाज को सुन लिया। "हम मौत से इतना डरते हैं कि मरने वालों का खयाल तक अपने दिमाग से निकाल देते हैं। हम उनकी कब्रों तक की परवाह नहीं करते।"

"हां, यह सच है," रूसानोव ने सहमति प्रकट की। "सूरमाओं की यादगारों की उचित देखभाल करनी चाहिए, यहाँ तक कि समाचार पत्र भी यही कहते हैं।"

"सिर्फ सूरमाओं की ही नहीं, हर किसी की," भू वैज्ञानिक ने कहा, एक इतनी नर्म आवाज में जिससे पता चलता था कि वह ऊंची हो ही नहीं सकती। केवल उसकी आवाज ही पतली नहीं थी वह खुद भी पतला था। उसके कंधों से पता चलता था कि उसमें शारीरिक बल है ही नहीं। "हमारे बहुत से कब्रिस्तानों से लापरवाही बरती जा रही है। अल्ताई की पहाड़ियों और वहां नोवोसीबस्कं की तरफ कुछ कब्रिस्तान मैंने देखे हैं। वहाँ कटहरे तक नहीं। मवेशी घूमते रहते हैं और सूअर कब्रें खोद देते हैं। क्या यह हमारे राष्ट्रीय चरित्र का हिस्सा है ? नहीं। हम कब्रों का हमेशा सम्मान करते रहे हैं..."

"कब्रों की बेइज्जती करते रहे हैं," कोस्तोग्लोतोव ने आगे जोड़ा।

पावेल निकोलाएविच अब सुन नहीं रहा था। उसे तर्क में कोई रुचि नहीं रही थी। बे-ख्याली में वह अपने सिर को हिलाते समय सतर्कता को भूल बैठा था और उसकी रसौली ने उसकी गर्दन और सिर में दर्द की इतनी तीव्र लहर दौड़ा दी थी कि इन लोगों के जहनों को रोशनी देने और उनके गलत विचारों का खंडन करने में उसे कोई दिलचस्पी नहीं रही थी। यह एक इत्तफाक ही तो था कि वह इस क्लिनिक में आ पहुँचा था। यह कुछ अच्छी बात नहीं थी कि अपनी बीमारी के इस नाजुक दौर में उसे इस प्रकार के लोगों के साथ रहना पड़े। लेकिन मुख्य और अत्यधिक भयानक बात तो यह थी कि कल के इंजैक्शन के बाद रसौली न तो कुछ कम ही हुई और न नर्म ही पड़ी थी। हड्डीचूस के लिए मौत की बातें करना आसान था, क्योंकि वह तो स्वस्थ हो रहा था।

द्योमा का भारीभरकम और बे-आवाज मेहमान अपने गले को पकड़े बैठा था ताकि तकलीफ कुछ कम हो जाए। उसने कई बार हस्तक्षेप करने की कोशिश की, अपनी ओर से कुछ कहना चाहा और जो कुछ अप्रिय बहस चल रही थी उसे रोकना चाहा। लेकिन उसकी फुसफुसाहट की सी आवाज कोई सुन नहीं सकता था और अपनी आवाज को ऊंचा करना उसके बस में नहीं था। वह केवल यही कर सकता था कि अपनी तकलीफ को कम करने के लिए और थोड़ी बहुत आवाज पैदा करने के लिए अपनी दो उंगलियां अपने गले पर रख ले। जुबान और गले की बीमारियां, जिनसे बोलना कठिन हो जाता है, विशेषकर कष्टदायक होती हैं। यह कष्ट व्यक्ति के चेहरे पर इतना स्पष्ट होता है कि और कोई भावना नजर ही नहीं आती। द्योमा का मेहमान अब बाजुओं को लहरा-लहरा कर बहस को रोकने की कोशिश कर रहा था। ऐसा मालूम होता था कि अब उसकी बैठी हुई आवाज कुछ-कुछ सुनाई देने लगी है। पलंगों के बीच चलने की जो जगह थी वह उसकी तरफ कुछ आगे बढ़ा।

"साथियो, साथियो !" उसने खर-खर की सी आवाज में कहा। "कष्ट जिसके गले में हो भुगतना उसी को पड़ता है लेकिन उसका अहसास तो किया ही जा सकता है।" हमें इतना निराश नहीं होना चाहिए। बीमारी के कारण

हम पहले ही काफी उदास हैं," पलंगों के बीच चलते हुए उसने अपना एक हाथ बिनती करने के ढंग में ऊंची जगह पर बैठे हुए व्यग्र कोस्तोग्लोतोव की तरफ बढ़ाया, जैसे वह कोई भगवान हो। (अपने दूसरे हाथ से उसने अब भी अपने गले को पकड़ा हुआ था) "कामरेड तुम हमें बिर्च के दम्बल के सम्बन्ध में बहुत दिलचस्प बता रहे थे, वह सिलसिला जारी रखो ना।"

"तो श्रोलोग, तुम हमें बिर्च के दम्बल के बारे में बताओ। क्या कहा था तुमने ?" सिबगातोव कह रहा था।

तांबे जैसी चमड़ी वाला नी अपनी जुबान को कठिनाई ही से हिला सकता था। उसका कुछ भाग पिछले इलाज में नष्ट हो चुका था और जो शेष था वह सूजा हुआ था। लेकिन स्पष्ट रूप में वह भी कोस्तोग्लोतोव से यही कह रहा था कि वह अपनी बात का सिलसिला जारी रखे।

शेष सभी उससे यही माँग रहे थे।

कोस्तोग्लोतोव के शरीर में लाउबालीपन की एक लहर-सी दौड़ गई जिससे वह कुछ घबरा-सा गया। वर्षों से वह अपनी जुबान बन्द रखने का अभ्यस्त रहा था। उन लोगों के सामने जो आजाद थे, उसका सिर झुका रहता था और उसके हाथ पीठ के पीछे रहते थे। पैदाइशी कुबड़े की तरह झुके रहना उसके स्वभाव का अंग बन गया था। एक साल के देश निकाले के बाद भी वह इससे छुटकारा न पा सका था। अब भी उसे यह बिल्कुल स्वाभाविक लगता था कि अस्पताल के मैदान की पगडंडियों पर चलते हुए अपने हाथ पीठ की ओर करके बांध ले। लेकिन अब यह आजाद लोग जिन्हें उसके साथ बराबरी के स्तर पर बात करने की मनाही थी, जिन्हें उसके साथ किसी भी गम्भीर विषय पर बात करने की मनाही था और इससे भी बुरा यह कि न तो वे उसके साथ हाथ मिला सकते थे और ना ही उसके पत्र प्राप्त कर सकते थे, वही आजाद लोग अब उसके सामने बैठे हुए थे, उस पर काई सन्देह नहीं कर रहे थे और वह खिड़की में बड़े आराम से बैठा स्कूल मास्टर की भूमिका निभा रहा था। वे अपने गिरते हुए साहस को संभालने के लिए उसकी बातों की प्रतीक्षा में थे। उसने यह भी अनुभव किया कि अब वह आजाद लोगों की सूची में से अपने आपको अलग नहीं कर रहा था, जैसा कि उसकी आदत थी बल्कि सामूहिक दुर्भाग्य में उनमें शामिल हो रहा था।

अधिक लोगों के सामने बोलने, किसी कान्फ्रेंस, किसी सभा या किसी मीटिंग को सम्बोधन करने की आदत उससे विशेषकर छूट चुकी थी लेकिन इसके बावजद अब यहां वह एक वक्ता बनता जा रहा था। यह सब कुछ कोस्तोग्लोतोव को ऐसा असम्भाव्य लग रहा था, मानो वह कोई स्वप्न देख रहा हो। वह एक ऐसे आदमी के समान था जो बर्फ पर छलाँग लगाने ही वाला था चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो। अपनी पुनः प्राप्ति के क्षण से विभोर

होकर, जो अप्रत्याशित होने के बावजूद वास्तविक दिखाई पड़ता था, वह आगे बढ़ता ही गया।

"दोस्तो," उसने एक ऐसी रवानी से जिसका वह अभयस्त नहीं था, बोलना शुरू किया। "एक बड़ी ही अद्भुत कहानी है। यह मैंने एक मरीज से सुनी थी जो उस समय अपनी स्वास्थ्य-परीक्षा के लिए आया था जबकि मैं दाखिले की प्रतीक्षा कर रहा था। इसमें मेरा कुछ नुकसान तो था ही नहीं। मैंने तुरन्त उत्तर के लिए इस अस्पताल का पता लिखकर कार्ड डाल दिया जिसका जवाब आज आ गया है। केवल बारह दिन में जवाब आ गया है। सिर्फ यही नहीं बल्कि डाक्टर मुसलेनीकोव ने पत्र के उत्तर में देरी के लिए क्षमा भी चाही है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि उसे प्रतिदिन दस पत्र लिखने पड़ते हैं। एक सामान्य पत्र लिखने में आधे घन्टे से कम क्या लगता होगा। इस तरह पांच घन्टे प्रतिदिन वह पत्र लिखने में बिताता है, जिसका उसे कोई पारिश्रमिक नहीं मिलता।"

"नहीं केवल यही नहीं बल्कि चार रूबल प्रतिदिन वह डाक टिकटों पर भी व्यय करता है," द्योमा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

"हाँ, यह सच है, चार रूबल प्रतिदिन, जिसका मतलब है एक सौ बीस रूबल मासिक। और यह सब करना उसके लिये आवश्यक कदापि नहीं है। उसका व्यवसाय नहीं। इसे वह केवल एक नेकी का काम समझ कर करता है। तुम इसे क्या नाम दोगे ?" कोस्तोग्लोतोव ने विद्वेषभाव से रूसानोव की ओर मुड़कर कहा "एक दयावान कार्य, ठीक है न !"

लेकिन पावेल निकोलाएविच पत्र में बजट की रिपोर्ट पढ़ रहा था जिसे वह समाप्त करने वाला था। उसने ऐसा प्रकट किया जैसे वह सुन ही न रहा हो।

"और उसके पास कोई स्टाफ नहीं। न कोई सहायक न कोई सैक्रेटरी। वह सब काम वह स्वयं करता है और फिर न उसे कोई सम्मान मिलता है न गौरव। तुम जानते ही हो जब हम बीमार होते हैं तो डाक्टर एक तरह का खिवैया होता है। एक घन्टे तक हमें उसकी आवश्यकता होती है। इसके बाद हम भूल जाते हैं कि वह है भी या नहीं। जैसे ही हम स्वस्थ हो जाते हैं हम उसके खत फेंक देते हैं। पत्र के अन्त में, उसने शिकायत की है कि उसके मरीज, जिनकी उसने वास्तव में सहायता की है, उसे पत्र लिखना छोड़ देते हैं, न तो वे यह लिखते हैं कि उन्होंने दवा की कितनी मात्रा ली और न यह कि नतीजा क्या निकला ? फिर उसने मुझे लिखा है कि मैं उसे नियमित: लिखता रहूं। उसकी ओर से प्रार्थना है, हालांकि यह हमारा फर्ज है कि हम उसके आगे सिर झुकाएं उसकी खुशामन्द करें।"

कोस्तोग्लोतोव दिल ही दिल में अपने आपको विश्वास दिला रहा था कि वह मुसलेनीकोव की सेवाओं से बहुत प्रभावित हुआ है, उसके सम्बन्ध में बात-

चीत करना चाहता है , उसकी प्रशंसा करना चाहता है, क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि वह स्वयं बिल्कुल ही भटका हुआ आदमी नहीं है। लेकिन इस सीमा तक तो भटका हुआ था ही कि मुसलेनीकोव की तरह हर रोज जन-सेवा के लिए तैयार नहीं हो सकता था।

"हमें सब कुछ बताओ ओलेग पूरे विस्तार के साथ और क्रमानुसार," सिबगातोव ने कहा। उसके होठों पर आशा की हलकी-सी मुस्कान थी।

उसकी कितनी तीव्र इच्छा थी कि वह स्वस्थ हो जाए। महीनों और वर्षों के बेजान कर देने वाले इलाज के बावजूद, जो देखने में बेकार दिखाई पड़ता था, उसे कितनी आरजू थी कि वह एकदम ही स्वस्थ हो जाए। उसकी पीठ ठीक हो जाए, वह सीधा खड़ा हो सके, चल सके, ठीक-ठीक पैर उठा सके, फिर से एक स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट आदमी बन जाए और लुदमिला अफानासएवना से जाकर कहे "हैलो, लुदमिला अफानासएवना, अब मैं बिल्कुल ठीक हूं।"

उन सबकी तीव्र अभिलाषा थी कि उन्हें कोई चमत्कारी डाक्टर मिल जाए, कोई ऐसी दवा मिल जाए जिसका यहां वाले डाक्टरों को ज्ञान न हो। चाहे वे इसे स्वीकार करें या न करें लेकिन उन सभी के दिलों की गहराइयों में यह यकीन मौजूद था कि कहीं न कहीं कोई डाक्टर, जड़ी बूटियों का कोई विशेषज्ञ या जादू टोने करने वाली कोई बूढ़ी स्त्री मौजूद है। जैसे ही उसका पता लगा लिया जायेगा और उसकी दवाई प्राप्त कर ली जायेगी, जान बच जायेगी।

नहीं, यह सम्भव नहीं था, यह बिलकुल सम्भव नहीं था कि उनकी मौत यकीनी हो चुकी है। जब हम स्वस्थ और खुशहाल हों तो चमत्कारों पर चाहे कितना ही हंसे लेकिन जब हम इतने बेबस और मजबूर हो जाएं कि कोई चमत्कार ही हमें बचा सकता हो तो हम डूबते को तिनके का सहारा की उक्ति पर अमल करते हुए चमत्कार को पकड़ने की कोशिश करते हैं और उसी में विश्वास करने लगते हैं। इसीलिए जिस जोश और तन्मयता के साथ उसके दोस्त उसके होंठ हिलने की प्रतीक्षा में थे, कोस्तोग्लोतोव स्वयं भी उसी जोश में शामिल हो गया। वह काफी उत्साह से बोलने लगा। अब उसे अपनी बातों पर पहले से भी ज्यादा भरोसा था, जितना उसे पत्र को पहली बार पढ़ते समय हुआ था।

'तो हम क्रमामुसार शुरू करेंगे। बात यह है कि डाक्टर मुसलेनीकोव के बारे में मुझे हमारे क्लिनिक के एक पुराने मरीज ने बताया था कि वह क्रान्ति से पहले एक देहाती डाक्टर था और मास्को के निकट अलेक्जेन्द्रोव जिले में रहता था। वह वर्षों तक एक ही अस्पताल में काम करता रहा, जैसा कि उन दिनों सामान्यत: होता था। उसने महसूस किया कि यद्यपि पुस्तकों में कैंसर के सम्बन्ध में वर्णन बढ़ता जा रहा है लेकिन जो किसान उसके पास आते थे

उनमें से किसी को भी कैंसर नहीं था। आखिर ऐसा क्यों था ?

(हां ऐसा क्यों था ? हममें से ऐसा कौन है जो अपने बचपन में किसी रहस्यपूर्ण चीज के होने की कल्पना से कांप नहीं गया ? एक ऐसी अभेद्य दीवार के सम्पर्क में आने पर जिसके पीछे किसी भी चीज का अस्तित्व प्रतीत नहीं होता है, लेकिन फिर भी कभी-कभी हमें कोई ऐसी चीज दिखाई पड़ जाती है, जो किसी के कंधे या कूल्हे से एकदम मिलती-जुलती हो। हमारे दैनिक जीवन में जहां रहस्य की कोई गुंजाइश नहीं, यह यकायक हमारी नजरों को चकाचौंध कर देती है और कहती है मुझे भूलो नहीं मैं यहां हूं।)

"अत: उसने छानबीन शुरू कर दी", कोस्तोग्लोतोव ने दोहराते हुए कहा। वह किसी बात को कभी दोहराता नहीं था लेकिन इस समय अपनी बात को दोहराते हुए उसे खुशी हो रही थी। "और उसे एक आश्चर्यजनक चीज का पता चला। उसके जिले के लोग चाय पर पैसा व्यय नहीं करते थे और इसकी बजाय बिर्च की दम्बल उबाल कर पी लेते थे......।"

"तुम्हारा मतलब है खुम्बियां" पोदुएव ने उसकी बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा। उसने अपने आपको हालांकि निराशा के सुपर्द कर दिया था और अपने अन्तिम दिन गिन रहा था, लेकिन इस विचार ने, कि एक ऐसी आसान और सुगमता से प्राप्त होने वाली दवा मौजूद है, उसके जहन में रोशनी की एक किरण-सी चमका दी।

उसके आस-पास वाले सभी दक्षिण रूस के थे जिन्होंने अपने जीवन में कभी बिर्च का पेड़ ही नहीं देखा था फिर उसमें उगने वाली खुम्बियां देखने का तो सवाल ही नहीं उठता था इसलिए वह समझने में असमर्थ था कि कोस्तोग्लोतोव का तात्पर्य किस चीज से है ?

"नहीं येफ्रेम, खुम्बिया नहीं बहरहाल यह वास्तव में बिर्च की दम्बल नहीं बल्कि उस पेड़ का कैंसर होता है। तुम्हें याद होगा कि बिर्च के बूढ़े पेड़ों में इस प्रकार की चीजें पैदा हो जाती हैं, उभरी हुई-सी, ऊपर से काली और अन्दर से गहरी भूरी।"

"तो तुम्हारा मतलब पेड़ों की दाढ़ी से है"? येफ्रेम ने आग्रह किया "उससे आग जलाने का काम लिया जाता है।"

"खैर असल बात यह है कि डाक्टर मुसलेनीकोव को एक बात सूझ गई कहीं ऐसा तो नहीं कि वह चीज दम्बल ही है जो शताब्दियों से रूसी किसानों को कैंसर से बचाती रही है, हालांकि वे यह जानते नहीं थे।"

"तुम्हारा मतलब है वह इसे रोग की रोकथाम की दवा के रूप में इस्तेमाल करते रहे थे।" नवयुवक भूवैज्ञानिक ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। वह सारी शाम एक शब्द भी नहीं पढ़ सका था लेकिन बातचीत दिलचस्प भी थी और पुरजोश भी।

"लेकिन तुम जानते हो कि केवल अनुमान लगा लेना ही काफी नहीं था। हर पहलू की छान-बीन जरूरी थी। कई वर्ष तक वह उन लोगों का अध्ययन भी करता रहा जो घर की बनी यह चाय पीते थे और उनका भी जो नहीं पीते थे। फिर भी उसने उन लोगों को चाय देनी शुरू कर दी जिनके रसौलियां पैदा हो गई थीं और उनका इलाज किसी अन्य दवा से न करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उसे यह अनुमान भी लगाना पड़ा कि चाय का टैम्परेचर कितना होना चाहिए, मात्रा कितनी होनी चाहिए? उसे उबालना चाहिए या नहीं? आदमी को चाय के कितने गिलास पीने चाहिएं। बाद में इसके कुछ प्रभाव होते हैं या नहीं? और किन रसौलियों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक होता है और किस किस्म की रसौलियों पर सबसे कम? और छानबीन में उसे......"

"हां, लेकिन अब परिस्थिति क्या है? अब नतीजा क्या निकला?" सिब्रगातोव ने जोश से पूछा।

और द्योमा सोचने लगा कि क्या उसकी टांग वास्तव में ठीक हो सकती है? क्या यह सम्भव है कि उसकी टांग बच जाए?

"अब क्या परिस्थिति है? इसका उत्तर यहां इस पत्र में है। उसने मुझे बताया है कि अपना इलाज मुझे किस तरह करना चाहिए।"

"क्या तुम्हारे पास उसका पता है?" बे-आवाज व्यक्ति ने अपना एक हाथ अपने खर-खर कर गले पर रखकर बेचैनी भरे ढंग में पूछा। उसने अपनी जैकिट की जेब से एक नोट-बुक और पैन निकालना शुरू कर दिया था। "क्या उसने लिखा है कि यह चाय किस तरह पीनी चाहिए? क्या उसने लिखा है कि यह गले की रसौलियों के लिए लाभदायक हो सकती है?"

अगर यह मुमकिन होता तो पावेल निकोलाएविच अपने इरादे पर कायम रहते हुए अपने पड़ोसी पर घृणा की दृष्टि डाल कर समझ लेता कि उसे यह सजा ही काफी है लेकिन उसने महसूस किया कि वह एक ऐसी कहानी और एक ऐसे मौके को हाथ से जाने नहीं दे सकता। उसके लिये यह मुमकिन न रहा कि वह १९५५ के बजट के आंकड़ों में, जो सुप्रीम सोवियत के अधिवेशन में पेश किया गया था, स्वयं को व्यस्त रख सके। अब उसने अखबार को पूरी तरह स्पष्ट रूप में नीचे कर लिया था और धीरे-धीरे अपना रुख हड्डीचूस की ओर फेर रहा था। वह अपनी इस इच्छा को छुपाना चाहता था कि वह स्वयं भी, जो रूसी कौम का ही एक बेटा है, शायद इस सादा रूसी घरेलू दवाई से स्वस्थ हो जाए। वह हड्डी-चूस को नाराज करना नहीं चाहता था। उसकी आवाज में विरोध लेशमात्र को नहीं था, लेकिन फिर भी एक प्रकार की चेतावनी आवश्य थी। "लेकिन क्या इलाज की इस प्रणाली को सरकारी रूप में स्वीकार किया जाता है?" उसने पूछा "क्या सरकारी विभाग ने इसकी

पुष्टि की है ?"

ऊपर खिड़की में बैठे-बैठे कोस्तोग्लोतोव दांत निकाल कर हंसा—"मैं सरकारी विभागों के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता, यह खत," उसने पीले से कागज का एक टुकड़ा जिसपर हरी स्याही से कुछ लिखा हुआ था, हवा में लहराकर कहा—"यह खत एक व्यावसायिक खत है। इसमें लिखा है कि दम्बल का पाउडर किस तरह बनाना चहिए और उसे मिलाना किस तरह चाहिए। लेकिन मेरे विचार में यदि यह सरकारी मान्यता प्राप्त होता तो नर्सें इसे हमारे पीने के लिए आवश्य ला रही होतीं। सीढ़ियों के नजदीक उस पदार्थ का एक पीपा रखा होता और हमें अलेक्जैन्द्रोव लिखना न पड़ता।"

"अलेक्जैन्द्रोव !" बे-आवाज आदमी इसे लिख चुका था। "पोस्टल जिले का नाम क्या है और गली का क्या नाम है ? " वह समय बरबाद करना नहीं चाहता था।

अहमद जान भी बड़े ध्यान से सुन रहा था और बड़ी शांति से मुख्य-मुख्य बातों का अनुभव करके मुर्सालीमोव और एगन बरदेव को बता रहा था। अहमदजान को बिर्च के दम्बल की अपने लिए आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह ठीक हो रहा था। लेकिन एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी "यदि यह वास्तव में इतनी अच्छी है तो डाक्टर इसे मंगवाते क्यों नहीं ? उसे मंगवाने के स्थाई अदेश क्यों नहीं देते?"

"यह एक बहुत लम्बा काम है अहमदजान ! कुछ लोग इस पर विश्वास नहीं करते, कुछ लोग नई बातें सीखना ही नहीं चाहते, कुछ लोग जिद्दी होते हैं कुछ लोग इसे रोकना चाहते हैं ताकि अपनी दवाओं को चला सकें। लेकिन हमारे लिए तो पसन्द-नापसन्द का प्रश्न ही नहीं रह गया है।"

कोस्तोग्लोतोव ने रूसानोव के प्रश्न का उत्तर भी दे दिया और अहमदजान के प्रश्न का भी। लेकिन उसने बेआवाज अदमी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और उसे पता नहीं बताया। इस ख्याल मे कि कोई भाँप न ले उसने प्रकट यह किया कि उसने उसकी बात सुनी ही नहीं या उसके पास उत्तर देने का समय ही नहीं। लेकिन सच्चाई यह है कि वह उसे पता बताना चाहता ही नहीं था। वह उत्तर इहलिए नहीं देना चाहता था कि बेआवाज अदमी के व्यवहार से चालाकी प्रकट होती थी, यद्यपि देखने में वह बा-इज्जत दिखाई देता था। अपने चेहरे-मोहरे से वह बैंक का मैनेजर लगता था या दक्षिण अमरीका के किसी छोटे से मुल्क का प्रधानमंत्री। ओलेग को सहृदय बूढ़े मसलेनीकोव पर तरस आ रहा था जो ऐसे लोगों के पत्रों का उत्तर देने के लिए, जिन्हें वह जानता तक नहीं था, अपनी नींद से साथ धोने को भी तैयार था। बेआवाज आदमी उस पर प्रश्नों की बौछार कर देगा। दूसरी ओर यह भी मुमकिन नहीं था कि इस खर-खर करते गले पर तरस न खाया जाए, जो अपने मानवीय स्वर

से वंचित हो गया था। इस चीज का मूल्य हमें तभी पता चलता है जब हम इससे वंचित हो जाते हैं कोस्तोग्लोतोव बीमारी के मामलों में माहिर था और अपनी बीमारी के सम्बन्ध में गुर जानता था उसने रोग निदान का थोड़ा बहुत अध्ययन कर लिया था। गैंगार्त दोन्तसोवा से इस सिलसिले में कुछ और मालूमात प्राप्त कर ली थीं और उसे मसलेनीकोव से अपने खत का उत्तर भी मिल गया था। आखिर वह, जिसे वर्षों तक समस्त मानवीय अधिकरों से वंचित रखा गया, इन आजाद लोगों को यह क्यों बताए कि इस मलबे से जिसमें वह दबे हुए हैं, किस तरह निकलना चाहिए ? उसका चरित्र तो एक ऐसी जगह ढला था, जहां का नियम था "यदि कुछ हाथ में आ गया है तो मुट्ठी बन्द रखो। कुछ मिल गया है तो चटाई के नीचे छुपा दो।" अगर हर कोई मसलेनीकोव को खत लिखने लगा तो कोस्तोग्लोतोव को अपने पत्रों का उत्तर मुश्किल ही से मिलेगा

यह कोई सोचा समझा फैसला नहीं था। अपने घाव के निशान वाली ठोड़ी रूसानोव से अहमदजान की ओर घुमाते हुए, जिनके मध्य बेआवाज आदमी भी था, वह अपने फैसले पर पहुँच गया।

"लेकिन क्या उसने लिखा है कि उसे कैसे इस्तेमाल करना चाहिए ?" भूवैज्ञानिक ने पूछा। पैंसिल और कागज उसके सामने रखे थे। वह जब भी किताब पढ़ता ये उसके आगे रखे होते।

"उसे कैसे इस्तेमाल किया जाए ? बहुत अच्छा, अपनी पैंसिल सम्भाल लो, मैं लिखवाता हूं" कोस्तोग्लोतोव ने कहा।

हर कोई व्यस्त हो गया और एक-दूसरे से पैंसिल और कागज मांगने लगा। पावेल निकोलाएविच के पास कुछ नहीं था। (वह अपना पैन घर छोड़ आया था जो नई किस्म का था और जिसकी निब भी नए किस्म की थी) द्योमा ने उसे पैंसिल दे दी। सिबगातोव, फेदेरो, येफ्रेम और भी सभी लिखना चाहते थे। जब वह तैयार हो गए तो कोस्तोग्लोतोव ने खत पढ़कर उन्हें धीरे-धीरे लिखवाना शुरू किया। उसने बताया कि दम्बल को किस तरह खुश्क करना चाहिए। इतना खुश्क नहीं कि उसमें कुछ भी न रह जाए। उसे कैसे पीना चाहिए, किस किस्म के पानी में उबालना चाहिए, कैसे भिगोना चाहिए, कैसे छानना चाहिए और किस मात्रा में पीना चाहिए।

कुछ जल्दी-जल्दी लिख रहे थे और कुछ बेढंगेपन से। वे उसे अपनी बात दोहराने के लिये कहते। वार्ड में मित्रता और जोश का वातावरण था। कभी-कभी वे एक-दूसरे के प्रश्न का उत्तर देते तो स्वर में कटुता आ जाती। लेकिन उनके मध्य झगड़ने के लिए था ही क्या ? उन सबका एक ही दुश्मन था—मौत। एक बार मौत का सामना हो जाए तो धरती की कोई चीज भी इंसानों में फूट नहीं डाल सकती।

द्योमा लिख चुका तो अपनी सामान्य खुरदरी और मन्द आवाज में, जो उससे कहीं अधिक वृद्ध मनुष्य की आवाज लगती थी कहने लगा "हां—लेकिन प्रश्न यह है कि बिर्च लाया कहां से जाए ? यहां तो है नहीं।"

उन सबने आह भरी। वे सब, जिनमें से कुछ बहुत पहले मध्य रूस को छोड़ आए थे और कुछ तो स्वेच्छा से छोड़कर और वे भी जो वहां कभी नहीं गए थे, देश के उस हिस्से की कल्पना कर रहे थे जहां कोई दिखावा नहीं, जहां का मौसम सुहावना है, जहाँ की धरती को सूरज ने झुलसा नहीं, जहां वर्षा होती रहती है, खेतों और जंगल के रास्ते पर दलदल होती है, जहां की धरती शांत है और जहां एक मामूली-सा जंगली पेड़ है जो इन्सान के लिए इतना लाभदायक और इतना आवश्यक है। जो लोग इन हिस्सों में रहते हैं उन्हें अपने देश की कदर नहीं होती और साफ नीले समुन्दरों और केले के झुण्डों के लिए तरसते रहते हैं। लेकिन नहीं, आदमी को जिस चीज की सचमुच आवश्यकता है वह बिर्च के पेड़ पर उगने वाला भयानक काला दम्बल है, उसकी बीमारी, उसकी रसौली।

सिर्फ मुरसालीमोव और एगेन बरदेव यह समझते थे कि यहां भी—इन्हीं मैदानों इन्हीं पहाड़ियों में ही—वह चीज़ ज़रूर होगी जिसकी उन्हें ज़रूरत है। क्योंकि आदमी को जिस चीज की भी ज़रूरत होती है वह उसके लिए धरती के प्रत्येक कोने में विद्यमान् होती है। उसे केवल यह पता होना चाहिए कि तलाश कहां की जाए।

"हमें किसी को कहना पड़ेगा कि वह उसे इकट्ठा करके हमें भेज दे।" भूवैज्ञानिक ने द्योमा से कहा। ऐसा मालूम होता था कि दम्बल के विचार ने उसके दिल में काफी जोश पैदा कर दिया था।

स्वयं कोस्तोग्लोतोव, जो इसका खोजी और विचारक था, रूस में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता था जिसे वह दम्बल तलाश करने के लिए कह सके। जिन लोगों को वह जानता था वह या तो मर चुके थे या देश में इधर-उधर बिखरे हुए थे। फिर उनसे यह कहने में भी उसे हिचकिचाहट हो रही थी। कुछ ऐसे थे जो बिलकुल शहरी थे, वह दम्बल तो क्या शायद सही किस्म का बिर्च का पेड़ भी तलाश न कर सकें। उसके लिए सबसे अधिक खुशी की बात यह थी कि वह जंगलों में चला जाए, महीनों वहीं रहे, दम्बल तोड़े, उसे पीसे, अलाव की आग पर उसे उबाले, पीये और जानवर की तरह हृष्ट-पुष्ट हो जाए। महीनों जंगलों में घूमता रहे और इसके सिवा कोई चिन्ता न हो कि वह अच्छा हो जाये। बिलकुल उसी तरह जैसे कुत्ता वह रहस्यमयी घास ढूंढता रहता है जो उसे बचा सके।

लेकिन रूस के रास्ते उसके लिये बन्द थे।

वहां जो दूसरे थे, जिन पर रास्ते खुले थे, उन्होंने वह बुद्धिमत्ता सीखी ही

नहीं जो बलिदान करने के लिये आवश्यक होती है। निरर्थक बातों से छुटकारा पाना उन्हें आता ही नहीं था। उन्हें वहां भी रुकावटें नजर आती थीं, जहां नहीं थीं। उनके लिये यह कैसे मुमकिन था कि वे बीमारी की छुट्टी लेकर या छुट्टियों में तलाश के लिये निकल खड़े हों। यह कैसे मुमकिन था कि वह अपनी दिनचर्या को छोड़ दें या अपने घर वालों को छोड़ दें। उन्हें रुपया कहाँ से मिलेगा ? फिर यह प्रश्न भी था कि वे इस प्रकार के सफर के लिये कपड़े कैसे पहनें और अपने साथ क्या कुछ लेकर चलें ? वे किस स्टेशन पर उतरें और अधिक पूछताछ कहां से करें।

कोस्तोग्लोतोव ने खत को थपथपाते हुए अपनी बात जारी रखी—"यहां उसने यह भी लिखा है कि कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने आपको सप्लायर कहते हैं। व साधारण उद्यमी लोग हैं जो दम्बल एकत्रित करते हैं, उसे सुखाते हैं और बेच देते हैं। लेकिन वह मूल्य काफी लेते हैं। पन्द्रह रूबल प्रति किलोग्राम और महीने में छ: किलोग्राम की आवश्यकता होती है।"

"उन्हें ऐसा करने का क्या अधिकार है ?" पावेल निकोलाएविच ने गुस्से से कहा। उसके चेहरे पर अधिकारिक क्रोध आ गया था जिसे कोई सप्लायर देख लेता तो काँप जाता। बल्कि सम्भव है उसका पेशाब ही निकल जाता। "उनके आत्मा है भी या नहीं ? लोगों की जेब पर एक ऐसी चीज के लिये डाका डालते हैं जो प्रकृति ने मुफ्त प्रदान की है।"

"शीखो नहीं" येफ्रेम ने सी-सी करते हुए कहा। (वह शब्दों को जिस तरह बिगाड़ रहा था, वह बड़ा ही अप्रिय था। यह बताना कठिन था कि वह जान-बूझ कर ऐसा कर रहा है या उसके लिए इन शब्दों को उच्चारण करना मुमकिन नहीं) "क्या तुम्हारा विचार है कि तुम जंगल में कदम रखते ही उसे प्राप्त कर सकते हो ? तुम्हें थैला और कुल्हाड़ी उठाकर जंगल मे काफी दूर तक चलना पड़ेगा। और सर्दी का मौसम हो तो और भी लैस होकर निकलना पड़ेगा।"

"लेकिन यह भी क्या कि पन्द्रह रूबल प्रति किलोग्राम ! चोर व्यापारी, नाश हो इनका !" यह एक ऐसा मामला था कि रूसानोव इस पर किसी भी दशा में समझौते के लिए तैयार नहीं हो सकता था। उसका चेहरा फिर गुस्से से लाल हो रहा था।

यह स्पष्टत: सिद्धान्त की बात थी। पिछले कुछ वर्षों से रूसानोव को पक्का विश्वास होता जा रहा था कि हमारी जितनी भी गलतियां हैं, जितनी भी भूलें हैं, जितनी भी त्रुटियां हैं, वे सब सट्टे और मुनाफाखोरी का नतीजा हैं। संदिग्ध किस्म के लोग गलियों में प्याज, मूलियां और फूल बेचते हैं। किसान स्त्रियां बाजार में दूध और अन्डे बेचती हैं और रेलवे स्टेशन पर ऊनी मौजे और तली हुई मछलियां तक बिकती हैं। सट्टा और मुनाफाखोरी बड़े स्तर पर होती है।

राजकीय गोदामों से ट्रक इधर-उधर के रास्तों पर भगा दिए जाते हैं। अगर इस प्रकार के सट्टे और मुनाफाखोरी को जड़ से उखाड़ दिया जाए तो हमारे देश में हर चीज तुरन्त ठीक हो जाये और हमारी सफलताएं पहले से कहीं अधिक हो जायेगीं। इसमें कोई बुराई नहीं थी कि आदमी राज्य से एक अच्छा वेतन और अच्छी पेन्शन लेकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना ले (पावेल निकोलाएविच का स्वप्न यह था कि उसे एक खास और निजी पेन्शन मिले) अगर कोई व्यक्ति इस तरह अपने लिए कार प्राप्त कर ले, एक कॉटेज बना ले और शहर में भी एक छोटा-सा मकान बना ले तो वह इसका हकदार है लेकिन एक ही फैक्ट्री की बनी हुई वही कार, उसी प्रकार का एक काटेज अगर मुनाफाखोरी का नतीजा हो तो उसकी स्थिति बिल्कुल भिन्न होती है, बिल्कुल अपराधपूर्ण। पावेल निकोलाएविच स्वप्न देखा करता था, सच्चे अर्थों में स्वप्न देखा करता था कि मुनाफाखोरों को सार्वजनिक रूप में फांसी देने का रिवाज शुरू हो जाये। सार्वजनिक रूप में फांसी देने से हमारे समाज की हालत तुरन्त ही सुधर सकती है।

"अच्छा ठीक है," येफ्रेम भी गुस्से में था—"चीखना बन्द करो, जाओ और जाकर प्राप्त करने की स्वयं योजना बनाओ। यदि चाओ तो यह राजकीय स्तर पर भी चालू कर सकते हो। एक को-आपरेटिव खोल दो अगर १५ रूबल तुम्हारे लिए बहुत अधिक हैं, तो न खरीदो।"

रूसानोव को एहसास हो गया कि यह उसका कमजोर पहलू है। उसे मुनाफाखोरी से बड़ी घृणा थी लेकिन उसकी रसौली उसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकती थी कि विज्ञान अकादमी नई दवा की पुष्टि करे या को-आपरेटिव संस्थाओं का केन्द्रीय रूसी संगठन उसको प्राप्त करने का इन्तजाम करे।

बे-आवाज़ नवागान्तुक हाथ में नोट-बुक लिए ऐसा लगता था जैसे वह किसी प्रमुख पत्र का संबाददाता हो। लगभग वह कोस्तोग्लोतोव के पलंग पर चढ़ गया अपनी बैठी हुई आवाज़ में बड़े जोश से कहने लगा, "सप्लाई करने वालों का और पता पत्र में लिखा है?"

पावेल निकोलाएविच भी पता लिखने के लिए तैयार हो गया।

लेकिन किसी कारण से कोस्तोग्लोतोव ने उत्तर नहीं दिया। खत में पता था या नहीं वह इस प्रश्न पर चुप ही रहा। वह चुपचाप खिड़की में से उतर कर अपने पलंग के नीचे बूट तलाश करने लगा। अस्पताल के समस्त नियमों के विरुद्ध वह सैर करने के लिए उन्हें वहां छिपाये रखता था।

द्योमा ने नुस्खा अपने पलंग के पास वाले मेज में छुपा दिया कुछ अधिक मालूम करने की कोशिश के बगैर वह अपनी टांग सावधानी के साथ पलंग पर रखने लगा। उसके पास न तो इतना रुपया था और न हो ही सकता था।

हां बिर्च के पेड़ से लाभ होता है, लेकिन हर किसी को नहीं।

रूसानोव को वास्तव में घबराहट हो रही थी। हड्डीचूस से उसका अभी-अभी झगड़ा हुआ था और पिछले तीन दिनों में यह झगड़ा पहली बार नहीं हुआ था। लेकिन अब उसे उसकी कहानी में स्पष्टत: दिलचस्पी थी और पते के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। यह सोचकर कि उसे हड्डीचूस को कुछ मक्खन लगाना चाहिए, उसने लगभग अनचाहे ऐसी बात कहनी शुरू कर दी जिसने उन दोनों के मध्य शिष्टता का सम्बन्ध स्थापित कर रखा था और उसने काफी नम्रता के साथ कहा, "हां संसार में किसी ऐसी चीज की कल्पना ही नहीं की जा सकती जो इससे बुरी हो (क्या इनसे उसका तात्पर्य कैंसर से था? लेकिन उसे तो कैंसर था ही नहीं) हां···संसार में ऐसी कौन-सी चीज है जो इस रसौली बल्कि वास्तव में कैंसर से भी बुरी हो।"

लेकिन कोस्तोग्लोतोव पर इस वाक्य का जिससे उस पर विश्वास प्रकट होता था और एक ऐसे व्यक्ति की ओर से जो आयु, पद और अनुभव में उससे कहीं बड़ा था, कोई प्रभाव न हुआ। अपनी टांग पर भूरे रंग की पट्टी लपेटते हुए, जिसे उसने अभी-अभी सुखाया था, और उस पर रबड़ का गन्दा और फटा हुआ टखनों तक का बूट चढ़ाए हुए, जिसमें पैवन्द लगे हुए थे, वह चिल्लाया, कैंसर से बुरी क्या चीज है? कोढ़—?"

उसकी तेज़, भारी और धमकाने वाली सी आवाज़ कमरे में इस तरह गूंजी मानो किसी ने बन्दूक चला दी हो।

पावेल निकोलाएविच ने मुंह बना लिया लेकिन उसका स्वर अब भी मित्रतापूर्ण था—"खैर यह तो सोचने की बात है कि वास्तव में बुरा क्या है? कोढ़ की बीमारी काफी धीरे-धीरे होती है।"

कोस्तोग्लोतोव ने पावेल निकोलाएविच के चश्मे के साफ शीशों और उनके पीछे जो साफ आंखें थीं उनकी ओर भयानक और अमित्रतापूर्ण ढंग में देखा।

"कोढ़ बुरा इसलिये है कि वह तुम्हें जीते-जागते इस संसार से निकाल बाहर करता है। वह तुम्हें तुम्हारे कुटुम्ब से अलग कर देता है और कांटेदार तारों के जंगले के पीछे कैद कर देता है। क्या तुम्हारे विचार में यह रसौली के मुकाबले में बेहतर है?"

पावेल निकोलाएविच को काफी बेचैनी महसूस होने लगी। इस उजड्ड और अक्खड़ व्यक्ति की भयानक और झुलसा देने वाली नज़र उसके बिल्कुल पास थी और उसे बचाव का कोई उपाय पहीं सूझ रहा था।

"मेरा मतलब यह है कि यह सभी मनहूस बीमारियां···"

कोई भी सुशिक्षित व्यक्ति इस मोड़ पर यह महसूस कर लेता कि अब कोई मित्रतापूर्ण बात कहना आवश्यक है। लेकिन हड्डीचूस की समझ में यह बात नहीं आयी। पावेल निकोलाएविच के सलीके की दाद देना उसके बस में नहीं था। उसने अपने कमज़ोर शरीर को पूरी तरह ऊंचा किया और मोटे कपड़े

की एक ढीली-ढाली मिट्टी के से रंग का जनाना गाउन ओढ़ लिया जो उसके जूतों तक जाता था। वह जब भी सैर को जाता, उसे ओवरकोट की तरह ओढ़ लिया करता था। तब उसने बड़े ही आत्मतुष्टि के स्वर में, यह महसूस करते हुए कि वह वास्तव में कोई बुद्धिमत्तापूर्ण बात कह रहा है, कहा "किसी दार्शनिक ने एक बार कहा था कि उस व्यक्ति को जो कभी बीमार नहीं होता, उसे अपनी सीमाओं और कमियों का कभी ज्ञान नहीं होता है।"

उसने ड्रेसिंग गाउन की जेब में से एक चार उंगल चौड़ी मुड़ी-तुड़ी फौजी पेटी निकाली जिसके बक्सुए पर पांच किनारों वाला सितारा था और उसने वह अपनी कमर में बांध ली। केवल इतनी सतर्कता बरती कि जहां रसौली है वहां गाउन को बहुत अधिक न कसा जाए। इसके बाद वह घटिया-सा सिगरेट चूसता हुआ, जो कुछ इस किस्म का था कि पीने से पहले ही जल-बुझकर राख हो जाता, बाहर की ओर चल दिया।

बैठे हुए गले वाला व्यक्ति, जो कोस्तोग्लोतोव से सवाल पूछ रहा था, पलंगों के बीच के रास्ते पर कोस्तोग्लोतोव के रास्ते से हट गया। वह दिखने में अब भी किसी बैंक का मैनेजर या मंत्री लगता था लेकिन इसके बावजूद वह कोस्तोग्लोतोव से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसे उसकी बात का उत्तर दे। वह कोस्तोग्लोतोव की इस तरह इज्जत कर रहा था जैसे वह रसौलियों के विज्ञान के आकाश का कोई चमकता हुआ सितारा हो और शीघ्र ही इस इमारत से विदा होने वाला हो। "बताओ तो सही! गले की रसौलियों में ऐसी रसौलियों का अनुपात क्या है जिन्हें कैन्सर होता है?"

किसी की बीमारी या दुःख का मज़ाक उड़ाना शर्मनाक है। लेकिन बीमारी और दुःख को भी इस तरह सहन करना चाहिए कि आदमी हास्यस्पद न बने। कोस्तोग्लोतोव ने उस आदमी के, जो वार्ड में इतने अर्थहीन ढंग से उछल-कूदकर रहा था, डरे हुए और चिन्तित चेहरे पर नजर डाली। रसौली होने से पहले वह शायद काफी आदेशात्मक स्वभाव रखता था। उसकी आदत थी कि बातचीत करते समय वह गले पर उंगलियां रख लेता था, यद्यपि यह बात समझी जा सकती थी, लेकिन इसके बावजूद जब वह ऐसा करता तो काफी हास्यस्पद-सा लगता।

"सौ में चौंतीस," कोस्तोग्लोतोव ने कहा। वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया और अलग खड़ा हो गया।

कहीं ऐसा तो नहीं कि वह आज कुछ ज्यादा ही टांय-टांय करता रहा हो? उसने कुछ ज्यादा ही बातें कहीं हों और कोई ऐसी बात कह दी हो जो उसे नहीं कहनी चाहिए थी?

लेकिन उससे बातचीत करने वाला व्यक्ति जो काफी बेचैन था, उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं था, वह जल्दी-जल्दी उसके पीछे सीढ़ियां उतरने लगा।

वह अपने भारी-भरकम शरीर को आगे की ओर बढ़ाए, कोस्तोग्लोतोव के कंधे पर ऊपर से अपनी बैठी हुई आवाज में कह रहा था—"कामरेड तुम्हारा क्या विचार है ? अगर रसौली दुखे नहीं तो यह अच्छी बात है या बुरी ? इससे क्या पता चलता है ?"

बेचारे थके हारे और बेबस लोग !

"तुम करते क्या हो ?" कोस्तोग्लोतोव ने रुक कर उससे पूछा ।

"मैं लैक्चरर हूँ," उसके कान बड़े-बड़े थे और बाल भूरे और चमकदार थे । वह कोस्तोग्लोतोव की ओर इस आशा से देख रहा था मानो वह कोई डाक्टर हो ।

"काहे के लैक्चरर हो ? विषय क्या है ?"

"दर्शन-शास्त्र," बैंक मैनेजर ने उत्तर दिया । उसे अपना पहले का स्वभाव याद आने लगा था और उसकी बात करने का अंदाज भी किसी सीमा तक लौट रहा था । यद्यपि सारा दिन उसके चेहरे पर चालाकी दिखाई देती रही थी लेकिन उसने कोस्तोग्लोतोव को उसके लिए माफ कर दिया था कि वह विचारकों के बेजोड़ और बेढंगे हवाले देता रहा था । वह उसकी आलोचना करना नहीं चाहता था क्योंकि उसे दम्बल सप्लाई करने वालों के पतों की आवश्यकता थी ।

"लैक्चरर,—और तुम्हारे गले का यह हाल है ?" कोस्तोग्लोतोव ने अपने सिर को इधर से उधर हिलाया । उसे इस बात का कोई अफसोस नहीं था कि उसने दम्बल सप्लाई करने वालों के पते वार्ड में ऊंची आवाज में नहीं सुनाए । उस बिरादरी की मान्यताओं के अनुसार जिसने सात बरस तक उसे इस तरह खींचा था जैसे वह कोई धातु का टुकड़ा हो जिसे तारकशी की मशीन में खींचा जा रहा हो, कोई बेवकूफ ही ऐसा कर सकता था । हर कोई भागमभाग दम्बल सप्लाई करने वालों को पत्र लिखने बैठ जाता, मूल्य चढ़ने आरम्भ हो जाते और उसे अपने लिए दम्बल मिलना असम्भव हो जाता । उसका यदि कोई कर्त्तव्य था तो केवल इतना था कि कुछ भले लोगों को एक-एक करके पता बता दे । वह यह इरादा पहले ही कर चुका था कि भूवैज्ञानिक को पता बता देगा, यद्यपि उनके बीच केवल दस शब्दों का वार्तालाप हुआ था । उसका कारण यह था कि वह उसे पसन्द करता था और उसे यह बात भी पसन्द थी कि उसने कब्रिस्तानों की हिमायत में आवाज उठाई थी । वह द्योमा को भी अवश्य बता देगा यह और बात है कि द्योमा के पास कोई पैसा नहीं था । (वास्तविकता यह है कि ओलोग के पास भी कोई पैसा नहीं था और जब उसके पास कुछ था ही नहीं तो वह दम्बल काहे से खरीदेगा) और फेदेरो, नी और सिबगातोव को भी वह अवश्य बता देगा क्योंकि ये सब लोग उसके मुसीबत के साथी हैं ।

वे सब उन राष्ट्रीयताओं से सम्बन्धित थे जिन्हें उनके देश से निकाल दिया

गया था और वे कोस्तोग्लोतोव की ही तरह निर्वासन में रह रहे थे। लेकिन उन्हें बारी-बारी ही उससे पता पूछना पड़ेगा---जो नहीं पूछेगा रह जायेगा। लेकिन दर्शनशास्त्र का वह लैक्चरर तो बिल्कुल बेवकूफ लगता था और उसके लैक्चरों में होता भी क्या होगा ? शायद वह केवल इतना करता था कि लोगों के दिमागों को धुंधला कर देता था और फिर उसके सारे दर्शनशास्त्र का मतलब ही क्या था जबकि वह बीमारी के सामने इतना बेबस था। लेकिन यह अजीब संयोग था कि कैंसर उसके शरीर के किसी और भाग में नहीं बल्कि गले में था।

"दम्बल सप्लाई करने वालों का पता लिख लो," कोस्तोग्लोतोव ने आदेशात्मक स्वर में कहा, "लेकिन यह केवल तुम्हारे लिए है।" वह कृतज्ञता से झुककर लिखने लगा।

पता लिखवाने के बाद ओलेग अपना पीछा छुड़ाने में सफल हो गया। इससे पहले कि बाहर का दरवाजा बन्द हो जाये वह जल्दी से सैर के लिए निकल जाना चाहता था।

बाहर बरामदे में कोई नहीं था।

ओलेग ने ठण्डी नम और स्थिर हवा में सांस लिया लेकिन तुरन्त ही इससे पहले कि वह उसे ताजगी प्रदान करती, उसने सिगरेट जला लिया। चाहे कुछ भी होता उसके लिये मुमकिन ही नहीं था कि वह सिगरेट पिये बिना अपने आपको पूर्णतया महसूस करता (यद्यपि सिगरेट पीने की मनाही उसे केवल दोन्तसोवा ही ने नहीं की थी बल्कि डाक्टर मसलेनीकोव ने भी अपने खत में मौका निकालकर लिख दिया था)।

न तो हवा ही तेज थी न बर्फ पड़ रही थी। उसे खिड़की के शीशे पर समीप के जोहड़ का प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। जोहड़ के काले पानी पर बर्फ बिल्कुल नहीं थी। अभी फरवरी की पांच तारीख ही थी लेकिन बसन्त का मौसम आ गया था। वह इसका अभ्यस्त नहीं था। कोहरा नहीं था, बल्कि हल्की-सी एक धुन्ध हवा में तैर रही थी, इतनी हल्की कि उससे गली के लैंपों और खिड़कियों की रोशनियां धुंधलाती नहीं थीं।

ओलेग की बायीं ओर पॉपलर के चार पिरामिडाकार ऊंचे पेड़ चार भाईयों की तरह छत से ऊपर नजर आ रहे थे। दूसरी ओर केवल एक पेड़ अकेला खड़ा था लेकिन कद में अन्य चारों के बराबर था। पीछे बाग की बाड़ के समीप छोटे-छोटे पेड़ों का एक घना-सा झुन्ड था।

वार्ड नं० तेरह के बिना-जंगले के पत्थर के दालान से कुछ कदम नीचे डामर की पगडन्डी थी। इसके दोनों ओर घनी बाढ़ थी। बाढ़ के पौधों पर पत्ते नहीं थे लेकिन उनका घनापन बताता था कि पौधों में जान अवश्य है।

ओलेग बाग की पगडन्डी पर चहलकदमी के लिए निकला था प्रत्येक पग और टांग की प्रत्येक हलचल पर वह इस विचार से प्रसन्न हो जाता कि वह

भलीभांति चल रहा है और उसकी टांग एक ऐसे आदमी की जीवित टांग है जो अभी मरा नहीं। लेकिन दालान के दृश्य ने उसके कदम रोक लिये और उसने अपना सिगरेट वहीं खत्म किया।

सामने के वार्डों की खिड़कियों और इक्का-दुक्का लैंपों से नर्म-सी रोशनी आ रही थी। इस समय मुश्किल ही से कोई रास्तों पर चलता दिखायी देता था। पीछे पास ही रेल की पटरी थी लेकिन वहां कोई शोर नहीं था। केवल नदी की मद्धम और लयदार आवाज सुनाई दे रही थी। यह नदी एक झाग वाला पहाड़ी सोता था जो पास के वार्डों के पीछे पहाड़ी के समीप से बह रहा था।

पहाड़ी के आगे और नदी के पास एक और बाग था। यह एक म्युनिसिपल पार्क था। ओलेग को पीतल के बाजे पर बजाया जाने वाला नाच का गाना सुनाई दे रहा था जो या तो पार्क से आ रहा था या क्लब की खिड़कियों से होता हुआ। यह शनिवार का दिन था। वे नाच रहे थे। जोड़े एक साथ नाच रहे थे···

ओलेग अपनी चहलकदमी के कारण अपने दिल में एक अजीब-सी उत्तेजना अनुभव कर रहा था और इस कारण से भी कि उन सबने उसकी बात को ध्यान से सुना था। उस पर यह अहसास छा गया कि यकायक जिन्दगी लौट आयी है। वह जिन्दगी जिसके साथ दो ही सप्ताह पहले उसने अपना हिसाब चुकता कर लिया था। यद्यपि इस जिन्दगी में उसे ऐसी किसी चीज की आशा नहीं थी जिसे प्राप्त करने के लिए इस बड़े शहर के लोग प्रयत्न करते रहते हैं और उसे किसी योग्य समझते हैं—न घर, न जायदाद, न सामाजिक मान, न रुपया—लेकिन कुछ ऐसी खुशियां भी थीं जो स्वयं काफी महत्व की थीं और जिनकी कद्र करना वह भूला नहीं था। उदाहरणार्थ हुक्म की प्रतीक्षा किये बगैर चलने फिरने का अधिकार, अकेले रहने का अधिकार, सितारों को देखने का अधिकार जिन्हें श्रम शिविरों की सर्चलाईट ने मांद न किया हो, रात को बत्ती बुझाने का अधिकार, इतवार को आराम करने का अधिकार, नदी में नहाने का अधिकार। हां ऐसे और इस किस्म के अन्य अनगिनत अधिकार थे जिनमें स्त्रियों के साथ बात करने का अधिकार भी था।

उसकी सेहत का ठीक होना उसे यह समस्त अनगिनत और अद्भुत अधिकार लौटा रहा था।

पार्क से आने वाला संगीत अभी-अभी उसके कानों में पहुंचा था। ओलेग ने वह सुना लेकिन वह पूरी तरह नहीं समझा कि वह क्या बजा रहे थे लेकिन ऐसा मालूम होता था कि यह चाइकोवस्की की चौथी सिम्फनी है। यह एक अद्वितीय गीत था और उसकी तनावपूर्ण धुन उसके अन्दर गूंज रही थी। यह एक सुरीला गीत था (ओलेग ने यह व्याख्या अपने तौर पर की थी, यद्यपि इसकी व्याख्या भिन्न ढंग से भी की जा सकती थी) इसमें हीरो जिन्दगी में

वापिस आ रहा है या शायद अन्धा होने के बाद उसकी आंखों की रोशनी लौट रही है। वह अपनी उंगलियों के साथ चीजों को या एक चेहरे को जो उसे बहुत प्यारा है, टटोलता है, उस पर हाथ फेरता है, उसे छूता है और अपने भाग्य पर विश्वास करते हुए डर महसूस करता है। उसे यह स्वीकार करते हुए डर महसुस होता है कि ये चीजें वास्तव में मौजूद हैं और उसकी आंखों की रोशनी उसे मिल गई है।

१२. दिल की धड़कन जाग उठी

इतवार की सुबह जब वह काम पर जाने के लिए जल्दी-जल्दी कपड़े बदल रही थी, तो जोया को याद आया कि कोस्तोग्लोतोव ने उससे साग्रह अनुरोध किया था कि अगली बार जब उसकी ड्यूटी हो तो वह अपनी भूरी और सुनहरी पोशाक पहने। उस शाम उसने उसके सफेद कोट से झाँकता उसका कॉलर देख लिया था और वह उसे दिन की रोशनी में देखना चाहता था। स्वार्थहीन अनुरोधों को पूरा करना सदा ही आनंददायक होता है। यह पोशाक उसके शरीर पर आज बहुत ही अच्छी लगती। ऐसा मालूम होता था जैसे वह किसी पार्टी में जाने की पोशाक है। उसे आशा थी कि दोपहर में उसके पास कोई अधिक काम नहीं होगा—यों उसे आशा तो यह भी थी कि कोस्तोग्लोतोव उसके पास आकर उसका दिल बहलाएगा।

उसने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और वही पोशाक पहन ली जिसका अनुरोध कोस्तोग्लोतोव ने किया था। उसने कई बार उस पर हथेलियां मलीं और थोड़ा-सा इत्र भी लगा लिया और उसने अपने बालों में कंघी फेर ली। वक्त बहुत ही कम था। उसने अपना ओवरकोट चलते-चलते पहना और उसकी दादी को भी बस इतना ही वक्त मिल पाया कि वह उसके जाते-जाते उसकी जेब में लंच के लिए कुछ डाल दे।

सुबह कुछ भीगी-भीगी-सी और ठंडी थी, लेकिन सर्दी अभी नहीं आई थी। मध्य रूस में ऐसे दिन लोग बरसातियाँ पहनते हैं, लेकिन यहाँ दक्षिणी रूस में गर्मी और सर्दी के सम्बन्ध में लोगों की धारणाएं कुछ भिन्न हैं। यहाँ लोग गर्मियों में ऊनी सूट पहनते हैं और जैसे ही मौका मिलता है ओवरकोट पहन लेते हैं और फिर सर्दियों के अन्त में जाकर कहीं उसे उतारते हैं। जिनके पास फर के कोट होते हैं वे सर्दियों के पूरे मौसम में इसके लिए ललकारते रहते हैं कि कुछ दिन बर्फ पड़ती रहे।

जोया जैसे ही अपने घर के गेट से बाहर निकली उसे अपनी ट्राम आती दिखाई दी। ट्राम पकड़ने के लिए उसे पूरे ब्लॉक ट्राम के पीछे-पीछे दौड़ना पड़ा तब जाकर कहीं वह सबके बाद में उछलकर उसमें सवार हो पाई। उसका चेहरा लाल-लाल हो गया था और वह बुरी तरह हांफ रही थी। वह ट्राम के पीछे के फुटबोर्ड पर खड़ी हो गई जिससे कि ताज़ा हवा में सांस ले सके। नगर-

की ट्रामें बहुत ही धीमे-धीमे चलती थीं और शोर भी बहुत करती थीं। वे हर मोड़ पर पटरियों से रगड़ खाती और बुरी तरह चिचियाती थीं। उनमें से किसी में भी खुद खुलने-बंद होने वाले दरवाजे नहीं थे।

उसकी सांस फूली हुई थी और सीने में एक घुटन-सी महसूस हो रही थी, लेकिन एक युवा शरीर के लिए यह एक सुखद अनुभूति ही थी क्योंकि वह शीघ्र ही गायब भी हो गई और इससे उसके स्वस्थ होने की भावना तथा छुट्टी के मूड में वृद्धि ही हुई।

उसके मेडिकल स्कूल में चूंकि छुट्टियां थीं इसलिए क्लिनिक में काम करना बहुत ही आसान था। उसे एक सप्ताह में तीन दिन पूरी ड्यूटी देनी होती थी और एक दिन आधी—और यह ऐसा ही था जैसे कि वह पूरे वक्त आराम ही कर रही हो। स्पष्ट है कि बेहतर तो यही होता कि ड्यूटी देनी ही न पड़ती, लेकिन जोया चूंकि दुहरा बोझ उठाने की अभ्यस्त हो चुकी थी, इसलिए उसे यह ड्यूटी देना भी अप्रिय नहीं लगता था। अपनी पढ़ाई जारी रखने के साथ-ही-साथ काम करते रहने का यह उसका दूसरा वर्ष था। क्लिनिक में वह जिस प्रकार का काम करती थी उसे चिकित्सा सम्बन्धी अनुभव तो कोई विशेष प्राप्त नहीं होता था, लेकिन वह भी काम पैसे के लिये कर रही थी, अनुभव के लिए नहीं। उसकी दादी की पेंशन तो रोटी खरीदने के लिए भी काफी नहीं थी और स्वयं उसे जो अनुदान मिलता था वह आता बाद में था, खर्च पहले ही हो जाता था। उसका बाप उसे कुछ नहीं भेजता था और जोया ने भी उससे कभी कुछ मांगा नहीं था। उस किस्म के बाप का कोई अहसान लेना उसे बिलकुल भी पसंद नहीं था।

रात की पिछली ड्यूटी के बाद की दो दिन की छुट्टियां उसने बिस्तर में पड़े-पड़े करवटें बदलने में ही नहीं गंवाई थी। ऐसा तो उसने अपने बचपन से आज तक कभी भी नहीं किया था। सबसे पहले वह उस क्रेप से, जो उसने वेतन मिलने के बाद दिसम्बर में खरीदी थी, बसंत ऋतु के लिए अपना एक ब्लाउज बनाने बैठी। (उसकी दादी उससे हमेशा कहा करती थी—'बर्फ गाड़ी गर्मियों में तैयार कर लो और गर्मियों में काम आने वाली गाड़ी सर्दियों में,—और यह कहावत बिलकुल सही थी क्योंकि गर्मियों में प्रयोग में लाई जाने वाली सर्वोत्तम वस्तुएं दुकानों पर केवल सर्दियों में मिलती थीं।) वह अपना ब्लाउज दादी की सिंगर मशीन पर सी रही थी। (वे इस मशीन को स्मोलेंस्क से इतनी दूर अपने साथ लेकर आई थीं।(उसे सीना भी सबसे पहले उसकी दादी ने ही सिखाया था, लेकिन दादी के सीने-पिरोने के तरीके पुराने थे। जोया की सतर्क आंखों ने अपनी पड़ोसिनों, सहेलियों और उन लड़कियों को सीते देखकर, जिन्होंने कपड़े सीने की नियमित शिक्षा प्राप्त की थी, नए तरीके भी सीख लिए थे। लेकिन जोया के पास इन कामों के लिए वक्त नहीं था। दो दिन में ब्लाउज

पूरा नहीं हो पाया, फिर भी उसने ड्राई क्लिनिंग करने वाली दुकानों का चक्कर लगाने का वक्त निकाल ही लिया और उसने एक ऐसी दुकान ढूंढ़ भी निकाली जो उसके गर्मियों के कोट को साफ कर सकती थी। वह आलू और सब्ज़ियां खरीदने के लिए बाज़ार भी गई थी और वहां उसने एक मछली वाली औरत की तरह सौदेबाज़ी भी की थी। और जब वह घर लौटी थी तो उसके हाथों में दो भारी थैले भी थे। (उसकी दादी दुकानों पर लाइन में तो खड़ी रह सकती थी, लेकिन वह कोई भारी चीज़ उठाकर नहीं ला सकती थी।) फिर वह सार्वजनिक स्नान घर में गई थी। इस तरह उसे लेटने या कोई किताब पढ़ने के लिए एक क्षण भी नहीं मिल पाया था। कल शाम वह अपनी सहपाठी रीटा के साथ संस्कृति-भवन में एक नाच-पार्टी में गई थी।

अगर सम्भव होता तो जोया किसी ऐसी जगह जाना पसंद करती जो इन क्लबों की तुलना में अधिक ताज़गी देने वाली और अधिक स्वास्थ्यकर होती, लेकिन इन क्लबों के अतिरिक्त ऐसी जगहें या पार्टियां थीं ही नहीं जहां युवकों से मिला जा सके। उनकी क्लास में और उनकी फैकल्टी में रूसी लड़कियां तो ढ़ेरों थीं, लेकिन लड़के बहुत ही कम थे। यही कारण था कि मैडिकल स्कूल की पार्टियों में जाना उसे पसंद नहीं था।

संस्कृति-भवन, जहां वह और रीटा गई थीं, अच्छा खासा बड़ा, साफ-सुथरा और गर्म था। उसमें संगमरमर के खंबे थे, संगमरमर की सीढ़ियां थीं और कांसे के फ्रेमों में जड़े बड़े-बड़े शीशे थे। उनमें अपने आपको नाच के फर्श से दूर ही से देखा जा सकता था। वहां बहुत ही कीमती और लाभदायक कुर्सियां भी थीं, लेकिन उन्हें ढांप कर रखा जाता था और उन पर बैठने की इजाजत नहीं थी। नव वर्ष की पूर्व-संध्या के बाद, जब उसे वहां एक अत्यधिक अपमान-जनक स्थिति का सामना करना पड़ा था, जोया यहां नहीं आई थी। उस शाम फैंसी ड्रैस का नृत्य समारोह था, और सर्वोत्तम पोशाकों पर पुरस्कार दिए जाने थे। जोया ने अपने लिए बंदर की पोशाक तैयार की थी, जिसकी पूंछ बहुत ही शानदार थी। जोया ने हर चीज़ का पूरा-पूरा ध्यान रखा था—अपने केश-विन्यास का, हलके रूप श्रृंगार का और रंगों के चुनाव एवं उनके मिलान का। उसकी पोशाक आकर्षक भी थी और मनोरंजक भी। हालांकि प्रतियोगिता काफी कड़ी थी फिर भी पुरस्कार लगभग उसकी जेब में था। लेकिन पुरस्कारों की घोषणा की ही जाने वाली थी कि उससे कुछ ही पहले कुछ शरारतियों ने चाकू से उसकी पूंछ काट ली और हाथों हाथ घुमाकर अन्ततः कहीं छुपा दी। जोया के आंसू निकल पड़े—लड़कों की मूर्खता पर नहीं बल्कि इस पर कि उसके चारों ओर लोग उस पर हंस रहे थे और इस मजाक की दाद दे रहे थे। पूंछ के बिना पोशाक उतनी प्रभावशाली नहीं रही थी। जोया का चेहरा आंसुओं

से तरबतर हो गया था—और उसे कोई भी पुरस्कार नहीं मिल पाया था।

कल शाम जब वह वहां गई थी तो उस समय भी वह क्लब से क्रुद्ध थी—उसके अहं को ठेस जो लगी थी। लेकिन वहां ऐसा कुछ नहीं हुआ और ना किसी ने उसे बंदर वाले कांड की याद ही दिलाई। वहां हर तरह के लोग थे—विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थी और फैक्टरियों में काम करने वाले लड़के। जोया और रीटा को एक साथ नृत्य करने का एक भी अवसर नहीं मिला। वे शुरू से ही एक-दूसरे से अलग हो गई थीं और तीन घंटे तक उन्हें बैंड की धुन पर बगूले की तरह चक्कर खिलाए जाते रहे थे। ये घंटे अत्यधिक उल्लासपूर्ण घंटे थे। नृत्य में घूमने और चक्कर लगाने में उसके शरीर को अत्यधिक आनन्द रहा था और बेरोक धकापेल और प्रगाढ़ आलिंगन तो उसे विशेष आनंद दे रहे थे। उसके साथ नृत्य करने वाले कोई विशेष बातें नहीं करते थे और अगर जब वे कोई मजाक करते थे तो जोया को एकदम भौंदू लगाते। अन्ततः कोल्या, जो एक तकनीकी नक्शे बनाने वाला था, उसे घर छोड़ने आया था। रास्ते में वे भारतीय फिल्मों और तैराकी के बारे में बातें करते रहे थे—किसी गंभीर विषय पर बातचीत करना उस समय हास्यास्पद लगता। जब वे जोया के घर के गेट पर पहुंचे, जहां काफी अंधरा था, तो उन्होंने एक-दूसरे के चुम्बन लेने शुरू कर दिए। जोया की छातियों को बहुत कुछ सहना पड़ रहा था। युवकों को उत्ते-जित करने में वे कभी असफल नहीं हुई थीं। कोल्या ने तो मसलकर ही रख दी थी। उसने कुछ दूसरे तरीकों से जोया के शरीर पर भी अधिकार पाने का प्रयत्न किया था। जोया इस सब में पूरा-पूरा आनन्द ले रही था, लेकिन उसी समय उसके मन में विलगाव की यह भावना भी पैदा होने लगी थी कि ये सब समय बर्बाद करने वाली बातें हैं। इतवार को भी उसे जल्दी उठाना था। इसलिए उसने कोल्या को टरका दिया और खुद दौड़ती हुई पुरानी सीढ़ियां चढ़ गई थी।

जोया की अधिकांश सहेलियों—विशेषकर मैडिकल स्कूल की छात्राओं की मान्यता थी कि जीवन से जो कुछ भी ले सकना सम्भव हो तत्काल ही झपट लेना चाहिए—और दानों हाथों से झपट लेना चाहिए। इस दर्शन के हावी रहते हुए यह एकदम असम्भव था कि पाठ्यक्रम के पहले, दूसरे और तीसरे वर्ष में भी कोई लड़की अपरिणीता बनी रहे जिसका ज्ञान सिद्धान्त तक सीमित हो, उससे आगे नहीं। जोया यह सब कुछ व्यवहारतः देख-कर चुकी थी। अनेक बार भिन्न-भिन्न युवकों के साथ उसने अभिन्नता के विभिन्न स्तर पार किए थे। धीरे-धीरे वह उन्हें अधिकाधिक छूट देती गई थी और फिर उन्हें अपने कब्जे में ले लिया था और उन पर हावी भी हो गई थी। उसने ऐसे उन्मुक्त कर देने वाले क्षणों का भी आनन्द लिया था कि अगर घर पर बम भी फेंक दिया जाता तो भी कोई अन्तर न पड़ता और ऐसे शान्त एवं आलस्यपूर्ण क्षणों का भी जब

फर्श या कुर्सी पर फेंके गए ऐसे कपड़े उठाए जाते हैं जिन्हें साधारण स्थिति में एक जगह होना ही नहीं चाहिए था। फिर भी वे दोनों ही उन्हें देखते और इसमें उन्हें कोई भी आश्चर्यजनक बात न दिखाई देती। अब तक ऐसी स्थिति भी न रह जाती जबकि उसके सामने ही जोया के कपड़े पहनने पर उन दोनों में से किसी को भी कोई आश्चर्य होता।

निस्संदेह यह सब अत्यधिक उल्लासपूर्ण था और तीसरा वर्ष शुरू होते-होते जोया 'अपरिणाताओं' की श्रेणी से पूरी तरह बाहर आ गई थी। फिर भी उसमें उसे वास्तविक आनन्द कभी नहीं मिला था। इन सबमें उस स्थायी और सोद्देश्य निरन्तरता का अभाव था जो जीवन को स्थायित्व प्रदान करती है—और जो सच पूछिए तो जीवन ही प्रदान करती है।

जोया की आयु अभी कुल तेईस वर्ष थी, लेकिन वह बहुत कुछ देख चुकी थी और उसे बहुत कुछ याद था—स्मोलेंस्क से आतुरतापूर्वक निष्क्रमण के बाद लम्बी यात्रा—पहले माल ढोने वाली गाड़ी में, फिर एक बजरे में और उसके बाद फिर माल ढोने वाली गाड़ी में। न जाने क्यों वह व्यक्ति उसे विशेष रूप से याद रह गया था जो माल ढोने वाली गाड़ी में उसके पास बैठा था और डोरी के छोटे से टुकड़े से उस जगह को नाप रहा था जो प्रत्येक व्यक्ति ने घेर रखी थी। इस प्रकार वह यह प्रकट करना चाहता था कि जोया के परिवार ने दो सेंटीमीटर जगह अधिक घेर रखी है। जोया को यह भी याद था कि युद्ध-काल के वर्षों में जीवन में कितना तनाव था और कितनी भूख थी! उन दिनों में लोग राशन कार्डों और चोर बाजार में कीमतों के अतिरिक्त और किसी विषय पर बात करते ही न थे और चचा फेद्या उसके बिस्तर के पास रखी मेज़ से उसके राशन की रोटियां चुरा लिया करता था।—और अब जोया के सामने घातक कैंसर की यन्त्रणा थी—ये नष्ट प्राय: जीवन थे—ये रोगियों की थका देने वाली कहानियां थीं और उनके आंसू थे।

इस सबकी तुलना में छातियों का मसला जाना, आलिंगन में बांधा जाना तथा दूसरी बातें जीवन के खारे समुद्र में ताज़े पानी को कुछ बूंदों से अधिक महत्व नहीं रखती थीं।—और ये बूंदें उतनी कभी नहीं हुई थीं कि प्यास बुझ सकती।

क्या इसका मतलब यह था कि एक मात्र विकल्प शादी ही है? प्रसन्नता केवल इसी तरह मिल सकती है? जितने भी युवक उसे मिले थे उसके साथ नाचते थे, उसके साथ सैर सपाटे के लिए गए थे - उन सब का एक ही लक्ष्य था—अपने आपको कुछ गरमा लेना, मौज-मस्ती कर लेना और फिर पल्ला झाड़ कर अलग हो जाना। वे आपस में कहा करते थे—मैं शादी कर सकता था, लेकिन एक नई "मित्र" ढूंढने में मुझे एक या दो से अधिक शामें कभी नहीं लगतीं, फिर मैं इस पचड़े में क्यों पड़ूं?"

निस्संदेह, जब औरत इतनी आसानी से मिल जाती हो तो शादी क्यों की जाए ? अगर बाजार में अचानक ढेरों टमाटर आ जाएं तो आप अपने टमाटरों की कीमत भला तिगुनी कैसे कर सकते हैं—आपके टमाटरों को तो कोई पूछेगा भी नहीं, वे तो पड़े-पड़े ही सड़ जाएंगे। जब आपके आस-पास का हर व्यक्ति आत्म-समर्पण करने को तैयार हो तो भला आप दुष्प्राप्य कैसे बने रह सकते हैं ?

अदालती शादी भी कोई विशेष सहायता नहीं थी— जोया को मारिया के अनुभव से यह अच्छी तरह मालूम हो चुका था। मारिया एक यूक्रेनी नर्स थी। जोया और वह बारी-बारी से शिफ्टों में काम किया करती थीं। मारिया ने शादी को रजिस्ट्री करने वाले दफ्तर पर भरोसा किया था लेकिन शादी के एक सप्ताह बाद ही उसके पति ने उसे छोड़ दिया। वह कहीं चला गया और फिर एकदम गायब ही हो गया। सात वर्ष तक वह उसके बच्चे को पालती रही थी। इतना ही नहीं, शादी के कारण उसके तो हाथ-पैर ही बंध गये थे।

जोया जब पार्टियों में जाती और वहां शराब पीती—और अगर उसकी माहवारी के दिन पास आ रहे होते तो वह उतनी ही सावधानी बरतती जितनी सावधानी सुरंग उड़ाने वाले सुरंगी क्षेत्र से गुजरते हुए बरतते हैं।

जोया के सामने एक और उदाहरण था। उसने अपनी माँ अपने बाप की बर्बाद जिन्दगियाँ देखी थीं। उसने देखा था कि किस तरह वे आपस में झगड़ते, सुलह करते, अलग होकर अलग-अलग शहरों में रहने लगते और फिर एक जगह होते रहे। वे जिन्दगी भर एक दूसरे की बोटियाँ नोंचते रहे। जोया अपनी माँ की गलती को दुहराने की बजाय तेजाब का एक गिलास पी लेना बेहतर समझती थी।

यह भी अदालती शादी का ही उदाहरण था। यह शादी बेकार ही नहीं, बदतर भी साबित हुई थी।

जोया अपने शरीर के संतुलन और संगति से परिचित थी। उसे पता था कि उसका प्रत्येक अंग शेष शरीर के साथ समताल है और उसके स्वभाव और उसके दृष्टिकोण में भी एक सामंजस्य है। उसके जीवन का अगर कोई विस्तार या प्रसार हो सकता था तो वह इसी सामंजस्य और समतालता के अन्दर ही संभव था।

अगर कोई पुरुष उसके शरीर पर हाथ फेरने के दौरान मूर्खतापूर्ण, भदेस बातें कह देता या फिल्म संवाद दुहराने लगता, जैसे कि कोल्या ने पिछली रात किया था, तो तत्काल वह समतालता नष्ट हो जाती—और ऐसे किसी व्यक्ति के हाथों में जोया का अपने आपको सौंप देना एकदम असंभव था।

जोया ट्राम के पीछे के फुटबोर्ड पर खड़ी थी और ट्राम के चलने से लगने वाले हिचकोलों से आगे-पीछे हो रही थी। ट्राम की कंडक्टर एक युवक पर बरस रही थी जिसने अपना टिकट नहीं खरीदा था। वह खड़ा-खड़ा उसकी बातें सुनता रहा लेकिन टिकट उसने फिर भी नहीं खरीदा। ट्राम के टर्मिनस

पर पहुंचने तक जोया वहीं खड़ी रही। टर्मिनस आने पर ट्राम ने मोड़ लिया। मोड़ के उस ओर अब तक एक हुजूम जमा हो चुका था जो ट्राम आने की प्रतीक्षा में ही था। ट्राम अभी ठीक से रुकी भी नहीं थी कि कंडक्टर से फटकार खाने वाला युवक नीचे कूद गया। उसके बाद एक और लड़का और फिर जोया भी कूद गई। चलती ट्राम से कूद आने पर उसे कुछ कम चलना पड़ेगा।

इस समय आठ बजकर एक मिनट हुआ था। जोया ने मैडिकल सेंटर की बजरी बिछे फुटपाथ पर दौड़ना शुरू कर दिया। नर्स होने के नाते वह इस तरह दौड़ नहीं सकती थी, लेकिन चूंकि यह अभी पढ़ ही रही थी इसीलिए वह क्षम्य थी।

जब तक वह कैंसर वार्ड में पहुंची और उसने अपना ओवरकोट उतार अस्पताल का सफेद कोट पहनकर वार्ड की सीढ़ियां चढ़नी शुरू कीं तब तक आठ बजकर दस मिनट हो चुके थे। अगर ओलम्पिआडा व्लादिस्लावोवना या मारिया की ड्यूटी होती तो जोया की बुरी गत बनती। दस मिनट देर से आने पर मारिया उसे इस तरह फटकारती जैसे कि वह आधी शिफ्ट अनुपस्थित रही हो। लेकिन सौभाग्य से ड्यूटी तुर्गुन की थी जो स्वयं एक विद्यार्थी था। तुर्गुन एक कराकल्पाक[1] युवक था जो स्वभाव से बहुत ही अच्छा था और जोया के प्रति तो वह विशेष स्नेह रखता था। उसे मजा देने के अंदाज में जोया के कूल्हे पर चपत जमानी चाही लेकिन उसने उसे इसका मौका ही नहीं दिया और उसे सीढ़ियों की तरफ धकेल दिया जिस पर दोनों ही हंस पड़े।

हालांकि वह अभी विद्यार्थी ही था लेकिन कराल्पाक होने के कारण उसे अभी से उस क्षत्र के एक गाँव के अस्पताल का वरिष्ठ डॉक्टर नियुक्त कर दिया गया था। सच तो यह है कि ये उसकी दायित्वहीन स्वतंत्रता के अन्तिम कुछ महीने थे।

तुर्गुन ने जोया को उपचार-पुस्तिका दी। अस्पताल की मैट्रन मीता ने उन्हें एक विशेष काम भी सौंप दिया था। इतवार के दिन वार्डों में डाक्टरों के राउण्ड नहीं लगते थे, इलाज भी कुछ कम ही होता था और ऐसे मरीज भी नहीं होते थे जिन्हें खून चढ़ाया जा चुका हो। लेकिन इस दिन इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना होता था कि मरीज़ों के रिश्तेदार ड्यूटी डॉक्टर की आज्ञा लिये बिना ही कहीं वार्डों में घुस जाएं। इस पर भी मीता की यह आदत थी कि वह आंकड़ों के कभी खत्म न होने वाले काम को, जिसे वह खुद पूरा नहीं कर सकती थी, जो भी इतवार को ड्यूटी पर होता था उसे सौंप देती थी।

आज का काम यह था कि गत वर्ष अर्थात् १९५४ के दिसम्बर से अब तक

---

१. मध्य एशिया में रहने वाली तुर्क जाति। (अनुवादक की टिप्पणी)

के मरीजों के कार्डों की जांच-पड़ताल की जाए। ये कार्ड ढ़ेरों थे। अपने होंठों को इस तरह फैलाकर, जैसे कि वह सीटी बजाना चाहती हो उसने कार्डों के किनारों को जल्दी-जल्दी पकड़ते हुए एकसार किया और उन्हें थपथपाने लगी। वह यह अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रही थी कि वे कुल कितने होंगे और उनसे निपटने के बाद उसे कशीदाकारी के लिए भी थोड़ा-बहुत वक्त मिलेगा कि नहीं। तभी उसे अपने पास एक लम्बी-सी परछाईं महसूस हुई। उसे लेश-मात्र भी आश्चर्य नहीं हुआ, उसने अपना सिर घुमाया (सिर सभी तरह से घुमाए जा सकते हैं) और वहां कोस्तोग्लोतोव को खड़े पाया। उसकी हजामत बनी हुई थी और उसके सिर के बाल लगभग संवरे हुए थे सिर्फ उसकी ठोड़ी का घाव का निशान उसे हमेशा की तरह याद दिला रहा था कि वह एक गल-कटा था।

"गुड मॉर्निंग, जोयेन्का!" उसने एक पूर्ण सम्भ्रांत व्यक्ति की तरह कहा।

"गुड मॉर्निंग!" जोया ने अपना सिर हिलाया जैसे वह किसी चीज के बारे में असंतुष्ट या शंकालु हो और उसका कोई कारण भी न हो।

कोस्तोग्लोतोव ने अपनी घनी काली और भूरी आंखों से उसकी ओर देखा।

"मैं देख नहीं पा रहा हूं—मैंने जो कुछ कहा था वह तुमने किया कि नहीं?"

"क्या कहा था?" जोया ने आश्चर्य प्रकट करने के लिए त्योरी चढ़ाई। (यह उसकी एक आज़माई हुई चाल थी जो हमेशा कामयाब रही थी।)

"तुम्हें याद नहीं? मैंने तो उसके सम्बन्ध में अपने आप से एक शर्त भी बद ली है।"

"तुमने मुझसे मेरी 'व्याधिकीय विश्लेषण' पुस्तक ली थी—यह तो मुझे याद है।"

"अरे हां, मैं एक मिनट में लौटा रहा हूं—धन्यवाद!"

"तुम्हें कैसी लगी?"

"मैं समझता हूँ कि जो मैं जानना चाहता था, वह मुझे मिल गया।"

"मैंने तुम्हें कोई नुकसान तो नहीं पहुंचाया न?" जोया ने पूछा, इस बार वह सचमुच गंभीर थी। "बाद में मैंने महसूस किया था कि मुझे तुम्हें यह किताब नहीं देनी चाहिए थी!"

"नहीं जोयेन्का," उसने अपने कथन पर बल देने के लिये आहिस्ता से उसकी बांह छुई। "उलटे इस किताब ने तो मुझे ढांढस बंधाया। तुमने बहुत ही अच्छा किया जो यह किताब मुझे दे दी। लेकिन···उसने उसकी गरदन पर निगाह डाली—"क्या तुम अपने कोट का ऊपर का बटन खोल सकती हो?"

"लेकिन क्यों?" जोया ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, (वह फिर चतुर

चाल चल रही थी) "मुझे गरमी तो लग नहीं रही।"

"जरूर लग रही है—देखती नहीं, तुम्हारा चेहरा एकदम लाल हो गया है।"

"हां, है तो," वह प्रसन्नमन से हंसी। सच यह है कि वह खुद अपना कोट उतार देना चाहती थी क्योंकि तेज दौड़ने और तुर्गुन के साथ हुई हाथापाई के कारण उसकी सांस अभी तक फूली हुई थी। इसलिए उसने अपनी गर्दन का बटन खोल दिया।

भूरी पोशाक की सुनहरी धारियां चमक उठीं।

कोस्तोग्लोतोव की आंखें फैल गईं। उसने उसकी ओर देखा और लगभग फुसफुसाते हुए कहा—"कितनी सुन्दर है! धन्यवाद! बाद में तुम मुझे इससे अधिक दिखाओगी—दिखाओगी न?"

"यह इस पर निर्भर करता है कि तुमने शर्त क्या बदी थी!"

"मैं तुम्हें बता दूंगा, लेकिन बाद में, ठीक है न? हम कुछ वक्त साथ-साथ रहेंगे, रहेंगे न?"

जोया ने गुड़िया की तरह आंखें घुमाईं—"बशर्ते कि तुम काम में थोड़ा-सा मेरा हाथ बंटाओ! मेरा चेहरा लाल इसलिए लग रहा है क्योंकि आज मेरे पास ढेरों काम हैं।"

"नहीं, मैं नहीं! अगर हाथ बंटाने का मतलब जीवित शरीरों में सुइयां घोंपना है तो मैं नहीं..."

"और अगर मैडिकल आंकड़ों का काम हो तो? उनसे तुम्हारी कमर तो टूट नहीं जाएगी, नहीं न?"

"आंकड़ों के लिए मेरे मन में अपार सम्मान है—बशर्ते कि वे गोपनीय न हों।"

"तो ठीक है, नाश्ते के बाद आ जाना!" जोया ने उसकी ओर यह सोच कर मुस्कान फेंकी कि सहायता के बदले में उसे कुछ पेशगी तो दे ही दी जानी चाहिए।

वार्डों में अब तक नाश्ता शुरू हो चुका था।

पिछले शुक्रवार की सुबह जब दिन की ड्यूटी वाली नर्स आ गई थी तो जोया ने मरीजों के दाखिले का रजिस्टर ढूंढ निकाला था और कोस्तोग्लोतोव का कार्ड, जिसमें उसकी बीमारी का विवरण लिखा हुआ था, बड़े ध्यान से पढ़ा था। रात की बातचीत से उसके दिल में कोस्तोग्लोतोव के बारे में काफी दिलचस्पी पैदा हो गई थी।

पता चला कि उसका नाम ओलेग फिलिमोनोविच है। (यह अपेक्षाकृत भारी-भरकम पैतृक नाम अप्रीतिकर लगने वाले कुल नाम के लिए अच्छा जोड़ था—अलबत्ता नाम का पहला भाग इन दोनों में कुछ संतुलन पैदा कर देता

था।) वह १९२० में पैदा हुआ था और अब उसकी आयु चौंतीस वर्ष थी, लेकिन वह अभी तक अविवाहित था—हालांकि यह बात असंभावित-सी लगती थी।—और वह उशतेरेक नामक स्थान का रहने वाला था। उसका कोई भी रिश्तेदार नहीं था (कैंसर वार्ड के नियमानुसार मरीज़ के निकट के संबंधियों के नाम अवश्य दर्ज किए जाते थे।) उसका व्यवसाय भू-मानचित्रण था, लेकिन वह भूसर्वेक्षक के रूप में काम करता रहा था।

इन बातों में से किसी से भी उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश नहीं पड़ता था, उलटी बात कुछ और अधिक रहस्यमय हो गई थी।

और आज उसने उपचार-पुस्तिका में पढ़ा था कि शुक्रवार से प्रतिदिन उसके पुट्ठों में सिनेस्टाल के दो सी० सी० इंजैक्शन लगाये जाते थे। ये इंजैक्शन रात की ड्यूटी वाली नर्स को लगाने थे—इसका मतलब था कि आज उसे इंजैक्शन नहीं लगाना था। फिर भी पुट्ठों के इंजेक्शन के विचार मात्र से उसके खुले हुए होंठ भिंच गए।

नाश्ते के बाद कोस्तोग्लोयोव 'व्याधिकीय विश्लेषण' नामक पुस्तक लेकर आ गया। वह सहायता करने को पूरी तरह तैयार था। लेकिन उस वक्त वह एक वार्ड से दूसरे वार्ड में भाग दौड़ कर रही थी और वो दवाएं वितरित कर रही थी जो मरीज़ों को दिन में तीन या चार बार पीनी या निगलनी थीं।

आखिर वे जोया की छोटी-सी मेज पर बैठ ही गए। जोया ने आरम्भिक लेखाचित्र (ग्राफ) बनाने के लिए एक बडा-सा कागज़ निकाला। तमाम सूचनाएं इस कागज़ पर एकत्र करनी थीं और विभिन्न कागजों में पैन से सही का निशान लगाकर इंदराज करने थे। उसने उसे बताना शुरू किया यह सब किस तरह करना है (हालांकि उन बातों में से कुछ को तो वह अब तक स्वयं भी भूल चुकी थी।) वह एक बड़े से रूलर से कागज़ पर लाइनें भी खींचती जा रही थी।

जोया अच्छी तरह जानती थी कि ये 'सहायक'—ये युवक और अविवाहित 'सहायक' (और कभी-कभी विवाहित थी) कितने उपयोगी होते हैं। उनकी सहायता प्राय: हंसी-मज़ाक, खुशामद और प्रेम-प्रदर्शन में परिवर्तित हो जाती है जिससे रजिस्टर में गलतियां हो जाती थीं। जोया गलतियां बरदाश्त करने के लिए तैयार थी क्योंकि प्रेम-प्रदर्शन चाहे कितना ही अमौलिक क्यों न हो फिर भी वह अच्छे-से-अच्छे रजिस्टर की तुलना में तो अधिक मनोरंजक होता ही है। जोया को आज भी उस खेल को जारी रखने में कोई आपत्ति नहीं थी जो उसके ड्यूटी के घंटों को आनन्ददायक बना सकता था।

इसलिए जब कोस्तोग्लोतोव ने तुरन्त ही उसे कनखियों से देखना छोड दिया और वह अपने स्वर के विशेष लहजे को छोड़कर तत्काल ही काम में जुट जाने की तैयारियां करने लगा तो जोया को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। इतना

ही नहीं, तो जोया ने उसे जो कुछ बताया था, उसने उनमें से कुछ बातें पलट-कर जोया के सामने दुहरा भी दीं। वह कार्डों में डूब गया—वह प्रत्येक कार्ड पर दर्ज आंकड़े पढ़ता जा रहा था और जोया बड़े रजिस्टर के कालमों में अपने पैन से निशान लगाती जा रही थी।

''न्यूरोब्लास्तोमा...'' उसने लिखवाया, ...हाई पर निफ्रोमा...नासिका रंध्र का सरकोमा...''

उस ने फैसला कर लिया था कि जो बात भी उसकी समझ में न आएगी वह उसके बारे में जोया से पूछ लेगा—और उसने किया भी ऐसा ही।

उन्हें रजिस्टर में उल्लिखित काल-खंड के दौरान हुई प्रत्येक श्रेणी की रसौलियों की गणना करनी थी—पुरुषों की रसौलियों की अलग और स्त्रियों की अलग—यह हिसाब लगाना था कि प्रत्येक रोगी के जीवन में प्रत्येक दशक में कितनी रसौलियां हुई थीं और विभिन्न प्रकार के उपचारों और उनकी मात्रा की सूची बनानी थी। फिर उन्हें प्रत्येक वर्ग के रोगियों के लिए पांच सम्भावित परिणामों में से एक दर्ज करना था—पूरी तरह निरोग स्थिति में सुधार, स्थिति में कोई अन्तर नहीं, बिगड़ती हुई स्थिति या मृत्यु। जोया के सहायक ने इन पांच सम्भावनाओं पर विशेष ध्यान दिया। यह बात तत्काल उसकी पकड़ में आ गई कि पूरी तरह निरोग हो जाने का मामला शायद ही कोई था—हालांकि मौतें भी कोई अधिक नहीं हुई थीं।

''अच्छा, तो वे उन्हें यहां मरने नहीं देते। वे उन्हें वक्त रहते ही डिसचार्ज कर देते हैं,'' कोस्तोग्लोतोव ने कहा।

''वे और कर भी क्या सकते हैं, ओलेग? तुम खुद ही सोचो!'' (उसकी सहायता का पारितोषिक देने के लिए उसने उसे ओलेग कहकर पुकारा था। कोस्तोग्लोतोव यह बात समझ गया और उसने उस पर भरपूर नजर डाली।) अगर यह स्पष्ट हो कि कोई मरीज़ एक ऐसी स्थिति में पहुंच गया है जहां उसकी कोई सहायता की ही नहीं की जा सकती है और उसके लिए अब उसके अलावा और कुछ नहीं रह गया है कि वह अपने जीवन के गिने चुने सप्ताह या महीने गुजार दे तो फिर वह अस्पताल के पलंग को भला क्यों घेरे रहे? पलंग पाने के इन्तजार में बैठें लोगों की अच्छी-खासी लम्बी सूची है। जिन लोगों का इलाज किया जा सकता है उनसे तो इन्तजार कराया जा रहा है—और जो अचिकित्स्य हैं...''

''अचि...क्या कहा?''

''वे जिन्हें हम निरोग नहीं कर सकते। जिस तरह वे देखते और जिस तरह वह बातें करते हैं उसका उन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है जिन्हें हम निरोग कर सकते हैं।''

ऐसा लगता था कि नर्स की मेज़ पर बैठकर सामाजिक स्थिति कुछ ऊपर

उठ गई और उसकी चीज़ों को समझने-बूझने की ताकत में भी कुछ वृद्धि हो गई है। अपने उस व्यक्तित्व को, जिसकी कोई सहायता की ही नहीं जा सकती थी जिसके लिए पलंग सुरक्षित रखना बेकार होता, जो 'अचिकित्स्य' रोगियों की सूची में होता, कोस्तोग्लोतोव पीछे छोड़ आया था। किसी अप्रत्याशित परिस्थिति की लहर ने उसे एक स्थिति से सर्वथा दूसरी स्थिति में—एक ऐसी स्थिति में जिसका वह अधिकारी नहीं था—जा पहुंचाया था। इस सबने उसे किसी और चीज की धुंधली-सी याद दिला दी, लेकिन वह एक ऐसी विचार-शृंखला थी जिसे वह इस समय जारी नहीं रखना चाहता था।

"हां मेरे विचार से यह पूरी तरह तर्क-संगत है। अच्छा तो उन्होंने अज़ोवकिन की छुट्टी इसीलिए कर दी है और कल जब इसी तरह उन्होंने प्रोश्का को कुछ भी बताए बिना डिसचार्ज किया था तो मैं वहीं था। मुझे तो यह तक लगा था कि इस धोखेधड़ी में मैं स्वयं भी सम्मिलित हूं।"

कोस्तोग्लोतोव इस तरह बैठा था कि उसके चेहरे के जिस ओर घाव का निशान था वह जोया की तरफ नहीं था और उसके चेहरे से क्रूरता का भाव गायब हो चुका था।

वे अत्यधिक सौहार्द्र और एकतानता के साथ काम करते रहे थे और लंच के वक्त तक काम पूरा हो गया।

लेकिन मीता एक और काम भी छोड़ गई थी मरीज़ों के टैम्परेचर चार्टों पर प्रयोगशाला के विश्लेषणों को उतारना था। इसका मतलब यह होगा कि रोगियों की विवरण पुस्तिकाओं में कम कागज़ रहेंगे और उन्हें संभालना आसान होगा। लेकिन यह मीता की ज्यादती थी कि वह इस काम को एक ही इतवार में करा लेना चाहती थी।

"धन्यवाद!" जोया ने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद, ओलेग फिलीमोनोविच!"

"ओह नहीं! कृपया! मुझे उसी नाम से पुकारो जिससे पहले पुकारा था! मुझे ओलेग ही कहो!"

"अब तुम्हें लंच के बाद आराम करना चाहिए···"

"मैं आराम कभी नहीं करता!"

"तुम बीमार हो—जानते ही हो!"

"यह अजीब बात है जोया! जैसे ही तुम सीढ़ियां चढ़कर अपनी ड्यूटी पर आती हो, मैं फिर पूर्णतया स्वस्थ हो जाता हूं।"

"तो फिर ठीक है," जोया ने बड़ी आसानी से हथियार डाल दिये। (उसके पास रहना उसे भी तो पसन्द था।) "इस बार मैं तुमसे ड्राइंग रूम में मिलूंगा?" उसने सिर के झटके से डाक्टरों के मंत्रणा-कक्ष की ओर संकेत

किया।

लंच के बाद उसे एक बार फिर दवाएं देने के लिए वार्डों का चक्कर लगाना था और महिला-वार्ड में भी कुछ ऐसे मामले थे जिन पर तत्काल ध्यान दिया जाना था। जोया को इस बात का पूरा-पूरा अहसास था कि अपने आस-पास के उदासी और बीमारी भरे माहौल के बीच वह कितनी साफ-सुथरी और स्वस्थ थी—वह नख से शिखर तक पूर्णतया स्वस्थ थी और उसका रोम-रोम झलमला रहा था। वह अपनी कसी हुई छातियों के बारे में सोचकर आनन्द विभोर हो उठी···वह मरीज़ों के बिस्तरों पर उनके झुकते हुए भार और जल्दी-जल्दी चलते वक्त उनकी थरथराहट को महसूस करती।

आखिर काम का बोझ कुछ हल्का हो गया। जोया ने अर्दली से कहा कि वह मेज के पास बैठ जाए और बाहर के किसी भी व्यक्ति को वार्डों में न जाने दे—और अगर कोई गड़बड़ हो तो उसे बुला ले। उसने अपना कशीदाकारी का सामान उठाया और ओलेग भी उसके पीछे-पीछे डाक्टरों के कमरे की ओर चल दिया।

यह कमरा एक कोने में था। उसमें तीन खिड़कियां थीं और काफी उजाला रहता था। यह नहीं कहा जा सकता था कि उसकी साज-संवार और फर्नीचर आदि पर कोई अधिक पैसा खर्च किया गया है। वरिष्ठ डाक्टर के अकाउन्टेन्ट की कारगुजारी हर ओर दिखाई देती थी। सोफे दो थे लेकिन उन में से कोई भी फोल्डिंग नहीं था—दोनों ही सरकारी अभिरुचि से पूरी तरह मेल खाने वाले थे। उसकी पीठें इतनी सीधी थीं कि उनमें बैठकर गर्दन ही अकड़ जाये। सोफों के पीछे दीवार पर जो शीशे लगाये गए थे वे भी इतने ऊंचे थे कि उनमें कोई ज़िराफ ही अपना चेहरा देख सकता था। मेजें भी उदास कर देने वाले अस्पताली ढंग से लगाई गई थीं। अध्यक्ष की एक बहुत बड़ी लिखने की मेज़ थी एक मोटे शीशे से ढंकी हुई और उसके सामने एक लम्बी पतली मेज़ इस ढंग से रखी हुई थी कि दोनों मेजें मिलकर अंग्रजी का 'टी' अक्षर बनाती थीं। विचार-विमर्श के लिए डॉक्टर इसी मेज़ पर बैठते थे। दूसरी मेज पर समरकंदी मेज़पोश था जिस पर नीले रंग का रोंएदार कपड़ा बिछा था जिसने कमरे को जगमगा रखा था। मेज़ से कुछ हटकर कुछ छोटी-छोटी आराम कुर्सियाँ बेतरतीबी से रखी थीं। इनसे भी कमरे के सुखद स्पर्श में कुछ वृद्धि हो रही थी। कमरे में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं थी जिससे यह लगे कि यह अस्पताल है—हां, दीवार पर एक समाचार-पत्र 'द ऑन्कॉलाजिस्ट'—अवश्य टंगा था। वह सात नवम्बर[1] का था।

जोया और ओलेग कमरे के सर्वाधिक गरम भाग में नर्म और आरामदायक

---

१. रूसी क्रांति की वर्ष गाँठ। (अनुवादक की टिप्पणी)

कुर्सियों पर बैठ गये। स्टैंडों पर कुछ फूलदान रखे थे जिनमें एलो पौधे लगे थे। मुख्य खिड़की के बड़े शीशे में से बलूत का एक पेड़ नज़र आ रहा था जिसकी शाखें ऊपरी मंजिल की तरफ फैल रही थीं।

ओलेग सिर्फ बैठा ही नहीं था, बल्कि अपने पूरे शरीर से कुर्सी की नर्मी और आराम को भोग रहा था—उसकी पीठ कुर्सी के मोड़ में समाई हुई थी और अपनी गर्दन और सिर उसने आराम से पीछे को लुढ़का लिए थे जैसे वह तकिए पर आराम कर रहा हो।

"क्या अय्याशी है!" उसने कहा, "मुझे याद नहीं पड़ता कि पिछले पंद्रह वर्षों में किसी इतनी नर्म और आरामदायक चीज पर बैठा हूँ।"

(अगर उसे यह कुर्सी इतनी पसंद है जाकर अपने लिए एक खरीद क्यों नहीं लेता?)

"अच्छा, अब बताओ, क्या थी तुम्हारी शर्त?" जोया ने अपने सिर को कुछ झटका देते हुए पूछा। उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार का भाव था—ठीक वैसा ही भाव जैसा कि इस प्रकार के प्रश्न पूछते समय हुआ करता है।

वे अब कमरे में एकदम अकेले थे। उनका इस समय बस एक ही उद्देश्य था—बातचीत करते रहना। यह बातचीत क्या रंग लेती है। यह बोले हुए शब्दों, लहजे और नजरों पर निर्भर करता था। क्या यह सिर्फ गप-शप ही होगी या एक ऐसी बातचीत जो सीधे दिलों में उतर जाती है? जोया पहली स्थिति के लिए पूरी तरह तैयार थी लेकिन उसे इस बात का पूरा-पूरा अहसास था कि स्थिति दूसरी ही होगी।

ओलेग ने उसे निराश नहीं किया। उसने अपना सिर कुर्सी पर की पीठ से हटाये बिना बड़ी गम्भीरता से बोलना शुरू किया। उसकी आवाज का रुख जोया के सिर के ऊपर वाली खिड़की की ओर था।

"मैंने यह शर्त बदी थी कि एक सुनहरी झालर वाली लड़की हमारे साथ बंजर भूमि में रहने आएगी कि नहीं?"

तब उसने पहली बार उसकी ओर देखा।

जोया उसकी नजर को सह गई।

"और वहां उस लड़की का क्या बनेगा?"

ओलेग ने निःश्वास छोड़ी। "मैं तुम्हें बता चुका हूँ। वहां कोई भी चीज विशेष आनन्ददायक नहीं है। वहां तो पानी के नल भी नहीं है। हम स्त्री को कोयलों से गर्म करते हैं और अपने लैम्प पेराफिन से जलाते हैं। जब वहां वर्षा होती है तो चारों ओर दलदल ही दलदल हो जाता है और गर्मियों में बस धूल ही धूल होती है। अच्छे कपड़े पहनने का तो कोई मौका ही नहीं मिल सकता है।"

उसने कोई भी अप्रिय बात छुपाई नहीं। ऐसा लगता था जैसे वह इस बात का हर संभव प्रयत्न कर रहा हो कि वह उसके लिए हां कहना असंभव

कर दे। आखिर यह भी क्या जिन्दगी हुई कि कोई ढंग के कपड़े तक न पहन सके? लेकिन जोया यह अच्छी तरह जानती थी कि एक बड़े शहर में चाहे कितनी ही सुख-सुविधाएं क्यों न हों लेकिन अकेले शहर के साथ तो कोई नहीं जीता। उसके गाँव की कल्पना करने की बजाय वह उसे—इस व्यक्ति को—समझने का प्रयत्न करेगी।

"लेकिन ऐसी क्या चीज है जो तुम्हें वहां रोके हुए है?"

ओलेग हंसा—"गृह मंत्रालय, और क्या?"

वह अब भी पीछे की ओर आराम से लेटा हुआ था—उसका सिर अब भी कुर्सी की पीठ पर टिका हुआ था। जोया के माथे पर बल पड़ गए। "मैंने भी यही सोचा था। लेकिन तुम चेचेन या कालमुक तो नहीं—हो क्या?"

"अरे नहीं, मैं शत-प्रतिशत रूसी हूँ। क्या मेरे बाल काले नहीं हैं?" उसने बातचीत को कुछ हलका-फुलका बनाने की कोशिश करते हुए कहा।

जोया ने अपने कंधे उचकाए—"तो फिर उन्होंने तुम्हें वहां क्यों भेजा?"

ओलेग ने आह भरी—"खूब! नई पीढ़ी कितनी नावाकिफ है! जहाँ मेरा पालन-पोषण हुआ है वहां दंड संहिता के बारे में कोई नहीं जानता था—न उसके पैराग्राफों के बारे में, न उसकी धाराओं के बारे में और न उसकी विस्तृत व्याख्याओं के बारे में। लेकिन तुम भी जो यहां इस जिले के ठीक बीच में रह रही हो, क्या अब तक देश-निर्वासित विस्थापित और प्रशासनिक देश-निर्वासित व्यक्ति के आधारभूत अंतर को नहीं समझ पाई हो?

"दोनों में अन्तर क्या है?"

"मैं एक ऐसा प्रशासनिक देश-निर्वासित हूँ। मुझे मेरी राष्ट्रीयता[1] के कारण देश-निकाला नहीं दिया गया, बल्कि मुझे मेरी निजी व्यक्ति—ओलेग फिलिमोनोविच कोस्तोग्लोतोव के रूप में देश-निर्वासन मिला है। समझ रही हो न?" वह हंसा। "यह ऐसा ही है जैसे किसी व्यक्ति को सम्मान्य (ऑनरेरी) नागरिकता प्रदान कर दी जाए—फर्क सिर्फ इतना है कि मुझे सम्मान्य नागरिकों के बीच रहने की अनुमति तक नहीं है।"

उसकी तेज निगाहें एक बार फिर जोया पर पड़ीं।

लेकिन वह डरी नहीं—और अगर वह थोड़ी बहुत डरी भी तो जोया को

---

१. युद्ध काल में और युद्ध के बाद कई छोटी-छोटी राष्ट्रीयताओं को—जैसे कि वोल्गा-जर्मनों, चेचेनों, कालमुकों आदि को सामूहिक रूप से देश-निकाला दे दिया गया था। उनपर नाजियों के साथ सहयोग करने का संदेह था। उन्हें 'देश-निर्वासित विस्थापित' कहा जाता था। कोस्तोग्लोतोव 'जैसे प्रशासनिक देश-निर्वासित' प्रायः वे राजनैतिक बंदी होते थे जो यंत्रणा-शिविरों में अपनी सजा काट चुके थे लेकिन जिन्हें अब भी देश के किसी दूरवर्ती क्षेत्र में रहना पड़ता था। (अनुवादक की टिप्पणी)

किसीन किसी तरह यह पता था कि उसका डर कोई अधिक समय तक रहने वाला नहीं है।

"और···और तुम्हें कितने समय के लिए देश निकाला दिया गया था ?" उसने विनम्रतापूर्वक पूछा।

"सदैव के लिए !" उसके शब्द जोया के कानों में घंटियों की तरह बजने लगे।

"तुम्हारा मतलब है—आजीवन देश-निर्वासन ?" उसने फुसफुसाती-सी आवाज में पूछा।

"नहीं। सदैव के लिए," कोस्तोग्लोतोव ने आग्रहपूर्वक कहा। "उन्होंने दस्तावेज पर यही शब्द लिखे थे। अगर वह केवल आजीवन-निर्वासन होता तो मैं समझता हूँ कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा ताबूत तो मेरे घर लाया ही जा सकता था लेकिन चूंकि यह सदैव के लिए निर्वासन है इसलिए ताबूत को भी घर लाने की अनुमति नहीं होगी। सदैव के लिए निर्वासन, आजीवन-निर्वासन से लम्बा होता है।"

जोया को पहली बार अपना दिल उमठता-सा लगा। उसके घाव का निशान और कभी-कभी उसकी आंखों में जो क्रूरता झलकती थी—उसका अर्थ अब उसकी समझ में आया। वह कोई खूनी हो सकता है, कोई बड़ा ही खूंख्वार दरिन्दा जो मामूली-सी उत्तेजना पर उसका गला घोंट सकता है।

लेकिन अपने लिए दौड़ना आसान बनाने के लिए जोया ने अपनी कुर्सी को घुमाया नहीं। उसने सिर्फ यह किया कि अपनी कशीदाकारी का सामान एक ओर रख दिया (वैसे उसने अभी तक कशीदाकारी शुरू तक नहीं की थी) और पूरी दृढ़ता के साथ कोस्तोग्लोतोव की आँखों से अपनी आंखें मिलाईं। वह कुर्सी मे पहले ही की तरह आराम कुर्सी पर एकदम निद्विग्न और शांत बैठा था। उत्तेजित वह नहीं, जोया थी जब उसने यह पूछा—"अगर यह बहुत मुश्किल हो तो मत बताओ, लेकिन अगर बता सकते हो तो यह बताओ कि तुम्हें इतना भयावह दण्ड आखिर दिया क्यों गया ?"

अपने अपराध का स्मरण कर कोस्तोग्लोतोव लेशमात्र भी अव्यस्थित नहीं हुआ। उलटे, उत्तर देते समय उसके चेहरे पर एक निश्चिन्त मुस्कान खेल रही थी। "जोयेन्का, मुझे दंड तो दिया ही नहीं गया सिर्फ एक आदेश-पत्र से मुझे सदैव के लिए निर्वासित कर दिया गया था।"

"आदेश-पत्र···से ?"

---

१. सोवियत दंड संहिता के अनुच्छेद ५८ की ओर संकेत। उसका पैराग्राफ संख्या दस सोवियत विरोधी आन्दोलन करने वाले व्यक्तियों से संबंधित है और ग्यारह का संबंध सोवियत विरोधी आन्दोलन करने वाले 'ग्रुपों' से है। (अनुवादक की टिप्पणी)

"हां, उसे यही कहा जा सकता है। यह एक बीजक जैसा होता है। जैसे किसी थोक व्यापारी के यहां से किसी खुदरे व्यापारी को माल भेजते समय माल की सूची तैयार की जाती है—इतनी बोरियां, इतने पीपे..."

जोया ने अपना सिर हाथों में थाम लिया। "एक मिनट रुको...मैं समझ गई...क्या यह संभव है? क्या तुम...क्या हर कोई...?"

"नहीं, यह नहीं कहा जा सकता कि हर कोई। जिन लोगों को पैराग्राफ संख्या दस के आधीन अपराधी ठहराया गया था 'उन्हें देश-निर्वासन' नहीं दिया गया था—देश-निर्वासन केवल उन्हें दिया गया था जिन्हें पैराग्राफ संख्या दस और ग्यारह के आधीन अपराधी ठहराया था[1]।"

"यह पैराग्राभ ग्यारह क्या है?'

"पैराग्राफ ग्यारह?" कोस्तोग्लोतोव एक क्षण कुछ सोचता रहा। "जोयेन्का, ऐसा लगता है कि मैं तुम्हें बहुत-सी भयानक बातें बता रहा हूँ। इन बातों के बारे में सावधान रहना, नहीं तो तुम स्वयं संकट में पड़ सकती हो। पैराग्राफ दस के आधीन मुझे यातना-शिविर में दस वर्ष रहने का दंड दिया गया था और सच मानो कि जिन्हें आठ वर्ष से कम का दंड मिला था उन्होंने तो कुछ किया ही नहीं था—सारे के सारे आरोप एकदम हवाई थे। लेकिन फिर पैराग्राफ ग्यारह भी था जो सामूहिक गतिविधयों से संबंधित था। पैराग्राफ ग्यारह यातना-शिविर में किसी कारावास की अवधि को स्वयं नहीं बढ़ाता है, लेकिन चूंकि हम लोग एक 'ग्रुप' के सदस्य थे, इसलिए हम सब को सदैव केलिए 'देश-निर्वासन' का दंड दिया गया और हमें अलग-अलग जगहों पर भेज दिया गया जिससे कि हम पुरानी जगह पर फिर से मिल सकें। अब तो सब समझ गईं न?"

नहीं, उसकी समझ में अब भी कुछ नहीं आया था।

"अच्छा तो तुम उसके सदस्य थे..." उसने उसके लिए कोई हल्का-सा शब्द ढूँढने की कोशिश की—"जिसे 'गैंग' कहते हैं।"

कोस्तोग्लोतोव के मुंह से हसी का फव्वारा फूट पड़ा। फिर उसने अपनी हंसी रोक ली और उसकी भौंहें तन गईं।

"कितनी अजीब बात है—तुम एकदम उस व्यक्ति की तरह हो जिसने जांच पड़ताल करने के लिए मुझसे प्रश्न पूछे थे—तुम भी 'ग्रुप' शब्द से संतुष्ट नहीं हो। वह भी हमें 'गैंग' ही कहता था। हां हम प्रथम वर्ष के छात्रों और छात्राओं का एक 'गैंग' थे।" वह उसकी ओर ऐसे देखने लगा जैसे कि धमकी दे रहा हो। "मैं जानता हूँ कि यहां धूम्रपान निषेध है और एक अपराध समझा जाता है, फिर मैं सिगरेट पीऊंगा—ठीक है? हम लोग आपस में मिलते थे,

---

१. सोवियत दण्ड संहिता के अनुच्छेद ५८ की ओर संकेत। उसका पैराग्राफ संख्या दस सोवियत विरोधी आंदोलन करने वाले व्यक्तियों से संबंधित है और ग्यारह का संबंध सोवियत विरोधी आंदोलन करने वाले 'ग्रुपों' से है। (अनुवादक की टिप्पणी)

लड़कियों से प्यार-मुहब्बत की बातें और छेड़छाड़ करते थे, उनके साथ नाचते थे और लड़के राजनीति पर बातचीत किया करते थे।—और कभी-कभी हम... हम 'उसके' बारे में भी बातें करते हैं। कुछ ऐसी बातें भी जिनसे हम असंतुष्ट हैं। या यों कहा जा सकता है कि हम हर चीज से प्रसन्न नहीं हैं। हम में से दो युद्ध के मोर्चे पर लड़ चुके थे—और हमें आशा थी कि युद्ध के बाद स्थितियां कुछ भिन्न होंगी। लेकिन मई में, परीक्षा से कुछ पहले, हम में से कई को, जिनमें लड़कियां भी थीं, पकड़ लिया।"

जोया आतंकित हो उठी थी, उसने अपना कशीदाकारी का सामान उठा लिया। दूसरी ओर वह खतरनाक बातें बताए जा रहा था—ऐसी बातें थीं जिन्हें दुहराना या सुनना तक अनुचित था। ये ऐसी बातें थीं कि जोया को अपने कान बंद कर लेने चाहिए थे। लेकिन इसके साथ ही यह सब सुनकर उसे असीम राहत भी मिल रही थी कि वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो बहका कर किसी को अंधेरी गली में ले गया हो और वहां ले जाकर उसने उसकी हत्या कर दी हो।

उसने अपने आप पर काबू पाते हुए कहा—"मैं समझी नहीं...तुमने वास्तव में किया क्या था?"

"हमने क्या किया था?" उसने एक जोर का कश लिया और फिर ढेरों ढेर धुआं उगल दिया। वह कितना लम्बा-चौड़ा आदमी था और सिगरेट कितनी नन्हीं-सी लग रही थी! "मैंने तुम्हें बताया न, हम विद्यार्थी थे। अगर हमें मिलने वाले अनुदान से कुछ पैसा बचता तो हम शराब पी लेते। हम पार्टियों में जाते और मैं बता ही चुका हूं कि उन्होंने लड़कियों को भी गिरफ्तार कर लिया था, उन सबको पांच वर्ष का कारावास मिला।" वह एक बार फिर तेज नजरों से उसकी ओर देखने लगा जरा कल्पना करके देखो, अगर यह सब तुम्हारे ऊपर बीते, दूसरी टर्म की परीक्षा से पहले ही वे तुम्हें पकड़ ले जाएं और काल कोठरी में डाल दें।"

जोया ने अपना कशीदाकारी का सामान नीचे रख दिया।

उसने तो यह सोचा था कि वह कोई भयावह आत्म स्वीकृति करेगा, लेंकिन उसने जो कुछ बताया उसमें तो कुछ भी भयानक नहीं था; यह सब अधिक से अधिक बचपना था।

"लेकिन तुम लड़कों ने वह सब किया क्यों?"

"क्या मतलब?" ओलेग की समझ में कुछ भी न आ रहा था।

"मेरा मतलब है कि असंतुष्ट क्यों हुआ जाए? किसी भी चीज की अपेक्षा क्यों की जाए?"

"क्या सचमुच!" ओलेग मुस्करा दिया, "क्या सचमुच? अरे मैंने तो कभी इसकी कल्पना तक न की थी कि यह संभव है। जोयेन्का, मुझसे पूछताछ करने वाले व्यक्ति ने भी बिलकुल यही कहा था। उसने भी ठीक ये ही शब्द इस्तेमाल किये थे। क्या यह छोटी-सी कुर्सी आरामदायक नहीं है? बिस्तर पर

बैठना इतना आरामदायक हरगिज नहीं है।"

और एक बार फिर ओलेग कुर्सी पर पसर गया जिससे कि उसे अधिकतम आराम मिल सके। उसने फिर सिगरेट का कश लिया और मिची-मिची आंखों से बड़ी खिड़की के शीशे से बाहर कहीं देखने लगा।

शाम समीप आती जा रही थी, लेकिन दिन अब भी पहले ही की तरह उदास और बेरंग था और प्रकाश भी कम नहीं हो रहा था, बल्कि कुछ अधिक ही हो गया था। कमरे के सामने पश्चिम की ओर बादल छट रहे थे और हल्के भी पड़ते जा रहे थे।

जोया आखिर काशीदाकारी में गंभीरता से जुट ही गई। उसे उस काम में सचमुच ही आनंद आ रहा था। वे दोनों चुपचाप बैठे थे। ओलेग ने पिछली बार की तरह उसके काम की प्रशंसा भी नहीं की।

"और तुम्हारी ······प्रेमिका का क्या हुआ ? क्या वह भी उनमें से एक थी ?" जोया ने अपना सिर ऊपर उठाए बिना ही पूछा।

"अँ······हां !" ओलेग ने कहा। शब्द पूरा करने में उसे देर लगी जैसे कि वह किसी और चीज के बारे में सोच रहा हो।

"अब वह कहां है ?"

"अब ? अब वह येनेसी नदी के किनारे है।"

जोया ने जल्दी से उस पर एक निगाह डाली—"उसके पास पहुंचने का क्या कोई तरीका नहीं खोज निकाल सकते हो ?"

"मैं तो कोशिश तक नहीं कर रहा," उसने बिना कोई दिलचस्पी दिखाए हुए कहा।

वह खिड़की के बाहर देख रहा था और जोया उसे देख रही थी। वह जहां पिछले दिनों रहता रहा था उसने वहीं शादी क्यों नहीं कर ली ?

"क्या यह सचमुच बहुत मुश्किल होगा ? मेरा मतलब है, उसके पास पहुंचना ?" यह प्रश्न यकायक उसके दिमग में आ गया था।

"चूंकि कानूनी तौर पर हमारी शादी कभी नहीं हुई, इसलिये व्यवहारत: यह एकदम असंभव ही है," उसने कहा, "खैर वैसे भी इसमें कोई तुक नहीं है।"

"क्या तुम्हारे पास उसका कोई फोटो है ?"

"फोटो ?" उसने आश्चर्यचकित होकर कहा "बंदियों को अपने पास फोटो रखने की इजाजत नहीं होती। वे उनसे लेकर फाड़ दिए जाते हैं"

"खैर, यह बताओ वह कैसी लगती थी !"

ओलेग मुस्कराया और उसने अपनी आंखें कुछ सिकोड़ लीं। "उसके बाल सीधे कंधों तक जाते थे और फिर—हा ! हा !! —अपने सिरों पर से ऊपर की ओर मुड़ जाते थे। तुम्हारी आंखों में थोड़ा सा उपहास झलकता है, लेकिन उसकी आँखों में थोड़ी उदासी थी। तुम्हारा क्या विचार है, क्या लोग अपने

भविष्य को जान सकते हैं ?"

"क्या तुम शिविर में एक साथ थे ?"

"नहीं ऽऽऽ !"

"तुम उससे वास्तव में अलग कब हुए ?"

"अपनी गिरफ्तारी से पांच मिनट पहिले। यह मई की बात है। हम उसके घर के बगीचे में इकट्ठे बैठे थे। रात के एक बजे के बाद का वक्त होगा। मैं उससे गुडनाईट कह कर चला गया था। उन्होंने मुझे अगले ब्लाक पर ही दबोच दिया। मोड़ पर कार मेरे इंतजार में बहुत देर से खड़ी थी।"

"और उसे ?"

"अगली रात।"

"और उसके बाद तुमने एक दूसरे को फिर कभी नहीं देखा ?"

"सिर्फ एक बार। पूछताछ करने वाले हमें एक दूसरे का सामना करने के के लिए एक जगह लाए थे। वे अब तक मेरा सिर मूंड चुके थे। उन्हें यह उम्मीद थी हम एक-दूसरे के विरुद्ध गवाही देंगे। लेकिन हमने ऐसा नहीं किया।"

वह अपनी सिगरेट के आखिरी टुकड़े को अपनी उंगलियों में दबाए हुए था—उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह उसका क्या करे।

"अरे उसे उसमें डाल दो।" जोया ने अध्यक्ष की मेज पर रखी हुई साफ सुथरी, चमकदार ऐशट्रे की ओर संकेत करते हुए कहा।

पश्चिम में बादल और भी अधिक छितरा गए थे प्रिय और पीला सूरज लगभग बाहर आ गया था। उसके प्रकाश ने प्रत्येक वस्तु को कोमलता प्रदान कर दी थी—यहाँ तक कि ओलेग के हमेशा कठोर बने रहने वाले चेहरे को भी।

"लेकिन तुम अब उससे क्यों नहीं मिल सकते ?" जोया ने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।

"जोया !" ओलेग ने दृढ़ता से कहा। वह कुछ सोचने के लिए रुका और फिर बोला, "क्या तुम सोच सकती हो कि अगर कोई लड़की जरा सी भी खूबसूरत हो तो उस पर यातना-शिविर में क्या कुछ गुजरती है ? पहले तो रास्ते ही में कुछ अपराधी उसके साथ संभवतः बलात्कार करते हैं और अगर रास्ते में न भी करें तो वहां पहुंचते ही तो वह बलात्कर का शिकार हो ही जाती है। फिर पहली शाम को ही शिविर के चाटुकारों— काम की निगरानी करने वाले ओवरसियरों में से कुछ या वे जो राशन देते हैं, उसे नंगा करके स्नानघर में ले जाते हैं। वे रास्ते में उसे देखते जाते हैं और वहीं यह फैसला कर लेते हैं कि वह किसकी बनेगी। सुबह होने से पहले ही वे उसके सामने प्रस्ताव रख देते हैं—तुम अमुक-अमुक व्यक्ति के साथ रहोगी और तुम्हें एक साफ-सुतरी और गर्म जगह पर एक बहुत अच्छा काम दिया जाएगा।—और अगर वह

उस प्रस्ताव को ठुकरा दे तो वे इसकी व्यवस्था कर देते हैं कि उसे इतनी भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़े कि वह घिसटती-रेंगती वापस आए और उनसे भीख मांगे कि वे जिसके भी साथ कहेंगे, वह उसी के साथ रहने को तैयार है।" उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। "वह मरी नहीं, वह जीवित रही—उसने अपना पूरा करावास-काल शिविर में काटा। लेकिन इसके लिए मैं उस पर कोई दोषारोपण नहीं करता—मैं सब कुछ अच्छी तरह समझता हूं। लेकिन ·· अब क्या किया जा सकता है। वह स्वयं भी इस बात को समझती है।"

कुछ देर तक वे खामोश बैठे रहे। सूरज अपने पूरे तेज के साथ चमकने लगा था और समूचा विश्व आनंदित और प्रकाशमान हो उठा था। पार्क में वृक्ष काले अवश्य लग रहे थे लेकिन साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। कमरे की मेज के कपड़े की नीलिमा पूरी तरह जगमगा उठी थी और जोया के बाल एकदम सुनहरी हो उठे थे।

"हमारे साथ की लड़कियों में से एक ने आत्महत्या कर ली। दूसरी अभी जीवित है। लड़कों में से तीन मर चुके हैं···अन्य दो के बारे में मुझे पता नहीं कि उनका क्या हुआ ?"

वह कुर्सी पर एक ओर झुक गया और कुर्सी को थपियाते हुए गाने लगा—

तूफान बहा ले गया सब कुछ
हम में से कुछ ही—बस कुछ ही तो बच पाए
और जब मैत्री ने पुकारा।
तो उत्तर में
कुछ ही—बस कुछ ही तो स्वर आए।[1]

वह कुर्सी पर एक ओर झुका फर्श को देख रहा था। उसके बालों के सिरे ऊपर को खड़े थे और उसके सिर पर हर ओर विभिन्न प्रकार के कोण बना रहे थे। उसे दिन में दो बार अपने बाल भिगो कर ठीक करने पड़ते थे।

वह खामोश था, लेकिन जोया वह सब कुछ सुन चुकी थी जो वह सुनाना चाहता था। उसने सभी प्रमुख प्रश्नों के उत्तर और स्पष्टीकरण दे दिए थे। वह देश-निर्वासन की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, लेकिन इसलिए नहीं कि वह कोई हत्यारा था। वह विवाहित नहीं था, लेकिन इसका कारण उसके दुर्गुण नहीं थे। इन तमाम वर्षों की मुसीबतों और यातनाओं के बावजूद वह अपनी भूतपूर्व प्रेमिका का उल्लेख कोमलता और स्नेह के साथ कर सकता था और निस्संदेह वह सच्ची भावनाएं रखने में सक्षम था।

वह खामोश था—जोया भी खामोश थी। जोया ने अपनी कशीदाकारी

---

१. यह पंक्तियां लोकप्रिय रूसी कवि सरजेई येसेनिन की हैं।

से नजरें उठाकर उसकी ओर देखा और फिर अपनी निगाहें कशीदाकारी के फ्रेम पर झुका लीं। ओलेग में कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे सुन्दर कहा जा सके, लेकिन इसके साथ ही जोया को उसमें ऐसी कोई चीज भी नहीं दिखाई दी जिसे असुन्दर या भद्दा कहा जा सके।

जोया की दादी कहा करती थी—'व्यक्तिकी सुन्दरता नहीं, उसका अच्छापन आवश्यक होता है।' जोया को जो चीज उसमें स्पष्टतया महसूस हुई वह यह थी कि इन सारी यातनाओं से गुज़रने के बावजूद उसमें स्थिरता भी है और शक्ति-सामर्थ्य भी। उसकी शक्ति-सामर्थ्य की परीक्षा कर ली जा चुकी थी। यह एक ऐसी चीज़ थी जो जोया को उन लड़कों में, जिनसे वह मिलती रही थी, कहीं नज़र नहीं आई थी।

कशीदाकारी करते-करते अचानक उसे अहसास हुआ कि वह नज़रों ही नज़रों में उसे जांच रहा है।

जोया ने अपना सिर उठाये बिना ही कनखियों से उसे देखा।

वह भावावेग के साथ बोला—उसकी नज़रें जोया के चेहरे पर टिकी हुई थीं—

"मैं किसे आवाज़ दूं?
जीवित बने रहने की मेरी घृणित प्रसन्नता को भला कौन बाँटेगा?"[1]

"बंटाने वाला तो तुम्हें पहले ही मिल गया है," जोया ने फुसफुसाकर कहा। उसने अपनी मुस्कराते होंठों और मुस्कराती आंखों से उसकी ओर देखा।

उसके होंठ न तो गुलाबी थे और न उन पर लिपस्टिक ही लगी हुई थी। उसके होंठों का रंग सिंदूर और संतरे के रंग के बीच का था—बिल्कुल आग की तरह—जैसा कि पीली अग्नि शिखा का होता है।

साँझ के सूरज के सुकोमल पीतवर्णी प्रकाश ने ओलेग के दुबले-पतले और रुग्ण से चेहरे को एक नया जीवन प्रदान कर दिया। सूरज के गर्म प्रकाश में ऐसा लगता था कि वह मरेगा नहीं, जिन्दा रहेगा।

ओलेग ने अपने सिर को इस तरह झटका दिया जैसे कि वह कोई ऐसा गिटार बजाने वाला हो जिसने अभी-अभी एक शोक-गीत खत्म किया है और जो अब एक खुशी के गीत की धुन बजाने जा रहा हो।

"जोयेन्का, इस दिन को मेरे लिए वास्तविक अवकाश का दिन बना दो! बोलो बनाओगी? मैं इन सफेद कोटों से तंग आ चुका हूं। नर्सों से मेरा जी भर चुका है—मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एक सुन्दर शहरी लड़की के दर्शन करा दो। उशतेरेक में पहुंच कर यह मौका मुझे कभी नहीं मिलेगा।"

---

१. सरजेइ येसेनिन की पंक्तियां।

"मैं तुम्हारे लिए सुन्दर लड़की कहां से लाऊं ?" जोया ने शरारती अंदाज में पूछा।

"बस सिर्फ एक मिनट के लिए अपना कोट उतार दो ! और इधर-उधर चलो-फिरो ?"

उसने अपनी कुर्सी पीछे हटा ली जिससे कि उसके चलने-फिरने के लिए जगह बन जाए।

"मैं ड्यूटी पर हूं," उसने आपत्ति की, "मैं यह नहीं कर सकती, मुझे इसकी इजाज़त नहीं..."

संभवत: इसका कारण यह था कि वे इतनी देर तक निराशाजनक विषयों में बातचीत करते रहे थे या शायद यह डूबते सूरज का करिश्मा था जो कमरे पर अपनी उल्लासपूर्ण और ज्योतिर्मयी किरणें बिखेर रहा था—कारण चाहे जो भी रहा हो, जोया ने अपने अन्दर एक उमड़ती हुई लालसा अनुभव की कि वह ओलेग की मांग पूरी कर दे। वह जानती थी कि इसमें कोई हर्ज नहीं है।

उसने अपना काशीदाकारी का सामान एक ओर फेंक दिया, एक नन्हीं-सी बच्ची की तरह कुर्सी से उछलकर उठी और अपने कोट के बटन खोलने शुरू कर दिए। अपनी जल्दबाज़ी में वह थोड़ा-सा आगे को झुक गई जैसे कि वह कमरे में चलने-फिरने की बजाय दौड़ने की तैयारी कर रही हो।

"खींचो !" उसने अपनी एक बांह झटके के साथ उसके आगे फैला दी—जैसे वह उसकी नहीं, किसी और की बांह हो। उसने बांह पकड़कर कोट की एक आस्तीन खींच ली। "अब दूसरी !" वह एक नर्तकी की तरह घूम गई और अपनी पीठ उसकी ओर कर ली। उसने दूसरी आस्तीन भी उतार दी। सफेद कोट उसके घुटनों पर आ गिरा और वह...कमरे में घूमने लगी। वह कमरे में इस तरह चल रही थी जैसे किसी दर्ज़ी की दुकान में उसका काम कपड़ों का प्रदर्शन करना हो। वह अपनी कमर को झुकाती, फिर सीधा करती, चलते-चलते अपने हाथों को झुलाती और फिर उन्हें थोड़ा-सा ऊपर उठा लेती।

इस तरह वह कुछ कदम चली और फिर घूमकर उसके पास आकर उसने अपनी बाहें फैला दीं।

ओलेग ने जोया का कोट अपने सीने से लगा रखा था जैसे कि उसे आलिंगन में ले रहा हो—और फटी-फटी आंखों से जोया को देख रहा था।

"वाह ! वाह ! अद्भुत !"

मेज़पोश की जगमगाती नीलिमा में कोई विशेष बात थी, सूरज के प्रकाश में पूरी आभा के साथ फूट रही कभी खत्म न होने वाली उज़बेकी नीलिमा ही थी जिसने ओलेग की अन्वेषण और खोज करने की मन स्थिति को कल से आज तक बनाए रखा था। वे सभी चपल, जटिल और पारम्परिक इच्छाएं-अभिलाषएं

फिर से जीवित हो रही थीं। एक अनिश्चित, असुरक्षित और अनाश्रित अस्तित्त्व के युग से गुजरने के बाद यह आरामदायक कमरा और उसका सुन्दर फर्नीचर उसे सचमुच आनन्द प्रदान कर रहा था।—और यह भी एक आनन्ददायक बात थी कि वह दूर ही से जोया की प्रशंसा करने की बजाय उसे इतने निकट से देख रहा था। इस खुशी को इस बात ने तो दुगुना कर दिया था कि उसकी प्रशंसा की उपेक्षा नहीं हो रही थी—जोया के तन में भी उसके प्रति अनुराग था। यह वही ओलेग था जो दो सप्ताह पहले मौत के मुंह में था।

जोयो ने अग्नि-शिखा रंग के अपने होंठ हिलाए। उन पर एक विजय-भावना तो नाच ही रही थी, साथ ही उन पर गूढ़ महत्त्व का एक ऐसा भाव भी था जैसे कि उसे किसी रहस्य का पता हो, लेकिन वह बता न रही हो। वह मुड़ी और खिड़की तक गई और फिर उसी मुद्रा में घूमकर उसके सामने आ खड़ी हुई।

वह अपनी जगह से उठा नहीं। वह वहीं बैठा रहा, लेकिन उसका सिर अपने बालों के बड़े से काले गुच्छे के साथ आगे को हो गया जैसे कि वह जोया तक पहुंचने का प्रयत्न कर रहा हो।

जोया में एक विशेष प्रकार की शक्ति थी। उस शक्ति के चिह्न वहां थे। उन्हें महसूस तो किया जा सकता था, लेकिन कोई नाम नहीं दिया जा सकता था। यह वह शक्ति नहीं थी जिसकी किसी भारी अलमारी को धकेलने के लिए जरूरत पड़ती है, बल्कि एक ऐसी शक्ति थी जो उत्तर में एक शक्ति की ही मांग करती है। ओलेग प्रसन्न था क्योंकि वह यह महसू करता था कि वह उसकी चुनौती को स्वीकार कर सकता है और उसकी शक्ति का उत्तर दे सकता है।

अब, जबकि उसका शरीर स्वस्थ हो रहा था, जीवन के मनोवेग—सबके सब मनोवेग—वापस आ रहे थे।

''जो—या !'' उसने सस्वर कहा, ''जो—या! तुम्हें मालूम है, तुम्हारे नाम का अर्थ क्या है ?''

''जोया का अर्थ है जीवन,'' उसने निश्चयात्मक स्वर में उत्तर दिया जैसे कि वह कोई नारा दुहरा रही हो। उसे अपने नाम का अर्थ बताना अच्छा लगा था। वह खिड़की के पास खड़ी थी। उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे खिड़की के तलपट्ट पर टिके थे। वह एक ओर को थोड़ी-सी झुकी हुई थी और उसने अपने शरीर का भार अपने एक पैर पर डाल रखा था।

''और उसमें जो 'जो' है, कुछ उसके बारे में भी सोचा है ? क्या तुम कभी यह अनुभव नहीं करतीं कि इस नाम के कारण तुम हमारे 'जो-ओलॉजिकल (जीव विज्ञान संबंधी) पूर्वजों के कितनी निकट हो ?''

जोया हंस पड़ी—उसके हंसने का ढंग बिलकुल वही था जो ओलेग का यह बात कहने का था।

"हम सभी लोग थोड़े-बहुत उन्हीं की तरह के हैं। हम भोजन उपलब्ध कराते हैं···अपने बच्चों को खिलाते-पिलाते हैं···क्या इसमें कुछ गलत है?"

और संभवत: यहीं उसे अपना वार्तालाप समाप्त कर देना चाहिए था। लेकिन ओलेग की निरन्तर और प्रिय प्रशंसा ने उसे उत्तजित कर दिया था। यह एक ऐसी बात थी जो उसे शहर के उन युवकों में कभी नहीं मिली थी जो शनिवार की रात को नृत्य के दौरान सरसरी तौर पर अपनी प्रेमिकाओं को अपनी बांहों में बांध लेते थे। यकायक उसने अपनी बांहें फैला दीं, अपने दोनों हाथों की उंगलियां चटकाईं और एक भरपूर अंगड़ाई लेकर उसने हाल ही में आई एक भारतीय फिल्म का एक लोकप्रिय गीत गाना शुरू कर दिया—

"आवारा हूं—आ···वा···रा!"

ओलेग का चेहरा एकदम धुंधला गया। "नहीं, यह गाना नहीं। जोया, प्लीज़, यह गाना नहीं।"

पलक झपकते ही जोया शिष्टता और मर्यादा की प्रतिमूर्ति बन गई। कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि यह वही लड़की है जो अभी-अभी गाना गा रही थी और उछल-कूद रही थी।

"यह गाना 'आवारा' फिल्म का है," उसने कहा, "क्या तुमने यह फिल्म देखी नहीं?"

"देखी है।"

"क्या यह एक बहुत अच्छी फिल्म नहीं है? मैंने यह दो बार देखी है। (सच्चाई यह है कि उसने वह चार बार देखी थी, लेकिन यह बात उसके सामने स्वीकार करना जोया को अच्छा नहीं लगा।) क्या तुम्हें अच्छी नहीं लगी? आखिर आवारा का जीवन तुम्हारे जीवन जैसा ही तो था!"

"बिलकुल नहीं था!" ओलेग की त्यौरियां चढ़ गईं। पीले सूरज की गरमी उसे छोड़कर जा चुकी थी और यह साफ नज़र आ रहा था कि आखिर तो वह एक मरीज़ ही है।

"मेरा मतलब है, वह भी तो अभी जेल से वापस ही हुआ था और उसका समूचा जीवन नष्ट हो गया था।"

"वह सिर्फ एक धोखा था। वह एक विशेष प्रकार का गुण्डा और छीना-झपटी करने वाला व्यक्ति था।[1]

---

१. ओलेग का तात्पर्य यहां उन बन्दियों से है जो पेशेवर अपराधी होते हैं और श्रम-शिविरों में जो भूमिगत संगठन बनाकर दूसरे बन्दियों को आतंकित करते हैं और उन्हें लूटते रहते हैं।

जोया ने अपने कोट के लिए हाथ बढ़ाया।

ओलेग उठ खड़ा हुआ था और कोट की सलवटें निकाल कर उसे पहनाने लगा।

"मैं समझ गई, तुम ऐसे लोगों को पसंद नहीं करते हो," जोया ने धन्यवाद देने के अन्दाज़ में सिर हिलाया और अपने कोट के बटन बन्द करने लगी।

"मैं उनसे घृणा करता हूं," उसने जोया से परे कहीं देखते हुए कहा। उसके चेहरे पर क्रूरता उभर आई थी और उसका जबड़ा थोड़ा-सा कस गया था। यह उनके प्रति उसकी घृणा का प्रतीक था। "वे लुटेरे हैं, जोंकें हैं—दूसरे लोगों की खून-पसीने की कमाई पर जीने वाले लुटेरे। पिछले तीस वर्षों से यह बात हमारे कानों में पूरे ज़ोर से फूंकी जा रही है कि ये लोग सुधर रहे हैं, कि सामाजिक दृष्टि से ये लगभग हमारे समान हैं, लेकिन वे उसी सिद्धांत पर काम करते हैं, जिस पर हिटलर करता था—'अगर तुम्हें...' शब्द बहुत ही अश्लील हैं, बहरहाल उसका मतलब यह है कि अगर तुम्हें पीटा नहीं जा रहा तो तुम खामोश बैठे अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहो।' अगर तुम्हारे पड़ोसी का निर्वासन किया जा रहा है तो तुम चुपचाप बैठे अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहो। अगर कोई व्यक्ति गिर पड़े तो उन्हें उसमें ठोकर मारने में बड़ा आनन्द आता है और फिर ढिठाई से वे रूमानियत का लबादा भी ओढ़ लेते हैं और हम हैं कि उनके गिर्द एक पौराणिक कथा बुन देते हैं और कभी-कभी तो फिल्मों में उनके गीत तक गाए जाते हैं।"

"कैसी पौराणिक कथाएं?" अब वह उसे घूर रही थी जैसे कि वह किसी न किसी बात के लिए अपने आपको अपराधी महसूस कर रही हो।"

"तुम्हें यह सब समझाने के लिए तो सदियां चाहिएं! खैर, अगर तुम चाहती हो तो मैं तुम्हें एक सुनाता हूं।" वे उस समय खिड़की के पास एक-दूसरे के अगल-बगल खड़े थे। ओलेग ने उसकी कुहनी पकड़ ली। यह केवल अपने प्रभुत्त्व की अभिव्यक्ति थी और इसका उन शब्दों से कोई भी सम्बन्ध नहीं था जो वह बोल रहा था। वह ऐसे बोल रहा था जैसे कोई अपने से बहुत कम आयु वाले किसी व्यक्ति को कुछ समझ रहा हो। 'ये उठाईगीरे' ऐसी मुद्रा बनाने का प्रयत्न करते हैं जैसे वे कोई 'खानदानी बागी' हों; वे भिखारियों को नहीं लूटते और वे बंदी का एक 'जीवन का सहारा' नहीं छीनते। इसका अर्थ सिर्फ इतना है कि वे उसका राशन छोड़कर बाकी सब कुछ लूट लेते है। खैर, १६४७ की बात है। फ्रांस्नोयार्क जेल में हमारी कोठरी में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो 'ऊदबिलाव की खाल की टोपी पहनता हो।' इसका मतलब यह है कि किसी के पास ऐसी कोई चीज़ थी ही नहीं जो चुराई जा सके। उसमें लगभग आधे तो ऐसे ही गुंडे और लुटेरे भरे हुए थे। उन्हें भूख ने बहुत सताया तो वे हमारे हिस्से की रोटी और चीनी भी खुद ही हड़प करने लगे। हमारी वह

कोठरी थी भी भानमती का एक अजीब पिटारा। उसमें आधे तो ये लुटेरे थे ही और आधे जापानी युद्ध-बंदी थे। केवल हम दो रूसी राजनैतिक बंदी थे—एक मैं और एक आर्कटिक का मशहूर पायलेट। अभी भी आर्कटिक के एक द्वीप का नाम उसके नाम पर है, हालांकि वह स्वयं जेल में था। तीन दिन तक ये लुटेरे हमें और उन जापानियों को बेरहमी से लूटते रहे—हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं था। आखिर जापानी आपस में मिल गए और उन्होंने एक योजना बनाई—स्पष्ट है कि उनकी बातचीत का एक शब्द भी किसी के पल्ले नहीं पड़ा था। आधी रात को वे चुपचाप उठे, बिस्तरों के कुछ तख्ते उठाए और 'बंजाई!' का नारा लगाते हुए उन लुटेरों पर टूट पड़े। उन्होंने लुटेरों की जमकर मरम्मत की। काश! तुमने वह दृश्य देखा होता!"

"क्या उन्होंने तुम्हें भी पीटा था?"

"नहीं, मुझे क्यों पीटते? हम तो उनकी रोटी नहीं छीनते रहे थे। उस रात हम तटस्थ थे, लेकिन हमारी सहानुभूति पूरी तरह 'यशस्वी जापानी सेना' के साथ थी। सुबह फिर से कानून-व्यवस्था स्थापित हो गई और हमें रोटी और चीनी का पूरा राशन मिल गया। लेकिन जानती हो जेल अधिकारियों ने क्या किया? उन्होंने हमारी कोठरी से आधे जापानियों को निकाल लिया और उनकी जगह और गुंडे भर दिये। इस तरह पिटने वाले गुंडों को न पिटने वाले गुंडों की कुमुक मिल गई। अब जापानी बहुत ही कम संख्या में थे। गुंडे उन पर पिल पड़े। उनके पास चाकू थे और सभी कुछ था—वही सब कुछ। वे खूंख्वार दरिंदों की तरह थे और जापानियों को जान से मार डालने पर आमादा थे। मैं और पायलेट यह सब अधिक बरदाश्त न कर सके। हम जापानियों के साथ हो गए।"

"अपने रूसी भाइयों के विरुद्ध तुमने जापानियों का साथ दिया?"

ओलेग ने उसकी कुहनी छोड़ दी और तन कर खड़ा हो गया। उसका कसा हुआ जबड़ा हिल रहा था।

"मैं लुटेरों को रूसी नहीं मानता।" उसने अपना एक हाथ उठाया और अपने घाव के निशान पर हाथ फेरने लगा जैसे कि वह उसे साफ कर रहा हो। यह निशान उसकी ठोढ़ी से उसके गाल के निचले भाग को पार करता हुआ उसकी गर्दन पर जाता था।

"यह घाव मुझे उसी वक्त लगा था।"

१३.........और भय भी

शनिवार की रात में भी पावेल निकोलाएविच की रसौली के घटने या नर्म पड़ने के कोई लक्षण नहीं दिखाई दिए—और इसका एहसास उसे बिस्तर छोड़ने से पहले ही हो गया था। बूढ़ा उजबेक उसके कान पर खांसता रहा था जिससे उसकी आंख जल्दी ही खुल गई थी। उसकी खांसी अलस्सुबह ही शुरू हो गई थी और वह सारी सुबह जारी रही।

कल और परसों की तरह बाहर आज भी दिन उदास और बेरंग निकला था। आज भी हवा नहीं चल रही थी और दिन तुषाराच्छादित शीशे जैसा सफेद लग रहा था—जिससे उदासी और भी अधिक बढ़ गई थी। कज्जाक चरवाहा अलस्सुबह ही जाग पड़ा था और अपने बिस्तर पर आलती-पालती मारे निरुद्देश्य बैठा था। आज न तो किसी को एक्स-रे के लिए बुलाया जाना था न पट्टियां बदलने के लिए इसलिए वह चाहता तो यों ही सारा दिन बैठा रह सकता था। येफ्रेम, हमेशा की तरह मनहूस बना उदास और शोकाकुल कर देने वाले तॉलस्तॉय के अध्ययन में जुटा हुआ था। कभी-कभी वह उठ खड़ा होता और पलंगों के बीच में छुटी जगह में इधर से उधर जोर-जोर से पांव पटकता हुआ टहलने लगता जिससे पलंग तक हिल जाते, लेकिन कम से कम वह पावेल निकोलाएविच को तंग तो नहीं कर रहा था—और सच पूछिए तो वह किसी से भी नहीं उलझ रहा था।

'हड्डी चूस' कहीं चला गया था। दिन भर वार्ड में उसे किसी ने नहीं देखा था। भूगर्भशास्त्री—वह खुशमिजाज और सुसभ्य युवक—अपने भूगर्भशास्त्र के अध्ययन में व्यस्त था और किसी से भी बात तक नहीं कर रहा था। वार्ड के बाकी मरीज भी अत्यधिक शांत थे।

यह सोचकर पावेल निकोलाएविच को प्रसन्नता हुई कि आज उसकी पत्नी उससे मिलने आ रही है। यह तो स्पष्ट ही है कि वह उसकी कोई ठोस मदद नहीं कर सकती थी लेकिन यह भी कोई कम नहीं था कि अपने दिल के बोझ को कुछ हलका कर सकेगा। वह उसे बता सकेगा कि वह कितनी दुर्गत अनुभव कर रहा है, कि इंजैक्शन से उसे कोई फायदा नहीं हुआ है और कि वार्ड के लोग कितने भयानक हैं। वह उसके साथ सहानुभूति प्रकट करेगी और वह अपने आपको बेहतर महसूस करने लगेगा। वह उससे एक पुस्तक—कोई आनन्ददायक

नई पुस्तक और एक कलम लाने को कह सकेगा जिससे कि कल जैसी अपमान-जनक स्थिति की पुनरावृत्ति न हो जब उसे नुस्खा लिखने के लिए उस युवक से उसकी पैंसिल उधार मांगनी पड़ी थी। और सबसे बड़ी बात तो यह कि उससे खुम्भी—भोजवृक्ष की खुम्भी—के बारे में पता लगाने को कह सकेगा।

आखिर अभी प्रलय तो नहीं हुई थी। अगर दवाएं जवाब दे गईं तो और दूसरी चीजें हैं जो आजमाई जा सकती हैं। मुख्य बात यह है कि व्यक्ति अपने आपको पुरुष—एक युवा पुरुष—समझे—आशावादी बना रहे।

धीरे-धीरे पावेल निकोलाएविच यहां का भी आदी होता जा रहा था। नाश्ते के बाद उसने कल के अखबार में वित्त मंत्री ज्वेरेव की बजट-रिपोर्ट पढ़ कर खतम की। आज का अखबार ठीक वक्त पर आ गया था। पहले वह द्योमा के हाथ में आ गया था, लेकिन पावेल निकोलाएविच ने अनुरोध करके वह उससे ले लिया और फ्रांस की मेंडेज सरकार के पतन की बात पढ़कर वह बहुत खुश हुआ। (उसे उसकी साजिशों और पेरिस समझौते में धांधली करने की खूब सजा मिली!) उसने फैसला किया कि वह एहरनबर्ग के लम्बे लेख को कभी फिर पढ़ने के लिए उठा रहेगा (एहरनबर्ग की कुछ भूलों के बावजूद जो राष्ट्रीय समाचारपत्रों ने जल्द ही सुधार दी थीं, वह उसके सामाजिक भावों का अत्यधिक सम्मान करता था) और एक दूसरे लेख में डूब गया जो गोश्त और दुग्ध-उत्पादनों की पैदावार बढ़ाने के सम्बन्ध में केन्द्रीय समिति के जनवरी के पूर्ण अधिवेशन के प्रस्तावों को क्रियान्वित किए जाने के बारे में था।

एक अर्दली के आकर यह सूचना देने तक कि उसकी पत्नी आ गई है पावेल निकोलाएविच इसी तरह अपना दिन काटता रहा। सामान्यत: बिस्तरों पर पड़े मरीजों के सम्बन्धियों को वार्ड में आने की अनुमति थी, लेकिन इस समय पावेल निकोलाएविच में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह जाकर उनसे यह तर्क वितर्क करे कि वह बिस्तर का मरीज है। इसके अतिरिक्त वह यह भी जानता था कि अगर वह इन उदास और निरुत्साह लोगों से दूर बाहर हाल में चला गया तो अपने आपको अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र अनुभव करेगा। इसलिए उसने छोटे से गर्म गुलुबंद को अपनी गर्दन पर लपेटा और सीढियां उतर गया।

ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो अपनी शादी की चौबीसवीं वर्षगांठ मना चुकने पर भी अपनी पत्नी को उतना प्यार करते हों जितना प्यार पावेल निकोलाएविच कापा से करता था। सच तो यह है कि उसके पूरे जीवन में ऐसा और कोई व्यक्ति था ही नहीं जो उसके इतने निकट होता कि वह उसके सामने अपनी सफलताओं पर इतना खुश हो सकता और अपनी तकलीफों के बारे में बातचीत कर सकता। कापा एक सच्ची मित्र थी। वह एक बुद्धिमान, उद्यमी और उत्साही स्त्री थी। पावेल निकोलाएविच अपने दोस्तों के सामने यह शेखी बघारा करता था कि वह इतनी बुद्धिमान है कि समूची ग्राम-परिषद् मिलकर

भी उसके सामने ओछी पड़ती है। उसने कापा के साथ बेवफाई करने की कभी जरूरत ही महसूस नहीं की थी और कापा ने भी कभी उसके साथ बेवफाई नहीं की थी। यह कहना गलत है कि जो पति सामाजिक प्रतिष्ठा की सीढ़ी पर ऊंचे चढ़ जाते हैं वे अपने युवा अतीत पर लज्जित अनुभव करना शुरू कर देते हैं। उस समय की तुलना में जब उनकी शादी हुई थी वे अब कहीं अधिक ऊंचे उठ गये थे। वह उस समय सेवईं बनाने की उसी फैक्टरी में एक मजदूर था जहां उसने आटा गुंथकर लोई बनाने वाले कर्मचारी के रूप में काम करना शुरू किया था। लेकिन शादी से पहले ही वह तरक्की करके फैक्टरी की ट्रेड यूनियन कमेटी का सदस्य बन गया था और सुरक्षा-व्यवस्था करने वालों में सम्मिलित हो गया था। फिर युवा कम्युनिस्ट लीग की उसकी सदस्यता के बल पर उसे सोवियत श्रमिक संगठन के काम की देख-रेख करने के लिए नियुक्त कर दिया गया था और एक वर्ष बाद उसे फैक्टरी के सैकण्डरी स्कूल का डायरेक्टर बना दिया गया था। इन सारे वर्षों में उसके और उसकी पत्नी की अभिरुचियों में भी कोई अन्तर नहीं आया था। उनकी सर्वहारा-सहानुभूति में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। अगर कभी कोई उत्सव-समरोह होता और वे थोड़ी-सी पी लेते और उसके आस-पास सीधे-सादे लोग होते तो वे अपने उन दिनों का जिक्र करते जो उन्होंने फैक्टरी में गुजारे थे और जोर-जोर से मजदूरों के गीत गाने लगते।

हृष्ट-पुष्ट कापा, उसके दो फर कोटों, उसके ब्रीफकेस जैसे बड़े हैण्डबैग और खाने पीने की चीजों से भरे उसके थैले ने हॉल के सबसे गर्म कोने में पड़ी बैंच पर कम-से-कम तीन व्यक्तियों की जगह घेर रखी थी। वह अपने कोमल और उष्ण होठों से अपने पति का चुम्बन लेने उठी और अपने फरकोट का लटकता हुआ किनारा उसके बैठने के लिए बैंच पर बिछा दिया जिससे कि वह अधिक आराम से बैठ सके और उसे ठंड भी न लगे।

"एक पत्र आया है," उसने कहा। उसके होंठ सिकुड़े हुए थे। पावेल निकोलाएविच होठों की इस मुद्रा से भली-भांति परिचित थे और वह तत्काल इस निष्कर्ष पर पहुंच गया कि वह कोई अप्रिय समाचार देने वाला पत्र है। कापा संतुलित मस्तिष्क वाली एक बुद्धिमान स्त्री थी लेकिन वह अपनी एक स्त्रियोचित आदत पर काबू नहीं पाती थी—जब भी कोई समाचार होता—अच्छा या बुरा—वह तत्काल उसे उगल देती।

"ठीक है, लाओ सुनाओ!" पावेल निकोलाएविच ने आहत स्वर में कहा—"सुना डालो, अगर वह इतना महत्त्वपूर्ण और जरूरी है तो सुना डालो!"

अब, जबकि कापा ने बात कह दी थी, तो उसके दिल से बोझ उतर गया था और अब वह एक साधारण व्यक्ति की तरह बात कर सकती थी।

"कोई खास बात नहीं हैं, कोई भी तो नहीं," उसने पश्चाताप भरे स्वर में कहा। "खैर, तुम यह बताओ कि अब तुम कैसे हो पासिक, तुम कैसे हो? मुझे इंजेक्शन के बारे में तो सब कुछ पता लग चुका है। मैंने शुक्रवार को मेट्रन को फोन किया था और कल सुबह फिर किया था। अगर कहीं कुछ गड़बड़ हुई होती तो मैं सीधे तुम्हारे पास पहुंच जाती। लेकिन उन्होंने बताया कि सब कुछ एकदम ठीक रहा—यह बात ठीक है न?"

"हां, इन्जैक्शन तो एकदम ठीक रहा," पावेल निकोलाएविच ने हामी भरी। वह अपनी सहनशक्ति पर खुश था। "लेकिन यहां का वातावरण कापेल्का, यहां का वातावरण!" और फिर तुरन्त ही येफ़ेम और 'हड्डी चूस' से शुरू होकर वहां की हर चीज, जो उसका नाक में दम किये दे रही थी, उसके दिमाग में घुम गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस शिकायत से शुरू करे। अन्ततः उसने संताप भरे स्वर में कहा—"काश यहां एक अलग शौचालय ही होता! यहां के शौचालयों की स्थिति तो भयावह है। उसकी चहारदीवारी ही नहीं है और हर कोई तुम्हें बैठा हुआ देख सकता है।"

(सार्वजनिक स्नानघर या शौचालय का प्रयोग व्यक्ति के सत्ताधिकार को क्षति पहुंचाता है। अपने दफ्तर में भी रूसानोव दूसरी मंजिल पर जाया करता था जिससे उसे स्टाफ में सार्वजनिक शौचालय का प्रयोग न करना पड़े।)

कापा ने यह अनुभव करते हुए कि वह कितना पीड़ित अनुभव कर रहा है और यह कि उसके दिल का बोझ हल्का होना ही चाहिए उसकी बात बीच में नहीं काटी बल्कि इसके बजाय वह उसे नई शिकायतें करने के लिए उकसाती रही और वह अपने बोझ को उतारने की धुन में ऐसी शिकायतों तक पहुँच गया जिनका न तो कोई जवाब दिया जा सकता था और ना ही जिनका कोई समाधान था। वह पूछ रहा था—"आखिर वे इन डाक्टरों को पैसा किस बात का देते हैं?" कापा ने उससे पूरे विस्तार में पूछा कि इन्जैक्शन के दौरान और उसके बाद उसने कैसा महसूस किया और उसकी रसौली का क्या हाल है। उसने तो उसका छोटा-सा स्कार्फ तक हटा कर रसौली पर एक नजर भी डाल ली और अपनी राय दी कि वह मामूली-सी कम हो रही है।

पावेल निकोलाएविच जानता था कि ऐसा नहीं हो रहा है, फिर भी किसी के मुंह से यह सुनना कि वह कुछ कम हो रही है अपने आप में काफी सुखद था।

"खैर, कम-से-कम इतना तो है ही बढ़ी नहीं है—है न?"

"नहीं, हरगिज-हरगिज नहीं!" कापा को इस बात का पूरा-पूरा विश्वास था कि वह बढ़ी नहीं है।"

"काश, इतना ही हो जाए कि यह बढ़नी बन्द हो जाए!" पावेल निकोलाएविच ने कुछ इस ढंग से कहा जैसे कि वह रसौली से यह अनुनय-विनय कर रहा

हो कि वह और न बढ़े। उसका स्वर अश्रुपूरित था—"काश, यह सिर्फ और न बढ़े! अगर यह इसी तरह एक हफ्ते तक और बढ़ती गई तो खुदा ही जानता है···" नहीं, इससे आगे वह कुछ नहीं कह पाया—एक अंध पाताल में झांकने का उसमें साहस नहीं था। वह अपने आपको कितना अभागा और दयनीय अनुभव कर रहा था! किसी भी वक्त कुछ भी हो सकता था। "अगला इन्जैक्शन कल लगेगा, उसके बाद बुधवार को लेकिन अगर उससे कोई फायदा न हुआ तो क्या होगा? तब मैं क्या करूंगा?"

"तब तुम्हें मास्को जाना पड़ेगा," कापा ने दृढ़तापूर्वक कहा। "आओ हम अभी फैसला कर लें कि अगले दो इन्जैक्शनों से भी फायदा न हुआ तो हम तुम्हें मास्को के लिए हवाई जहाज पर बैठा देंगे। तुमने शुक्रवार को उन्हें वहां फोन किया था लेकिन फिर तुमने अपना इरादा बदल दिया था लेकिन अब मैंने शेंद्यापिन को फोन किया है और ऐलीमोव से मिल चुकी हूं और खुद ऐलीमोव ने मास्को फोन कर दिया है। ऐसा लगता है कि जो बीमारी तुम्हें है उसका इलाज पिछले दिनों तक तो सिर्फ मास्को ही में हो सकता था; हर बीमार वहीं भेजा जाता था, लेकिन फिर उन्होंने स्थानीय विशेषज्ञों का स्तर ऊंचा उठाने के लिए इस बीमारी का इलाज यहीं करना शुरू कर दिया। बहरहाल, डाक्टर लोग एक घृणित जाति हैं। जब उनका वास्ता जीवित व्यक्तियों की चीर-फाड़ से है तो वे उत्पादन की उपलब्धियों के बारे में बात करने की जुर्रत कैसे करते हैं? तुम चाहे कुछ भी कहो, मैं डाक्टरों से नफरत करती हूं।"

"हां, हां," पावेल निकोलाएविच ने कटु स्वर में सहमति व्यक्त की। "हां मैं भी यहां उन्हें यही बताता रहा हूं।"

"मुझे अध्यापकों से भी नफरत है। माइका के साथ जो कुछ हुआ उसके आधार पर मैं उनसे तंग आ गई हूं। और लावरिक का भी क्या हुआ;"

पावेल निकोलाएविच ने अपने चश्मे के शीशे पोंछे:

"हां, अपने अनुभवों के आधार पर यह बात मैं अच्छी तरह समझता हू—तब मैं स्कूल का डाइरेक्टर था। सबके सब प्रशिक्षित अध्यापक हमारे सत्ताधिकार के प्रति आक्रामकऔर अमैत्रीपूर्ण रुख रखते थे—उनमें से कोई भी हमारी ओर नहीं था। मुख्य समस्या तो उन्हें नियन्त्रण में रखने की थी। लेकिन अब हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम उन पर भरोसा करें और उनसे कुछ अपेक्षाएं रखें।

"खैर, छोड़ो! देखो, तुम्हें मास्को भेजने के मामले में कोई विशेष उलझन नहीं है। हमारा रास्ता एकदम ही कंटकाकीर्ण नहीं है—कहीं न कहीं खुली जगह ढूंढ ली जा सकती है। ऐलीमोव ने उन्हें तुम्हारे लिए विशेष व्यवस्था करने के लिये राजी कर लिया है। तुम्हारे लिए वे कोई न कोई उचित स्थान

ढूंढ ही लेंगे। अब तुम बताओ—तुम्हारा क्या विचार है ? क्या हमें तीसरे इंजेक्शन का इंतजार करना चाहिए ?''

उन्होंने जो योजनाएं बनाईं वे अनुचित थीं और उनसे पावेल निकोलाएविच का हौसला बढ़ गया। उस अंधेरे घोंसले में चुपचाप बैठकर मौत का इन्तजार करने से तो कुछ भी बेहतर था। रूसानोव अपने जीवन भर सक्रिय और पहल करने वाला रहा था—उसे आन्तरिक शान्ति भी तभी मिलती थी जब वह पहल करे।

आज जल्दी करने का कोई कारण नहीं था। पावेल निकोलाएविच अपने वार्ड में लौटे बिना यहां अपनी पत्नी के पास जितनी अधिक देर तक बैठा रहता उतना ही खुश रहता। बाहर का दरवाजा खुलते-बंद होते रहने से उसे कभी-कभी कंपकंपी छूटने लगती थी। कैपीटोलीना मत्वेयेवना ने अपने कोट के नीचे अपने कंधों पर लिपटा अपना शाल उतारा और अपने पति को उढ़ा दिया। संयोग से बैंच पर जो दूसरे लोग बैठे हुए थे, वे साफ-सुथरेऔर सुसंस्कृत लोग थे। इसलिए ये पति-पत्नी वहां काफी देर तक बैठे रह सकते थे।

वे एक के बाद दूसरे विषयों पर बातचीत करते रहे और उन्होंने अपने जीवन के ऐसे अनेक पहलुओं पर बातचीत की जिनमें पावेल निकोलाएविच की बीमारी के कारण खलल पड़ गया था। सिर्फ एक विषय ऐसा था जिससे वे कतराते रहे—वह एक बुरी सम्भावना थी जो उनके सिरों पर खंजर की तरह लटक रही थी—और वह विषय था कि अगर अप्रियतम घटना हो गई तो क्या होगा ? ऐसी किसी स्थिति के लिए उनके पास कोई योजना नहीं थी, कोई समाधान नहीं था, कोई दिशा-निर्देशक नहीं था। ऐसे किसी परिणाम के लिए वे बिलकुल ही तैयार नहीं थे—और सम्भवत: यही कारण था कि वे उसे सम्भावना से परे समझ रहे थे। (यह तो सच है कि कभी-कभी यह विचार कापा के मस्तिष्क में कौंध जाता था कि अगर उसका पति मर गया तो उसकी घर-गृहस्थी और उसकी सम्पत्ति की क्या स्थिति होगी, लेकिन उन दोनों का ही पालन-पोषण आशावाद की एक ऐसी भावना के साथ एक ऐसे वातावरण में हुआ था कि इस प्रकार सम्भावनाओं का विश्लेषण करके स्वयं को हताश और दुखी करने या एक रुग्ण अन्तिम इच्छापत्र और वसीयत लिखने की बजाय वे अनिश्चित ही छोड़ देना चाहते थे।

कापा को फोन पर जो संदेश मिले थे वे उनके बारे में तथा उद्योग मंडल के उसके सहयोगियों ने उसके स्वास्थ्य के बारे में जो पूछताछ की थी और उसके स्वास्थ्य-लाभ के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजीं थी उनके बारे में भी बातचीत करते रहे। फैक्टरी के 'विशेष विभाग'[1] से इस उद्योग मण्डल में निकोलाएविच

---

१. रूस के प्रमुख गुप्तचर विभाग के० जी० बी० की ओर संकेत। (अनुवादक की टिप्पणी)

था । तकनीकी मामलों की देखभाल, इंजीनियर और अर्थशास्त्री करते थे—उसका काम तो यह था कि वह उन पर एक विशेष प्रकार का नियन्त्रण रखे ।) सभी सहयोगी उसे पसंद करते थे और यह जानकर उसे बड़ी खुशी हुई कि वे उसके बारे में इतने अधिक चिन्तित हैं ।

उन्होंने पावेल निकोलाएविच की पेंशन की सम्भावनाओं के बारे में भी बातें कीं । कारण चाहे कुछ भी हो लेकिन विशेष विभागों में इतने अधिक उत्तरदायी पदों पर लम्बे अर्से तक उसकी सराहनीय सेवाओं के बावजूद इस बात की कोई विशेष सम्भावना नहीं थी कि उसके जीवन का स्वप्न साकार हो जाएगा अर्थात् उसे उच्च पदस्थ अधिकारियों को मिलने वाली 'वैयक्तिक' पेंशन मिल जायेगी । उसे प्रशासनिक सेवाओं में काम करने वाले अधिकारियों को मिलने वाली पेंशन भी शायद न मिल सके जिसमें पैसा कभी-कभी मिलता है और जो अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल आयु पर ही मिलनी शुरू हो जाती है—और यह सब सिर्फ इसलिए होगा क्योंकि १९३९ में वह फौजी वर्दी पहनने को तैयार नहीं हुआ था—हालांकि वह वर्दी उसे पेश की गई थी । यह अपने आप में दुखद बात थी— लेकिन गत दो वर्ष की अस्थिर स्थिति को देखते हुए शायद उतनी दुखद थी भी नहीं । शायद यह एक ऐसा मूल्य था जो व्यक्ति को शांति और सुरक्षा के लिए चुकाना ही पड़ता है ।

उन्होंने लोगों की ऊंचे स्तर के प्रति पैदा हो गई ललक के सम्बन्ध में भी बातें कीं । यह प्रकृति गत कुछ वर्षों में अत्यधिक उजागर हो गई थी और कपड़ों, फर्नीचर और घर की अन्दरूनी साज-संवार में तो यह विशेष रूप से दिखाई दे रही थी ।

यहां पहुंच कर कैपीतोलीना मैत्वेएवना ने कहा कि उसके पति का इलाज सफलतापूर्वक होते रहने पर भी अगर देर तक चलता है (उन्हें बताया गया था कि यह इलाज छः सप्ताह या दो महीने तक चलता रह सकता है) तो बेहतर यह होगा कि मौके से फायदा उठा कर फ्लैट में कुछ तब्दीलियां करा ली जाएं । गुसलखाने का एक पाइप बहुत पहले वहां से हटा दिया जाना चाहिए था, रसोई के सिंक (कुण्ड) को वहां से हटाकर कहीं और लगाना होगा, पाखाने की दीवार को टाइलों की जरूरत थी और खाने के कमरे और पावेल निकोलाएविच के कमरे में नया रंग-रोगन कराना बहुत जरूरी था । इस बार कोई दूसरा रंग होना चाहिए (वह अभी से सोच रही थी कि यह रंग कौनसा और कितना गहरा होगा) और उस पर वे सुनहरी धारियां भी होनी चाहिएं जिनका शौक इन दिनों पागलपन की हद तक पहुंचा हुआ था । पावेल का तबादला पिछले वर्ष ही हुआ था । (निस्संदेह, उसका काम औद्योगिक मामलों की देखभाल करना नहीं था— वह कोई एक ऐसा सीमित विशेषज्ञ नहीं

निकोलाएविच को इस पर कोई एतराज नहीं था, लेकिन फौरन ही एक समस्या सामने आ खड़ी हुई। हालांकि मज़दूर सरकार की ओर से भेजे जाएंगे और सरकार ही उन्हें मजदूरी देगी लेकिन वे फ्लैट के मालिकों से भी कुछ-न-कुछ जरूर लेंगे—और यह भी वे बख्शीश के तौर पर नहीं मांगेंगे बल्कि ज़बरदस्ती वसूल करेंगे। निकोलाएविच की इतनी चिन्ता पैसे की नहीं थी, जितनी कि सिद्धान्त की। (हालांकि पैसे का हाथ से जाना भी काफी बुरा था।) उसके तईं सिद्धान्त कहीं अधिक महत्व रखते थे। वह उन मज़दूरों को अपनी ओर से कुछ भी आखिर दे क्यों? आखिर क्या कारण है कि उसे अपने काम के बदले में केवल उचित वेतन ही मिलता है—हां, उसमें बोनस की बढ़ोत्तरी अवश्य सम्मिलित होती है—लेकिन वह अधिक भुगतान की तो कभी मांग नहीं करता? तो फिर ये धांधलीबाज मज़दूर—ये टके-टके के लोग—रुपये पैसे के इतना पीछे क्यों पड़े हैं? इस मामले में उदारता दिखाना या छूट देना सिद्धाँत का हनन होगा। यह तो सारी नीम बूर्ज्आ दुनिया और उसके तत्वों के प्रति उदारता दिखाने वाली बात होगी। जब भी यह प्रश्न सामने आता पावेल निकोलाएविच परेशान और अव्यवस्थित हो उठता।

"कापा आखिर ऐसा क्यों है? उन लोगों को एक श्रमिक के रूप में अपने सम्मान-प्रतिष्ठा की चिन्ता आखिर क्यों नहीं है? जब हम आटे की सेवियां बनाने वाली फैक्टरी में काम किया करते थे तो हमने कभी भी अपनी ओर से शर्तें नहीं रखी थीं और ना कभी फोरमैन की जेबों को 'छुआ' था। ऐसी बात तो हमारे दिमाग में आ ही नहीं सकती थी। चाहे कुछ भी हो जाए, हमें श्रमिकों को भ्रष्टाचारी नहीं बनाना चाहिए। यह तो सीधी-सादी रिश्वत है—इससे कम कुछ भी नहीं।"

कापा उससे पूरी तरह सहमत थी, लेकिन उसके साथ ही उसने यह भी कहा कि अगर मज़दूरों को कुछ न दिया गया और काम शुरू करने से पहले और काम के बीच उन्हें वोदका न पिलाई गई तो काम में कहीं-न-कहीं गड़बड़ करके अपना बदला चुका लेंगे और नुकसान हमीं लोगों का होगा।

"मुझे किसी ने बताया था कि एक रिटायर्ड करनल अपनी जिद पर अड़ा रहा था और उसने कहा था कि 'मैं तुम्हें एक भी कोपेक फालतू नहीं दूंगा' मज़दूरों ने उसके गुसलखाने की नाली के पाइप में एक मरा हुआ चूहा रख दिया था। इससे पानी ठीक ढंग से नहीं निकल पाया और भयानक बदबू फैली सो अलग।"

इसलिए फ्लैट की मरम्मत के सिलसिले में वे कोई भी निर्णय न कर पाए जीवन एक गुत्थी है—एक अत्यधिक उलझी हुई गुत्थी—चाहे आप किसी भी ओर क्यों न हों।

वे यूरी के बारे में बातें करने लगे: वह उनका सबसे बड़ा लड़का था,

लेकिन वह कुछ आवश्यकता से अधिक ही कोमल और मृदु था। रूसानोव की तरह जिन्दगी पर उसकी गिरफ्त मजबूत नहीं थी। उन्होंने उसे कानून की परीक्षा पास करा दी थी और कालेज के बाद उसके लिए एक अच्छी-सी नौकरी भी ढूंढ दी थी। लेकिन वे यह स्वीकार करने के लिए विवश थे कि वह इस प्रकार के काम के लिए वास्तव में उपयुक्त नहीं था। वह यह जानता ही नहीं था कि अपनी पोज़ीशन को किस तरह सुदृढ़ बनाया जाता है या कि लाभदायक सम्बन्ध सम्पर्क कैसे स्थापित किए जाते हैं। अब जबकि वह व्यापारिक यात्रा पर गया हुआ था, वह हर वक्त कोई-न-कोई गलती करता होगा। पावेल निकोलाएविच इस बारे में अत्यधिक चिंतित था लेकिन कैपीतोलीना मैत्वेएवना को सर्वाधिक चिन्ता उसकी शादी की थी। उसके पिता ने उसे कार चलाना सिखा दिया है और वह यह भी प्रबन्ध कर देगा कि उसे प्राइवेट फ्लैट मिल जाए, लेकिन वे उस पर इस तरह नज़र कैसे रखे रह सकते हैं कि वह शादी के मामले में कोई गलती न करने पाए। वह इतना गावदी लड़का है कि कपड़ा मिल की कोई भी जुलाहिन लड़की उसे फांस ले जा सकती है—लेकिन शायद जुलाहिन लड़की नहीं! भला ऐसी कौन-सी जगह है जहां वह और जुलाहिन लड़की दोनों जाते हों? फिर मुलाकात का सिलसिला ज़ारी रहेगा? लेकिन अब जबकि वह दौरे पर है, इस किस्म के खतरे का पता कैसे चले?—और वह खतरा टले कैसे? यह ऐसा कदम है जो बड़ी ही आसानी से उठाया जा सकता है। उठे और सोचे-समझे बिना शादी के रजिस्टर पर हस्ताक्षर कर दे। और इससे केवल इस नौजवान की ही जिन्दगी तबाह नहीं होगी, बल्कि उसका खानदान भी तबाह हो जाएगा। इतने वर्षों तक उसके लिए जो कोशिशें की गई हैं, सबकी सब अकारथ चली जाएंगी। जरा शेन्दयापिन की लड़की को ही देखो—अध्यापकों के प्रशिक्षण कॉलेज में उसने अपने एक सहपाठी से शादी बस रचा ही ली थी। वह गांव का एक एकदम साधारण लड़का था और उसकी मां सामूहिक फार्म पर काम करने वाली एक साधारण-सी किसान महिला जरा शेन्दयापिन के फ्लैट की कल्पना करो—उनके फर्नीचर की और उन प्रभावशाली लोगों का जो उनके अतिथि हुआ करते हैं। यकायक सिर पर एक सफेद स्कॉर्फ बांधे यह बूढ़ी औरत उसकी मेज़ पर आ बैठती है। उसके पास पासपोर्ट[1] तक नहीं है—और वह उनकी लड़की की सास है। अब और क्या बाकी रह जाता है? वह तो खुदा भला करे उन्होंने किसी-न-किसी

---

१. यह एक ऐसा आइडैंटिटी कार्ड होता है जिसके बिना कोई सोवियत नागरिक स्वतन्त्रापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता है और ना ही अपनी नौकरी में परिवर्तन कर सकता है। शहरी नागरिकों के पास तो यह कार्ड होता है लेकिन सामूहिक फार्मों पर काम करने वालों के पास सामान्यतः नहीं होता। (अनुवादक की टिप्पणी)

तरह अपनी लड़की के प्रेमी को राजनैतिक दृष्टि से असम्मानित घोषित करा दिया और इस तरह अपनी लड़की को बचा लिया।

आवेती (जिसे वे आवा या आल्ला भी कहते थे) की तो बात ही और थी आवेता रूमानोव घराने की मोती थी। स्कूल की लड़कियां जो छोटी-मोटी शरारतें करती रहती हैं, उन्हें छोड़कर उसकी मां या उसके पिता को एक भी मौका ऐसा याद नहीं था जब उसने कोई ऐसी हरकत की हो जिससे उन्हें कष्ट पहुंचा हो या किसी प्रकार की कोई चिन्ता हुई हो। वह सुन्दर थी, बुद्धिमान थी और पुरजोश थी। वह जिन्दगी को समझती थी और जानती थी कि जिन्दगी के साथ किस तरह कदम से कदम मिलाकर चला जा सकता है। उन्हें न तो उस पर कोई अंकुश लगाने की जरूरत थी और ना ही उसके बारे में किसी प्रकार की कोई चिन्ता करने की। उसने आज तक कभी कोई गलत कदम नहीं उठाया था— फिर चाहे वह मामला महत्वपूर्ण रहा हो या अमहत्वपूर्ण। उसे अपने मां-बाप से कोई शिकायत थी तो अपने नाम के पहिले हिस्से के बारे में। मुझे यह लफ्जी शोब्देबाजी पसंद नहीं," वह कहा करती— मुझे सिर्फ आल्ला कहा करो।" लेकिन उसके पासपोर्ट पर एकदम स्पष्ट लफ्जों में लिखा हुआ था—आवेती पावलोवना! कितना खूबसूरत नाम था! छुट्टियां बस खत्म ही होने वाली थीं। बुधवार को वह हवाई जहाज़ से मस्को से आ जाएगी। इसमें तो कोई शक ही नहीं था कि वह पहुंचते ही पहला काम यह करेगी कि अस्पताल पहुंच जाए।

नाम कितनी गड़बड़ियां कर सकते हैं! परिस्थितियां बदल जाती हैं, लेकिन नाम हमेशा के लिए वैसे के वैसे ही बने रहते हैं। अब लावरिक को भी अपने नाम से नफरत होने लगी थी। जब तक वह स्कूल में था, तब तक तो सब ठीक था—किसी को उसकी चिन्ता नहीं थी। लेकिन इस वर्ष के अन्त तक उसे अपना पासपोर्ट मिलेगा और उस पर लिखा क्या होगा?— लावरेन्ती पावलोविच[1] उस समय उसके माता-पिता ने सोच समझ कर यह नाम रखा था। "इसका नाम स्टालिन के मैत्री और उसके कट्टर समर्थक का नाम दे दो," उस समय उन्होंने कहा था, "उसे हर मामले में वैसा ही होना चाहिए।" लेकिन अब एक वर्ष से कुछ अधिक समय से स्थिति एकदम बदल गई थी। 'लावरेन्ती पावलोविच' शब्द जनता के बीच जोर से बोलने से पहिले सोचना पड़ता था। एक बात जो लावरिक को बचा सकती थी वह यह थी कि वह फौजी अकादमी में जा रहा था। फौज में उसके पहले दो हिस्से इस्तेमाल ही नहीं होंगे।

फुसफुसाकर तो कोई यह पूछ ही सकता था—"आखिर उस सारे

---

१. यह स्टालिन के गुप्तचर विभाग के निर्मम अधिकारी बेरिया के पहले और कुल-नाम थे। जुलाई, १९५३ में उसे ब्रिटेन का जासूस घोषित करके खत्म कर दिया। (अनुवादक की टिप्पणी)

मामले को इस तरह क्यों निपटाया गया ?" शेन्दयापिन घराने का भी यही विचार था। हालाँकि जिन लोगों को वे जानते नहीं थे उनके सामने उसका जिक्र नहीं करते थे। अच्छा मान लो कि बेरिया बेईमान, बुर्जुआ कौमपरस्त और सत्ताधिकार का भूखा था। उस स्थिति में उस पर मुकदमा चलाओ और बन्द दरवाजे के पीछे उसे गोली मार दो लेकिन आम लोगों को उसके बारे में बताने की क्या जरूरत थी ? उनकी आस्था क्यों हिलाई जाये ? उनके दिलों में शक क्यों पैदा किए जएँ ? यह सब करने के बाद किसी विशेष सरकारी स्तर तक एक गुप्त विज्ञप्ति भेजी जा सकती थी, जिसमें समूचा विवरण दे दिया जाता। लेकिन जहाँ तक समाचार पत्रों का संबंध है, क्या यह बेहतर नहीं था कि उनमें यही प्रकाशित किया जाता कि वह दिल के दौरे से मरा है और फिर उसे पूरे सम्मान के साथ दफना दिया जाता।

उन्होंने अपनी सबसे छोटी लड़की मइका के बारे में भी बातें की। मइका ने इस वर्ष हमेशा की तरह पाँच में से पाँच नंबर नहीं लिए थे। अब वह प्रिय शिष्या भी नहीं रह गई थी। उसका नाम सम्मानित सूची में से भी काट दिया गया था और अब तो वह पांच में से चार नम्बर भी नहीं ले पाती थी। यह सब इसलिए हुआ था क्योंकि वह पांचवीं क्लास में चढ़ा दी गई थी। प्राथमिक स्कूल में केवल एक ही अध्यापक होता था जो हर समय उनकी देख-भाल करता था। वह उसे अच्छी तरह जानता था और उसके मां-बाप को भी। माइका को अत्यधिक सफलता मिलती रही। लेकिन इस वर्ष पूरे एक दर्जन अध्यापक थे—विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ—जो उसे सप्ताह में केवल एक-एक पाठ पढ़ाते थे। वे अपने छात्रों को पहचानते तक न थे और उनकी सारी दिलचस्पी टाइमटेबल में होती थी। क्या यह बात उनके दिमाग में कभी नहीं आई कि इस प्रकार के परिवर्तन से बच्चे को कितना सदमा पहुंचेगा और इससे उसके चरित्र को कितनी अधिक क्षति पहुंचेगी ? कपीतोलीना मत्वेयेएवना कोई कोशिश उठा न रखेगी; वह अभिवावक संघ के माध्यम से स्कूल का मामला ठीक करके ही रहेगी। वैसे नए सुधार से भी स्कूल की व्यवस्था को क्षति पहुंच रही थी। आखिर सह-शिक्षा शुरू करने की क्या जरूरत थी ? लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग स्कूलों में शिक्षा देने की पुरानी प्रणाली ही क्यों न जारी रखी जाए ? वह तो परिपक्व सोवियत शिक्षा विज्ञान की सर्वोत्तम उपलब्धि थी।

इसी प्रकार के विषयों पर वे कई घंटे तक बातचीत करते रहे। लेकिन उनकी बातचीत में झोल-सा था। उनमें से किसी ने भी हालांकि यह बात कही नहीं लेकिन यह अहसास था दोनों को ही कि उनकी बातचीत में कुछ अव्याव-हारिकता है। पावेल निकोलाएविच की हिम्मत बिलकुल पस्त हो रही थी। जिन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में वे बातचीत कर रहे थे उनकी वास्त-

विकता का ही उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसका दिल कुछ भी करने को नहीं चाहता था। उसकी सबसे बड़ी इच्छा इस समय यह थी कि वह अपने बिस्तर में लेट जाए, अपनी रसौली तकिए का सहारा देकर कुछ आराम पहुंचाए और अपना सिर कम्बल से ढक ले।

लेकिन कैपीतोलीना मैंत्वेएवना किसी न किसी तरह बातचीत को जारी रखे हुये थी। इसका कारण यह था कि वह पत्र उसके हैंडबैग को झुलसे जा रहा था। अपने भाई मिनाई का यह पत्र उसे आज ही मिला था। मिनाई "क—" नामक नगर में रहता था। यह वही नगर था जहां युद्ध के पहले रूसानोव को परिवार रहता था, जहां उनका यौवन बीता था, जहां उनकी शादी हुई थी और जहां उनके बच्चे हुए थे। लेकिन युद्ध के दिनों में वे उस नगर को छोड़ कर यहां आ गये थे और फिर वहां कभी नहीं गये थे। कोशिश करके उन्होंने अपना फ्लैट कापा के भाई के नाम करा दिया था।

उसे इस बात का अहसास था कि उसका पति इस समय ऐसा कोई समाचार सुनने को तैयार नहीं है, लेकिन इसके साथ ही यह भी सही था कि यह एक ऐसा समाचार था जिसमें वह अपने किसी मित्र या सहेली तक को भी हमराज नहीं बना सकती थी। पूरे शहर में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे वह समाचार उसके पूरे विस्तार के साथ सुना सकती। आखिर उसने अपने पति का ढांढस बंधाने के लिए सभी कुछ किया था—और अब अगर स्वयं उसे उसकी सहानुभूति की आवश्यकता है तो वह उससे वंचित क्यों रहे। यह तो उसके लिए संभव ही नहीं था कि घर चली जाये और उस समाचार को अपने तक ही सीमित रखे। जहां तक बच्चों का प्रश्न है, आवेती एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जिसे वह यह बात समझा सकती थी। यूरी को बताने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिर आवेती को बताने से पहले भी अपने पति से परामर्श करना आवश्यक था।

—और उसकी यह हालत थी कि जितनी अधिक देर वह उसके साथ रही, उसकी थकावट कुछ बढ़ती ही रही और उससे इतने अधिक महत्त्वपूर्ण विषय पर कोई बात करना अधिकाधिक असंभव प्रतीत होने लगा।

उसके खाने का समय अधिकाधिक निकट आता जा रहा था। वह अपने बैग से कुछ चीजें निकालने लगी—वह अपने पति को यह दिखाना चाहती थी कि वह उसके खाने के लिए क्या कुछ लेकर आई है। उसके फर के कोट की आस्तीनें, जिनके कफ लोमड़ी की खाल के थे, इतनी चौड़ी थीं कि बैग के अन्दर हाथ ले जाना संभव नहीं था।

पावेल निकोलाएविच ने खाने-पीने की चीजों पर नजर डाली और महसूस किया कि उसके बिस्तर के पास रखी मेज पर अब भी खाने-पीने की बहुत-सी चीजें पड़ी हैं और यकायक उसे याद आया कि एक चीज ऐसी है जो खाने-पीने

की चीजों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है और सबसे पहले आज उसी को लाया जाना चाहिए था। उसे बिर्च के दम्बल की याद आई। वह जोश में आ गया और अपनी पत्नी को उस चमत्कारी वस्तु के बारे में बताने लगा—उस पत्र और डाक्टर के बारे में (भले ही नीम हकीम क्यों न हो) बताकर उसके दिमाग में यह बात बैठाने लगा कि यह बात अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि एक भी क्षण बर्बाद किये बिना मध्य रूस में कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढा जाये जो उसके लिए यह दम्बल एकत्र कर सके।

"क्यों न अपने पुराने शहर 'क—' के आसपास कोशिश की जाये? वहां बिर्च के पेड़ काफी संख्या में हैं। मीनाई प्रबन्ध कर सकता है—कोई विशेष असुविधा नहीं होगी। हमें मीनाई को तत्काल ही लिख देना चाहिए और कुछ लोगों को भी—अपने पुराने दोस्तों को। वे सब मिलकर प्रयत्न कर सकते हैं। उन्हें यह अहसास करा दो कि मैं किस मुसीबत में हूँ।"

इससे मामला कुछ आसान हो गया—उसने खुद ही मीनाई और 'क—' का जिक्र छेड़ दिया—खुद ही विषय पर आ गया। उसने पत्र निकालना आवश्यक नहीं समझा क्योंकि उसके भाई के पत्र की शैली अत्यधिक निराशाजनक थी। वह बैठी-बैठी अपने हैंडबैग को खोलती और बन्द करती रही।

"तुम जानते हो पाशा," उसने कहा, "मैं फैसला नहीं कर पा रही हूँ कि तुम्हारा नाम 'क—' के आसपास भेजना चाहिये या नहीं। मीनाई ने लिखा है—स्पष्ट है कि यह आवश्यक नहीं कि यह सही हो—लेकिन उसने लिखा तो है ही कि रोदीचेव शहर में वापस आ गया है। जाहिर है कि उसे ब-हा-ल कर दिया गया है—लेकिन क्या यह संभव है?"

जब वह उस अप्रीतिकर शब्द बहाल को लम्बा करके बोल रही थी और अपने हैंडबैग की चैन को देख रही थी और जब वह उस पत्र को बस बाहर निकालने ही वाली थी तो यह सब करते हुए उसकी नजर इस तरफ नहीं गई थी कि पाशा के चेहरे का रंग सफेद हो गया है—एक चादर से भी अधिक सफेद।

"क्या हुआ?" वह चीख पड़ी। वह इतनी अधिक चिन्तित हो उठी थी कि उतनी तो वह पत्र पाकर भी नहीं हुई थी—"आखिर हुआ क्या?"

वह बेंच का मजबूती से सहारा लिये बैठा था। उसने अपनी पत्नी का शाल और अधिक मज़बूती के साथ अपने गिर्द लपेट लिया।

"अब भी संभव है कि यह सच न हो!" उसने अपने बलिष्ठ हाथों से उसके कंधे मजबूती से पकड़ रखे थे। उसके एक हाथ में अब भी उसका हैंडबैग था और ऐसा लगता था जैसे कि वह उसे उसके कंधे पर लटकाने की कोशिश कर रही है। "अब भी संभव है कि यह सच न हो। मीनाई ने खुद उसे नहीं देखा है, लेकिन लोग कहते हैं..."

पावेल निकोलाएविच का पीलापन कुछ कम हो गया था, लेकिन एक कम-जोरी उसके समूचे जिस्म पर छा गई थी। उसके कूल्हे, उसके कंधे और उसके हाथ—सब के सब एकदम निर्जीव से हो गये थे और उसकी रसौली उसके सिर को तोड़े-मरोड़े दे रही थी।

"तुमने यह सब मुझे क्यों बताया?" उसने एक दयनीय से स्वर में आह भरते हुए कहा, "क्या मेरी मुसीबतें पहले ही कुछ कम हैं?" और उसके सिर और उसके सीने में दोबारा कंपकंपी दौड़ गई जैसे कि वह आँसू बहाये बिना ही सिसकियां ले रहा हो।

"पाशेन्का मुझे माफ कर दो। पासिक, मुझे माफ कर दो!" उसने अब भी उसे कंधों से पकड़ रखा था। वह अपने घुंघराले तांबई बालों को, जिन्हें शेर की अयाल की शक्ल में गूंथा गया था, झटक रही थी। "मेरा दिमाग खराब हो गया है—ज़रूर खराब हो गया है। क्या तुम्हारे खयाल में वह मीनाई से उसका कमरा ले सकेगा? खुदा ही बेहतर जानता है कि क्या कुछ होने वाला है। तुम्हें याद होगा कि इस प्रकार की दो घटनाओं के बारे में हम पहले भी सुन चुके हैं।"

"कमरे का इससे क्या सम्बन्ध है? जहन्नुम में जाए कमरा। वह उसे ले ले।" उसके स्वर में सिसकी और फुसफुसाहट दोनों ही थीं।

"तुम कह क्या रहे हो—कमरा जाये जहन्नुम में? मीनाई को किसी तंग जगह में रहना भला कैसे पसन्द आयेगा?"

"बेहतर है कि तुम अपने पति के बारे में सोचो! तुम यह सोचो कि मेरे साथ क्या कुछ होने जा रहा है। और फिर गुजुन? क्या उसने पत्र में उसका भी उल्लेख किया है?"

"नहीं! गुजुन का नहीं··· लेकिन अगर उन सब ने वापस आना शुरू कर कर दिया तो? आखिर क्या होने वाला है?"

"मुझे भला क्या मालूम?" उसके पति ने भिंचे हुए स्वर में उत्तर दिया। उन्हें अब उन लोगों को छोड़ने का क्या अधिकार है? क्या उनके दिल में कोई दया या रहम नहीं है? आखिर वे इतनी बड़ी यंत्रणा कैसे दे सकते हैं?"

४१. न्याय

रूसानोव का विचार था कि कापा के आने से उसे खुशी होगी, लेकिन वह जो समाचार लाई उसने उसे इतना अधिक दुखी कर दिया कि इससे बेहतर तो यह होता कि वह आती ही नहीं। सीढ़ियां चढ़ते हुए उसे चक्कर आ गया और उसे जीने की रेलिंग को पकड़ना पड़ गया। उसके शरीर में एक कंपकंपी दौड़ गई—और वह बढ़ती ही जा रही थी। कापा को अपने कोट और बाहर पहनने के जूतों के साथ ऊपर जाने की अनुमति नहीं थी। एक काहिल अरदली वहां सिर्फ इसलिए खड़ा था कि वह बाहर वालों को ऊपर जाने से रोक ले। इसलिए कापा ने पावेल निकोलाएविच को वार्डर के सुपुर्द किया कि वह उसे ऊपर ले जाये और खाने-पीने की चीजों का थैला भी उसे थमा दिया। उस दिन मछली की सी आंखों वाली नर्स जोया की ड्यूटी थी जो किसी न किसी कारण से पहली ही शाम रूसानोव की आंखों में खप गई थी। वह मेज पर बैठी थी और अपने चारों ओर रजिस्टरों के ढेर को उसने कठहरे की तरह रखा हुआ था। वह अपरिचित हड्डी-चूस के साथ छेड़-छाड़ में व्यस्त थी और रोगियों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही थी। रूसानोव ने उससे एसपिरीन मांगी जिस पर उसने तर्रारी से जवाब दिया कि एसपिरीन सिर्फ शाम ही को दी जाती है। फिर भी उसने उसका टेम्प्रेचर लिया और बाद में उसके लिए कुछ लाई भी।

उसके पलंग के पास की मेज़ पर खाने-पीने का सामान बदल दिया गया, लेकिन उसने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली। वह अपनी रसौली को तकिये का सहारा दिये लेटा रहा। यह बात आश्चर्यजनक थी कि यहां के तकिये अत्यधिक नर्म और मुलायम थे। उसे घर से तकिये लाने की ज़रूरत नहीं थी। उसने कम्बल सिर पर खींच लिया।

उसके मस्तिष्क में विचारों की रेल-पेल ने उथल-पुथल मचा रखी थी। उन्होंने उसके दिल में एक ऐसा तूफान पैदा कर दिया कि उसके शेष शरीर को और किसी चीज का कोई अहसास ही नहीं हो रहा था जैसे किसी ने उसे बेहोशी की दवा पिला दी हो। कमरे में जो मूर्खतापूर्ण वार्तालाप हो रहा था उसे वह अब बिल्कुल नहीं सुन रहा था और हालांकि येफ्रेम के पांवों की आवाज

उसे और कमरे के दूसरे लोगों को काफी परेशान कर रही थी लेकिन अब वह इस मामले में भी जड़ हो गया था। उसने इसकी भी परवाह नहीं की कि दिन का उजाला काफी बढ़ गया है। यह शाम होने से ठीक पहले का समय था। कहीं न कहीं सूरज रेंग रहा था—हां वह इमारत के इस ओर भले ही न दिखाई दे रहा हो। उसे वक्त गुजरने का अहसास नहीं था। वह बार-बार सो जाता—यह शायद उस दवा का असर था जो उसने अभी-अभी ली थी—और फिर जाग पड़ता। एक बार वह जागा तो बिजली जल चुकी थी। वह फिर सो गया। जब वह फिर जागा तो आधी रात हो चुकी थी और कमरे में अंधेरा और शांति दोनों ही थे।

उसने महसूस किया कि नींद हमेशा-हमेशा के लिए रुखसत हो गई है—उसका कृपालु हाथ हमेशा के लिये उससे दूर हो गया है और भय ने पूरी शक्ति के साथ उसके सीने को अपने काबू में ले लिया है और उसे शिकंजे में जकड़ लिया है।

तरह-तरह के विचार धीरे-धीरे अपने चेहरे से आवरण हटा रहे थे और रूसानोव के सिर में कमरे में और चारों ओर पसरे पड़े अंधेरे में उनका जमघट लगा था।

सच तो यह है कि वे विचार थे ही नहीं—बात सिर्फ इतनी सी थी कि वह अत्यधिक भयभीत और आतंकित था। वह इस विचार मात्र से आतंकित था कि कल सुबह ही रोदीचेव नर्सों और अरदलियों को धकियाता हुआ उसके कमरे में आ धमकेगा और आते ही उसे पीटना शुरू कर देगा। वह न्याय से नहीं डरता था—और समाज के निर्णय से भी नहीं। उसे तो अपमान का भी डर नहीं था—उसे तो सिर्फ पीटे जाने का डर था। उसके जीवन में ऐसा पहले सिर्फ एक बार हुआ था—स्कूल में जब वह छठे दर्जे में था। शाम के वक्त दरवाजे पर वे उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे—उसे दबोच लेने के लिये एकदम तैयार। उनमें से किसी के भी पास चाकू नहीं था, लेकिन उस वक्त से इस वक्त तक यह धड़का उसे हमेशा लगा रहता था कि चारों ओर से उस पर भारी और बेरहम मुक्कों की बौछार हो रही है।

अगर कोई ऐसा व्यक्ति मर जाये जिसे हमने वर्षों से न देखा हो तो अपनी मृत्यु के बाद वह हमें नौजवान ही दिखाई देता है भले ही इस बीच वह बूढ़ा ही क्यों न हो गया हो। रोदीचेव अठारह वर्ष तक दूर रहा था। शायद इस समय तक वह अपाहिज हो गया हो—गूंगा, लंगड़ा, लुंजा। लेकिन रूसानोव को अब भी वह तांबई रंगवाला सेहतमंद मर्द ही नजर आता था—जैसा वह किसी समय था। अपनी गिरफ्तारी से पहले आखिरी इतवार के दिन वह अपने डम्बल और गोले संभाले जिस तरह खड़ा था, अब भी वह उसे उसी तरह खड़ा नजर आता था। कापा की सहायता से रूसानोव उस वक्त तक पत्र

लिख चुका था और सम्बन्धित अधिकारी तक पहुंचा चुका था। रोदीचेव ने, जो अपनी कमर तक नंगा था, रूसानोव को पुकार कर कहा था—"पाशा! यहां आओ! मेरे पुट्ठों को टटोलो! शरमाओ नहीं—खूब दबाओ और देखो कि हमारे नये किस्म के इन्जीनियर किस मिट्टी के बने हैं। हम उस जर्मन एडवर्ड ख्रिस्तोफरोविच की तरह ढीले-ढाले थुलथुल और पिलपिले नहीं—पूरी तरह गूंथे हुये लोग हैं। अपनी ओर देखो, तुम इतने निर्बल और दुर्बल पतले हो कि अपने दरवाजे के पीछे नज़र ही न आओ। फैक्टरी में आना मैं तुम्हें वहां वर्कशाप में काम दिला दूंगा। क्यों क्या इरादा है? क्या तुम काम नहीं चाहते? हा···हा···हा···।"

उसने जोर से ठहाका लगाया था और फिर गाता हुआ नहाने चला गया था—'हम हैं लुहार—जवां दिल और स्वतन्त्र।'

यही वह विशालकाय व्यक्ति था जो रूसानोव के विचार में मुक्के लहराता हुआ वार्ड में आ धमकने वाला था। यह चित्र गलत था, लेकिन रूसानोव उससे मुक्त नहीं हो सकता था।

एक समय था जब यह और रोदीचेव मित्र हुआ करते थे। वे युवा-कम्युनिस्टों के एक ही सैल से संबंध रखते थे और यह फ्लैट फैक्टरी ने उन दोनों को ही दिया था। बाद में रोदीचेव श्रमिकों के हाईस्कूल और फिर कॉलेज में चला गया जबकि रूसानोव ट्रेड यूनियन की गतिविधियों में व्यस्त हो गया और फिर उस विभाग में चला गया जो व्यक्तिगत रिकार्ड रखता है। तब मतभेद शुरू हो गए—पहले उनकी पत्नियों के बीच और फिर उन दोनों के बीच। रूसानोव से बात करते वक्त रोदीचेव का रवैया अक्सर अत्यधिक अपमानजनक होता था। वह अत्यधिक स्वच्छंदतापूर्वक व्यवहार करता था और जनमत के विरुद्ध भी डट जाता था। उनका साथ-साथ रहना असह्य हो गया। एक बात से दूसरी बात निकलती गई। शायद दोनों ही जल्दबाज़ थे। आखिर पावेल निकोलाएविच ने वह पत्र लिख दिया। उस पत्र में उसने लिखा था कि निजी बातचीत के दौरान रोदीचेव ने हाल में समाप्त कर दी गई इंडस्ट्रियल पार्टी की हिमायत की थी और उसका इरादा है कि फैक्टरी में तोड़-फोड़ करने वालों का एक गुट बनाया जाए।

अपने पत्र में रूसानोव ने यह अनुरोध विशेष रूप से किया था कि कार्रवाई के दौरान उसका नाम न लिया जाए और उसका और रोदीचेव का सामना तो हरगिज़ न कराया जाए। इस प्रकार के आमने-सामने के काल्पनिक चित्र मात्र से ही वह दहल उठता था। जांच-पड़ताल करने वाले ने फैसला दे दिया था कि कानून के अनुसार रूसानोव का नाम कार्रवाई में आना जरूरी नहीं है और उसका और अपराधी का आमना-सामना कराया जाना अनिवार्य नहीं है—केवल इतना ही काफी होगा कि अपराधी अपना अपराध स्वीकार कर ले।

यहां तक कि यह भी आवश्यक नहीं होगा कि रूसानोव का असल खत मुकदमे की फाइल में शामिल किया जाए। इस तरह जब अपराधी धारा २०६ के अनुसार अपने बयान पर हस्ताक्षर करेगा तो उसे अपने पड़ौसी के नाम की कोई जानकारी नहीं मिल पाएगी।

सब कुछ एकदम चुपचाप हो जाता लेकिन फैक्टरी की पार्टी कमेटी के सेक्रेटरी गुजुन ने मामला गड़बड़ा दिया। उसे सुरक्षा अधिकारियों की ओर से एक नोट मिला कि रोदीचेव जनता का दुश्मन है और उस आधार पर उसे पार्टी के फैक्टरी के पार्टी-सैल से बरखास्त कर दिया जाए। लेकिन गुजुन अपनी बात पर डटा रहा और शोर मचाता रहा कि रोदीचेव वफादार साथी है। इसलिए उसके विरुद्ध प्रमाणों की पूरी-पूरी जानकारी गुजुन को दी जानी चाहिए। उसका शोर शराबा खुद उसके सिर पर पहाड़ बनकर टूटा। दो दिन बाद रात के समय उसे भी गिरफ्तार कर लिया गया। तीसरी सुबह रोदीचेव और गुजुन दोनों ही क्रांति विरोधी गुप्त संगठन के सदस्यों की हैसियत से समुचित ढंग से पार्टी से बरखास्त कर दिए गए।

रूसानोव अब आशंकित इसलिए था क्योंकि जब सुरक्षा अधिकारी उन दिनों गुजुन को कायल करने की कोशिश कर रहे थे तो बातचीत के दौरान वे उसे यह बताने के लिए मजबूर हो गए कि रोदीचेव के विरुद्ध प्रमाण रूसानोव ने उपलब्ध कराए हैं। इसका मतलब यह था कि अगर रोदीचेव और गुजुन की मुलाकात हो गई होगी (और चूंकि वे दोनों एक ही मुकदमे में फंसे हुए थे, इसीलिए उनकी मुलाकात होने की पूरी संभावना थी) तो उसने उसे सब कुछ बता दिया होगा। यही कारण था कि अब रूसानोव को उसकी वापसी से चिन्ता हो रही थी। मृत व्यक्ति ज़िन्दा हो रहा था और यह बहुत बड़े अपशकुन की बात थी।

संभवत: रोदीचेव की पत्नी ने भी वास्तविकता का अनुमान लगा लिया था। जाने वह अब जीवित भी थी या नहीं! कापा की योजना रोदीचेव की गिरफ्तारी तक इंतजार करने और उसके बाद कातका रोदीचेव से फ्लैट खाली कराकर पूरे फ्लैट को अपने कब्जे में ले लेने की थी। फिर पूरी बालकनी पर उनका कब्ज़ा होगा। (अतीत की घटनाओं पर दृष्टि डालने पर अब यह बात अत्यधिक हास्यास्पद प्रतीत होती है कि उन्होंने चौदह वर्ग मीटर के एक कमरे को, जिसमें गैस भी नहीं थी, इतना महत्त्वपूर्ण समझा था—लेकिन उन्होंने समझा तो था ही—बच्चे भी बड़े हो रहे थे!) हर प्रकार की तैयारियां पूरी कर ली गई थीं, लेकिन जब वे कातका को बेदखल करने आए तो उसने उन्हें चरका दे दिया। उसने दावा किया कि वह गर्भवती है। उन्होंने जब जाँच कराने का आग्रह किया तो उसने एक सर्टीफिकेट पेश कर दिया। उसकी चाल कामयाब रही। ऐसा लगता था कि उसने पूरी-पूरी मोर्चाबन्दी कर ली है।

एक गर्भवती स्त्री को मकान से बेदखल करना कानून के विरुद्ध था। इसलिए वे उसे अगली सर्दियों में ही मकान से निकलवा सके। कई महीने तक उन्हें वह सहन करनी पड़ी थी—वह अपने पेट में बच्चे को पालती रही और बाद में उसने प्रसव की छुट्टियां भी वहीं काटीं। हां, इस दौरान कापा ने उसे उसकी रसोई से बाहर नहीं निकलने दिया, और आवा, जो इस समय तक चार वर्ष की हो चुकी थी, उसे अजीबो-गरीब तरीके से परेशान करती रहती थी और उसके बरतनों तक में थूक दिया करती थी।

रूसानोव का आखिर डर क्या था? वह यहां वार्ड के अंधेरे में, जहां लोग आहिस्ता-आहिस्ता सांस ले रहे थे और हल्के-हल्के खर्राटे भी ले रहे थे, पीठ के बल लेटा हुआ था। लॉबी में नर्स की मेज़ पर लैम्प ज़रूर जल रहा था लेकिन दरवाजे के कुहराई शीशे में उसका मद्धम-सा प्रकाश ही छन-छन कर आ रहा था। उसका दिमाग साफ था और उसे नींद भी नहीं आ रही थी। वह सोच रहा था कि रोदीचेव और गुजुन के साये उसे आखिर इतना परेशान क्यों कर रहे हैं। अगर वे दूसरे लोग भी, जिनका अपराध सिद्ध करने में उसने सहायता की थी, वापस आ गए तो क्या वह उनसे भी डरेगा? उदाहरण के लिए एडवर्ड क्रिस्तोफोरोविच को ही लिया जा सकता है, जिसका उल्लेख रोदीचेव ने उस दिन बालकनी में किया था। वह एक इंजीनियर था जिसका पालन-पोषण बुर्जुआ वातावरण में हुआ था। उसने मज़दूरों के सामने पावेल को अहमक और गुंडा कहा था। (बाद में उसने अपना यह अपराध स्वीकार कर लिया था कि वह पूंजीवादी व्यवस्था की पुर्नस्थापना के स्वप्न देखा करता था।)—और वह शार्टहैंड-टाइपिस्ट जिसका यह अपराध सिद्ध हो गया था कि उसने पावेल निकोलाएविच के सरक्षक एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी के भाषण को तोड़ा-मरोड़ा था। उसने उसके नाम ऐसे शब्द लिख दिए थे जो उसने अपने भाषण में कहे ही नहीं थे। और वह खरदिमाग अकाउन्टेन्ट! (पता चला था कि उसका बाप एक पादरी था और इसके बाद तो उसका अपराध सिद्ध करने में एक मिनट भी नहीं लगा था।) येलचांस्की और उसकी पत्नी भी···और फिर दूसरे लोग?···

पावेल निकोलाएविच उसमें से किसी से भी भयभीत नहीं था। उसने उन सबका अपराध सिद्ध करने में सहायता की थी और जैसे-जैसे समय बीतता गया था, वह यह काम और अधिक साहस के साथ खुले आम करने लगा था। दो अवसरों पर तो उसने अपराधियों का सामना भी किया था और अपनी बुलंद आवाज में उनको अपराधी ठहराते हुए उनकी भर्त्सना की थी। उस समय ऐसी बात को लज्जाजनक बिलकुल नहीं समझा जाता था। उस बढ़िया और सम्मानजनक दौर में—अर्थात् १९३७-३८ के दौरान सामाजिक वातावरण अत्यधिक साफ-सुथरा था जिसमें व्यक्ति आसानी से सांस ले सकता था। झूठे

और मिथ्या आरोप लगाने वाले लोग, वे सब लोग जो अपनी आलोचनाओं में कुछ ज्यादा ही निडर हो गए थे, और काइयाँ बुद्धिजीवी सबके सब लापता हो गए थे। उन्होंने अपनी जुबान पर ताले लगा लिए थे और दबे पड़े थे। जबकि सिद्धान्तवादी, वफादार और सुस्थिर चित्त वाले लोग—जैसे कि रूसानोव के मित्र और स्वयं रूसानोव अपने सर ऊंचा उठाये सम्मान के साथ चल-फिर रहे थे।

अब जमाना बदल गया है। माहौल परेशानकुन है और गैर सेहतमन्द। शुरू के दिनों के सबसे अच्छे नागरिक कारनामे अब लज्जा का विषय बन गए हैं। क्या उसे अब अपनी खाल की फिक्र करनी होगी ?

फिक्र ? डर ? क्या बकवास है ? रूसानोव ने अपने समूचे जीवन पर दृष्टि डाली तो उसे कायरता का कोई भी ऐसा उदाहरण न मिला जिसके आधार पर वह अपनी भर्त्सना करता। सच तो यह है कि उसके लिए डरने की कोई वजह थी ही नहीं। शायद एक पुरुष के रूप में वह कोई ज्यादा बहादुर नहीं था, लेकिन उसे कोई ऐसा मौका भी याद नहीं आया जब उसने कायर होने का प्रमाण दिया हो। यह तर्क भी आधारहीन था कि अगर उसे मोर्चे पर लड़ना पड़ जाता तो वह डर जाता। बात सिर्फ इतनी सी थी कि वह एक मूल्यवान और अनुभवी अफसर था। इसी आधार पर उसे मोर्चे पर नहीं भेजा गया था। यह कहना भी किसी तरह सही नहीं था कि बमबारी के दौरान या एक जलती हुई इमारत में उसका हौसला पस्त हो जाता। उसने 'क—' को बमबारी शुरू होने से पहले ही छोड़ दिया था और वह आग की लपटों में भी कभी नहीं घिरा था। इसी तरह वह न्याय या कानून से भी कभी नहीं डरा क्योंकि कानून को उसने कभी तोड़ा नहीं था और न्याय तो सदा ही उसका संरक्षण और समर्थन करता रहा था। वह जनमत से भी कभी नहीं डरा था क्योंकि जनमत तो हमेशा ही उसके पक्ष में रहा था। रूसानोव के विरुद्ध कोई अनुचित लेख किसी स्थानीय समाचा-पत्र में प्रकाशित हो ही नहीं सकता था क्योंकि कुजमा फोतिएविच या नील प्राकोफिच उसे छपने ही न देते और जहां तक राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों का संबंध था वे भला रूसानोव के स्तर तक कैसे उतरते ? इसलिए वह समाचार पत्रों से भी कभी भयभीत नहीं हुआ था।

जब उसने नाव से काले समुद्र का सफर किया था उस समय भी वह अपने नीचे की गहराइयों से लेशमात्र भी नहीं डरा था। यह कहना कठिन था कि वह ऊंचाइयों से डरता है कि नहीं क्योंकि वह इतना गावदी कभी नहीं रहा था कि वह चट्टानों या पहाड़ों पर चढ़ता फिरे और न उसके काम की प्रकृति ऐसी थी कि उसे पुल बनाने पड़ें।

रूसानोव के काम की प्रकृति कई वर्षों से—लगभग बीस वर्षों से—

व्यक्तिगत रिकार्डों का प्रशासन था। इस काम को विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न नामों से पुकारा जाता था लेकिन मूल रूप में काम की प्रकृति एक ही थी। सिर्फ जाहिल और गैर जानकार बाहर वाले ही इससे अपरिचित हो सकते हैं कि यह काम कितना नाजुक और कितना लाभदायक था और उसके लिए कितनी प्रतिभा-क्षमता आवश्यक थी। यह काव्य की एक ऐसी विद्या थी जिस पर अब तक स्वयं कवियों को भी सिद्धहस्तता प्राप्त नहीं हो पाई थी। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में रिकार्ड के लिए अनेक फार्म भरता है और प्रत्येक फार्म में अनेक प्रश्न होते हैं। किसी भी फार्म के किसी भी प्रश्न का वह जो उत्तर देता है वह एक छोटा-सा धागा या सूत्र बन जाता है जो उसे निजी रिकार्ड प्रशासन के स्थानीय केन्द्र से स्थाई रूप से जोड़े रहता है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति से सैंकड़ों धागे निकलते हैं और ये धागे मिलकर लाखों-लाख हो जाते हैं। अगर ये धागे अचानक दिखाई देने लगें, तो सारा आकाश मकड़ी का एक जाला नजर आने लगे और अगर वे गुंथ कर ऐलास्टिक के फीतों का रूप ग्रहण कर लें तो बसों, ट्रामों और यहां तक कि मनुष्य भी अपने चलने-फिरने की क्षमता खो बैठें—हवा तक के लिए फटे-पुराने अखबारों या पतझड़ के पत्तों को शहर की गलियों में उड़ाए लिए फिरना असंभव हो जाए। ये धागे न तो दिखाई ही देते हैं और ना गुंथे हुए ठोस रूप में हैं फिर भी प्रत्येक व्यक्ति को निरन्तर उनके अस्तित्व का अहसास रहता है। तात्पर्य यह है कि वह चीज़ जिसे पूरी तरह पाक-साफ रिकार्ड कहा जाता है हाथ आने वाली चीज़ नहीं है। यह एक आदर्श है—एक परम सत्य जिसका अस्तित्व केवल काल्पनिक है। किसी भी जीवित व्यक्ति के नाम के आगे कोई-न-कोई नकारात्मक या शंकास्पद चीज हमेशा जोड़ी जा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति से कोई-न-कोई अपराध होता ही है और कोई-न-कोई बात ऐसी होती है जिसे वह छुपाना चाहता है। कोई आपत्तिजनक चीज़ ढूंढने के लिए आवश्यकता केवल इस बात की होती है कि रिकार्ड की कड़ी छान-बीन की जाए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने इन अदृश्य धागों का स्थायी रूप से अहसास रहता है। और उन लोगों के लिए और उनके सत्ताधिकार के लिए, जिनके हाथ में इन धागों का प्रशासन होता है और जो व्यक्तिगत रिकार्डों के प्रशासन के जो अपने आपमें एक बहुत ही उलझा हुआ विज्ञान है अधिकारी होते हैं, उसके दिल में सम्मान पैदा हो जाता है।

अगर एक और रूपक इस्तेमाल किया जाए—एक बार संगीत क्षेत्र का—तो कहा जा सकता है कि रूसानोव की स्थिति इस प्रकार की थी कि उसके हाथ में एक्साइलोफोन की कुंजियों[1] का एक पूरा सैट था। अपनी इच्छा, पसन्द

---

१. Keys

या आवश्यकतानुसार वह उनमें से किसी को भी बजा सकता था। हालांकि वे सभी लकड़ी की बनी थीं, फिर भी उनमें से प्रत्येक से पृथक् स्वर निकता था।

कुछ ऐसी कुंजियां थीं—कुछ ऐसी तरकीबें थीं जिन्हें बड़े सलीके और कारगर ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता था। उदाहरणार्थ अगर वह किसी कामरेड को यह बताना चाहता कि वह उससे असन्तुष्ट है या उसे सिर्फ एक चेतावनी देना चाहता या उसे उसकी औकात का अहसास कराना चाहता तो रूसानोव यह काम एक खास अन्दाज में गुड मार्निंग कहकर अन्जाम दे लेता था और वह गुड मार्निंग अलग-अलग लहज़ों में कहने का माहिर था।

जब दूसरा व्यक्ति उसको गुड मार्निंग कहता (और ज़ाहिर है कि गुड मार्निंग पहले दूसरे ही आदमी को करना होता था) तो रूसानोव उसका जवाब ठंडे और कारोबारी अन्दाज में बिना मुस्कराहट के दे देता था वह अपनी भौंहों को सिकोड़ लेता (इसका अभ्यास वह अपने दफ्तर में शीशे के सामने खड़े होकर किया करता था) और जवाब देने में कुछ देर कर देता जैसे सशोपंज मैं पड़ा हुआ हो कि उसे व्यक्ति विशेष को गुड मार्निंग कहना चाहिए कि नहीं। वह इसका अधिकारी भी है कि नहीं। इस प्रदर्शन और दुविधा के बाद ही उसके गुड मार्निंग का जवाब देता—कभी अपना सिर पूरी तरह उसकी ओर घुमाकर कभी थोड़ा-सा घुमाकर और कभी ज़रा-सा भी घुमाए बिना। यह थोड़ी-सी दुविधा सदा ही अपना रंग दिखाती थी। स्टाफ का प्रत्येक सदस्य जिसे इस दुविधा या ठंडेपन से अपने अभिवादन का उत्तर पाता अपने दिमाग पर ज़ोर डालकर सोचने लगता कि उससे कौन-सा अपराध हुआ है। एकबार संदेह का यह बीज पड़ जाने पर इस बात की पूरी संभावना थी कि वह गलत कदम न उठाए जिसे बस वह उठाने ही जा रहा था और जिसके बारे में पावेल रूसानोव को बाद में जाकर ही पता चलता।

कभी-कभी वह एक और तरीका भी अपनाता जो थोड़ा-सा सख्त था। वह उस व्यक्ति विशेष से मिलता (या उसे फोन करता था या फिर विशेष रुप से उसे बुलवा लेता) और कहता, 'क्या तुम कल सुबह दस बजे मुझसे मिलने आ सकते हो ?' जाहिर है कि वह व्यक्ति यह जानने के लिए व्यग्र हो उठता कि उसे क्यों बुलाया जा रहा है और इंटरव्यू से जल्दी फारिग होने की नीयत से हमेशा यही कह उठता 'क्या मैं अभी नहीं आ सकता ?' 'नहीं, तुम इस वक्त नहीं आ सकते हो।' रूसानोव कोमल स्वर में लेकिन रुखाई के साथ कहता। वह यह कभी न बताता कि उसे कोई और काम है या वह किसी कॉनफ्रेन्स में भाग लेने जा रहा है। वह इस प्रकार का कोई साफ या सीधा कारण हरगिज न बताता जिससे उस व्यक्ति की बेचैनी खतम हो जाती। उसकी इस चाल का असली मकसद भी यही होता था। तुम इस वक्त नहीं आ सकते,' वह ये शब्द कुछ इस ढंग से कहता जैसा उनमें विभिन्न अर्थ छुपे हों और वे सब उस व्यक्ति

के अनकूल न हों। बदहवासी की हालत में या अपनी अनुभवहीनता के कारण वह व्यक्ति यह पूछ बैठता कि 'आखिर बात किस बारे में करनी है ?' 'यह तुम्हें कल खुद पता चल जाएगा,' पावेल निकोलाएविच की नर्मो-नाजुक अवाज इस मूर्खतापूर्ण प्रश्न को हमेशा टाल जाती। लेकिन उस समय से लेकर दूसरे दिन सुबह दस बजे तक का समय काफी लंबा होता था और इस बीच बहुत कुछ हो सकता था। उस व्यक्ति को अपना दिन का काम पूरा करना होता था घर जाना होता था, अपने परिवारों के सदस्यों से बातचीत करनी होती थी, शायद सिनेमा जाना होता था या अपने बच्चों के स्कूल में अभिभावक संघ की बैठक में भाग लेना होता था और अंत में सोना होता था (कुछ लोग सो पाते और कुछ को नींद ही नहीं आती) और अगली सुबह अपना नाश्ता निगलना था जबकि इस सारे अरसे में बस एक यही सवाल उसके दिमाग को बेंधता रहता—'आखिर वह मुझसे मिलना क्यों चाहता है ?' ये लंबे घंटे उसके दिल में अपने प्रति एक सामान्य प्रकार का अविश्वास पैदा करने और पश्चात्ताप करने के लिए पर्याप्त होते और उनमें वह यह कसम जरूर खा लेता कि भविष्य में वह बैठकों में अपने अधिकारियों के विरुद्ध कभी खड़ा नहीं होगा। और जब सुबह दस बजते तो हो सकता है कि बात सिर्फ इतनी सी होती कि उसकी जन्म तिथि या उसके डिप्लनोमा के नंबर की जांच की जाती थी।

ये सुर—ये तरीके तब तक सक्रिय रहते जब तक कि उनमें से कठोरतम और तेजतरीन धुन न निकलने लगती—'सरगेई सरगेईविच (स्थानीय सर्वोच्च अधिकारी और विभाग का निदेशक) चाहते हैं कि तुम अमुक तिथि तक यह फार्म भर दो,' रूसानोव एक फार्म उस व्यक्ति को देते हुए कहता लेकिन यह फार्म कोई साधारण फार्म न होता था। रूसानोव की अलमारी में जितने भी फार्म और जितनी भी प्रश्नावलियां थीं उनमें यह सार्वाधिक पेचीदा, विस्तृत और सर्वाधिक अप्रीय फार्म था उदहरणार्थ, प्रत्येक व्यक्ति को गुप्त फाइलें देखने का अधिकार देने से पहिले उससे यह फार्म भरवाया जाता था। बहुत संभव है कि उस व्यक्ति का गुप्त फाइलों तक पहुंचने का प्रश्न ही न उठता और यह भी संभव था कि सरगेई सरगेईविच को इस सिलसिले में कुछ भी मालूम न हो लेकिन प्रत्येक व्यक्ति सरगेईविच से इतना भयक्रांत था कि उसके पास जाकर पूछने की हिम्मत ही न होती। वह व्यक्ति फार्म लेता और ऊपर से काफी साहसी दिखाई देने की कोशिश करता लेकिन वास्तविकता यह होती कि अगर उसने रिकार्डों के विभाग से अभी तक कोई बात छुपा रखी होती तो भीतर बाहर हिल उठता। यह प्रश्नावाली सामने होने पर कुछ भी छुपा पाना असंभव था। रिकार्डों के विभाग में यह प्रश्नावली सर्वाधिक प्रभावकारी और सर्वोत्तम थी।

इस प्रश्नावली की सहायता से रूसानोव ने कई स्त्रियों को उनके पतियों

से, जिन्हें धारा ५८[1] के अधीन बंदी बनाया गया था' तलाक लेने पर विवश कर दिया था। वे स्त्रियां चाहे कितनी ही चालाकी बरततीं, अपने पार्सल कितने ही अलग-अलग नामों से भेजतीं—कितने ही अलग-अलग शहरों से भेजतीं या फिर वे पार्सल भेजती ही नहीं, लेकिन इस फार्म के प्रश्नों का ढंग कुछ इतना पेचीदा था कि कोई भी झूठ बोलना—कोई भी बात छुपा पाना एकदम असंभव था। स्त्री के लिए एकमात्र रास्ता यही था कि वह वैधानिक रूप से तलाक ले ले। इस प्रकार के मुकदमों के फैसलों का तरीका भी एकदम सीधा सादा था। न्यायालय के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह तलाक के लिए कैदी की सहमति जाने। उसे तो यह सूचना तक देना आवश्यक नहीं था कि तलाक हो गया है। रूसानोव की इस बात में गहरी दिलचस्पी थी कि इस प्रकार के तलाक ज़रूर हों और स्त्री को अपराधी के घिनौने चंगुल से एक ऐसी औरत को जो समाज के सामूहिक मार्ग से अभी भटकी नहीं है, मुक्ति मिल जाये। लेकिन ये प्रश्नावलियां कभी इस्तेमाल नहीं की गई थीं और सरगेई सरगेईविच को भी वे केवल मज़ाक में ही दिखाई जाती थीं।

उसके काम का काव्यात्मक पहलू यह था कि वह व्यक्ति आपकी मुट्ठी में आ जाता था और आपको मुट्ठी बन्द करने तक की ज़रूरत न होती थी।

सामूहिक उत्पादन व्यवस्था में रूसानोव को जो प्रभावी, पृथक और लगभग अलौकिक स्थिति प्राप्त थी उसके आधार पर उसे जीवन की वास्तविक प्रक्रिया का गहरा और संतोषप्रद ज्ञान प्राप्त हो गया था। वह जीवन जिससे प्रत्येक व्यक्ति परिचित था—काम, कॉनफ्रेन्स फैक्टरी के समाचार बुलेटिन, विभिन्न स्थानों पर टांगी गई स्थानीय ट्रेड यूनियनों की घोषणाएं, विभिन्न प्रकार के लाभों के लिए आवेदन पत्र, कैंटीन और फैक्टरी-क्लब—यह सब कुछ अवास्तविक था और केवल अदीक्षित लोगों को ही वास्तविक लगता था। जीवन की वास्तविक दिशा का निर्णय किसी प्रकार के मुख प्रचार बिना शांत कार्यालयों में दो या तीन व्यक्तियों द्वारा, जो एक दूसरे को अच्छी तरह समझते थे, चुपचाप कर दिया जाता था—और कभी-कभी तो ये फैसले फोन पर ही कर दिए जाते थे। वास्तविक जीवन की लहरें उन खुफिया कागजों पर दौड़ती थीं जो रूसानोव और उसके साथियों के ब्रीफकेसों में बहुत नीचे दबे होते थे। वर्षों तक यह जीवन चुपचाप व्यक्ति का पीछा करता रहता—और फिर अचानक वह अपने आपको प्रकट करता और अपने भूमिगत साम्राज्य से फुंफकारता हुआ सामने आ जाता—अपनी विषैली फुंफकारों से वह व्यक्ति को झुलस कर रख देता और फिर गायब हो जाता—और किसी को यह तक पता न चल पाता कि वह कहां चला गया है। उसके बाद सतह पर तो हर चीज़ ज्यों-की-त्यों

---

१. तत्कालीन दंड-संहिता की सर्वप्रमुख राजनैतिक धारा। (अनुवादक की टिप्पणी)

रहती—क्लब, कैंटीन, लाभों के लिए आवेदन पत्र, समाचार-बुलेटिन, काम—लेकिन जब मज़दूर फैक्टरी के नाके को पार कर बाहर आते तो एक व्यक्ति लापता होता—बर्खास्त या समाप्त।

रूसानोव का कार्यालय उस सारे साज समान से पूरी तरह लैस था जिसकी उसे अपने इस काव्यात्मक और राजनीतिक और नाजुक काम के लिए जरूरत होती थी। उसका कमरा हमेशा अलग-अलग रहता। शुरू के वर्षों में उसके दरवाजे पर चमड़ा मढ़ा होता था जिस पर जगह-जगह चमकदार कीलें लगी हुई थीं लेकिन जब समाज अधिक अमीर हो गया तो उसके कमरे को नए सिरे से सजाया-संवारा गया और नए उपकरणों से लैस कर दिया गया। दरवाजे पर एक सुरक्षात्मक उपकरण लगा दिया गया—यह सुरक्षात्मक उपकरण छोटा-सा लॉबीनुमा कमरा था। देखने में यह लॉबी एकदम सादा नजर आती थी जिसमें कहीं कोई चालाकी नहीं थी। यह तीन फीट से अधिक लंबी नहीं थी और अपने आने वालों को पहला दरवाजा बंद करने और और दूसरा दरवाजा खोलने में एक-दो सैकिंड से अधिक समय नहीं लगाता था, लेकिन जिस व्यक्ति को एक गंभीर इन्टरव्यू का सामना करना हो उसे ये कुछ सैकिंड ही कैद की एक पूरी मियाद लगाते थे। वहां न रोशनी थी न हवा—और इस तरह उस व्यक्ति के महत्त्व की तुलना में जिसके ऑफिस में उसे जल्द ही दाखिला होना था, उसे अपनी महत्त्वहीनता का पूरा-पूरा अहसास हो जाता था। अगर उसके दिल में कोई साहस या अपने व्यक्तित्व महत्त्व के कोई विचार होते भी तो वह उन्हें लॉबी में ही भूल जाता।

यह स्वाभाविक ही था कि लोगों को पावेल निकोलाएविच के कार्यालय में सामूहिक रूप से नहीं जाने दिया जाता था। उन्हें एक-एक करके ही अन्दर जाने दिया जाता था—और वह भी तब जबकि उन्हें बुलाया गया हो या फोन पर आने की इजाज़त दे दी गई हो।

इस व्यवस्था और कार्यालय में प्रवेश के इस नियम से रूसानोव के विभाग के समुचित कर्त्तव्य पालन में अत्यधिक सहायता मिलती थी। सुरक्षात्मक लॉबी के बिना रूसानोव को नुकसान हो सकता था।

वास्तविकता के सभी पहलुओं की द्वान्द्वात्मकता की अन्योन्याश्रितता के कारण पावेल निकोलाएविच के सरकारी कामकाजी रवैये का उसकी सामान्य जीवन-पद्धति पर भी प्रभाव पड़ा। ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गए धीरे-धीरे उसके और कैपीतोलीना मैत्वेएवना के दिल में उत्पादी जनसमूह और धक्कम-धक्का करती भीड़ के प्रति घृणा पैदा होने लगी। रूसानोव-दम्पत्ति को ट्रामें, बसें और ट्रॉली बसें घृणास्पद और अरुचिकर लगने लगीं। लोग हमेशा एक दूसरे को धकेलते रहते—और उस समय तो यह धक्कामुक्की पूरे जोरों से चल रही होती जबकि वे उनमें सवार होने की कोशिश कर रहे होते। राजगीर और दूसरे

मज़दूर हमेशा ही अपने मैले कुचैले ऊपरी जामों के साथ सवार होते। आपके कोट को किसी भी वक्त उनका मैल लग सकता था और मिट्टी चूना भी। लेकिन सबसे खराब बात तो उनकी यह लाइलाज आदत थी कि वे दोस्ताना अंदाज में आपके कंधे पर थपकी देते हुए आपसे कहते कि उनका टिकट या रेजगारी गाड़ी में उन तक पहुंचा दी जाए। इसका मतलब यह था कि आप उनके अरदली हैं और आपका काम यह है कि आप निरन्तर उनकी चीज़ों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाते रहें। दूरियां इतनी अधिक थीं कि शहर में पैदल नहीं आया-जाया जा सकता था—वैसे भी पैदल आना-जाना उसकी पोज़ीशन के आदमी के सम्मान के प्रतिकूल ही पड़ता था। इसके अलावा यह भी था कि पैदल चलने वालों के बीच किसी भी वक्त आपको किसी अनपेक्षित स्थिति का सामना करना पड़ सकता था। इसलिए रूसानोव-दम्पत्ति ने धीरे-धीरे मोटर कारों से सफर करना शुरू कर दिया—पहले ऑफिस की कारों और टैक्सियों से और फिर अपनी निजी कार से। स्पष्ट ही है कि रेल-गाड़ियों—यहां तक कि रिज़र्वड सीटों पर भी सफर करना उनके लिए असहनीय होने लगा क्योंकि वहां भी आम लोगों का हुजूम भेड़ की खाल के कोठों में घुसा अपने डोल और थैले उठाए घुस आता था। अब रूसानोव-दम्पत्ति रिजर्वड डब्बों में ही सफर करता था। स्वाभाविक ही था कि जब वह किसी होटल में ठहरता तो वह पहले से ही अपने लिए कमरा रिज़र्व करा लेता था—इस तरह सार्वजनिक या सामूहिक कमरे में ठहरने का खतरा उसके सामने आ ही नहीं सकता था। यह भी स्वाभाविक ही था कि वे हर किसी रैस्ट हाउस में नहीं चले जाते थे, बल्कि सिर्फ उन्हीं जगहों पर जाते थे जहां लोग उन्हें जानते और उनका सम्मान करते थे तथा इस बात का इंतजाम रखते थे जब आप समुद्र तट पर और सैर को जाएं तो एक ऐसी बाड़ लगा दी जाए जिससे कि आप आम जनता से अलग-अलग बने रहें।—और जब डाक्टरों ने कैपीतोलीना मैत्वेएवना को परामर्श दिया कि उसके लिए सैर करना ज़रूरी है तो इस प्रकार के विश्राम स्थलों के अतिरिक्त, जहां वह अपने सम्पान-प्रतिष्ठा के समकक्ष लोगों के बीच चल फिर सकती थी, वह और कहीं भी सैर को नहीं जा सकती थी।

रूसानोव दम्पत्ति को अपनी जनता—अपनी महान् जनता से प्यार था। वे जनता के सेवक थे—और जनता के लिए प्राण तक देने को तैयार थे।

लेकिन जैसे-जैसे दिन गुजरते गए, उन्होंने अनुभव किया कि उनके लिए वास्तविक मनुष्यों को सहन कर पाना अधिकाधिक दुष्कर होता जा रहा है—ये वे ही मनुष्य थे जो हमेशा प्रतिरोध करते थे, जो हमेशा अपने लिए कुछ-न-कुछ मांगते रहते थे और जो कुछ उनसे कहा जाता था, वे कभी नहीं करते थे।

इस तरह वे लोगों से—उन लोगों से जो मैले-कुचैले कपड़े पहनते थे,

बदतीमज़ थे या थोड़ा बहुत नशे में भी धुत्त रहते थे—चौकस रहने लगे। शहर के पास की बस्तियों में चलने वाली रेल गाड़ियों में, बीयर की दूकानों पर, बसों में और रेलवे स्टेशनों पर किसी भी समय इन लोगों से आपका सामना हो सकता था। मैले-कुचैले कपड़े पहनने वाला व्यक्ति हमेशा खतरनाक होता था क्योंकि इसका मतलब ही यह था कि उसमें अपने उत्तरदायित्व के प्रति समुचित विवेक का अभाव है। इसके अतिरिक्त, वह एक ऐसा व्यक्ति भी होगा जिसके पास गंवाने को कुछ नहीं है—वरना वह अच्छे कपड़े जरूर पहनता। स्पष्ट ही है कि रूसानोव को गंदे कपड़े पहनने वाले लोगों से बचाने के लिए पुलिस और कानून—की सुरक्षा प्राप्त थी लेकिन दिक्कत थी कि यह सुरक्षा प्राय: देर से मिल पाती थी—यह अपराधी को अपराध करने के बाद ही दंड दे पाती। यों अपने तौर पर पावेल निकोलाएविच एकदम असुरक्षित था—न उसकी पोजीशन ही उसे कोई सुरक्षा प्रदान करती थी और न उसकी अतीत की सेवाएं ही। कोई भी गंवार अकारण ही उसका अपमान कर दे सकता था, उस पर गंदी-गंदी गालियों की बौछार कर सकता था, सिर्फ तफरीह के लि उसके मुंह पर मुक्का जड़ सकता था, उसके सूट को खराब कर सकता था और उसे ज़बरदस्ती छीन भी सकता था।

इस तरह रूसानोव दुनिया में हालांकि किसी भी चीज से नहीं डरता था, फिर भी लंपट और अर्ध मदहोश किस्म के लोगों से वह डर जरूर महसूस करने लगा था—और उसका वह डर सामान्य और तर्कसंगत भी था। अगर बात अधिक स्पष्ट शब्दों में कही जाए तो उसे डर मुक्के से लगता था—न जाने कब यह मुक्का सीधे उसके मुंह पर पड़ जाए।

यही कारण था कि रोदीचेव की वापसी की ख़बर ने उसे शुरू में इतना परेशान और अव्यवस्थित कर दिया था—रूसानोव ने कल्पना की थी कि रोदी-चेव सबसे पहले तह करेगा कि उसके मुँह पर एक मुक्का जड़ देगा। उसे रोदीचेव या गुजुन द्वारा कोई कानुनी कार्रवाई किए जाने का कोई डर नहीं था—कानूनी तौर पर तो उनका हाथ उस तक सम्भवत: कभी भी नहीं पहुंच सकता था, लेकिन अगर वे पहले ही की तरह हट्टे-कट्टे, स्वस्थ और मजबूत आदमी हुए और उनके दिल में यह समा गया कि उसकी थूथनी पर एक मुक्का जड़ दें, तो क्या होगा?

एक बुद्धिमान् और दृढ़ संकल्पी 'नए आदमी' के रूप में पावेल निकोलाएविच के लिए यह आवश्यक था कि वह इस डर पर काबू पाए—इस डर का गला घोंट दे।

पहले तो यह उसकी मात्र कल्पना ही हो सकती थी—यह संभव था कि अब रोदीचेव का कोई अस्तित्व ही न हो। खुदा न करे कि वह वापस आए! लोगों की 'वापसी' की ये तमाम कहानियाँ मात्र कपोल कल्पनाएं हो सकती

हैं। पावेल निकोलाएविच को महत्वपूर्ण घटनाओं की निरन्तर जानकारी रही थी, फिर भी उसे ऐसी कोई खुशफहमी नहीं थी कि जीवन कोई नया रूपाकार या चरित्र ग्रहण कर सकता है।

दूसरे, मगर रोदीचेव वापस आ भी गया है, तो भी वह यहाँ नहीं आएगा—वह 'क—' जाएगा। इसके अतिरिक्त, रूसानोव की खोज करने के अलावा और काम भी तो होंगे। उसे फूंक-फूंक कर कदम उठाने होंगे जिनसे कि उसे फिर से 'क—' से बाहर न निकाल फेंका जाए। तो पावेल निकोलाएविच का अनैच्छिक भय अनावश्यक ही था।

—और अगर उसने खोज शुरू भी की तो यहां तक पहुंचने के लिए उसे काफी समय की जरूरत होगी। उसे आठ प्रान्त पार करने होंगे और रेल का सफर कम-से-कम तीन दिन लेगा और अगर वह पहुंचा भी तो पहले रूसानोव के घर जाएगा—यहां अस्पताल में नहीं आएगा। पावेल निकोलाएविच ने अनुभव किया कि जब तक अस्पताल में है तब तक पर्याप्त सुरक्षित है।

सुरक्षित? क्या मज़ाक है? इस प्रकार की रसौली—और तुम अपने आपको सुरक्षित कहते हो?

बहरहाल, जब भविष्य इतना अनिश्चित हो तो मरना ही क्या बुरा है? हर वापस आने वाले से डरने की तुलना में तो यही बेहतर है कि आदमी मर जाए। उन्हें वापस आने देना अपने आप में कितना बड़ा पागलपन है! उन्होंने आखिर ऐसा क्यों किया? वे जहां थे, वहां के आदी हो चुके थे—वे अपने भाग्य से संतुष्ट थे, फिर उन्हें इसकी इजाज़त आखिर क्यों दी गई कि वे यहां आएं और लोगों का जीवन उथल-पुथल और अस्तव्यस्त कर दें?

ऐसा लगता था कि पावेल निकोलाएविच आखिर पूरी तरह थक गया है और अब सोने को तैयार है। उसे इसकी जरूर कोशिश करनी चाहिए कि नींद आ जाए।

लेकिन अभी उसे गलियारा पार करना था! क्लिनिक के नियमों में यह सर्वाधिक अप्रिय नियम था।

अपने शरीर को अत्यधिक सावधानीपूर्वक मोड़ते हुए उसने करवट बदली। रसौली ने उसकी गर्दन पर डेरा जमा रखा था और एक लोहे के घूंसे की तरह उस पर दबाव डाल रही थी। वह भरपूर कोशिश करके पलंग की मुसी हुई चादर से उठा, अपना पाजामा और स्लीपर पहने, चश्मा लगाया और चुपचाप घिसटता हुआ कमरे को पार करने लगा।

अपने मेज़ पर सतर्क बैठी अति संयमी और सांवली मारिया ने सतर्कतापूर्वक उसकी ओर नज़र घुमाई और उसे जाते हुए देखती रही।

जहां सीढ़ियां खत्म होती थीं वहां एक मोटा-ताजा, लंबी बांहों और लंबी टांगों वाला एक यूनानी, जो हाल ही में अस्पताल में आया था, अपने पलंग

पर दर्द से तड़प रहा था, वह लेट नहीं सकता था। वह कुछ इस तरह बैठा हुआ था जैसे उसका पलंग उनके लिए बहुत छोटा हो। अपनी निद्राहीन और भयाक्रांत आंखों से वह पावेल निकोलाएविच को जाते हुए देखता रहा।

सीढ़ियों के बीच के पड़ाव पर एक छोटा-सा पीला-सा आदमी, जिसके बालों में अब भी बड़ी सफाई से कंघी की हुई थी, अपने बिस्तर पर अधलेटा बैठा हुआ था। उसने सहारे के लिए दो अतिरिक्त तकिए लगा रखे थे और किसी चीज से जो वाटरप्रूफ कैनवस की थैली नजर आती थी ऑक्सीजन ले रहा था। उसके पलंग के पास रखी मेज पर संतरे और केक रखे थे और दही की एक बोतल भी रखी थी। लेकिन वह उन सबके प्रति एकदम उदासीन था।

नीचे के गलियारे में और भी पलंग लगे हुए थे और उन पर भी मरीज़ लेटे हुए थे। उनमें से कुछ सोये हुए थे। एक एशियाई प्रजाति की बूढ़ी स्त्री, जिसके बाल अव्यवस्थित ढंग से छितराए हुए थे, दर्द के मारे अपने तकिए पर लेटी हुई थी।

इसके बाद वह एक छोटे-से कमरे के पास से गुज़रा, जहां उन सब लोगों को जिन्हें ऐनीमा दिया जाना था—फिर चाहे वे कोई भी क्यों न हों—एक ही गंदे से कोच पर बिठाया हुआ था।

अंततः पूरी सांस खींच कर और जहां तक संभव हो सका उसे अन्दर ही रोक कर वह पाखाने में घुस गया। इस पाखाने में दीवारें उठाकर अलग-अलग चौकोर जगहें नहीं बनाई गई थीं—यहां, तक बैठने के लिए पायदान भी ठीक ढंग से नहीं बनाए गए थे। इस वजह से वह खासतौर पर अपने आपको असुरक्षित और पस्त महसूस करने लगा। अरदली दिन में कई बार जगह को साफ करते थे, लेकिन जितनी जल्दी वह जगह गन्दी हो जाती थी उतनी जल्दी साफ नहीं की जाती थी। खून, कै और गन्दगी यहां हर वक्त ही दिखाई देती थी। ज़ाहिर है कि इस पाखाने को ऐसे वहशी इस्तेमाल करते थे जो जीवन की सुख-सुविधाओं के आदी नहीं थे—और ऐसे मरीज़ भी जो अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रहे थे। उसे डॉक्टर से मिलना पड़ेगा जिससे कि डाक्टरों वाला पाखाना इस्तेमाल करने की इजाज़त मिल सके।

फिर भी इस अत्यधिक व्यावहारिक योजना के बारे में भी पावेल निकोलाएविच अर्ध-मन से ही सोच रहा था।

वह वापस लौटा ऐनीमा वाले कमरे के पास से गुज़रा, अस्तव्यस्त कज्जाक औरत के पास से गुजरा और गलियारे में सोने वाले मरीज़ों के पास से गुज़रा।

फिर वह उस अभागे व्यक्ति के पास से गुज़रा जो ऑक्सीजन ले रहा था।

सीढ़ियों के ऊपर से यूनानी ने कष्टपीड़ित फुसफुसाहट में अपनी खरखरी आवाज़ में पूछा—"अरे भाई ज़रा सुनो! क्या वे यहां सभी का इलाज कर देते हैं?—या कुछ लोग मर भी जाते हैं?"

रूसानोव ने व्यग्रता के साथ उसकी ओर देखा और उसकी इस मुद्रा ने उसे तत्काल चौकन्ना कर दिया। उसने अनुभव किया कि अपने सिर को अपने आप हिलाना-डुलाना इसके लिए अब संभव नहीं है। येफ्रेम की तरह अब उसके लिए भी अपने समूचे शरीर को मोड़ना आवश्यक था।

वह जल्दी-जल्दी अपने बिस्तर की तरफ लौटा।

अब वह किसी और चीज के बारे में कैसे सोच सकता था? अब वह किसी और से क्या डरता? वह किस पर भरोसा कर सकता था...?

उसका भाग्य तो यहां, यहां उसकी ठोड़ी और उसकी हंसुली के बीच था।

न्याय किया जा रहा था।

—और इस न्याय के विरुद्ध वह न अपने किसी प्रभावशाली मित्र को बुला सकता था, न अपनी पिछली सेवाओं का वास्ता दे सकता था, ना ही अपना कोई प्रतिवाद प्रस्तुत कर सकता था।

१५. अपना-अपना बोझ

"तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"छब्बीस !"

"अरे यह, अरे यह तो काफी उम्र है।"

"और तुम्हारी ?"

"मैं सोलह वर्ष का हूं। ज़रा सोचो तो सोलह वर्ष की उम्र में एक टांग गंवा देना कितना बुरा है !"

"वे कहां से काटना चाहते हैं ?"

"घुटने पर से—यह तय है—इससे कम तो वे कभी काटते ही नहीं, मैंने देख लिया है। आमतौर पर तो वे कुछ अधिक ही काट देते हैं। तो होगा यह कि यहां एक ठूंठ लटक रहा होगा..."

"तुम कृत्रिम टांग ले सकते हो। तुम अपने जीवन में क्या करने जा रहे हो ?"

"मेरी अभिलाषा विश्वविद्यालय में जाने की है।"

"किस विभाग में ?"

"दर्शन या इतिहास !"

"क्या तुम प्रवेश-परीक्षा पास कर लोगे ?"

"मेरा ख्याल है कि कर लूंगा। मैं घबराता नहीं—काफी ठंडे दिमाग का हूँ।"

"यह अच्छी बात है। कृत्रिम टांग से वहां कोई हानि नहीं होती। तुम काम कर सकोगे, अध्ययन कर सकोगे और सच्चाई तो यह है कि दूसरे लोगों की तुलना में कुछ अधिक गहनता के साथ अध्ययन कर सकोगे। तुम अपेक्षाकृत एक बेहतर विद्वान बन सकोगे !"

"और जीवन के बारे में क्या होगा—सामान्य जीवन के बारे में ?"

"तुम्हारा मतलब है, अध्ययन के अलावा ?—सामान्य जीवन से तुम्हारा तात्पर्य क्या है ?"

"तुम जानते ही हो !"

"तुम्हारा मतलब है—शादी ?"

"हां वह भी ?"

"तुम्हें कोई मिल ही जायेगी। प्रत्येक वृक्ष पर कोई-न-कोई चिड़िया जरूर बैठती है। खैर इसका अतिरिक्त रास्ता भी क्या है ?"

"मतलब ?"

"तुम या तो अपनी टांग बचा सकते हो या अपनी जिन्दगी।—क्यों, क्या ऐसा नहीं है ?"

"शायद ऐसा ही है। लेकिन अपने आप भी तो ठीक हो सकती है !"

"नहीं, थोमा ! "शायदों" की नींव पर पुल नहीं बनाए जा सकते हैं। "शायद," कहीं नहीं पहुंचाता—सिर्फ और अधिक "शायदों" पर ले जाकर छोड़ देता है। तुम इस प्रकार के सौभाग्य पर निर्भर नहीं कर सकते—ऐसा करना तर्कसंगत नहीं है। क्या वे तुम्हें बता सकते हैं कि तुम्हारी रसौली का नाम क्या है !"

"यह उन रसौलियों में से एक है जो ',एस ए" जाति की होती हैं।"

"इसका मतलब है सरकोमा। तुम्हें ऑपरेशन करना होगा।"

"क्या ? क्या तुम्हें इस बात का पूरा-पूरा विश्वास है ?"

"हां, मुझे विश्वास है। अगर वे मुझे बताएं कि मेरी टांग काटनी पड़ेगी, तो मैं उन्हें ऐसा कर लेने दूंगा—हालांकि मेरे समूचे जीवन का उद्देश्य चलते रहना है—पैदल और घोड़े की पीठ पर। जहां का मैं हूं वहां कारें किसी काम नहीं आतीं।"

"क्या अब वे तुम्हारा आपरेशन कराना नहीं चाहते ?"

"नहीं।"

"इसका मतलब क्या यह है कि मौका तुम्हारे हाथ से निकल चुका है ?"

"मैं अपनी बात किन शब्दों में रखूं ? यह पूरी तरह सही नहीं कि मैंने मौका गवां दिया है—या शायद एक तरह से मौका निकल भी चुका है। मैं अपने काम में बुरी तरह मगन था। शायद मुझे यहां तीन महीने पहले आ जाना चाहिए था, लेकिन मैं अपना काम छोड़ना नहीं चाहता था। चलते रहने और घुड़सवारी करते रहने के कारण मामला और भी बिगड़ गया। रगड़ हमेशा लगती रहती थी—उसमें पीप पैदा हो गई और फिर पीप बहने लगी। एक बार पीप निकल जाए तो आप बेहतर महसूस करते हैं और आप फिर से काम पर जुट जाना चाहते हैं। मैंने सोचा कि कुछ और इन्तजार कर लूं। अब भी इतनी खुजली होती है कि जी चाहता है कि अपने पैजामे का पांयचा फाड़ डालूं या नंगा बैठा रहूं।"

"क्या वे पट्टी नहीं बांधते ?"

"नहीं !"

"क्या मैं उसे देख सकता हूं ?"

"देख लो !"

....

"अरे—! यह क्या ? यह तो एकदम स्याह है।"

"यह तो मेरे जन्म से ही स्याह है। जन्म के समय यहां एक बड़ा-सा निशान था, लेकिन अब तुम उसे नहीं देख सकते। इसका हुलिया बिगड़ गया है।"

"यहां है क्या ?"

"तीन नालीदार जख्म—तीन बार जब इस फोड़े में से पीप बही तो वहां तीन घाव हो गये। द्योमा ! तुम देख रहे हो, मेरी रसली तुम्हारी रसौली से एकदम भिन्न है। मेरी रसौली काला सरतान (मीलानोब्लास्टोमा) है—एक बेहद बेरहम दरिन्दा। सिद्धांततः यह बीमारी लगने के बाद केवल आठ महीने ही बाकी रहते हैं।"

"यह सब तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मैंने यहां आने से पहले एक किताब में पढ़ा था। उसे पढ़ने के बाद ही मुझे पता चला कि मुझे क्या हुआ है ? लेकिन महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अगर मैं यहां जल्दी आ जाता तो भी ऑपरेशन न कर पाते। काला सरतान एक ऐसी खबीस बीमारी है कि जैसे ही उसे नश्तर लगाया जाता है उसकी दूसरी रसौलियां पैदा हो जाती हैं। आखिर अपने तौर पर यह भी तो जिन्दा रहना चाहती हैं। फिर चूंकि मैं कई महीने इन्तजार करता रहा, यह एकाएक मेरी उरुसंधि (ग्रोइन) में प्रकट हो गई।"

"लुदमिला अफानासएवना क्या कहती है ? उसने तुम्हें शनिवार को देखा था न ?"

"वह कहती है कि वे कोशिश करके कलिलस्वर्ण (कोलायडल गोल्ड) प्राप्त करेंगे। अगर वह मिल गया तो वे इसे मेरी उरुसंधि में ही रोकने में सफल हो सकते हैं और उसके बाद एक्स-रे विकिरण से वे मेरी टांग को मुलायम कर देंगे। इस तरह वे आने वाले वक्त को टालने···"

"लेकिन वे तुम्हें ठीक तो कर देंगे ?"

"नहीं द्योमा ! इलाज और ठीक होने का वक्त कभी का गुजर चुका है। काला सरतान का कोई भी मरीज ठीक होता ही नहीं। स्वस्थ हो जाने का एक भी उदाहरण नहीं है। मेरे मामले में टांग काटना भी काफी नहीं होगा और उसके ऊपर वे कहां से काटेंगे ? अब तो सवाल सिर्फ यह है कि आने वाले वक्त को कहां तक टाला जा सकता है—मुझे कितनी मुहलत मिल सकती है ?—महीनों की या वर्षों की ?"

"इसका मतलब···तुम्हारा मतलब है तुम जा रहे हो···?"

"हां, मेरा यही मतलब है। द्योमा मैंने उसे स्वीकार कर लिया है—लेकिन

जिन्दगी की ज्यादा मुहलत मिलने का मतलब हरगिज नहीं कि तुम सचमुच जी रहे हो। असल सवाल तो यह है कि मुझे कुछ उपलब्ध करने की मुहलत मिलेगी कि नहीं। मैं इस धरती पर कुछ उपलब्ध करना चाहता हूं। उसके लिये मुझे तीन वर्ष की जरूरत है। ये अगर मुझे तीन वर्ष दे दें तो फिर मैं और कुछ नहीं मांगूंगा। लेकिन तीन वर्ष से मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि मैं लेटा रहूँ। मेरा तात्पर्य है कि तीन वर्ष मैं मैदान में रहूँ।''

वादिम जत्स्यीर्को और द्योमा खिड़की के पास वादिम के पलंग पर बैठे अत्यधिक शांति के साथ बातें कर रहे थे। पास के पलंग पर ये फ्रेम ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसके कानों तक कोई बात पहुंच सकती थी। लेकिन आज सुबह से ही वह बुत बना लेटा हुआ था और छत से अपनी आंखें हटा नहीं रहा था। सम्भवतः रूसानोव भी कुछ सुन सकता था—और कई बार उसने जत्स्यीर्को की ओर मैत्रीपूर्ण निगाहों से देखा भी था।

''तुम्हारे विचार में तुम्हें समय किस काम के लिए चाहिए ?'' द्योमा ने माथे पर बल डालकर पूछा।

''देखो, समझने की कोशिश करो! मैं एक नये विवादास्पद सिद्धांत को परखना चाहता हूं। मास्को के महान् वैज्ञानिकों को इस पर संदेह प्रतीत होता है कि उसमें कोई सार है। मेरा यह कहना है कि रेडियधर्मी (रेडियोएक्टिव) जल की खोज के माध्यम से आप बहुधात्विक कच्ची धातु के भंडारों का पता लगा सकते हैं। तुम जानते हो 'रेडियधर्मी' का क्या तात्पर्य होता है ? सैंकड़ों प्रकार के विभिन्न संकेत होते हैं, लेकिन तुम कागज पर जो चाहो गलत या सही सिद्ध कर सकते हो। बहरहाल, मैं वही महसूस करता हूँ, जो वास्तव में है। मैं यह महसूस करता हूं कि मैं इसे व्यवहारतः सिद्ध कर सकता हूँ। मेरा मतलब यह है कि मुझे हर समय फील्ड में रहना पड़ेगा और उस जल के अतिरिक्त और किसी भी चीज की सहायता के बिना कच्ची धातु के किसी भण्डार का पता लगाना होगा। बेहतर तो यह होगा कि मैं एक से अधिक भण्डार का पता लगाऊं लेकिन काम का कोई ठिकाना नहीं। जब आप काम कर रहे हों तो आपको अपनी शक्ति असंख्य मामूली-मामूली-सी बातों पर बर्बाद करनी पड़ती है। उदाहरण के लिये कोई वैक्यूम पम्प ही नहीं है, सिर्फ एक केन्द्रापसारी पम्प है जिसे काम में लाने से पहले उसकी हवा निकालनी पड़ती है। लेकिन किस तरह ?—मुंह से। इसका मतलब यह है कि मुझे रेडियधर्मी पानी के घूंट भरने पड़ते हैं। बहरहाल, हम उसे पेय जल के रूप में प्रयोग में लाते ही हैं। किरगीज मजदूर कहते हैं कि 'हमारे बाप-दादा यह पानी कभी नहीं पीते थे—हम क्यों पिएं ? लेकिन हम रूसी उसे पीते हैं। मैं रेडियधर्मी से क्यों डरूं जबकि मुझे काले सरतान की बीमारी है? इस काम के लिए मैं सर्वोत्तम व्यक्ति हूँ।''

''तुम कुछ ज्यादा ही अहमक हो,'' येफ्रेम का संवेदनहीन और झुंझलाया

हुआ स्वर उनके वार्तालाप पर टूट पड़ा। उसने अपना सिर तक नहीं घुमाया था। स्पष्ट था कि वह उनके वार्तालाप का प्रत्येक शब्द सुनता रहा था। "अगर तुम मर ही रहे हो तो तुम्हें भूविज्ञान के ज्ञान की क्या आवश्यकता है? इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। तुम्हारे लिए बेहतर यह है कि तुम इस सवाल पर विचार करो, लोग जीते किस चीज के सहारे हैं?"

वादिम ने अपनी टांग को एक खास स्थिति में पकड़ लिया, लेकिन अपने सिर को उसने अपनी लचकीली गर्दन पर आसानी से घुमा लिया। जवाब देने से पहले उसकी काली और तेज आंखों में चमक आई और उसके होंठ कुछ कंपकंपाये लेकिन उसके स्वर में नाराजगी या अमैत्री की झलक तक न था। "इस सवाल का जवाब मुझे पहले ही से मालूम है। लोग रचनात्मक काम के सहारे जीते हैं। उससे अत्यधिक सहायता मिलती है। आदमी खाने-पीने तक के प्रति उदासीन हो जाता है।"

वह अपनी प्लास्टिक की पेंसिल को आहिस्ता-आहिस्ता अपने दांतों के बीच खटखटा रहा था और यह जानने का प्रयत्न कर रहा था कि वे लोग उसकी बात को कहां तक समझ पाये हैं।

"तुम इस छोटी-सी किताब को पढ़ो—तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी, तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे!" पोदुएव ने अपने शरीर को हिलाये-डुलाये बिना और जत्स्यीर्को की ओर देखे बिना ही अपने एक खुरदरे नाखून से उस छोटी-सी नीली किताब को, जो उसके हाथ में थी, बजाते हुए कहा।

"मैं इसे पहले ही पढ़ चुका हूं," वादिम की ओर से तीर की तरह जवाब आया। "यह हमारे युग की किताब नहीं है।। यह एकदम रूपाकारहीन और प्रतिभा शून्य है। हमारा कहना है—'कठोर परिश्रम करो!—और वह भी मात्र अपने लाभ के लिए ही नहीं।' बस इतनी ही सी तो बात है।"

रूसानोव आश्चर्यचकित रह गया। और यह पूछते समय चश्मे के पीछे छुपी उसकी आंखों में मैत्री की एक चमक आ गई—"मुझे बताओ, नौजवान, क्या तुम कम्युनिस्ट हो?"

वादिम ने बड़े सहज और सादा ढंग से अपनी आंखें रूसानोव की तरफ घुमाईं और विनम्र स्वर में कहा—"हां!"

"मुझे पूरा-पूरा विश्वास था कि तुम कम्युनिस्ट हो," रूसानोव ने अपनी उंगली उठाकर विजय भावना के साथ घोषणा की। वह एक अध्यापक प्रतीत हो रहा था।

वादिम ने द्योमा के कंधे को थपथपाते हुए उससे कहा—"अच्छा, अब तुम जाओ! मुझे कुछ काम करना है!"

वह अपनी 'भू रसायनिक तरीके' नामक पुस्तक पर झुक गया। उसमें कागज का एक टुकड़ा था जिसे वह पुस्तक-चिन्ह के रूप में इस्तेमाल कर रहा

था । उस कागज़ पर जगह-जगह सुन्दर हस्तलिपि में नोट्स लिखे हुए थे जिनके आगे बड़े-बड़े विस्मयबोधक और प्रश्न चिन्ह लगे हुए थे । वह पढ़ने लगा और उसकी पैंसिल उसकी उंगलियों में घूमने लगी ।

वह अध्ययन में पूरी तरह डूब गया । ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह वहां है ही नहीं । लेकिन पावेल निकोलाएविच, जिसके हौसले वादिम की ताईद ने बुलंद कर दिये थे, दूसरे इन्जैक्शन से पहले अपने हौसलों को कुछ और बुलंद करना चाहता था । उसने फैसला किया कि येफ्रेम को हमेशा के लिए पछाड़ दे जिससे कि उसे फिर निराशा और हताशा फैलाने की हिम्मत न हो । उसने येफ्रेम की आंखों में आँखें डालकर सारे कमरे में इस दीवार से उस दीवार तक देखकर उससे कहना शुरू किया—

"कामरेड पोदुएव, इस कामरेड ने तुम्हें अभी-अभी बहुत ही अच्छा सबक दिया है । तुम्हारी तरह बीमारी के सामने हथियार डाल देना गलत है और यह भी गलत है कि तुम्हारे हाथ जो पहली उपदेशात्मक पुस्तक लगे तुम उसके सामने घुटने टेक दो ! इसका मतलब है कि तुम·········कठपुतली हो।" वह 'दुश्मनों के हाथों की कठपुतली' कहना चाहता था । सामान्य जीवन में तो सदा ही कोई न कोई दुश्मन होता है, जिसका नाम लिया जा सकता था, लेकिन यहां—यहां अस्पताल में कौन हो सकता था ? तुम्हें जीवन को गहराई में देखना चाहिए—और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उपलब्धि की प्रकृति का अध्ययन करो । ऊंची उत्पादिता के लिए लोगों को क्या चीज प्रोत्साहित करती है ? गत विश्व युद्ध में जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिए लोगों को किस चीज ने प्रोत्साहित किया था ? या फिर दूसरा उदाहरण लें तो गृह-युद्ध में इतने उत्साह से लड़ने के लिए किसने प्रोत्साहित किया था ? वे लोग तो भूखे थे और उनके पास तो जूते, कपड़े और यहाँ तक कि समुचित हथियार तक न थे···"

सारे दिन पोदुएव एकदम निर्जीव-सा पड़ा रहा था । वह तो पलंगों के बीच की जगह में इधर से उधर चहल कदमी करने तक के लिए भी अपने बिस्तर से न उठा था और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह आम तौर पर जो कुछ किया करता था आज उसने वह कुछ भी नहीं किया था । वह इस बात के प्रति अत्यधिक सतर्क रहता था कि अपनी गर्दन को हिलाये-डुलाये नहीं और अपने शरीर को भी हिचकिचाते हुए हिलाता-डुलाता था, लेकिन आज तो उसने अपने हाथ-पांव तक न हिलाये थे। अपनी उंगली से बस किताब को टकटोरता रहा था । उन्होंने उसे सुबह का नाश्ता देने की कोशिश की थी, लेकिन उसने कह दिया था कि "अगर आज मेज़ पर बैठकर ढंग से नहीं खा सकते तो प्लेटें चाटने से क्या फायदा ?" नाश्ते के पहले और तब से लेकर अब तक वह एकदम निष्प्राण-सा पड़ा रहा था । अगर उसने बीच-बीच में पलकें न झपकी होतीं तो देखने वाले यही समझते कि वह पत्थर हो गया है ।

लेकिन उसकी आंखें खुली हुई थीं।

उसकी आंखें खुली थीं और ऐसा हुआ कि रूसानोव को देखने के लिए उसे एक इंच भी हिलना न पड़ा। दीवार और छत को छोड़ कर रूसानोव का पीला चेहरा ही एकमात्र एक ऐसी चीज थी जो उसकी दृष्टि-रेखा में आती थी।

उसने रूसानोव को उसे लैक्चर देते हुये सुना। उसके होंठ कुछ हिले और उनमें से वही अमैत्रीपूर्ण स्वर फूटा, लेकिन इस बार उसके शब्द पहले की तुलना में कहीं अधिक मद्धम थे—"क्या कहा? गृह-युद्ध? क्या तुम गृह-युद्ध में लड़े थे?"

पावेल निकोलाएविच ने आह भरी और कहा—"कामरेड पोदुएव, मेरी और तुम्हारी उम्र ऐसी नहीं कि हम उस युद्ध-विशेष में लड़ सकते!"

येफ्रेम नफरत से बुड़बुड़ाया—"समझ में नहीं आता कि तुम क्यों नहीं लड़े—मैं तो लड़ा था।"

पावेल निकोलाएविच ने चश्मे के पीछे विनम्रता से अपनी भौंहें उठाईं—"यह कैसे हो सकता है?"

"एकदम सीधी सादी बात है," येफ्रेम ने आहिस्ता-आहिस्ता कहा—अपने हर वाक्य के बीच में थोड़ा-थोड़ा सुस्ताते हुए—"मैंने पिस्तौल उठाया और चला दिया और जा लड़ा। वह अपने आप में कए अद्‌भुत अनुभव था। और फिर मैं कोई अकेला तो था नहीं।"

"—और वह कौन-सी जगह थी जहां तुम लड़े थे?"

"इज़ेव्स्क के पास। हम संविधान सभा[1] का सफाया कर रहे थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि सात इज़ेवस्क लोग मैंने अपने हाथ से मारे थे।"

हां, वह वास्तव में ही यह सोचता था कि उसे वे सातों के सातों अच्छी तरह याद हैं। वे सब के सब वयस्क थे—और वह सिर्फ एक लड़का था। उसे याद था कि उस विद्रोही नगर में उन सातों को किस तरह बारी बारी गली में लाया था और कहां उसने उन्हें गोली मारी थी।

चश्मे वाला व्यक्ति उसे किसी चीज के बारे में लगातार उपदेश दे रहा था, लेकिन आज उसे महसूस हो रहा था कि उसके कानों को किसी चीज ने बन्द कर रखा है और अगर वह थोड़ा बहुत उभर कर आये भी तो यह स्थिति कोई अधिक समय तक बनी नहीं रह पायेगी।

आज प्रात: जब उसने अपनी आंखें खोली थीं और बिना किसी विशेष कारण के खाली सफेद छत के एक टुकड़े पर निगाह पड़ी थी तो एक झटके के

---

१. रूसी संसद—संविधान सभा—के गैर-बोलशेविक बहुमत ने गृह-युद्ध के दौरान बोलशेविकों के विरुद्ध प्रतिरोध किया था जो अधिक समय तक नहीं चल पाया था। (अनुवादक की टिप्पणी)

साथ एक बहुत पहले भुलाई जा चुकी और एकदम एक अमहत्वपूर्ण घटना उसके मस्तिष्क में कौंध गई।

वह युद्ध के बाद के नवम्बर का कोई दिन था। बर्फ पड़ रही थी। जैसे वह जमीन को छूती, पिघलना शुरू कर देती और खुदती हुई खंदक से बाहर फेंकी हुई गर्म मिट्टी को छूकर तो वह एकदम ही पिघल जाती। गैस की पाइपों के लिये नालियाँ खोदी जा रही थीं। निर्धारित गहराई एक मीटर और अस्सी सेंटीमीटर थी। पोदुएव ने पास से गुजरते हुए देखा कि खुदाई निर्धारित गहराई तक नहीं की गई है। लेकिन फोरमैन ने उसके पास आकर कसमें खाईं कि समूची खंदक को निर्धारित गहराई तक खोदा जा चुका है। 'अच्छा तो क्या तुम यह जानते हो कि उसे मापा जाए? यह तुम्हारे लिए बुरा ही होगा। पोदुएव ने मापक गज उठाते हुये कहा। इस मापक पर प्रत्येक दस सेंटीमीटर पर एक निशान लगा था और हर पांचवाँ निशान अपेक्षाकृत कुछ लम्बा था। वे दोनों नाप-जोख करने चल दिये। गीली और घूमट मिट्टी में उनके पांव धंस-धंस जाते थे। पोदुएव ने अफसरों वाले ऊंची एड़ी के जूते पहन रखे थे और फोरमैन मामूली से फौजी जूतों में था। वे एक जगह रुके और उन्होंने खंदक मापी—एक मीटर, सत्तर सेंटीमीटर! वे आगे बढ़े। अगली जगह तीन व्यक्ति खुदाई कर रहे थे। उनमें से एक लम्बा पतला किसान था जिसके सारे चेहरे पर काली दाढ़ी उगी हुई थी। एक भूतपूर्व अधिकारी था जिसने अब भी अपनी फौजी टोपी पहन रखी थी—हालांकि उस पर जो लाल सितारा लगा था वह बहुत पहले ही फट चुका था। उसके किनारे पर बहुत अच्छा चमड़ा लगा हुआ था, लेकिन वह लाल पट्टी चूने और मिट्टी से अटी हुई थी। तीसरा व्यक्ति एक नवयुवक था जिसने कपड़े की टोपी और शहरी ओवरकोट पहन रखा था। (उन दिनों सबको जेल की वर्दियां दे पाना बहुत मुश्किल था—वे नियमानुसार कैदियों को दी भी नहीं जाती थीं।) इतना ही नहीं, ऐसा लगता था कि यह ओवरकोट उसके लिए तब बना होगा—जब वह स्कूल में पढ़ता था क्योंकि वह बहुत छोटा और तंग था और तार-तार हो चुका था। (येफ़ेम को लगा कि वह ओवरकोट को स्पष्टतः पहली बार देख रहा है।) पहले दो थके-हारे व्यक्ति अब भी खुदाई कर रहे थे—वे अपने फावड़ों से मिट्टी हटा रहे थे—हालांकि चिकनी मिट्टी फावड़े के लोहे के फल से चिपटी जाती थी। लेकिन तीसरा जो अभी नवयुवक था, अपने सीने के बल अपने फावड़े पर झुका हुआ था जैसे कि वहीं जम कर रह गया हो। बर्फ से सफेद हो गये उसके हाथ उसकी फटी पुरानी आस्तीनों में उड़से हुए थे और वह यों झूल रहा था जैसे कि कोई डरौना हो। उन्होंने इन काम करने वालों को दस्ताने नहीं दिये थे। भूतपूर्व सैनिक के पास ऊंची ऐड़ी के जूते थे, लेकिन बाकी दो के पास कार के टायरों के बने जूते ही थे जो शायद उन्होंने खुद ही बना लिये थे। 'तुम वहां मुंह फाड़े

क्यों खड़े हो ?' फोरमैन लड़के पर चिल्लाया—'क्या तुम चाहते हो कि सजा के तौर पर तुम्हारे राशन घटा दिया जाये। ठीक है यह मेरी ओर से सजा है।' नौजवान लड़के ने सिर्फ आह भरी और कुछ और झुक गया। ऐसा लगता था कि फावड़े का हत्था उसके सीने में अधिकाधिक गहरा घुसता जा रहा है। फोरमैन ने उसकी गद्दी पर घूंसा मारा। लड़के ने फुरफुरी-सी ली और फिर फावड़ा चलाने लगा।

उन्होंने नाप-जोख शुरू की। मिट्टी बाहर निकाल कर खंदक के दोनों सिरों पर डाल दी गई थी। यह देखने के लिये कि मापक का ऊपर वाला निशान ठीक कहां तक पहुंचता है, खंदक पर झुकना पड़ता था। भूतपूर्व सैनिक पास ही में खड़ा यह जाहिर कर रहा था कि वह नाप-जोख में सहायता कर रहा है लेकिन वह वास्तव में मापक को एक ऐसे कोण से थाम रहा था कि माप में दस सेंटीमीटर की वृद्धि हो जाये। पोदुएव ने उसे गंदी-गंदी गालियां दीं और मापक को स्वयं सीधा खड़ा कर दिया—परिणाम सामने था—एक मीटर, पैंसठ सेंटीमीटर।

"नागरिक कमांडर!" भूतपूर्व सैनिक ने विनय भरे स्वर में कहा—"कृपया कुछ सेंटीमीटर की हमें भी माफी दे दो! हमारे पेट खाली हैं, हमारी शक्ति जवाब दे चुकी है और मौसम जैसा है, वह तो आप खुद ही देख सकते हैं।"

"और तुम्हारी वजह से इल्जाम अपने सिर पर ले लूं? खूब! किसी और को फांसना! पूरी तरह बताया जा चुका है कि खुदाई कितनी गहरी होती है। हर ओर सीधी खुदाई कितनी होनी चाहिये और नीचे की ओर ढलवान नहीं होनी चाहिए!"

जैसे ही पोदुएव ने अपने आपको सीधा किया अपना मापक बाहर खींचा और पांव मिट्टी से बाहर निकाले, तीनों ने अपने मुंह उसकी ओर कर लिये। पहले की काली खशखशी दाढ़ी थी, दूसरा मरा-सा पिल्ला दिखाई देता था, तीसरे की अभी मसें ही भीगी थीं जो अभी तक उस्तरे से अपरिचित थीं। जब वे उसकी तरफ देख रहे थे तो उनके बर्फ ढंके चेहरों से यह बिलकुल जाहिर नहीं होता था कि वे जिन्दा हैं। उनमें से नौजवान लड़के ने अपने होंठ खोले और कहा—"बहुत अच्छा बॉस! एक दिन तुम्हारे मरने की बारी भी आयेगी।"

पोदुएव ने ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं लिखी थी जिससे कि उन्हें जान के लाले पड़ जाते। उसने केवल यह लिख दिया था कि वे अब तक कितना मेहनताना पा चुके हैं जिससे कि उनका दुर्भाग्य उसके माथे पर न पड़े। अतीत पर दृष्टिपात करते हुए उसे ऐसे कई लोग याद आए जिनके साथ उसने इन तीनों की तुलना में कहीं अधिक कठोर व्यवहार किया था। ये सब दस वर्ष पहले की बातें थीं। पोदुएव ने उसके बाद श्रम-शिविरों में काम नहीं किया। फोरमैन की छुट्टी कर दी गई थी। गैस के पाइप अस्थाइ रूप में ही बिछाये गये थे।

संभवत: अब उनमें से गैस नहीं गुजर रही थी और अब उन्हें किसी और काम के लिए ही इस्तेमाल किया जा रहा था, लेकिन जो बात उससे उस वक्त कही गई थी वह उसके दिमाग में जम गई थी और आज ऊपर आ गई थी। उसके कानों में आज पहला स्वर यही गूँजा—'बहुत अच्छा बॉस ! एक दिन तुम्हारे मरने की भी बारी आयेगी।'

इस याददाश्त से येफ्रेम बच नहीं सकता था—कहीं कोई बचाव था ही नहीं। क्या वह जिन्दा रहना चाहता था ? वह नौजवान लड़का भी तो यही चाहता था। क्या येफ्रेम लोह इच्छा-शक्ति वाला व्यक्ति था ? क्या उसने कोई नई बात सीख ली थी और क्या वह किसी दूसरे ढंग से जीना चाहता था ? बीमारी को इन बातों में से किसी में भी दिलचस्पी नहीं थी—उसके अपने 'नियम' थे।

वह छोटी-सी नीली किताब ज़रूर थी जिस पर लेखक का नाम सुनहरी अक्षरों में लिखा था और जो पूरी चार रातों से येफ्रेम के बिस्तर के नीचे थी। यह किताब उसे हिन्दुओं और उनके इस विश्वास की याद दिला रही थी कि हम में से कोई भी पूरी तरह कभी नहीं मरता और हमारी आत्माएं पशुओं या अन्य मानवों में प्रवेश कर जाती हैं। ये बातें अब पोदुएव को ठीक लगने लगी थीं। काश, वह अपने अस्तित्व का कुछ भाग अपने साथ ले जा सके ! काश, सब कुछ नाली में न बह जाये ! काश, वह अपने अस्तित्व का कुछ भाग मृत्यु की सीमा के परे ले जा सके !

लेकिन बात यह थी कि आत्मा का यह शरीर परिवर्तन उसके लिए एक साँत्वना मात्र था।

दर्द उसकी गर्दन से उठ कर सीधा उसके सिर तक जा रहा था। दर्द की निरन्तर जारी रहने वाली टीसें उठती थीं।—और टीस का हर धक्का कह रहा था—'येफ्रेम—पोदुएव—मर गया—विराम। येफ्रेम—पोदुएव मर गया—विराम ?'

इस क्रम का कहीं कोई अन्त नहीं था। ये शब्द वह अपने से दुहराने लगा। जतना वह उन्हें दुहराता, उतना ही उसे महसूस होता कि वह उस येफ्रेम पोदुएव से, जिसके भाग्य में मृत्यु लिखी जा चुकी है, बहुत दूर और अलग-अलग है अपनी मृत्यु की कल्पना अब उसे ऐसी प्रतीति होने लगी थी जैसे वह किसी पड़ोसी की मृत्यु का विचार हो। लेकिन उसके आंतरिक अस्तित्व का वह भाग, जो येफ्रेम पोदुएव की मृत्यु को एक पड़ोसी की मृत्यु समझ रहा था, ऐसा था जिसे उसके विचार से मरना नहीं चाहिए था।

लेकिन उस पड़ोसी का क्या होगा ? ऐसा लगता था कि वह बच सकता ही नहीं—सिवाय इसके कि वह बिर्च के पेड़ की दंबल का जुशांदा पिए। बात सिर्फ इतनी-सी थी कि पत्र के अनुसार यह जुशांदा नियमत: पूरे एक वर्ष पीना

जरूरी था। इसके लिए दो पूड[1] सूखे दंबल की जरूरत थी और अगर दंबल गीला हो तो चार पूड की। इसका मतलब था—आठ पार्सल। यह भी जरूरी था कि दंबल को पेड़ से ताज़ा उतारा जाए। पेड़ के आस-पास बिखरे हुए दंबल से काम नहीं चल सकता। आठ पार्सल एक साथ नहीं भेजे जा सकते थे। यह आवश्यक था कि वे एक-एक करके हर महीने भेजे जाएं। ऐसा आखिर कौन व्यक्ति था जो दंबल के पार्सल बनाता और उन्हें उचित समय पर भेजता रहता? वहाँ रूस में उसका ऐसा कौन था?

ऐसा व्यक्ति केवल वही हो सकता था जो आपके समीप हो—आपके परिवार का कोई सदस्य!

येफ्रेम के जीवन में सैकड़ों व्यक्ति आए थे लेकिन उनमें से कोई भी उसके इतने निकट नहीं था कि वह उसे अपने परिवार का सदस्य कह सकता।

उसकी पहली पत्नी अमीना यह कर सकती थी कि दंबल इकट्ठा करे और उसे भेज दे। यूराल के दूसरी ओर उसके अतिरिक्त और कोई नहीं था जिसे वह इस काम के लिए लिख सकता। लेकिन अगर वह उसे लिखता तो वह यही जवाब लिख भेजती—ओ बूढ़े भेड़िये,—तुम जहां चाहो मर सकते हो।' और उसका ऐसा लिखना ठीक ही होता।

ऐसा लिखने में नियमानुसार वह एकदम सही होगी।—हालांकि इस छोटी-सी नीली किताब के अनुसार उसे सही नहीं कहा जा सकता है। यह नीली किताब कहती थी अमीना को उस पर तरस खाना चाहिए—उससे प्यार तक करना चाहिये—अपने पति के रूप में नहीं, केवल एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो कष्ट से पीड़ित है। उसे दम्बल के पार्सल अवश्य भेजने चाहिएं।

किताब ठीक कहती थी, लेकिन यह तभी सम्भव था जबकि एक साथ सभी लोग उसके अनुसार जीवन जीना शुरू कर दें।

फिर येफ्रेम को ऐसा लगा जैसे कि उसके कानों का मैल साफ हो रहा है और उसे भूवैज्ञानिक के शब्द सुनाई देने लगे हैं जो यह कह रहा था कि वह अपने काम के सहारे जिन्दा है और येफ्रेम नीली किताब को एक बार फिर नाखूनों से ठुकठुकाने लगा।

एक बार फिर वह अपने विचारों में डूब गया—अब वह न तो कुछ सुन रहा था और ना ही देख रहा था—और उसके सिर में दर्द की वही तेज टीसें उठ रही थीं।

इस समय तो उसे बस ये टीसें ही परेशान किये हुए थीं।—और अगर ये

---

१. चीजों को तौलने का एक पुराना रूसी मापक। एक पूड ३६ पौंड के बराबर होता है। (अनुवादक की टिप्पणी)

टीसें न होतीं तो यह कितना आसान और आरामदायक होता कि वहां लेटा रहे—न हिले-डुले, न इलाज कराए, न खाए, न बोले, न सुने और ना ही कुछ देखे—बस लेटा रहे।

यहाँ तक कि उसका अस्तित्व तक शेष न रहे।

लेकिन कोई उसे उसके पांवों और कुहनी से झिझोड़ रहा था। ऐसा लगता था कि सर्जिकल वार्ड की लड़की कुछ देर से उसके बिस्तर के पास खड़ी है और यह कोशिश कर रही है कि उसे उठा कर पट्टी बदलवाने के लिए ले जाए। अब अहमदजान उसकी मदद कर रहा था।

तो अब येफ्रेम को बिस्तर से एक बार और उठना पड़ेगा—और वह भी अकारण। उसे अपनी इच्छा शक्ति को प्रबल करके अपने शरीर के पूरे पंद्रह स्टोन भार को सम्भालना पड़ेगा, अपनी टांगों अपने बाजुओं और अपनी पीठ को फिर से तानना होगा, गोश्त चढ़ी हड्डियों को निष्क्रियता की स्थिति से निकाल कर फिर हिलाना-डुलाना पड़ेगा, अपने जोड़ों को फिर सक्रिय करना पड़ेगा जिससे कि वे उसके लम्बे-तगड़े शरीर को उठाकर खड़ा कर सकें और जब उसका शरीर एक लट्ठे की तरह खड़ा हो जाए तो उस लट्ठे को कपड़े पहनाकर वह उसे गलियारों में से गुजारता हुआ सीढ़ियों से होकर नीचे ले जाएं जिससे कि उसे अकारण ही यातना दी जा सके और दर्जनों मीटर लम्बी पट्टियां खोलकर नई पट्टियां बांध दी जाएं···

यह समूची प्रक्रिया कितनी लम्बी और कष्टप्रद थी! उसके चारों ओर एक धुंधला-सा शोर था। येवजेनिया उस्तीनोवना के साथ दो सर्जन थे जिन्होंने स्वयं कभी कोई ऑपरेशन नहीं किया था। वह उन्हें उदाहरण सहित कुछ समझा रही थी और साथ येफ्रेम से भी बातें करती जा रही थी, लेकिन वह कोई जवाब ही नहीं दे रहा था।

उसे ऐसा लगा जैसा कि उसके पास बात करने योग्य कोई विषय ही नहीं है। उसके गिर्द तटस्थ और निरर्थक से शोर की जो धुन्ध छाई हुई थी उसने उनके शब्दों को भी अपने में लपेट लिया था।

उन्होंने उसकी गर्दन पर पट्टियों का एक घेरा-सा बांध दिया जो पहले घेरे से भी अधिक मजबूत था और वह वार्ड में वापस आ गया। उसकी गर्दन के गिर्द बंधे पट्टियों के घेरे की तुलना में अब उसका सिर छोटा नजर आता था। उसके सिर का केवल ऊपरी भाग पट्टियों के घेरे के बाहर था। वह कोस्तोग्लोतोव से टकरा गया जो अपने हाथ में तम्बाकू का बटुआ (पाउच) सम्भाले हुए बाहर जा रहा था।

"तो उन्होंने क्या फैसला किया?"

येफ्रेम ने सोचा—'उन्होंने क्या फैसला है?' स्पष्टत: उन्होंने उसे कुछ नहीं बताया था, लेकिन अब वह यह समझ जरूर गया था कि उनका मतलब क्या

है—और उसने इस ढंग से जवाब दिया जैसे कि उसे उसका पूरा-पूरा ज्ञान है—"उन्होंने कहा है—'तुम जहां चाहो अपनी गर्दन में फन्दा डाल कर मर सकते हो, लेकिन 'हमारे' घर में ऐसा न करना'।"

फैदेरों ने आतंकित दृष्टि से उसकी विकटाकार गर्दन की ओर देखा, जो स्वयं उसका अपना भाग्य भी हो सकती थी, और पूछा—"क्या वे तुम्हें डिसचार्ज कर रहे हैं ?"

यह अहसास येफ्रेम को यह सवाल सुनकर ही हुआ कि वह मनमानी नहीं कर सकता और, जैसा कि उसका दिल चाहता था, बिस्तर पर नहीं लेटा रह सकता। उसे अपने आपको डिसचार्ज होने के लिए तैयार करना था।

इसके बाद उसे रोजमर्रा के कपड़े पहनने थे—हालांकि वह ठीक से झुक भी नहीं सकता था।

—और उसके बाद उसे अपने शरीर के लट्ठे को शहर की गलियों में से घसीटते हुए ले जाना था—हालांकि यह बात उसकी शक्ति सामर्थ्य की सीमा से परे थी।

उसे इन सब बातों के लिए अपने आपको तैयार कर पाना एकदम असह्य प्रतीत होता—और फिर यह सब किया किस लिए जाए ?

कोस्तोग्लोतोव ने उसकी ओर देखा—दया के साथ नहीं बल्कि सहानुभूति की उस भावना के साथ जो एक सैनिक को दूसरे सैनिक के साथ होती है—जैसे कह रहा हो, 'उस गोली पर तुम्हारा नाम लिखा था, दूसरी पर मेरा हो सकता है।' उसे येफ्रेम के अतीत के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने वार्ड में उसके साथ दोस्ती भी नहीं की थी, लेकिन वह उसके दो टूक लहजे को पसन्द करता था और यह महसूस करता था कि जिन्दगी में उसे कितने लोग मिले हैं, उनमें यह सबसे बुरा तो हरगिज नहीं है।

"ठीक है, आओ येफ्रेम हम इस पर हाथ मिलायें !" उसने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

येफ्रेम ने उसका हाथ अहने हाथ में ले लिया और होठों पर एक विष-बुझी मुस्कान लाते हुए कहा—"जब तुम पैदा होते हो तो रेंगते हो बड़े होते हो तो जंगलियों की तरह दौड़ते हो और जब तुम मरते हो तो यह तुम्हारा मुकद्दर है।"

ओलेग सिगरेट लाने के लिए मुड़ा, लेकिन दरवाजे में प्रयोगशाला में काम करने वाली एक लड़की दिखाई दी। वह अखबार ला रही थी और चूँकि उसके सर्वाधिक समीप व्यक्ति वही था, इसलिए उसने वह उसी को थमा दिया। कोस्तोग्लोतोव ने अखबार लेकर खोल लिया लेकिन रूसानोव की उस पर नज़र पड़ गई और उसने दुखी स्वर में ऊंची आवाज में लड़की को लताड़ना शुरू कर दिया—जो अभी मुड़कर वापस जा नहीं पाई थी—"सुनो,

ग्रए इधर सुनो ! मैंने तुमसे साफ-साफ कह दिया था कि ग्रखबार सबस पहले मुझे देना !"

उसके लहजे से लगता था कि सचमुच ही उसे तकलीफ पहुंची है, लेकिन कोस्तोग्लोतोव को उस पर बिल्कुल दया नहीं ग्राई। "ग्रखबार सबसे पहले तुम्हें ही क्यों मिले ?" वह गुर्राया।

"क्यों से तुम्हारा क्या मतलब है ? तुम ग्राखिर कहना क्या चाहते हो ?" पावेल निकोलाएविच ग्रत्यधिक ग्रप्रसन्न ग्रौर नाराज़ था। वह ग्रप्रसन्न ग्रौर नाराज था क्योंकि उसका यह ग्रधिकार एकदम ग्रकाट्य ग्रौर स्वयं सिद्ध होते हुए भी ऐसा ग्रधिकार था जिसका बचाव शब्दों के माध्यम से नहीं किया जा सकता था।

उसे इससे वास्तव ही में ईर्ष्या होती थी कि उसके सामने कोई व्यक्ति ग्रपनी ग्रपवित्र उंगलियों से ताज़ा ग्रखबार खोले। यहां ऐसा कौन था जो उसकी तरह ग्रखबार को समझ सकता था—उसके लिए ग्रखबार एक बड़े पैमाने पर वितरित किया जाने वाला निर्देश-पत्र था, जिसके माध्यम से कोई निर्देश कूट भाषा में दूर-दूर तक पहुंचाए जा सकते थे। उनमें से कोई भी निर्देश स्पष्ट शब्दों में नहीं दिया जाता था, लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति जो विभिन्न सूत्रों से परिचित हो, छोटे-से-छोटे संकेतों से, लेखों के क्रम से, इस बात से, कि किन बातों को कम महत्त्व दिया गया है या किन की उपेक्षा कर दी गई है, वास्तविक वस्तुस्थिति ग्रौर हवा के रुख का पता लगा सकता था।

लेकिन ये सब बातें ऐसी थीं जिन्हें ऊंचे स्वर में नहीं कहा जा सकता था। उसने शिकायत भरे स्वर में केवल इतना ही कहा—"एक मिनट में वे मुझे इंजैक्शन लगाएंगे—मैं इंजैक्शन से पहले सिर्फ देख लेना चाहता हूं।"

"इंजैक्शन ?" हड्डीचूस नरम पड़ गया—"फिर ठीक है..."

उसने जल्दी-जल्दी ग्रखबार पर नज़र डाली, जहां सुप्रीम सोवियत के ग्रधिवेशन ने इतनी जगह घेर रखी थी कि बाकी बातों से सम्बन्धित समाचार कोनों में सिमट कर रह गये थे।—वैसे भी वह धूम्रपान के लिए बाहर जाने ही वाला था। उसने ग्रखबार रूसानोव को देने के लिए तह किया तो उससे तुड़मुड़ की ग्रावाज़ ग्राई ग्रौर तभी उसकी निगाह किसी समाचार पर जमी की जमी रह गई। वह फिर ग्रखबार में डूब गया ग्रौर फौरन ही उसके होंठों से एक शब्द निकला—'दि...ल...च...स्प !' वह इस शब्द को दुहराए जा रहा था ग्रौर वह यह ग्रपनी जीभ को ग्रपने तालू से रगड़-रगड़ कर बोल रहा था—'दि...ल...च...स्प !'

कोस्तोग्लोतोव के मस्तिष्क में भाग्य सम्बन्धी बिथोविन की चार परिवेष्टित संलयें गूंज रही थीं। ये संलयें वार्ड में ग्रौर किसी को नहीं सुनाई दे रही थीं—ग्रौर शायद ये लोग उन्हें कभी सुनें भी नहीं ! इससे ग्रधिक वह ऊंचे स्वर में

ग्रौर कह भी क्या सकता था ?

"क्या है ? क्या है ?" रूसानोव बेताब हो रहा था। "मुझे फौरन अखबार दो !"

कोस्तोग्लोतोव ने यह बताने की कोशिश नहीं कि अखबार में क्या कुछ है। उसने रूसानोव को भी कोई जवाब नहीं दिया। वह रूसानोव की तरफ बढ़ा—दूसरी ओर से रूसानोव भी उसकी तरफ आया और कोस्तोग्लोतोव ने अखबार उसके हाथ में थमा दिया। कमरे से बाहर निकलने से पहले ही उसने तम्बाकू का अपना रेशमी बटुआ निकाल लिया और काँपते हाथों से अखबारी कागज़ के टुकड़े में अपरिशुद्ध देशी तम्बाकू भर कर सिगरेट बनाने लगा।

पावेल निकोलाएविच ने अखबार खोला तो उसके हाथ भी कांप रहे थे। कोस्तोग्लोतोव ने जिस ढंग से 'दिलचस्प' शब्द कहा था वह चाकू की तरह उसकी पसलियों में घुप गया था। आखिर वह क्या बात हो सकती है जो 'हड्डीचूस' को' 'दिलचस्प' लगी होगी ?

पूरी प्रवीणता और कुशलता के साथ उसकी निगाहें सुप्रीम सोवियत के अधिवेशन के समाचार पत्रों के शीर्षकों पर घूमती गईं और तभी अचानक···

वह समाचार बहुत ही छोटे टाइप में छापा गया था और रहस्यों से अनभिज्ञ किसी भी पाठक के लिए सम्भवत: उसका कोई महत्त्व भी न होता, लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे कि वह समाचार चीख-चीखकर कुछ कह रहा है। यह एक अभूतपूर्व और सर्वथा असम्भव घटना थी। सोवियत संघ की सुप्रीम कोर्ट के सभी सदस्य बदल दिये गए थे।

यह क्या हुआ ? मातुलेविच—डलरिख का नायब ? देतिस्तोव ? पावलैन्को ?—और क्लोपोव ! जब से सुप्रीम कोर्ट अस्तित्व में आई थी क्लोपोव तो तभी से उसका सदस्य रहा था—और अब उसे बरख़ास्त कर दिया गया है ! राज्य और पार्टी के कार्यकर्त्ताओं की देखभाल अब कौन करेगा ? इतने सारे एकदम नये नाम ! वे सब लोग जो चौथाई शताब्दी तक न्याय के आसन पर आसीन रहे थे एक ही झटके में बरखास्त कर दिए गए थे।

यह मात्र एक संयोग नहीं हो सकता है।

यह तो इतिहास गति ले रहा था···

पावेल निकोलाएविच को पसीना आने लगा, उस सुबह सूरज निकलने से कुछ पहले ही उसने अपने आपको दिलासा देने की कोशिश की थी—यह विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि उसके सभी डर एकदम आधारहीन हैं, लेकिन अब...

"तुम्हारा इंजैक्शन !"

"क्या ?" वह एक पागल की तरह उछल पड़ा।

डाक्टर गैंगार्त सिरंज लिए उसके सामने खड़ी थी। "अपनी आस्तीन उलट लो, रूसानोव ! तुम्हें इंजैक्शन देना है !"

१६. विसंगतियां

वह रेंग रहा था। वह कंक्रीट की बनी एक ट्यूब में से रेंग रहा था। नहीं, यह ट्यूब नहीं थी—यह तो संभवतः एक सुरंग थी जिसके छोरों में से फौलाद की नंगी सलाखें आगे को बढ़ रही थीं। कभी-कभी वह उनमें उलझ जाता—अपनी गर्दन को ठीक बाईं ओर, जहां उसे तकलीफ हो रही थी। वह अपने पेट के बल रेंग रहा था और जो चीज उसे सर्वाधिक महसूस हो रही थी वह उसके शरीर का भारीपन था जो उसे खींच-खींच कर ज़मीन की तरफ दबाए चला जा रहा था। यह भारीपन उसके शरीर के वास्तविक भार से कहीं अधिक था। वह उसका आदी नहीं था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह बोझ तले दब कर चपटा होता जा रहा है। पहले उसने यह सोचा कि जो चीज़ उसे कुचल रही है वह ऊपर का कंक्रीट है। लेकिन नहीं यह तो उसका अपना शरीर ही है जो इतना भारी हो गया है। अपने आपको घसीटते हुए उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि वह टूटे फूटे लोहे की कोई गठरी हो। उसका शरीर इतना वजनी था कि उसे यह लग रहा था कि वह अपने पांवों पर अब कभी भी खड़ा नहीं हो पाएगा। अब तो केवल एक ही बात का महत्त्व था कि वह रेंगता हुआ इस रास्ते को पार कर ले जिससे कि बाहर निकल कर सांस द्वार वह थोड़ी-सी हवा पी सके और प्रकाश देख सके। लेकिन वह रास्ता कभी न खत्म होने वाला था—कभी भी न खत्म होने वाला रास्ता।

फिर कहीं से एक आवाज़ आई—लेकिन वह आवाज़ तो थी नहीं, बल्कि वह तो एक विचार-तरंग मात्र थी जो उसे आदेश दे रही थी कि वह इधर-उधर किसी ओर रेंगे। 'मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं—जबकि बीच में एक दीवार खड़ी है ?'—उसने सोचा। लेकिन वह एक ऐसा आदेश था जिसका प्रतिवाद या उल्लंघन नहीं किया जा सकता था और उस पर उसी तरह वजन डाल रहा था जैसे कि उसके शरीर को चपटा करता जाने वाला दूसरा वज़न। एक आह भर कर उसने बाईं ओर रेंगना शुरू कर दिया और उसने अनुभव किया कि वह इस तरह भी उतनी ही आसानी से रेंग सकता है जितनी आसानी से सीधे आगे की ओर। वह बाईं ओर रेंगने का आदी हो चुका था कि उसे तभी आदेश मिला कि वह दाईं ओर को रेंगे। उसने आह भर कर दाईं ओर

बढ़ना शुरू किया। वह उस सबसे अत्यधिक निढाल हो रहा था लेकिन न कहीं प्रकाश था और न ही सुरंग खत्म होने के आसार दिखाई दे रहे थे। उसी स्पष्ट आवाज ने उसे फिर आदेश दिया कि वह दोगुनी रफ्तार से दाईं ओर को घूम जाए। उसने अपनी कुहनियां और पांव हिलाए और इसके बावजूद कि उसके दाईं ओर एक अभेद्य दीवार थी वह रेंगता ही गया और उसे लगा कि शायद काम बन जाए। उसे फिर आदेश मिला कि वह बाईं ओर को घूम जाए—और इस बार भी दूनी रफ्तार से। इस समय तक उसकी सभी आशंकाएं समाप्त हो चुकी थीं और उसे सोचने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। उसने अपनी कुहनियों से बाईं ओर रास्ता बनाया और रेंगने लगा। उसकी गर्दन कहीं-कहीं फंस जाती थी और उसकी कसक उसके सिर में महसूस होती थी। जीवन में इतनी बड़ी उलझन में वह पहले कभी नहीं पड़ा था; छोर तक पहुंचे बिना ही मर जाना अपने आप में एक अत्यधिक दुखद एवं दयनीय बात होगी।

लेकिन यकायक उसकी टांगें हलकी हो गईं—जैसे कि उनमें हवा भर दी गई हो। वे ऊपर उठने लगीं—हालांकि उसका सीना और उसका सिर अभी तक जमीन से चिपटे हुए थे। उसने सुनने की कोशिश की, लेकिन कोई नया आदेश नहीं आया और तब उसे लगा कि संभवत: बाहर निकलने का कोई रास्ता है—वह अपनी टांगों को ट्यूब के बाहर उड़ने देगा और फिर उलटा रेंगता हुआ बाहर निकल जाएगा—और निस्सन्देह उसने पीछे की ओर घिसटना शुरू कर भी दिया। वह अपने हाथों के बल से अपने शरीर को पीछे धकेल रहा था (—खुदा ही जानता है कि उसमें इतनी ताकत कहां से आ गई थी।) वह अपनी टांगों के पीछे-पीछे एक सूराख में से पीछे की ओर रेंगने लगा। यह सूराख बहुत तंग था, लेकिन जो चीज इस मामले को अत्यधिक मुश्किल बना रही थी। वह उसके सिर की ओर बहने वाला खून था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह वहीं मरने जा रहा है और कि उसका सिर फट जाएगा। उसने अपने हाथों से अपने शरीर को एक बार और दीवार की ओर धकेला और किसी-न-किसी तरह रेंगकर ट्यूब के बाहर आ जाने में सफल हो गया, लेकिन उसके सारे शरीर पर खरोंचें लग गई थीं।

उसने अपने आपको एक निर्माण स्थल पर एक पाइप पर बैठा पाया। वहां कोई नहीं था—जाहिर है कि काम का वक्त खत्म हो चुका था। उसके आस-पास की जमीन गीली और दलदली थी। वह पाइप पर सुस्ताने के लिए बैठ गया था—उसने देखा कि उसके पास ही एक लड़की भी बैठी है जिसके ऊपरी कपड़े बहुत ही गंदे हैं, सिर नंगा है और उसके तिनकों जैसे बाल बेढंगेपन से लटक रहे हैं—उनमें न कोई पिन लगी है और ना ही उनमें कंघी की गई है। लड़की उसकी ओर देख नहीं रही थी—सिर्फ बैठी थी। लेकिन वह जानता था कि लड़की को यह उम्मीद है कि वह उससे कोई सवाल पूछेगा। शुरू-शुरू

में तो वह कुछ डर-सा गया लेकिन बाद में उसे महसूस हुआ कि वह लड़की से उतना भयभीत नहीं है जितनी कि लड़की उससे भयभीत है। उसका दिल उस लड़की से बात करने को नहीं चाह रहा था, लेकिन लड़की अत्यधिक भावाकुल थी और उसके प्रश्न की प्रतीक्षा में थी। आखिर उसने प्रश्न पूछ ही लिया—"नौजवान लड़की, तुम्हारी मां कहां है ?"

"मुझे नहीं मालूम !" उसने अपने पांवों की ओर देखते और हाथ की उंगलियों के नाखूनों को कुतरते हुए उत्तर दिया।

"तुम्हें नहीं मालूम—इसका क्या मतलब है ?" उसे गुस्सा आने लगा था। "तुम्हें ज़रूर पता होना चाहिए और तुम्हें मुझे सच-सच बता देना चाहिए। हर बात ठीक-ठीक लिख दो ''तुम कुछ कहती क्यों नहीं ? मैं एक बार फिर पूछता हूं—तुम्हारी मां कहां है ?"

"यही सवाल तो मैं खुद तुमसे पूछना चाहती हूं।" लड़की ने उसकी ओर देखा।

लड़की ने उसकी ओर देखा—लड़की की आंखों में बस पानी-ही-पानी था। उसे एक झटका-सा लगा—कई बार—और ये झटके एक साथ ही लगे : यह जरूर ग्रूशा की बेटी होगी। ग्रूशा—वह प्रेस ऑपरेटर जिसे जन-नेता के विरुद्ध गप हांकने के अपराध में धर लिया गया था। यह लड़की उसके पास एक फॉर्म लेकर आई थी जो ठीक ढंग से नहीं भरा गया था क्योंकि उसने अपनी मां के बारे में यह तथ्य छुपा लिया था। इसीलिए उसने उसे अपने पास बुला भेजा था और यह धमकी दी थी कि यह फॉर्म समुचित ढंग से न भरने के अपराध में उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी और तब उसने ज़हर खा लिया था। तब उसने ज़हर खा लिया था, लेकिन अब उसके बालों और उसकी आंखों को देखकर उसे लगा कि वह डूबकर मरी होगी। उसने यह भी महसूस किया कि अगर वह डूब मरी थी—और अब वह उसके पास बैठा हुआ है तो वह भी मर चुका होगा। उसे पसीना छूट गया। उसने अपना पसीना पोंछा और लड़की से कहा—'''अरे, यहां तो बहुत ही गरमी है। मुझे यहां पानी कहां मिल सकता है ? क्या तुम बता सकती हो ?"

"वहां !" लड़की ने इशारा कर दिया।

उसका इशारा एक बक्स या एक कठौते की ओर था जिसमें हरियाली मिट्टी मिला सड़ा हुआ बरसाती पानी भरा हुआ था। उसने महसूस किया कि यह वही पानी है जो उसने डूबते वक्त खुद निगल लिया और अब वह चाहती है कि उसी पानी से उसका गला भी रुंध जाए। अगर वह यह चाहती है तो इसका मतलब तो यह हुआ कि वह अभी जिन्दा है।

"मैं बताता हूं कि तुम्हें क्या करना चाहिए," उसने लड़की से छुटकारा पाने के लिए एक चाल चलने की कोशिश की—"तुम दौड़कर वहां जाओ और

फोरमैन को आवाज़ दो। उससे कहना कि वह मेरे जूते ले आए। इस तरह भला मैं कैसे चल-फिर सकता हूं ?"

लड़की ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पाइप से कूद कर नंगे सिर, गंदे कपड़ों और ऊंचे बूटों में, जिन्हें लड़कियां निर्माण स्थलों पर पहनती हैं, मिट्टी-गारे में से भागना शुरू कर दिया।

वह इतना प्यासा था कि उसने पानी पीने का फैसला कर लिया—फिर चाहे उसे वह गंदे कठौते में से ही क्यों न पीना पड़े। अगर उसने थोड़ा ही सा पानी पिया तो उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। वह नीचे उतरा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि वह चिकनी मिट्टी पर फिसल नहीं रहा था। उसके पांवों के नीचे जो मिट्टी थी उसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता था। उसके आस-पास प्रत्येक वस्तु धुंधली और अस्पष्ट थी और दूरी पर स्थित तो कोई सी चीज़ दिखाई ही नहीं देती थी। वह उसी तरह चलता रहता, लेकिन यकायक उसे डर लगने लगा कि उसका कोई महत्त्वपूर्ण दस्तावेज गुम हो गया है। उसने अपनी जेबें—सभी जेबें एक साथ—टटोलनी शुरू कीं। वह इतनी जल्दी-जल्दी अपनी जेबें टटोल रहा था कि उसके हाथ उसका साथ नहीं दे रहे थे।—और उसे अहसास हुआ कि हां वह दस्तावेज सचमुच गुम हो गया है।

यकायक वह भयाक्रांत हो उठा—भयावह रूप से भयाक्रांत। इन दिनों इस प्रकार के दस्तावेज बाहर वालों के हाथ नहीं पड़ने चाहिएं। वह किसी भयावह संकट में फंस सकता है। तत्काल उसे अहसास हुआ कि दस्तावेज उस समय गुम हुआ है जब वह रेंग कर ट्यूब से बाहर निकल रहा था। वह जल्दी-जल्दी पीछे की ओर मुड़ा लेकिन वह जगह ढूंढ़ लेने में उसे सफलता न मिल सकी—वह तो उसे पहचान तक नहीं पाया—और वहां तो कोई ट्यूब ही नहीं थी। इसके बाद बजाय वहां हर जगह मज़दूर घूम रहे थे—और सबसे बुरी और खतरनाक बात तो यह थी कि वह दस्तावेज इन्हीं मजदूरों में से किसी के हाथ लग सकता था।

सभी मजदूर नौजवान थे और वह उनमें से किसी को भी नहीं जानता था। एक नौजवान लड़का, जिसने वैल्डरों वाली जैकिट पहन रखी थी, उसके पास आकर रुका और उसकी ओर देखने लगा। वह उसकी ओर इस तरह क्यों देख रहा है ? क्या उसे वह दस्तावेज मिल गया है ?

"हे, नौजवान, क्या तुम्हारे पास माचिस है ?" रूसानोव ने पूछा।

"लेकिन तुम तो सिगरेट नहीं पीते।" वैल्डर ने जवाब दिया।

(ये तो सब कुछ जानते हैं। इन्हें इसका कैसे पता चला ?)

"मुझे माचिस की किसी और काम के लिए ज़रूरत है।"

"और किस काम के लिए ?" वैल्डर ने उसकी छान-बीन की।

वास्तव ही में क्या ही मूर्खतापूर्ण उत्तर था ! विशुद्ध एक तोड़-फोड़ करने वाले का उत्तर ! वे उसे हिरासत में ले सकते हैं और इस बीच वह दस्तावेज भी ढूंढ लिया जा सकता है। माचिस की उसी के लिए तो जरूरत थी—उस दस्तावेज को जलाने के लिए।

नवयुवक वैल्डर अधिकाधिक समीप आता जा रहा था। रूसानोव अत्यधिक भयभीत था। वह जानता था कि क्या होने वाला है। नवयुवक ने उसकी आंखों में आंखें डाल दीं और स्पष्ट एवं दो टूक लहजे में कहा—"चूंकि येलचान्स्काया ने अपनी लड़की मुझे सौंप दी है, इसलिये मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि वह अपने आपको एक अपराधी समझती है और कि वह गिरफ्तार होने की प्रतीक्षा में है।"

रूसानोव कांपने लगा। "तुम यह कैसे जानते हो ?"

(यह एक प्रकार से निरर्थक प्रश्न था क्योंकि स्पष्ट ही था कि उस नवयुवक ने अभी-अभी उसकी रिपोर्ट पढ़ी है और उसका अन्तिम वाक्य शब्दशः उसकी रिपोर्ट से था।)

लेकिन वैल्डर ने कहा कुछ नहीं और अपनी राह चला गया। रूसानोव ने दौड़ना शुरू कर दिया। स्पष्ट ही है कि उसकी रिपोर्ट, वहां कहीं आस-पास ही पड़ी थी। उसे वह जल्दी ही ढूंढ लेनी चाहिए—जरूर ढूंढ लेनी चाहिए।

दीवारों के बीच दौड़ते और मोड़ काटते हुए उसका दिल आगे उछला-उछला पड़ रहा था लेकिन उसकी टांगें उसका साथ नहीं दे पा रही थीं—उसकी टांगें अत्यधिक धीमी गति से आगे बढ़ रही थीं। वह हताश—अत्यधिक हताश हो रहा था। आखिर उसे एक कागज़ दिखाई दिया। वह तत्काल जान गया कि यह वही है। वह भागकर उसे उठाना चाहता था लेकिन उसकी टांगें उसका साथ नहीं दे रही थीं। वह घुटनों के बल हो गया और अपने आपको कागज की ओर धकेलने लगा—इसमें अधिकतर काम वह अपने हाथों ही से ले रहा था। काश, उसे उससे पहले और कोई न हथिया ले ! काश, इससे पहले कि वह वहां पहुंच कर उसे अपने हाथों से फाड़ डाले कोई और वहां न पहुंच पाए ! समीप···और अधिक समीप···और अन्ततः उसने वह कागज दबोच ही लिया। यह वही कागज़ था, लेकिन उसकी उंगलियों में शक्ति नहीं रह गई थी—इतनी शक्ति भी नहीं कि वह उसे फाड़ दे। वह मुंह के बल जमीन पर लेटा था और उसने कागज को अपने शरीर से ढांप लिया।

किसी ने उसका कंधा छुआ। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह करवट नहीं लेगा—वह कागज को अपने नीचे से निकलने नहीं देगा। लेकिन उसके कंधे पर जो हाथ रखा था वह एक कोमल हाथ था—एक स्त्री का हाथ। रूसानोव ने महसूस किया कि वह एक कोमल हाथ था—एक स्त्री का हाथ। रूसानोव ने महसूस किया कि यह स्वयं येलचान्स्काया ही होगी।

"मेरे दोस्त !' उसने नीचे को झुक कर उसके कान के पास अपना मुंह लाकर कोमल स्वर में कहा—"कहो मेरे दोस्त, मेरी बेटी कहां है ? तुम उसे कहां ले गये थे ?"

"वह एक अच्छी जगह है, येलेना फेरोरोवना, फिक्र मत करो !" रूसानोव ने अपना सिर उसकी ओर घुमाए बिना ही उत्तर दिया।

"कहां ?"

"अनाथालय में।"

"क्या ? अनाथालय में ?" वह उससे जवाबतलबी नहीं कर रही थी। उसका स्वर उदास और दुखी था।

"सच बात तो यह है कि मैं नहीं जानता कि मैं तुमसे क्या कहूँ ?" वह उसे सच-सच बता देना चाहता था लेकिन उसे स्वयं पता नहीं था कि सच्चाई क्या है ? उसकी बेटी को उसने नहीं भेजा था और बहुत सम्भव है कि उन्होंने उसे पहली जगह से हटाकर कहीं और भेज दिया हो।

"क्या वह मेरे नाम ही से रह रही है ?" पीछे से जो स्वर प्रश्न पूछ रहा था वह काफी कोमल था।

"नहीं," रूसानोव ने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में उत्तर दिया। "वहां का नियम है कि वहां नाम बदलने पड़ते हैं। मैं इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकता। यह तो वहां का नियम है।"

यहां लेटे हुए उसे याद आया कि येलचान्स्की दम्पती को तो वह अत्यधिक पसन्द करता था। उसके मन में उनके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थीं उसने उस बूढ़े व्यक्ति की भर्त्सना भी सिर्फ इसीलिए की थी क्योंकि खनेन्को ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया था। येल्चान्स्की से उसकी भेंट व्यावसायिक स्तर पर हुई थी। जब पति गिरफ्तार हो गया तो रूसानोव ने पूरी संजीदगी से उसकी पत्नी और उसकी बेटी की सहायता करने की कोशिश की थी और बाद में जब पत्नी यह महसूस करने लगी कि वह खुद भी गिरफ्तार हो जायेगी तो उसने अपनी बेटी उसे सौंप दी थी। उसे यह याद नहीं आ रहा था कि बाद में उसने पत्नी के विरुद्ध भी गवाही किस तरह दे दी थी।

उसने उसकी तरफ देखने के लिए अपना सिर घुमाया लेकिन वह वहां बिल्कुल नहीं थी। (वह हो भी कैसे सकती थी ?—वह तो मर चुकी थी।) उसकी गर्दन में दाईं ओर एक झटका-सा लगा। वहीं जमीन पर लेटे-लेटे उसने अपने सिर को सीधा किया—उसे आराम की जरूरत थी। वह बहुत थका हुआ था—इतना थका हुआ था जितना वह पहले कभी नहीं थका था। उसका सारा शरीर दुख रहा था।

वह खान के सिरे पर एक गैलरी में लेटा हुआ था। उसकी आंखें अब तक अन्धेरे की आदी हो चुकी थीं और अपने पास जमीन पर, जहां छोटे-छोटे

कोयले छितराए पड़े थे, उसे एक टेलीफोन दिखाई दिया। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। यहां टेलीफोन कैसे पहुँच गया ? क्या इसे कहीं मिलाया जा सकता है ? अगर ऐसा हो सके तो वह फोन करके किसी से अपने पीने के लिए कुछ लाने को कह दे। सच तो यह है कि वह यह कहे कि उसे किसी अस्पताल में पहुंचा दिया जाये।

उसने रिसीवर उठाया, लेकिन डायलटोन की बजाय उसे एक पुरज़ोर कारोबारी आवाज सुनाई दी।

"कामरेड रूसानोव ?"

"हां, हां !" रूसानोव ने जल्दी-जल्दी अपने आपको संभाला। (वह तत्काल समझ गया कि आवाज ऊपर से आई है, नीचे से नहीं।)

"कृपया सुप्रीम कोर्ट आ जाओ !"

"सुप्रीम कोर्ट ? अच्छा, ठीक है ! अभी पहुंचता हूं।" वह रिसीवर रखने ही वाला था कि उसे याद आया—"अरे हां, माफ करना—कौन-सी सुप्रीम कोर्ट ? पुरानी या नई ?"

"नई !" आवाज़ ने सर्द लहजे में कहा। "कृपया जल्दी करो।"—और रिसीवर रख दिया गया।

उसे सुप्रीम कोर्ट में हुए परिवर्तनों की जानकारी याद आई और उसने अपने आपको कोसा कि रिसीवर खुद उसी ने पहले क्यों उठाया। मातुलेविच जा चुका था···क्लोपोय जा चुका था···यहां तक कि बेरिया भी जा चुका था। कैसा जमाना आ गया है ?

लेकिन उसे आदेश का पालन तो करना ही था। वह इतना कमजोर था कि उठ भी नहीं सकता था। लेकिन अब, जबकि उसे बुला लिया गया था, वह जानता था कि उसे जाना ही होगा। उसने अपने शरीर के प्रत्येक अंग को कसा—उठने का हर सम्भव प्रयत्न किया लेकिन वह धड़ाम से उस बछड़े की तरह जमीन पर गिर पड़ा जिसने अभी चलना न सीखा हो। यह तो सही है कि उन्होंने उसे ठीक वक्त नहीं बताया था, लेकिन इतना तो कह ही दिया था कि 'जल्दी करो !' आखिर दीवार का सहारा लेते हुए वह उठ खड़ा हुआ और दीवार से चिपका चिपका अपने कमजोर और कांपते हुए पांवों पर अपने आपको आगे घसीटने लगा। वह नहीं जानता था कि इसका कारण क्या है फिर भी उसकी गर्दन की दाईं ओर दर्द तो था ही।

वह चलता गया और सोचता गया कि क्या सचमुच ही वे उसके विरुद्ध मुकदमा चलायेंगे ? क्या सचमुच वे इतने निर्दयी हो सकते हैं कि इन तमाम वर्षों के बाद उस पर मुकदमा चलाएं ? आखिर किया भी तो क्या !—सुप्रीम कोर्ट के सदस्य ही बदल डाले ! यह तबदीली बेहतरी के लिए तो भला क्या होगी !

वह क्या कर सकता था ? देश के सर्वोच्च न्यायालय के प्रति पूर्ण सम्मान रखते हुए भी उसके सामने तो अब केवल एक ही रास्ता था कि अपना बचाव करे। वह इसके लिए साहस बटोर लेगा।

वह न्यायालय को संबोधित करते हुए कहा—'दंडों की घोषणाएं मैंने नहीं की थीं—और ना ही मैंने जांच-पड़ताल की थी। मैंने तो केवल अपनी शंकाएं प्रकट की थीं। अगर सार्वजनिक शौचालय में मुझे अखबार का कोई ऐसा टुकड़ा मिला जिस पर 'नेता' की तस्वीर थी और उसे फाड़ दिया गया था तो मेरा कर्त्तव्य था कि मैं उसकी ओर ध्यान आकर्षित कर दूं। छान-बीन करना जाँच-पड़ताल करने वाले अधिकारी का काम था। यह एक संयोग की बात हो सकती है—और नहीं भी हो सकती। जांच पड़ताल विभाग इसीलिए तो हैं कि सच्चाई का पता लगाएं। मैंने तो सिर्फ इतना किया है कि एक नागरिक की हैसियत से अपने साधारण कर्त्तव्यों का पालन करता रहा हूं।'

वह उन्हें बताएगा—'इन तमाम वर्षों में यह बहुत जरूरी था कि समाज को स्वस्थ—नैतिक दृष्टि से स्वस्थ—बनाया जाए। समाज की सफाई किये बिना यह संभव नहीं था और सफाई तब तक नहीं की जा सकती जब तक कि कुछ ऐसे लोग न हों जो कूड़ा-कर्कट उठाने वाले खुरपे का बिना नाक-भौं चढ़ाये इस्तेमाल कर सकें।'

ज्यों-ज्यों सब तर्क उसके मस्तिष्क में रूपाकार ग्रहण करते गये, वह इस सम्बन्ध में अधिकाधिक व्यग्र होता गया वह इन तर्कों को किस ढंग से प्रस्तुत करेगा।

अब वह इस बात के लिए अत्यधिक व्यग्र था कि वह शीघ्रातिशीघ्र वहां पहुँच जाए और तत्काल न्यायालय के सामने बुला लिया जाए। वहाँ पहुंच कर वह उन पर बरस पड़ेगा—'अकेला मैं ही तो नहीं था—मेरे ही विरुद्ध मुकदमा क्यों चलाया जा रहा है ? किसी एक ऐसे व्यक्ति का नाम लो जिसने वह कुछ न किया हो जो मैंने किया है। अगर कोई 'सहायता' न करता तो अपने पद पर कैसे बना रहता ? तुम गुजुन का नाम लेते हो ? वह तो जेल गया था—बोलो, क्या नहीं गया था ?'

वह इतने जोश में था जैसे अभी से अपना भाषण चीख-चीख कर सुना रहा हो लेकिन फिर उसने महसूस किया कि दरअसल वह चीख नहीं रहा था—बात सिर्फ इतनी थी कि उसका गला सूजा हुआ था और उसे कष्ट दे रहा था।

उसे लगा कि अब वह कोयले की खान की गैलरी में नहीं, बल्कि एक सामान्य गलियारे में चल रहा है। किसी ने पीछे से उसे पुकारा—"पाश्का! तुम्हें यह क्या हो गया है ? क्या तुम बीमार हो ? तुम अपने आपको इस तरह क्यों घसीट रहे हो ?"

उसे और अधिक खुशी हुई और वह चलता गया। ऐसा लगता था कि

अब वह बिल्कुल ठीक-ठाक है। यह देखने के लिए कि प्रश्न पूछने वाला कौन है, वह पीछे की ओर मुड़ा वह ज्वेइनिक था जिसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी और पेटी लगा रखी थी।

"तुम कहां जा रहे हो, जान ?" पावेल ने पूछा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि दूसरा व्यक्ति इतना जवान कैसे है। हां, वह जवान तो जरूर था लेकिन वह तो बहुत पहले की बात है।

"मैं कहां जा रहा हूं ?—निश्चित ही वहीं, जहां तुम। आयोग में।"

"कौन से आयोग में ?' पावेल ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया। उसे पता था कि उसे कहीं और बुलाया गया है लेकिन कहां, यह उसे अच्छी तरह याद नहीं था।

उसने ज्वेइनिक से कदम मिला लिए। और वे युवकों की तरह प्रसन्नचित और मुस्तैदी से चलने लगे। उसने महसूस किया कि उसकी उम्र बीस वर्ष से भी कम है और अभी उसकी शादी भी नहीं हुई है।

अब वे एक बड़े दफ्तर में से गुजर रहे थे—बुद्धिजीवी वर्ग अपनी डैस्कों के पीछे बैठा था, दाढ़ियों और टाईयों वाले एकाउंटैंट, जो देखने में पादरी लगते थे, इंजीनियर, जिन्होंने अपनी जैकिटों के कालरों पर एक-दूसरे को काटते हुए हथौड़ों के निशान लगा रखे थे, अभिजात्य वर्ग से सम्बन्धित लगने वाली वृद्धाएं, नौजवान टाइपिस्ट लड़कियां, जो खूब बनी-ठनी थीं और जिनके स्कर्ट उनके घुटनों तक आते थे। जैसे ही वह और ज्वेइनिक अन्दर गये और एक साथ पड़ते हुए उनके जूतों की टापें पड़ीं तो तीसों व्यक्तियों की निगाहें उनकी ओर मुड़ गईं। उनमें से कुछ उठ खड़े हुए और कुछ ने अपने अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही गर्दनें झुका दीं। सबकी आँखें उनकी गतिविधियों पर जमी हुई थीं और प्रत्येक चेहरा भयभीत दिखाई देता था। इसे पावेल और ज्वेइनिक ने अपने प्रति सम्मान प्रदर्शन समझा।

उन्होंने अगले कमरे में प्रवेश किया, आयोग के दूसरे सदस्यों से अभिवादन का आदान-प्रदान किया और एक मेज पर, जिस पर लाल रंग का मेजपोश बिछा था, बैठ गए।

"ठीक है, आओ अब कार्रवाई शुरू करें !"

आयोग के अध्यक्ष वेनका ने निर्देश दिया।

उन्होंने कार्रवाई शुरू कर दी। सबसे पहले प्रेस-ऑपरेटर चची ग्रूशा सामने आई।

"तुम यहां क्या कर रही हो, चची ग्रूशा ?" वेनका ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। "हम तो प्रशासन की सफाई कर रहे हैं, इससे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? तुम प्रशासन में कैसे घुस बैठीं ?"

सभी लोग खिलखिला कर हंस पड़े।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है, समझे !" चची ग्रूशा जरा-सा भी नहीं घबराई थीं। "यह तो मेरी बेटी का मामला है। वह बड़ी हो रही है और मुझे उसके लिए कोई किंडरगार्टन स्कूल तलाश करना है, समझे !"

"बहुत अच्छा, चची ग्रूशा !" पावेल ने पुकार कर कहा—"अपना प्रार्थना पत्र लिख दो—हम प्रबन्ध कर देंगे। हम तुम्हारी बेटी की व्यवस्था कर देंगे। अब और अधिक हस्तक्षेप मत करो ! हमें बुद्धिजीवी वर्ग की सफाई करनी है।"

उसने सुराही में से पानी उंडेलने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन सुराही खाली निकली। उसने अपने पड़ोसी को इशारा किया कि वह मेज़ के दूसरे किनारे से सुराही उठाकर उसे दे दे। लेकिन वह सुराही भी खाली निकली।

उसे इतनी प्यास लग रही थी जैसे उसका गला जल रहा हो।

"मुझे पीने को कुछ दो," वह पुकार उठा "मुझे पीने को कुछ चाहिए।"

"एक मिनट," डॉक्टर गैंगार्त न कहा—"हम एक मिनट में तुम्हें पानी देते हैं।"

रूसानोव ने आँखें खोल दीं। डॉक्टर गैंगार्त पलंग पर उसके पास बैठी थी।

"मेरी मेज़ की दराज में फलों का थोड़ा-सा रस रखा है," उसने कमजोर आवाज में कहा। उसे बुखार महसूस हो रहा था और उसका समूचा जिस्म दर्द कर रहा था। उसके सिर में जैसे ढोल बज रहे थे।

"ठीक है, कुछ जूस दिए देते हैं," गैंगार्त के पतले होठों पर मुस्कान फैल गई। उसने मेज में से जूस की एक बोतल और एक गिलास निकाल लिया।

खिड़कियों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता था कि शाम उजली है।

इस मामले में निश्चित होने के लिए वह उसके जूस में कुछ और तो नहीं मिला रही, पावेल कनखियों से गैंगार्त को गिलास में जूस डालते देखता रहा।

तीता और मीठा जूस चटखारेदार और स्वादिष्ट था। पावेल अपने तकिए पर लेटा रहा। और इसी तरह उसने गिलास, जो उसके लिए गैंगार्त ने थाम रखा था, खाली कर दिया।

"आज तो बहुत ही बेचैनी रही," उसने शिकायत की।

"अरे तुमने तो यह सब बड़ी आसानी से सहन कर लिया," गैंगार्त ने उससे असहमत होते हुए कहा—"बात सिर्फ इतनी है कि आज हमने दवा की

मात्रा बढ़ा दी थी।"

रूसानोव के दिल में एक और संदेह चाकू की तरह घुप गया। "क्या कहा तुमने ? तुम्हारा मतलब है कि तुम हर बार उसमें वृद्धि करने जा रही हो ?"

"आज के बाद प्रतिदिन एक ही मात्रा होगी। तुम इसके आदी हो जाओगे। भविष्य में इतनी तकलीफ नहीं होगी।'

"और सुप्रीम···" उसने कहना शुरू किया लेकिन फिर उसने खुद ही अपनी बात बीच में छोड़ दी।

वह मूर्च्छना और वास्तविक दुनिया के बीच पहले ही दिभ्रमित और चकराया हुआ था।

१७. जड़ी

वेरा कोर्निलएवना इस बात को लेकर अत्यधिक चिन्तित थी कि दवा की पूरी खुराक का रूसानोव पर क्या असर होता है। वह उस दिन वार्ड में कई बार आई और काम का समय खत्म करने के बाद भी काफी देर तक वहां रुकी रही। अगर ओलम्पिआदा व्लादिस्लावोव्ना ड्यूटी पर होती, जैसा कि ड्यूटी के कार्यक्रम के अनुसार उसे होना चाहिए था, तो उसे इतनी बार वार्ड में न आना पड़ता। लेकिन ओलम्पिआदा को श्रमिक-संगठनों के खजांचियों के एक पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए बुला लिया गया था और उसकी बजाय आज तुरगुन की ड्यूटी थी जो कुछ मनमौजी-सा था।

इंजैक्शन से रूसानोव को कुछ अधिक ही तकलीफ हुई थी—हालांकि उसका प्रभाव निर्धारित सीमाओं में ही रहा था। इन्जैक्शन के बाद उसे स्वप्न लाने वाली दवा दे दी गई थी। इस तरह वह जागा तो नहीं, लेकिन वह बेचैनी में हाथ-पांव जरूर मारता रहा—करवट लेता रहा, अपना शरीर तोड़ता-मरोड़ता रहा और आहें भरता रहा। जितनी बार भी वेरा कोर्निलएवना आई, वहाँ रुकी उसे ध्यान से देखा और उसकी नब्ज देखी। वह अपने शरीर को ऐंठता, छटपटाता और अपनी टांगों को चलाता रहा था।

उसका चेहरा सुर्ख और पसीने से तरबतर था। चश्मेशके बिना उसका सिर, विशेषकर तकिये पर रखा हुआ उसका सिर किसी निरंकु अधिकारी का सिर लगता था। उसके गंजे सिर पर जो कुछ बाल बच रहे थेवे सिर के उपरी भाग पर अत्यधिक कारुणिक ढंग से चमक रहे थे।

वेरा के लिए चूंकि वार्ड में बार-बार आना जरूरी था इसलिए उसने यही उचित समझा था कि इस अवसर से फायदा उठाकर वह कुछ और काम भी कर दे। पोदुएव को जो वार्ड का 'सीनियर रोगी' था, डिसचार्ज किया जा चुका था और हालांकि अब वास्तव में उसका कोई काम बाकी नहीं था, फिर भी अभी एक काम करना था। वह रूसानोव के पलंग से चलकर पास वाले दूसरे पलंग के नकट गई और घोषणा की—"कोस्तोग्लोतोव आज से तुम 'सीनियर रोगी' हो।"

कोस्तोग्लोतोव कंबलों के ऊपर कपड़े पहने लेटा हुआ था और अखबार

पढ़ रहा था। उसके अखबार पढ़ने के दौरान गैंगार्त अब दूसरी बार आई थी। वह उसकी शाब्दिक बौछार की अब अभ्यस्त हो चुकी थी और उसे उसकी प्रतीक्षा भी रहती थी। इसलिए अपनी बात कहते समय वह हल्के से मुस्कराई जैसे वह रह रही हो कि यह तो वह भी जानती है कि यह नियुक्ति एकदम निरर्थक है। कोस्तोग्लोतोव ने अपना प्रसन्न चेहरा अखबार पर से उठाया। यह बात पूरी तरह उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि डॉक्टर के प्रति सम्मान प्रकट करने का सर्वोत्तम तरीका क्या हो सकता है। बहरहाल, उसने अपनी टांगों को, जो बिस्तर पर फैली हुई थीं, समेट लिया और अत्यधिक मैत्रीपूर्ण लहजे में जवाब दिया—"वेरा कोर्निलएवना ! तुम मुझ पर एक ऐसा नैतिक वार कर रही हो जिसका कोई उपचार नहीं हो सकता। प्रशासक हमेशा गलतियां करते हैं। उनमें से कुछ सत्ता के प्रलोभनों का शिकार हो जाते हैं। वर्षों के सोच-विचार के बाद मैंने यह संकल्प कर लिया है कि एक प्रशासक के रूप में फिर कभी काम नहीं करूंगा।"

"तुम प्रशासक रह चुके हो ? कोई महत्त्वपूर्ण प्रशासक ?" वह बातचीत करने और खेल में शरीक होने को तैयार थी।

"मेरा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पद डिप्टी प्लाटून कमांडर का था, लेकिन वास्तव में मैं उससे कुछ अधिक हो रहा। मेरा प्लाटून कमांडर अहमक और भौंदू था। इसलिए उन्होंने उसे एक प्रबोधन पाठ्यक्रम (रिफ्रैशर कोर्स) में भाग लेने के लिए भेज दिया था जिसके बाद उसे बैटरी कमांडर बना दिया गया था, लेकिन हां वह हमारी प्लाटून में नहीं भेजा गया था। उसके स्थान पर जो अफसर आया उसे फौरन ही भिन्न कामों के लिए राजनैतिक विभाग में भेज दिया गया। मेरे बटालियन कमांडर को मेरी नियुक्ति पर कोई आपत्ति नही थी क्योंकि मैं एक अच्छा भू-मानचित्रक था और लड़के मेरे आदेशों का पालन करते थे। इसलिए दो वर्ष मैंने कार्यकारी प्लाटून कमांडर के रूप में काम किया। अलबत्ता मेरा दर्जा सीनियर सारजेंट का था। मैं येलेत्स से लेकर ओदेर नदी के किनारे पर स्थित फ्रैंकफुर्त तक रहा। यह भी बता दूं कि वे मेरे जीवन के सर्वोत्तम दिन थे। मैं जानता हूं कि यह बात अपने आप में विचित्र और हास्यास्पद लगेगी, लेकिन है सच !"

उसने महसूस किया कि इस तरह टांगें समेटे बैठे रहना कोई अधिक विनम्र तरीका नहीं है, इसलिए उसने अपनी टांगें पलंग से नीचे लटका लीं।

"देखो !" उसकी बात सुनते हुए और उससे कुछ कहते समय गैंगार्त के होंठों पर हमेशा एक मैत्रीपूर्ण मुस्कान खेलती रही "काम से इन्कार क्यों करते हो ? शायद तुम्हें खुशी के कुछ वर्ष और मिल जाएं।"

"क्या ही अद्भुत तर्क है ! खुशी के वर्ष ? लेकिन लोकतन्त्र का क्या होगा ? तुम लोकतन्त्र के सभी सिद्धान्तों की उपेक्षा कर रही हो। वार्ड ने मुझे

नहीं चुना। मतदाताओं को मेरे अतीत का भी पता नहीं……और जो सच पूछो तो तुम्हें भी पता नहीं है।"

"तो फिर बताओ!"

वह हमेशा की ही तरह नर्म लहजे में बोल रही थी। इस बार कोस्तोग्लोतोव ने भी अपना स्वर मद्धम कर लिया जिससे कि सिर्फ वही सुन सके। रूसानोव सो रहा था, ज़त्स्यिर्को पढ़ रहा था और पोदुएव का बिस्तर अब खाली था। उनकी बातचीत इतने धीमे स्वर में चल रही थी कि कोई मुश्किल ही से सुन सकता था।

"इसमें काफी समय लगेगा। देखो, मुझे इससे बड़ी उलझन हो रही है कि मैं बैठा हूं और तुम खड़ी हो। एक महिला से बातचीत करने का यह कोई उचित तरीका नहीं है, लेकिन यह बात इससे भी अधिक मूर्खतापूर्ण होगी कि मैं भी खड़ा हो जाऊं—एक सिपाही की तरह सीधा। आओ, मेरे बिस्तर पर बैठ जाओ!"

"सच तो यह है कि अब मुझे जाना चाहिए," उसने कहा और पलंग के एक किनारे पर बैठ गई।

वेरा कोर्निलएवना! तुम देख रही हो कि मेरी ज़िन्दगी के हर मामले में गड़-बड़ होती रही है जिसका कारण यह रहा है कि मैं लोकतन्त्र का कुछ अधिक ही भक्त हूं। मैंने सेना में लोकतन्त्र के फैलाने का प्रयत्न किया—अर्थात् मैंने अपने अफसरों की बातें दिमाग बंद करके नहीं सुनीं, बल्कि उन्हें दो टूक जवाब दिए। यही कारण है कि १९३९ में मुझे अफसरों के पाठ्यक्रम में नहीं भेजा गया और मैं सामान्य सैन्य दलों में ही रहा। १९४० में मैं अफसरों के प्रशिक्षण कॉलेज तक पहुंचने में सफल हो गया, लेकिन अपने अफसरों से मेरा रवैया गुस्ताखाना था, इसलिए उन्होंने मुझे निकाल बाहर किया। यह १९४१ में ही हो सका कि मैं किसी न किसी तरह सुदूर पूर्व के लिए नॉन-कमीशन्ड अफसरों का कोर्स पूरा करने में सफल हो गया। सच पूछो तो यह मुझे बहुत बुरा लगता था कि मैं एक अफसर नहीं हूं। मेरे सभी मित्रों को कमीशन मिल गया था। नौजवानी में इस तरह की बातें बहुत बुरी लगती हैं। फिर भी मैं यह समझता हूं कि अधिक महत्त्वपूर्ण चीज न्याय है।"

"मेरा एक मित्र था। वह मेरे बहुत ही निकट था," गैंगार्त ने पलंग पर पड़े कंबल की ओर देखते हुए कहा। "उसे भी ऐसी ही परिस्थतियों का सामना करना पड़ा था। वह एक बुद्धिमान और एक सुशिक्षित व्यक्ति था, लेकिन वह एक सामान्य सैनिक से अधिक कभी कुछ नहीं बन सका।" वह थोड़ा रुकी और मौन का यह क्षण उन दोनों के बीच से गुजर गया। फिर उसने अपनी आंखें ऊपर उठाकर कहा—"लेकिन तुम अब भी वैसे ही हो जैसे कि तब थे।"

"क्या मतलब? एक सामान्य सैनिक या बुद्धिमान?"

"गुस्ताख ! उदाहरण के लिए यह देखो कि तुम डाक्टरों से—विशेषकर मुझसे—किस तरह बात करते हो।" यह बात उसने कठोरतापूर्वक कही—लेकिन यह एक विचित्र प्रकार की कठोरता थी जिसमें कोमलता का भी स्पर्श था।—यह वही कोमलता थी जो उसके प्रत्येक शब्द और प्रत्येक अंग-विक्षेप में बनी रहती थी—यह धुंधली, मद्धम कोमलता न होकर एक संगीत और तालमय कोमलता थी।

"जिस तरह मैं तुमसे बात करता हूं ? मैं तुमसे अधिकतम सम्मान के साथ बातें करता हूं। मेरी दृष्टि में यह बातचीत का सर्वोत्तम रूप है, लेकिन तुम्हें अभी तक इसका अहसास नहीं हुआ है। हां, अगर तुम्हारे दिमाग में पहले दिन की बात है तो मुझे सिर्फ यह कहना है कि तुम कल्पना भी नहीं कर सकती हो कि मैं उस समय कितनी मुसीबत और कष्ट में था। उस समय मैं एक मरता हुआ व्यक्ति था—और उन्होंने सिर्फ यह किया कि मुझे उस ज़िले से, जहां मैं नज़रबंद था, बाहर जाने की अनुमति दे दी। मैं यहां आया, लेकिन सर्दियों की बर्फ गिरने की बजाय यहां धुंआधार बारिष हो रही थी। मुझे अपने नमदेदार जूते उतारकर अपनी बगल में दबाने पड़े। मैं जहां से आया था वहां बर्फ का गिरना सचमुच सुखद और प्रिय लगता है, लेकिन यहां बारिष हो रही थी। मेरा ओवरकोट इतनी बुरी तरह भीग गया था कि मैं उसे निचोड़ सकता था। मैंने अपने जूते सामान-घर में रखे और पुराने शहर जाने के लिए ट्राम में बैठ गया। वहां मेरा एक परिचित रहता था—एक सैनिक जो मेरे साथ मोर्चे पर था, लेकिन उस वक्त तक अंधेरा हो चुका था और ट्राम में बैठा प्रत्येक व्यक्ति मुझसे यही कहता रहा था—'वहां मत जाओ, वे तुम्हारा गला काट देंगे।' १९५३ के क्षमा-दान के बाद उन्होंने सभी अपराधियों को जेल से रिहा कर दिया था और अब वे चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करें उन्हें दोबारा नहीं पकड़ पाएंगे। मुझे तो इसका भी विश्वास नहीं था कि मेरा सैनिक मित्र वहां है भी—और ट्राम में बैठा कोई भी व्यक्ति यह तक न जानता था कि मुझे जिस गली में जाना है, वह है कहां। इसलिए मैंने होटलों के चक्कर लगाने का फैसला किया। उन होटलों की लॉबियां इतनी खूबसूरत थीं कि अपने गन्दे पांवों से उनमें चलते हुए मुझे शर्म आई थी। एक-दो होटलों में कमरे भी खाली थे, लेकिन जब मैंने सामान्य पासपोर्ट की बजाय अपने देश-निकाले के कागजात उन्हें दिखाए तो उन सबने बस यही कहा—'नहीं, हमें इसकी अनुमति नहीं है। उस स्थिति में मैं क्या कर सकता था ? मैं इसके लिए तो एकदम तैयार था कि कहीं पड़ा-पड़ा मर जाऊं, लेकिन फेंस के नीचे खुली जगह में मरने का क्या फायदा ? मैं सीधा पुलिस स्टेशन जा पहुंचा और उनसे कहा—'सुनो, मैं 'उनमें' से हूं जिनकी तुम्हें तलाश है। मुझे रात को ठहरने की कोई जगह दे दो ! उन्होंने इधर-उधर की बातों के बाद मुझसे कहा—'किसी चायघर में चले जाओ और

वहां रात काट दो। वहां हम कागजात की जांच-पड़ताल नहीं करते।' कोई चायघर मुझे नहीं मिला, इसलिए मैं वापस रेलवे स्टेशन चला गया, लेकिन वहां वे किसी को सोने नहीं दे रहे थे—वहां एक पुलिसमैन घूम रहा था और ऐसे लोगों को वहां से भगा रहा था। तब सुबह मैं तुम्हारे यहां आया—बाहरी रोगियों के विभाग में। वहां लाइन लगी थी। उन्होंने मेरी परीक्षा की और कहा कि मुझे तत्काल अस्पताल में दाखिल हो जाना चाहिए। इसलिए मुझे फिर शहर के दूसरी ओर जाना पड़ा और जिला-कार्यालय तक पहुंचने के लिए मुझे कई बार ट्रामें बदलनी पड़ीं। हालांकि सोवियत संघ में काम के घंटे हर जगह एक ही हैं, लेकिन जिलेदार वहां नहीं था। 'काम जाए जहन्नुम में,' उसने सोचा होगा। इतना तुच्छ काम भला वह कैसे कर सकता था कि देश-निकाला भोगने वालों के लिए कोई संदेश छोड़ जाए। कोई नहीं जानता था कि वह दफ्तर में वापस आएगा भी कि नहीं। तभी मुझे खयाल आया कि अगर मैंने अपने कागजात दे दिए तो स्टेशन के सामान-घर से मुझे मेरे जूते वापस नहीं मिल सकेंगे, 'इसलिए मुझे स्टेशन के लिए दो बार फिर ट्रामें बदलनी पड़ीं—हर ट्रिप में डेढ़-डेढ़ घंटा लग गया।"

"मुझे याद नहीं पड़ता कि जब तुम आए थे, तुम्हारे पास नमदेदार जूते थे। क्या थे ?,"

"कैसे याद पड़ सकता है, क्योंकि अपने जूते तो मैंने स्टेशन पर ही एक व्यक्ति को बेच दिएथे। मैंने सोचा था कि इन सर्दियों का बाकी मौसम तो मुझे क्लिनिक में ही गुज़ारना होगा और सर्दियों के अगले मौसम तक मैं जिन्दा नहीं रहूंगा। तब में वापस जिला-कार्यालय गया। उस वक्त तक मैं सिर्फ ट्रामों पर ही दस रूबल खर्च कर चुका था। ट्राम रुकने की जगह से एक किलोमीटर तक मुझे दलदल में पैदल चलना पड़ा और वह भी इतनी तकलीफ में कि मैं अपने आपको मुश्किल से ही घसीट सकता था—और जहां कहीं भी मैं जाता, मुझे अपना थैला भी उठाना पड़ता था। लेकिन खुदा का शुक्र है कि जिलेदार वापस आ चुका था। मैंने अपने देश-निकाले के स्थान के जिलेदार का अनुमति पत्र उसे दिखाया और साथ ही अस्पताल में दाखिले की चिट भी, जो मुझे तुम्हारे बाहरी रोगियों के विभाग से मिली थी। उसने मेरे अस्पताल में दाखिले के अनुमति-पत्र पर अपनी सहमति दर्ज कर दी। इस तरह मैं यहां पहुंचा··· लेकिन नहीं, अभी वापस क्लिनिक में नहीं। पहले मैं शहर में गया। मैंने एक पोस्टर देखा था कि 'स्वप्न-सुन्दरी' नृत्य-रूपक शहर में चल रहा है।"

"तो तुमने नृत्य-रूपक देखने का निर्णय कर लिया था ? अगर मुझे पता होता तो मैं तुम्हें कभी दाखिल न करती—हरगिज नहीं !"

"वेरा कोर्निलएवना ! यह एक चमत्कार जैसा था। मैं चाहता था कि मरने से पहले अन्तिम नृत्य-रूपक देख लूं। अगर मैं न भी मरूं तब भी मुझे

विश्वास था कि निरंतर देश-निकाला होने के कारण मैं फिर कभी नृत्य-रूपक नहीं देख सकूंगा। लेकिन उनका बेड़ा गर्क हो—उन्होंने कार्यक्रम बदल दिया था—'स्वप्न सुन्दरी' की बजाय 'आगू बाली'[1] दिखाया जा रहा था।"

एक स्वरहीन हंसी के साथ वेरा कोर्निलएवना ने अपना सिर हिला दिया। एक मरते हुए आदमी के नृत्य-रूपक देखने के शौक ने उसे प्रभावित किया था—हां, अत्यधिक प्रभावित!

"मैं क्या कर सकता था? संगीत गृह में पियानो-वादन का कार्यक्रम था, लेकिन स्टेशन से यह जगह बहुत दूर थी और मुझे पता था कि अस्पताल में मुझे किसी बैंच का कोई कोना भी नहीं मिल सकेगा। बारिष मूसलाधार हो रही थी और मेरा बुरा हाल हो रहा था। मैं एक ही काम कर सकता था कि अपने आपको क्लिनिक के रहमो-करम पर छोड़ दूं। मैं चला आया। 'यहां कोई जगह नहीं है,' उन्होंने कहा—'तुम्हें कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ेगा।' दूसरे मरीजों ने मुझे बताया कि—कभी-कभी तो लोगों को एक-एक हफ्ते तक इन्तज़ार करना पड़ जाता है। लेकिन इन्तजार करने मैं कहां जा सकता था? मैं क्या करता? श्रम शिविरों में रहने के दौरान मुझमें जो जिद्दीपन आ गया था अगर वह न होता तो मैं कहीं का न रहता। और तब तुमने चाहा कि मेरी चिट ले लो। चाहा था न?…इन परिस्थितियों में तुम्ही बताओ कि मैं और किस तरह बात करता?"

अब बाद में सोचने पर यह सब कुछ काफी मनोरंजक लगता था। उन दोनों को ही उसमें आनंद मिला।

यह समूची कहानी सुनाने में उसे अपने दिमाग पर कोई विशेष जोर नहीं देना पड़ा था और इस सारे अरसे में वह किसी और चीज़ के बारे में ही सोचता रहा था—अगर उसने १९४६ में मैडीकल स्कूल की शिक्षा पूरी कर ली थी तो उसकी उम्र अब इकत्तीस वर्ष से कम नहीं हो सकती। इस तरह वह लगभग उसकी समवयस्क ही थी। फिर तेईस वर्षीय जोया की तुलना में वह उसे कम आयु की क्यों लगती थी? इसका कारण उसका चेहरा नहीं, बल्कि उसके तौर-तरीके थे—उसकी झिझक; उसका शर्मीलापन। इस प्रकार की स्त्री के बारे में व्यक्ति यह जरूर सोचता है कि क्या वह अभी तक…। अगर आप उन्हें ध्यान से देखें तो उनके आचरण के मायावी संकेतों से आप उन्हें पहचान सकते हैं।

लेकिन गैंगार्त तो विवाहित थी। तो फिर क्यों…?

उसने उसकी ओर देखा और इस बात पर आश्चर्य करने लगी कि अपनी पहली भेंट में उसने उसके बारे में इतनी अप्रिय और बेढंगी धारणा क्यों बना

---

१. एक उजबेक आपेरा जो स्टालिन के दिनों में तैयार हुआ था।

(अनुवादक की टिप्पणी)

ली थी। यह तो सही है कि उसके चेहरे की रेखाएं कठोर थीं और वह कुछ असभ्य और अशिष्ट ढंग से देख रहा था, लेकिन उसे देखने के शिष्ट तरीके भी आते हैं और वह एक मित्र की तरह प्रिय एवं सुखद लहजे में भी बातें कर सकता है—जैसे कि वह इस समय कर रहा है। शायद बात यह है कि वह दोनों ही प्रकार का व्यवहार करने में सक्षम है और जैसी आवश्यकता होती है वैसा ही रुख अपना लेता है।

"खैर, अब मुझे नमदेदार जूतों और नृत्य-रूपकों के बारे में सब कुछ पता चल चुका है।" वह उसकी तरफ देखकर मुस्कराई। "लेकिन अब तुम मुझे अपने सामान्य जूतों के बारे में बताओ! क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे जूते नियमों का असीम उल्लंघन कर रहे हैं?" उसने अपनी आंखें सिकोड़ते हुए कहा।

"नियम—और नियम," कोस्तोग्लोतोव का चेहरा तन गया। उसने मुंह बनाया तो उसके चेहरे का घाव का निशान भी कुछ हिला।" जेल में भी व्यक्ति को वरजिश करने की इजाज़त तो होती ही है—क्यों, क्या नहीं?" मैं सैर के बगैर नहीं रह सकता। उसके बिना मैं कभी भी स्वस्थ हो ही नहीं सकता। तुम मुझे ताज़ा हवा से तो वंचित रखना नहीं चाहोगी—बोलो, क्या चाहोगी?"

हां, उसे सैर करना पसन्द था। वह काफी देर तक मैडिकल सेंटर की दूर-दराज़ और सुनसान पगडंडियों पर घूमता रहता था—गैंगार्त को इसका पता चल चुका था। उन मौकों पर वह बेढंगे ज़नाने ड्रेसिंग गाउन में, जो उसने अनुनय-विनय करके हाउस कीपर से मांग लिया था, बहुत ही अजीबो-गरीब लगता था। (पुरुष रोगियों को ड्रेसिंग गाउन नहीं दिये जाते थे, क्योंकि उनकी बहुत कमी थी।) वह उसे अपनी फौजी पेटी के नीचे, जिसमें सितारे वाला बक्सुआ लगा था, समेट लेता था। उसकी बेशुमार तहों को वह अपने पेट की बजाय अगल-बगल कर लेता था, लेकिन उसकी गोट फिर भी लहराती रहती थी। वह फौजी जूते तो पहनता था, लेकिन टोपी नहीं। जब वह जान-बूझकर बड़े-बड़े डग भरता हुआ टहलता था तो उसके झाड़ीनुमा काले बाल स्पष्टतः खड़े दिखाई देते थे। वह कभी तेज़ चलता, कभी आहिस्ता—लेकिन अपने पांवों के नीचे पत्थरों की ओर जरूर देखता रहता। अपने लिए स्वयं ही निर्धारित कर ली सीमा पर पहुँचने के बाद वह लौट पड़ता। अपने हाथ वह हमेशा अपनी पीठ के पीछे बांधे रहता और हमेशा ही वह अकेला होता—कभी कोई उसके साथ न होता।

"निज़ामुद्दीन बहरामोविच कुछ ही दिन में राउंड पर आने वाला है—और अगर उसने तुम्हारे जूते देख लिये तो जानते हो क्या होगा? मुझ पर भी फटकार पड़ेगी।"

एक बार फिर ऐसा लगा जैसे कि वह उससे कोई मांग करने की बजाय अनुरोध कर रही है—जैसे कि उससे कोई शिकवा कर रही है। वह जिस लहजे में बात कर रही थी वह समानता का भी नहीं, बल्कि किसी बड़े के प्रति सम्मान का सा था। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उनके बीच यह सम्बन्ध कैसे स्थापित हो गया है! इस तरह का रवैया उसने किसी मरीज़ के साथ पहले कहीं नहीं अपनाया था।

उसे विश्वास दिलाने और आश्वस्त करने के प्रयत्न में कोस्तोग्लोतोव ने उसका हाथ छुआ। "वेरा कोर्निलएवना, मैं तुम्हें पूरी-पूरी गारंटी देता हूं। कि मेरे जूते कभी भी नहीं दिखाई देंगे। वह मुझे उन्हें हॉल में पहने हुए भी नहीं देख सकेगा।"

"लेकिन बाहर रास्तों पर?"

"उसे पता ही नहीं चलेगा कि मैं उसके विंग में हूं। मुझे एक बात सूझी है—मजा लेने के लिए हम एक गुमनाम खत लिख देंगे जिसमें मेरे विरुद्ध शिकायत होगी कि मेरे पास एक जोड़ी जूते हैं। वह दो अरदलियों को साथ लेकर यहां कोना-कोना छान मारेगा और उसे यहां कुछ नहीं मिलेगा।"

"गुमनाम खत लिखना?—यह तो कोई अच्छा विचार नहीं है।" उसने एक बार फिर अपनी आंखें सिकोड़ लीं।

एक और बात भी कोस्तोग्लोतोव को परेशान कर रही थी—वह लिपिस्टिक क्यों लगाती थी? इससे उसकी कमनीयता को क्षति पहुंचती थी—एक खुरदरापन आ जाता था। उसने आह भरी—"लोग अब भी गुमनाम खत लिखते हैं, वेरा कोर्निलएवना! तुम मुझ पर विश्वास करो, लोग लिखते हैं।—और वे खत कारगर भी होते हैं। रोमवासी कहा करते थे—'एक गवाही तो कोई गवाही नहीं होती' लेकिन बीसवीं शताब्दी में भी एक गवाही भी अधिक और अनावश्यक है।"

उसने अपनी आंखें फेर लीं। इस विषय पर बातचीत करते रहना एक मुश्किल काम था।

"तुम उन्हें कहा छुपाओगे?"

"अपने जूते? अरे, मैं दर्जनों जगहें ढूंढ़ सकता हूँ। यह सब कुछ समय-समय पर निर्भर करता है—अगर स्टोव न जल रहा हो तो मैं उन्हें वहां छुपा सकता हूं, या फिर मैं उन्हें रस्सी में बांध कर खिड़की के बाहर लटका सकता हूं—तुम इस सम्बन्ध में एकदम निश्चिन्त रहो!"

वेरा कोर्निलएवना के लिए अपनी हंसी रोक पाना मुश्किल था। वह किसी न किसी तरह जरूर बच निकलेगा।

"अच्छा यह तो बताओ कि तुमने पहले दिन अपने जूतों को सुपुर्द किये जाने से कैसे बचा लिया था?"

"अरे, यह तो बहुत आसान था। मैं उस जगह था जहां वे पाजामा बदलवाते हैं। मैंने जूते दरवाजे के पीछे रख दिये। अरदली ने मेरी सब चीजें इकट्ठी कीं, उन्हें एक बैग में रख कर लेबिल लगाया और लेकर स्टोर में चला गया। मैं नहाया, नहा कर स्नानघर से बाहर आया और जूतों को एक अखबार में लपेट कर अपने साथ ले आया।"

वे ऐसी ही इधर-उधर की बातें करते रहे। काम का दिन अभी आधा ही बीता था। वह वहां बैठी क्या कर रही थी? रूसानोव बेचैनी की नींद सो रहा था—वह पसीने से तर-बतर था, लेकिन वह कम से कम सो तो रहा था और उसने कै नहीं की थी। गैंगार्त ने एक बार फिर उसकी नब्ज देखी और अब वह जाने ही वाली थी कि उसे कोई बात याद आ गई और वह कोस्तोग्लोतोव की तरफ मुड़ आई—"अरे हां, तुम्हें अतिरिक्त खुराक नहीं मिल रही? नहीं न?"

"नहीं मादाम!" कोस्तोग्लोतोव के कान खड़े हो गये।

"कल से तुम्हें मिलेगी। प्रतिदिन दो अण्डे, दो गिलास दूध और पचास ग्राम मक्खन!"

"यह सब क्या है? मुझे तो अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा! मैंने तो अपने समूचे जीवन में ऐसा भोजन नहीं किया है—हालांकि मेरे विचार से ऐसी खुराक मिलनी चाहिए। तुम्हें पता है, मुझे तो यहां बीमारी भत्ता भी नहीं मिल रहा है!"

"लेकिन क्यों?"

"बात एकदम सीधी-सादी है। ऐसा लगता है कि चूंकि मैं वांछित समय—यानी छः महीने तक किसी भी श्रमिक संगठन का सदस्य नहीं रहा हूं, इसलिए मुझे कोई भी चीज पाने का अधिकार नहीं है।"

"यह तो बहुत ही भयावह बात है! लेकिन ऐसा हुआ कैसे?"

"बात सिर्फ इतनी सी है कि मैं अब बाहर की दुनिया का आदी नहीं रह गया हूं। जब मैं अपने देश-निकाले के स्थान पर पहुंचा तो मुझे मालूम होना चाहिए था कि मैं शीघ्रातिशीघ्र किसी श्रमिक-संगठन का सदस्य बन जाऊं।"

अजीब बात थी! कुछ बातों में वह इतना चालाक था, लेकिन दूसरी बातों में इतना असहाय! उसके अतिरिक्त भोजन का आग्रह भी स्वयं गैंगार्त ने ही किया था—वैसे भी यह काम कोई बहुत आसान नहीं था······लेकिन अब जाने का वक्त था—वह वहां बैठी सारे दिन गप-शप करती रह नहीं सकती थी।

वह लगभग दरवाजे पर पहुंच चुकी थी कि तभी उसने हंसते हुए उसे पीछे से पुकारा—"सिर्फ एक मिनट! तुम मुझे कहीं इसलिए तो रिश्वत नहीं दे रहीं कि मैं 'सीनियर रोगी' हूं...नहीं न? तुमने मुझे सचमुच चिन्तित कर दिया

है अभी काम का पहला ही दिन है और मैं भ्रष्ट हो चुका हूं।"

गैंगार्त कमरे से बाहर चली गई।

लेकिन मरीजों के दोपहर के खाने के बाद रूसानोव को देखने के लिये फिर आना था। तब तक उसे पता चल चुका था कि सीनियर डॉक्टर का राउंड कल निश्चित रूप से होगा। इसका अर्थ यह था कि वार्ड में उसे काफी काम करना होगा—उसे मेजों का सामान देखना होगा क्योंकि जो चीजें निजामुद्दीन बहरामोविच की तेज निगाहों में विशेष रूप से खटक जाती थीं, वे पलंगों के पास लगी मेजों पर रखे हुये खाने की चीजों के टुकड़े या अनुचित ढंग से प्राप्त की गई खाने की चीजें थीं। आदर्श स्थिति तो यह थी कि वहां अस्पताल से मिली हुई रोटी और चीनी के अतिरिक्त और कुछ न हो। उसे सफाई भी देखनी थी और उस विभाग में सर्वाधिक बुद्धिमान महिला वही थी।

वेरा कोर्निलएवना पहली मंजिल में गई और उसने अपनी गर्दन को पूरी तरह पीछे को मोड़ कर दीवारों के ऊपरी हिस्सों और छतों को सतर्कतापूर्वक देखा। सिबगातोव के पलंग के उपर एक कोने में उसे मकड़ी का जाला लगा दिखाई दिया। (प्रकाश इस समय कुछ अधिक था, सूरज अभी-अभी बाहर आया था।) उसने एक अरदली को बुलाया—जिसका नाम एलिजाबेता अनातोल्येवना था और जो आवश्यकता के समय हमेशा आसपास ही होती थी—और उसे बताया कि कल तक पूरी सफाई हो जानी चाहिये और मकड़ी के जाले की ओर उसने विशेष रूप से संकेत किया।

एलिजावेता अनातोल्येवना ने अपने कोट की जेब से चश्मा निकाला, और उसे लगा कर कहा—"ओह तुम बिल्कुल ठीक कहती हो! कितनी शर्मनाक बात है!" उसने अपना चश्मा उतार लिया और ब्रुश और सीढ़ी तलाश करने चली गई। सफाई करते समय उसने अपना चश्मा नहीं लगाया।

वहां से गैंगार्त पुरुषों के वार्ड में गई। रूसानोव की हालत वैसी ही थी—वह पसीने से नहा रहा था, हां उसकी नब्ज की रफ्तार जरूर कुछ ठीक हो गई थी। उसके आने से कुछ ही पहले कोस्तोग्लोतोव अपने जूते और ड्रेसिंग गाउन पहन चुका था और अब सैर को जाने ही वाला था। वेरा कोर्निलएवना ने वार्ड को कल के महत्त्वपूर्ण निरीक्षण के सम्बन्ध में सूचना दी और मरीजों से कहा कि इससे पहले कि वह उनकी मेजों को देखे, वे स्वयं ही अपनी मेजों को अच्छी तरह देख लें।

"हम वार्ड के 'सीनियर रोगी' से शुरू करेंगे," उसने कहा।

इसका कोई विशेष कारण नहीं था कि वह सीनियर रोगी से ही शुरू करे और सच पूछो तो इसका कोई विशेष कारण नहीं था कि वह कमरे के उस हिस्से में दूसरी बार जाये।

वेरा कोर्निलएवना का शरीर दो त्रिकोणों जैसा था—ऐसा लगता था कि

एक त्रिकोण का सिरा दूसरे त्रिकोण पर रखा है और ऊपर वाला त्रिकोण कुछ छोटा है और नीचे वाला कुछ बड़ा। उसकी कमर इतनी पतली थी कि देखने वाले के हाथ में खुजली सी होने लगती थी कि उसे अपनी उंगलियों के घेरे में लेकर हवा मे उछाल दे। लेकिन कोस्तोग्लोतोव ने ऐसी कोई हरकत नहीं की। उसने निरीक्षण के लिए विनम्रतापूर्वक अपनी मेज की दराज खोल दी और कहा—"अपनी सहायता स्वयं कोजिये!"

"देखें! देखें! कहते हुए उसने मेज तक पहुंचने का प्रयत्न किया। कोस्तोग्लोतोव एक ओर हट गया। वह मेज के एकदम निकट उसके पलंग पर बैठ गई और मेज देखनी शुरू कर दी।

वह वहां बैठी थी और वह उसके पीछे खड़ा था। अब कोस्तोग्लोतोव को उसे अच्छी तरह देखने का मौका मिला। उसने उसकी गर्दन देखी—पतली सी गर्दन जिसे देखकर ऐसा लगता था कि वह किसी दक्ष शिल्पी का कारनामा है और उसके बाल, जो बहुत काले थे और जिनमें पीछे की ओर छोटी-सी गांठ लगा दी गई थी—कुछ इस ढंग से कि फैशन का जरा भी गुमान नहीं होता था।

उसे इस प्रचंड धारा से अपने आपको अवश्य ही काट लेना चाहिए। यह अपने आप में सचमुच हास्यास्पद था कि वह स्त्री जो उसके करीब आये उसके मन-मस्तिष्क पर इस तरह छा जाये। उसने उसके पास बैठकर कुछ मिनट बातें ही तो की थीं और फिर चली गई थी—लेकिन तब से लेकर अब तक के बीच के अरसे में वह कोशिश के बावजूद उसके बारे में सोचते रहने से खुद को रोक नहीं सका था—और जहाँ तक उसका सम्बन्ध है वह शाम को अपने घर चली जायेगी—अपने पति की बाहों में······

उसे छुटकारा पाना होगा।—और एक औरत के मामले में ऐसा करने का एक ही तरीका था।

वह वहाँ खड़ा निरन्तर उसके सिर के पिछले हिस्से को देखता रहा। उसके कोट का कालर बीच से ऊपर को उठा हुआ था। उसके बाहर रीढ़ की हड्डी के सिरे पर एक गोल सी हड्डी कुम्भ की तरह उभरी हुई थी। उसका मन हुआ कि वह उस पर अपनी उंगलियां फिराए।

"इसमें कोई शक नहीं कि सारे क्लिनिक में तुम्हारी मेज सर्वाधिक गन्दी और शर्मनाक है," गैंगार्त टिप्पणी कर रही थी—"रोटी के टुकड़े, चिकने कागज के टुकड़े, गन्दे तम्बाकू के रेशे, किताब और दस्तानों की जोड़ी। क्या तुम्हें अपने आप पर शर्म नहीं आती? तुम्हें आज सफाई कर लेनी चाहिए—पूरी तरह!"

वह उसकी गर्दन को देखता रहा—बोला कुछ नहीं।

उसने मेज का सबसे ऊपर वाला खाना खोला। उसमें थोड़ी-सी रेजगारी

के अलावा किसी भूरे तरल पदार्थ से भरी हुई एक बोतल रखी थी जिसकी डाट पूरी तरह कसी हुई थी। उसमें चालीस मिलीमीटर के करीब तरल पदार्थ होगा। पास ही प्लास्टिक का एक छोटा-सा गिलास था जैसा कि साधारणत: मुसाफिर अपने सफरी थैले में रखते है।—और एक ड्रॉयर भी था।

"यह क्या है? दवा?"

कोस्तोग्लोतोव ने भिची-सी सीटी बजाई।—"अरे यह कुछ नहीं है," उसने कहा।

"यह कैसी दवा है? हमने तो तुम्हें यह दी नहीं—दी थी क्या?"

"खैर, मुझे अपनी दवा रखने का अधिकार तो है ही—क्या नहीं है?"

"हरगिज नहीं! जब तक तुम हमारे क्लिनिक में हो तब तक तुम हमारी जानकारी के बिना अपने पास कोई दवा नहीं रख सकते हो।"

"देखो, इसका स्पष्टीकरण कुछ मुश्किल है···यह मस्सों के लिए है।"

गैंगार्त ने बोतल को, जिस पर न तो कोई नाम लिखा था और ना ही कोई लेबिल लगा था, अपने हाथों में घुमाना शुरू किया और उसकी डाट को घुमाकर उसे खोलने की कोशिश करने लगी जिससे कि उसे सूंघ सके। इस पर कोस्तोग्लोतोव ने तुरन्त हस्तक्षेप किया। उसने अपने खुरदरे हाथ उसके हाथों पर रख दिए और उस हाथ को, जो डाट को खोलने की कोशिश कर रहा था, पीछे हटा दिया।

(यह अजीब बात थी कि वे जब भी बातचीत करते थे उनके हाथ आपस में जरूर मिल जाते थे।)

"सावधानी से," उसने शांत स्वर में उसे चेतावनी दी। "उसे छूते वक्त तुम्हें सावधान रहना चाहिए। वह तुम्हारी उंगलियों पर न लग जाए—और तुम्हें वह सूँघनी भी नहीं चाहिए!"

उसने बड़ी शिष्टता के साथ बोतल उसके हाथ से ले ली!

मजाक कुछ ज्यादा ही लम्बा खिचता जा रहा था।

"यह क्या है?" गैंगार्त ने त्यौरी चढ़ाकर पूछा—"क्या कोई तेज चीज?"

कोस्तोग्लोतोव उसके पास ही पलंग पर बैठ गया। उसका लहजा एकदम कारोबारी था। "बहुत तेज़!" उसने कहा। "यह एक जड़ी है जो आईसिककुल से आई है। इसे सूंघना नहीं चाहिए—न सूखी जड़ी के रूप में और ना ही अर्क के रूप में। यही कारण है कि इसकी डाट इतनी कस कर लगाई गई है। अगर यह हाथों पर लग जाए और व्यक्ति हाथ धोना भूल जाए और फिर बाद में उसे चाट ले तो वह मर सकता है।"

वेरा कोर्निलएवना डर गई। "तुमने यह अपने पास क्यों रख छोड़ी है?"

उसने पूछा ।

"अब यह गई !" कोस्तोग्लोतोव गुर्राया ! 'अब जब तुमने यह देख ली है तो मेरा खयाल है कि मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगा । मुझे यह छुपा देनी चाहिए थी ।···इसे मैं इलाज के लिए इस्तेमाल करता रहा हूं—अब भी कभी-कभी करता हूँ ।"

"शुद्धत: इलाज के लिए ?" उसने आंखों-ही-आंखों में उससे सवाल किया, लेकिन इस बार उसने अपनी आंखें सिकोड़ी नहीं । इस समय तो उसका रवैया एकदम व्यावसायिक था ।

हां, यह सच है कि उसका रवैया एकदम व्यावसायिक था, लेकिन उसकी आंखें अब भी पहले जैसी ही हल्की भूरी थीं ।

"शुद्धत: इलाज के लिए !" उसने ईमानदारी से उसे बताया ।

"या फिर तुम इसे अपने पास इसलिये रख रहे हो···कि अगर जरूरत पड़े तो···?" उसे उसकी बात पर अभी पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ था ।

"अच्छा, अगर तुम जानना ही चाहती हो तो सुनो—यहां आते समय यह बात मेरे दिमाग के किसी कोने में जरूर थी । मैं नहीं चाहता था कि अनावश्यक रूप से कष्ट और यातना झेलूं···लेकिन कष्ट समाप्त हो गया और मैंने भी वह विचार छोड दिया । लेकिन अब भी मैं इसे अपने इलाज के लिए इस्तेमाल करता हूं ।"

"चोरी छुपे ?—जब कोई आस-पास न हो, तब ?"

"जब व्यक्ति सिद्धांतों और नियमों से जकड़ा हुआ हो, उसे अपनी इच्छानुसार जीवन जीने की अनुमति न हो तो वह और क्या करे ?"

"तुम कितनी खुराक लेते हो ?"

"मात्रा घटती बढ़ती रहती है—पहले एक बूंद से दस बूंदों तक, फिर दस बूंदों मे घटाते-घटाते एक बूंद तक—इसके बाद दस दिनों का इंटरवल । इन दिनों इंटरवल है । सच पूछो तो मुझे इसका विश्वास ही नहीं कि फायदा सिर्फ एक्स-रे इलाज से हुआ है—इसमें इस जड़ी का भी हो सकता है ।"

वे दोनों भिची-भिची आवाज में बातचीत कर रहे थे ।

"तुमने वह किस चीज में मिलाई थी ?"

"वोदका में !"

"वह तुमने खुद मिलाई थी ?"

"हां !"

"कितनी मात्रा में ?"

"कितनी मात्रा में ? अरे, उसने मुझे मुट्ठी भर जड़ी देकर कहा था यह तीन आधा लिटर वोदका के लिये काफी होगी । मात्रा का फैसला मैंने उसी हिसाब से कर लिया था ।"

"लेकिन उसका वजन कितना था ?"

"उसने वह तोली नहीं थी—सिर्फ आंखों से ही तोल ली थी।"

"आंखों से ? ऐसा जहर—और उसने वह आंखों से तोल लिया था। यह जहर है—क्या तुम्हें इसका अहसास नहीं है ?"

"मुझसे किस चीज का अहसास करने की अपेक्षा की जा सकती थी ?" कोस्तोग्लोतोव को गुस्सा आने लगा था। "जब आप दुनिया में एकदम अकेले होते हैं और जिलेदार आपको गांव की सीमा से बाहर निकलने तक की अनुमति नहीं देता है, ऐसे में ही आप मरने की कोशिश करते हैं। क्या आप उस समय यह सोचेंगे कि अरे यह तो जहर है, इसका वजन कितना है ? तुम जानती हो कि वह मुट्ठी भर जड़ी मेरे लिये क्या कुछ कर सकती थी ? लगातार बीस वर्ष तक कठोरतम श्रम ! देश-निकाले के स्थान से बाहर जाने के लिए एक दिन की भी छुट्टी नहीं। लेकिन मैं बाहर फिर भी गया। मैंने पहाड़ों पर एक सौ पचास किलोमीटर का सफर किया। वहां एक बूढ़ा आदमी रहता है जिसका नाम क्रेमेन्त्सोव है। उसकी दाढ़ी अकादमी के प्रख्यात सदस्य पावलोव से मिलती-जुलती है। वह उन लोगों में से है जो वहाँ इस शताब्दी के शुरू में जाकर बसे थे। वह एक ईमानदार हकीम है। खुद बाहर जाता है, जड़ी-बूटी एकत्र करता है और खुद ही खुराक की मात्रा तय करता है। उसके गांव के लोग उसका मजाक उड़ाते हैं—अपने देश में भला कौन मसीहा बन सकता है ?—लेकिन मास्को और लेनिनग्राद तक से लोग उससे मिलने जाते हैं। कहते हैं कि एक बार प्रावदा का एक संवाददाता वहां गया था और उसका कायल हो गया था। लेकिन अफवाह है कि उस बूढ़े को पकड़ कर अब जेल में ठूंस दिया गया है। कुछ अहमकों ने आधा लीटर दवा तैयार करके रसोई में रख दी थी। नवम्बर समारोहों[1] के सिलसिले में कुछ मेहमान आये थे वोदका खत्म हो गई थी, मेज़बान और उसकी पत्नी वहां थे नहीं—उन्होंने वह जड़ी ही पी ली। उनमें से तीन मर गये। एक और घर में भी इसके जहर से तीन बच्चे मर गये। लेकिन बूढ़े को आखिर क्यों गिरफ्तार किया जाए ? उसने तो उन्हें पहले ही सावधान कर दिया था…"

लेकिन अब तक कोस्तोग्लोतोव को यह अहसास हो गया कि वह अपने ही पक्ष को कमजोर कर रहा है, इसलिये वह चुप हो गया।

गैंगार्त चिन्तित और अस्त-व्यस्त हो गई। "मुख्य बात यही है," उसने कहा। "एक अस्पताल के वार्ड में इस प्रकार की तेज दवाएं रखना एकदम वर्जित है। इस विषय पर कोई बहस नहीं हो सकती—एकदम कोई बहस नहीं

---

१. ७ नवम्बर की १९१७ की क्रांति की वर्षगांठ मनाई जाती है।

(अनुवादक की टिप्पणी)

हो सकती। किसी समय भी कोई दुर्घटना हो सकती है। यह बोतल मुझे दे दो!"

"नहीं!" कोस्तोग्लोतोव ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"यह मुझे दे दो!" उसने बोतल की ओर, जिसे कोस्तोग्लोतोव ने मजबूती से पकड़ रखा था, हाथ बढ़ाते हुए त्यौरी चढ़ाकर कहा।

कोस्तोग्लोतोव की उंगलियाँ, जो अब तक काफी कठोर श्रम कर चुकी थीं, बोतल के गिर्द काफी मजबूती से कसी हुई थीं।

"तुम इस तरह इसे नहीं ले सकतीं," वह मुस्कराया।

गैंगार्त की तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गईं। "खैर!" उसने कहा—"यह तो मैं जानती हूं कि तुम सैर करने किसी वक्त जाते हो। मैं इसे तुम्हारी अनुपस्थिति में ले जाऊंगी।"

"पहले ही से सावधान कर देने के लिये धन्यवाद! मैं उसे कहीं छुपा दूंगा।"

"रस्सी में बांधकर खिड़की के बाहर? तुम मुझसे क्या चाहते हो? क्या यह चाहते हो कि मैं तुम्हारी रिपोर्ट कर दूं?"

"मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम ऐसा करोगी। तुमने अभी कहा था कि तुम लोगों की बुराई करना बुरा समझती हो।"

"लेकिन तुमने मेरे लिए इसके अलावा और कोई रास्ता छोड़ा ही नहीं है।"

"इसका मतलब क्या यह है कि तुम मेरी बुराई करोगी? यह तो कोई बहुत सम्मानजनक बात नहीं है—क्या है? क्या तुम्हें डर है कि कामरेड रूसानोव इसे पी लेगा। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं इसे कागज में लपेट कर कहीं छुपा दूंगा। जब मैं क्लिनिक के बाहर जाऊंगा तो जड़ी के इस अर्क की मुझे अपने लिये जरूरत होगी। मैं नहीं समझता कि तुम्हें इसका विश्वास है कि यह प्रभावशाली है।

"नहीं, मैं हरगिज यह नहीं समझती। यह एक मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास है—और मौत के साथ खेलना है। मैं तो केवल नियमित विज्ञान में विश्वास करती हूं—उन चीजों में जिन्हें व्यवहारत: परखा जा चुका है। मुझे यही सिखाया गया है और रसौलियों के सभी विशेषज्ञ इसी तरह सोचते हैं। बोतल मुझे दे दो।"

कोस्तोग्लोतोव ने जो कुछ कहा था उसके बावजूद गैंगार्त ने कोशिश की कि वह कोस्तोग्लोतोव की मुट्ठी खोल दे।

गैंगार्त की गुस्सा भरी, हल्की भूरी आँखों में देखते हुए कोस्तोग्लोतोव में इसकी कुछ अधिक शक्ति नहीं रही कि वह अडिग बना रहे और तर्क-वितर्क करता रहे। उसे इससे बड़ी खुशी होती कि वह यह बोतल—बल्कि अपनी

मेज की सभी चीजें उसके हवाले कर दे, लेकिन अपने सिद्धान्तों को तिलांजलि दे देना उसकी प्रकृति के विरुद्ध था।

"अरे मैं तुम्हारे पवित्र विज्ञान के बारे में सब कुछ जानता हूं," उसने आह भरते हुए कहा। "अगर वह अपने में इतना ही पूर्ण होता तो हर दस वर्ष बाद उन्हें वह रद्द न कर देना पड़ता। आखिर मैं उस पर कैसे विश्वास करूं? तुम्हारे इंजैक्शनों पर? अरे हां, यह तो बताओ कि उन्होंने मेरे लिये ये नये इंजैक्शन क्यों निर्धारित किए हैं? ये इंजैक्शन आखिर हैं क्या?"

"ये एकदम जरूरी हैं। इन पर तुम्हारा जीवन निर्भर करता है। हम तुम्हारी जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं।" उसने यह बात विशेष उत्साह से कही। उसकी आंखों में विश्वास की एक चमक थी। "यह मत समझ लेना कि तुम पूरी तरह स्वस्थ हो गये हो।"

"क्या तुम अपनी बात और अधिक स्पष्टता से नहीं कह सकतीं? इनका प्रभाव क्या होगा?"

"मुझे और अधिक स्पष्ट शब्दों में कहने की क्या जरूरत है? इनसे तुम स्वस्थ हो जाओगे। दूसरी रसौलियाँ बननी बन्द हो जाएंगी। अगर मैं स्पष्टीकरण करू भी तो तुम समझ नहीं पाओगे···यह बोतल मुझे दे दो और मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि जब तुम यहां से जाओगे तो यह बोतल मैं तुम्हें लौटा दूंगी।"

उन्होंने एक-दूसरे को देखा।

कोस्तोग्लोतोव जनाना ड्रेसिंग गाउन पहने और उस पर सितारे वाली पेटी लगाए सैर के लिए एकदम तैयार था और इस रूप में सचमुच हास्यास्पद लग रहा था।

वह लगातार आग्रह किए जा रही थी। बोतल जाए जहन्नुम में—उसे दे देने में उसे कोई विशेष हिचकिचाहट नहीं थी। उसके घर में इससे दस गुनी जड़ी रखी है! नहीं, वास्तविक गड़बड़ तो यह थी कि यह यहां हल्की-भूरी आंखों और चमकते चेहरे वाली सुन्दर स्त्री थी—जिसके साथ बातचीत करना कितना सुखद था—हालांकि वह उसका चुम्बन कभी नहीं ले पायेगा। जब वह वापस घर जाएगा तो उसे बड़ी कठिनाई से यह विश्वास हो पायेगा कि वह यहां एक ऐसी सुन्दर स्त्री के पास बैठा था और वह हर सम्भव मूल्य देकर उसके जीवन की रक्षा करना चाहती थी।

—हालांकि यही एक ऐसी बात थी जो वह नहीं कर सकती।

"यह तुम्हें देने से पहले मैं कम-से-कम दो बार सोचूंगा।"—उसने मजाक करते हुए कहा। "तुम इसे घर ले जाओगी और वहां इसे कोई पी सकता है।"

(कौन पी लेगा?···घर पर उसे कौन पी लेगा? वह तो अपने घर में एकदम अकेली थी, लेकिन इस समय ऐसी कोई बात कहना बेढंगापन ही

होगा ।)

"अच्छा आओ, हम समझौता किये लेते हैं—आओ इसे उंडेल देते हैं।"

कोस्तोग्लोतोव हंसने लगा। यह कितने दुःख की बात है कि वह उसके लिए इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकता था।

"ठीक है, मैं इसे बाहर जाकर उंडेल देता हूं।"

(चाहे कोई कुछ भी कहे...उसने सोचा—लेकिन उसे लिपिस्टिक नहीं लगानी चाहिए।)

"नहीं, अब मैं तुम पर विश्वास नहीं करती। तुम उसे फेंकने जाओगे तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"मुझे एक बात सूझी है। इसे फेंका क्यों जाए? यह किसी उस व्यक्ति को क्यों न दे दी जाए जिसका इलाज तुम किसी भी तरह नहीं कर सकती हो। शायद यह उसके लिए कुछ लाभदायक सिद्ध हो!"

"तुम्हारे दिमाग में कौन है?"

कोस्तोग्लोतोव ने वादिम जत्सियर्को के पलंग की ओर संकेत किया और अपने स्वर को और भी धीमा करके कहा—"उसे काला सरतान (मेलानो-ब्लास्टोमा) है—है न?"

"अब तो मुझे पूरा-पूरा विश्वास हो गया है कि हमें यह फेंकनी ही होगी, वरना तुम किसी को जहर दे दोगे। तुम अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हो कि ऐसे व्यक्ति को, जो गम्भीर रूप से बीमार है, जहर की बोतल दे दो। अगर वह जहर पी कर मर गया तो क्या होगा? क्या तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हें धिक्कारेगी नहीं!"

"वह जहर नहीं पीएगा—वह काफी मजबूत दिल-गुर्दे वाला आदमी है।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं! आओ हम उसे बाहर चलकर फेंक देते हैं!"

"खैर, आज मेरा मूड बहुत ही अच्छा है। अच्छा आओ, इसे बाहर चल-कर उंडेल देते हैं!"

वे पलंगों के बीच से गुजरते हुए सीढ़ियों की ओर चल दिए।

"क्या तुम्हें ठंड नहीं लगेगी?"

"नहीं, मैंने नीचे कार्डिगन पहन रखा है," !

उसने कहा था—"नीचे कार्डिन पहन रखा है!" उसने यह क्यों कहा? अब वह देखना चाहता था कि वह कार्डिगन कैसा है?—वह किस रंग का है? लेकिन वह कभी नहीं देख पाएगा।

वे बाहर पोर्च में चले गए। दिन उजला हो गया था—वह बसन्त ऋतु का सा दिन लग रहा था। वहां हाल ही में आया कोई व्यक्ति यह मुश्किल ही से विश्वास करता कि यह फरवरी का सिर्फ सातवां दिन था। सूरज चमक रहा था। ऊंचे पॉपलरों की शाखाएं और नीची बाढ़ की झाड़ियां अभी नंगी

ही थीं लेकिन बर्फ के चकत्ते लगभग गायब हो चुके थे—हां, उन जगहों से भी जहां धूप नहीं पहुंचती थी। पेड़ों के बीच पिछले वर्ष की मुरझाई हुई भूरी-भूरी घास बिछी पड़ी थी। पगडंडियों के पत्थर और बजरी अभी तक गीले थे—वे अभी सूख नहीं पाये थे। बागों में अच्छी तरह-चहल पहल और आमद-रफ्त थी—डॉक्टर, नर्सें, अरदली, बाहरी रोगी और अस्पताल में दाखिल मरीजों के संबंधी आ-जा रहे थे—एक दूसरे का रास्ता काटते हुए आमने-सामने आते और पास से गुजरते हुए और एक-दूसरे को पीछे छोड़कर आगे निकलते हुए यहां तक कि एक दो बैंचों पर तो लोग बैठे हुए भी थे। अस्पताल के इस विंग में और दूसरे विंगों में कुछ खिड़कियां खुली हुई थीं और वे इस वर्ष में पहली बार खुली थीं।

उन्होंने फैसला किया कि बोतल को पार्क के ठीक सामने न उंडेला जाए। ऐसा करना बहुत ही अजीब-सा लगेगा।

"आओ, उधर चलते हैं।" कोस्तोग्लोतोव ने एक रास्ते की ओर इशारा किया जो कैंसर विंग और नाक-कान और गले के विंग के बीच से जाता था। यह वही जगह थी जहां वह अक्सर चहल कदमी किया करता था।

वे पक्के रास्ते पर अगल-बगल चलते गए। गैंगार्त की डाक्टरों वाली टोपी पाइलैटों की टोपी जैसी थी और वह कोस्तोग्लोतोव के कंधे तक पहुंचती थी।

वह कनखियों से उसे देख रहा था। चलते समय उसके चेहरे पर एक गंभीरता छाई हुई थी जैसे किसी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण काम में व्यस्त हो। यह देखकर कोस्तोग्लोतोव का ठहाका लगाने का मन हुआ।

"यह बताओ, वे तुम्हें स्कूल में किस नाम से पुकारते थे ?" वह अचानक पूछ बैठा।

"इसका उससे क्या सम्बन्ध है ?" गैंगार्त ने तेजी से उसकी ओर देखकर कहा।

"निस्संदेह, कोई नहीं ! बस मैं जानना चाहता था !"

वह कुछ कदम वैसे ही चुपचाप चलती रही—रास्ते के पत्थरों पर पड़ते हुए उसके पांवों की चाप से हल्की-हल्की आवाज आ रही थी। उसने उसकी सुकोमल हरिणियों जैसी टाँगें पहली बार उस समय देखीं, जब वह फर्श पर पड़ा अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रहा था और वह पहली बार उसके पास आई थी।

"वीगा !" गैंगार्त ने कहा।

(वैसे सच्चाई यह है कि यह सच था—या फिर अधूरा सच था। इस नाम से उसे स्कूल में केवल एक व्यक्ति पुकारता था—एक सुशिक्षित और बुद्धिमान सैनिक जो युद्ध भूमि से वापस कभी नहीं लौटा। किसी विशेष भावना के अधीन और यह जाने बिना कि वह ऐसा क्यों कर रही है उसने अपना यह मुंहबोला

नाम अचानक एक-दूसरे व्यक्ति को बता दिया था।)

वे छांव से बाहर निकल कर उस पगडंडी पर आ गए जो विंगों के बीच में थी। अब वे धूप में थे और हल्की-हल्की ठंडी हवा भी उन्हें लग रही थी।

"वीगा" यह नाम तो सितारे के नाम पर है, लेकिन वीगा को तो चकाचौंध कर देने की हद तक चमकदार होना चाहिए।"

वे रुक गए।

"मुझमें चकाचौंध कर देने वाली कोई बात नहीं है।" उसने अपना सिर हिलाया। "बात सिर्फ इतनी सी है कि मैं वीरा गैंगार्त हूं। बस?"

यह पहला मौका था जब कोस्तोग्लोतोव की बात पर गैंगार्त को नहीं, बल्कि खुद उसे उलझन हो रही थी।

'मेरा मतलब तो यह था···" उसने अपनी बात का औचित्य सिद्ध करने का प्रयत्न करते हुए कहना शुरू किया।

'मैं तुम्हारा मतलब अच्छी तरह समझती हूँ। अब उसे उंडेल दो!" उसने आदेश दिया।

उसने अपने होठों पर मुस्कराहट तक नहीं आने दी।

कोस्तोग्लोतोव ने मजबूती से लगी डाट को ढीला किया—अत्यधिक सतर्कतापूर्वक उसे निकाला और फिर नीचे झुक गया (उसके जूतों को उसका स्कर्टनुमा ड्रैसिंग गाउन छू रहा था और इस रूप में वह बहुत ही बेढंगा और हास्यास्पद लग रहा था) और उसने एक छोटा-सा पत्थर जो सड़क की कुटाई के समय बच रहा था उखाड़ लिया।

"ध्यान से देखती रहो—नहीं तो तुम कहोगी मैंने वह अपनी जेब में उंड़ेल ली है," उसने कहा। वह जमीन पर उसके पैरों के पास उकड़ूं बैठ गया था।

उसने वह धुंधला भूरा तरल पदार्थ जो किसी के लिए हलाहल हो सकता था तो किसी के लिए जीवनदाता, धरती के एक गीले सुराख में उंडेल दिया।

"क्या मैं पत्थर को उसी जगह रख दूं?" उसने पूछा।

उसने उसकी ओर देखा और मुस्करा दी।

उसने जिस ढंग से वह तरल पदार्थ उंड़ेला और जिस ढंग से पत्थर फिर से उसी स्थान पर रखा, उससे एक तरह का लड़कपन झलकता था। वह लड़कपन तो था लेकिन वह एक ऐसा लड़कपन जिससे यह भी लगता था जैसे वह कोई संकल्प कर रहा हो—या उसे किसी राज में शरीक कर रहा हो।

"अच्छा तो अब मुझे बधाई दो!" उसने जमीन पर से उठते हुए कहा।

"बधाई!" वह मुस्कराई—लेकिन वह एक उदास और दुःखी मुस्कराहट थी। "अब जाओ, सैर करो!"

और वह विंग की ओर लौट पड़ी।

वह उसकी सफेद पीठ देखता रहा—दो त्रिकोण—एक ऊपर और एक

नीचे वाला।

अब स्त्री जाति की ओर से उसके प्रति किसी प्रकार की दिलचस्पी का कोई भी संकेत उसके मन मस्तिष्क में खलबली मचा देता था। वह प्रत्येक शब्द में उससे कुछ अधिक ही अर्थ ढूंढ़ता था जितना कि उसमें वास्तव में होता था और प्रत्येक क्रिया-कलाप के बाद वह अगले क्रिया कलाप की प्रतीक्षा करने लगता था।

वेगा! वेरा गैंगार्त।—कोई ऐसी बात थी जो पूरी तरह ठीक नहीं बैठ रही थी, लेकिन इस समय वह तय नहीं कर पाया कि वह क्या कहे। वह उसकी पीठ की ओर देखता रहा।

"वेगा! वे—गा! उसने अर्द्ध-ऊंचे स्वर में पुकारा जिससे लगे कि वह दूर से बुला रहा है।—वापस आ जाओ! तुम सुन रही हो?—लौट आओ! लौट आओ!"

लेकिन उसका यह अनुरोध व्यर्थ गया। वह लौटी नहीं!

१८. कब्र के मुहानों पर[1]

साइकिल का पहिया अगर एक बार घूमना शुरू हो जाए तो वह अपना संतुलन तभी तक बनाए रख सकता है जब तक कि वह घूमता रहे। घूमना बन्द होते ही वह गिर पड़ता है। ठीक इसी प्रकार पुरुष और स्त्री के बीच चलने वाला खेल एक बार शुरू हो जाने पर तभी तक जारी रह सकता है जब तक कि वह आगे बढ़ता रहे। कल जिस हद तक बात पहुँची थी अब अगर वह उससे आगे न बढ़े तो खेल जारी नहीं रह सकता।

ओलेग के लिए मंगलवार की शाम का, जबकि जोया को रात की ड्यूटी पर आना था, इन्तजार करना मुश्किल था। उनके खेल का चंचल और बहुरंगी पहिया पहली रात और उसके बाद इतवार की दोपहर को जितना आगे बढ़ा था अब उसे उससे और आगे बढ़ना चाहिए था। उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह उस पहिये को आगे घुमाए और उसे महसूस हुआ कि जोया के दिल में भी वैसी ही प्रबल इच्छा है। वह बेताबी से उसका इन्तजार कर रहा था।

पहले वह इस आशा के साथ बाहर गया कि वह उसे बाग में मिल जाएगी। वह उस ढलवां रास्ते से भली-भांति परिचित था जिससे वह हमेशा आया करती थी। इससे पहले कि उसे यह अहसास हुआ कि चाहे वह अपने आपको किसी तरह पेश करने की कोशिश करे, अपने जनाने गाउन में वह मूर्ख ही लगेगा वह अपने बनाए हुए दो सिगरेट फूंक चुका था। वह वापस विंग में लौट आया। उसने अपना ड्रेसिंग गाउन और जूते उतार दिए और सीढ़ियों के नीचे अपने पाजामे में ही जा खड़ा हुआ—लेकिन इस लिबास में भी वह उतना ही अहमक लग रहा था जितना कि ड्रेसिंग गाउन में। उसने अपने सिर के बाल, जो हमेशा सीधे खड़े रहते थे, आज यथासंभव संवार लिए थे।

वह डाक्टरों के ड्रेसिंग रूम से बाहर निकली—कुछ देर में और जल्दी-

---

१, अलेक्जेण्डर पुश्किन की एक कविता के एक चरण के प्राथमिक शब्द कविता कुछ इस प्रकार जारी रहती है।···किसी भी गम के बिना, जहाँ अब मैं लेटा हूं, वहां युवा जीवन खेलता है . प्रकृति अपने समस्त हुस्न के साथ विद्यमान रहे, जो अमर है।

(अनुवादक की टिप्पणी)

जल्दी—लेकिन उसे देखकर उसने अपनी भौंहें झुका लीं—आश्चर्य से नहीं, बल्कि कुछ इस ढंग से जैसे वही कुछ हो रहा हो जो होना चाहिए था।—जैसे कि उसे यह उम्मीद थी कि वह उसी जगह सीढ़ियों के नीचे अपनी जगह पर खड़ा होगा।

वह रुकी नहीं। यह सोचकर कि वह कहीं पीछे न रह जाए वह उसके साथ चलने लगा। अपनी लम्बी टांगों को फैलाकर वह एक ही बार में दो-दो सीढ़ियां चढ़ रहा था—और अब वह बिना किसी प्रकार की कठिनाई के इस तरह चल सकता था।

"अच्छा बताओ—कोई नई खैर-खबर ?" उसने उससे इस ढंग से पूछा जैसे वह उसका कोई सहायक हो।

नया क्या था ? यह तो सही है कि सुप्रीम कोर्ट में हुए परिवर्तन एक नई बात थे, लेकिन उस सबको समझने के लिए तो उसे वर्षों तक शिक्षा लेने की ज़रूरत है और इस प्रकार की समझ की उस समय जोया को आवश्यकता भी नहीं थी।

"मैंने तुम्हारे लिए एक नया नाम ढूंढ लिया है। आखिर मैंने जान ही लिया है कि तुम्हारा नाम क्या होना चाहिए !"

"सचमुच ?" वह चुस्ती से सीढ़ियां चढ़ती गई।

"मैं तुम्हें चलते-चलते नहीं बता सकता। यह अपने आप में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है।"

अब वे ऊपर पहुंच चुके थे। वह उससे कुछ सीढ़ियां नीचे रह गया था। पीछे से देखते हुए उसने महसूस किया कि उसकी टांगें कुछ अधिक मोटी और भारी हैं—हालांकि उसके सुगठित शरीर के साथ वे पूरी तरह मेल खाती थीं। उनका एक अपना सौन्दर्य था—हालांकि सुकोमल और हल्की टांगें—जैसी कि वोगा की थीं—देखने वाले को बेहतर मन:स्थिति में ला देती हैं।

उसे अपने आप पर आश्चर्य होने लगा—वह पहले इस तरह देखने का आदी नहीं था; उसे इसमें कुछ गंवारपन और उजड्डपन नज़र आता था। एक स्त्री से दूसरी दूसरी स्त्री पर वह इस तरह पहले कभी नहीं मंडराया था। उसके दादा होते तो उसे 'स्कर्टों का दीवाना' कह देते। लेकिन कहावत तो यही है न कि 'भूख लगने पर खाओ, जवानी में प्यार करो !' यह और बात है कि ओलेग अपने यौवन में प्यार से वंचित ही रह गया था। अब वह पतझड़ के पौधे की तरह था जो धरती से जल्दी-जल्दी रस की अन्तिम बूंद तक खींच लेना चाहता था जिससे कि बीती हुई बसन्त ऋतु में उसे जो कुछ नहीं मिल पाया था उसका शिकवा न रहे। जीवन की इस अल्पकालिक वापसी के दौरान—और इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका जीवन बड़ी तेजी से ढलान पर—हां, ढलान पर जा रहा था—वह बेसब्र था कि वह औरतों को जी भर

कर देख ले, उन्हें सोख ले—एक ऐसे ढंग से जिसके बारे में वह उन्हें कभी बता भी नहीं सकता था। उनकी प्रकृति और स्वभाव के बारे में वह दूसरों से कहीं अधिक संवेदनशील था क्योंकि वर्षों तक न उसने कोई औरत देखी थी, न किसी औरत के करीब रहा था, न उसने किसी औरत की आवाज़ सुनी थी—वह तो यह तक भूल चुका था कि वह आवाज़ होती कैसी है?

जोया ने शिफ्ट का चार्ज लिया और एक लट्टू की तरह घूमने लगी। उसने मेज के गिर्द चक्कर लगाया, उसने इलाज की सूची और दवाइयों की अलमारी देखी और तब अचानक एक लट्टू की तरह घूमकर एक दरवाजे की ओर चल दी।

ओलेग उसे देखता रहा और जैसे ही उसने महसूस किया कि वह कुछ क्षणों के लिए खाली है वह उसके पास पहुंच गया।

"तो क्लिनिक में और कोई नई बात नहीं हुई?" जोया ने अपने मीठे स्वर में पूछा। इस बीच वह बिजली के स्टोव पर सिरिंजों को साफ करती रही और इंजैक्शनों की शीशियां भी खोलती रही।

"अरे आज तो क्लिनिक में एक महान् घटना हुई। निजामुद्दीन बहरा-मोविच ने खुद राउंड लगाया।"

"सचमुच? यह अच्छा हुआ, मुझे खुशी है कि मैं ड्यूटी पर नहीं थी··· तो हुआ क्या? क्या वह तुम्हारे जूते ले गया?"

"नहीं, जूतोंकी बात नहीं है, लेकिन थोड़ा-सा टकराव जरूर हो गया।"

"हुआ क्या?"

"अरे वह एक शानदार मौका था। पंद्रह सफेद कोट वार्ड में आ धमके—और वह भी एक साथ—विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, रजिस्ट्रार, प्रबन्धक, डाक्टर, जिन्हें मैंने इससे पहले कभी देखा तक न था। सीनियर डाक्टर पलंगों के पास रखी मेज़ों पर चीते की तरह झपट पड़ा, लेकिन हमें हमारे खुफिया एजेंटों ने पहले ही सूचित कर दिया था और हमने थोड़ी-बहुत तैयारी कर रखी थी—इसलिए अपने जबड़ों के लिए उसे कुछ नहीं मिल सका। उसकी त्योरियाँ और उसके चेहरे से असन्तोष टपक रहा था। उसी समय उन्होंने उसके सामने मेरा केस रखा और लुदमिला अफानासएवना ने एक नासमझी की बात कह दी। वह मेरी फाइल में से कुछ पढ़ रही थी···"

"'फाइल' कैसी?"

"मेरा मतलब है मेरी बीमारी की विवरण-पुस्तिका। ऐसी गलतियां मुझसे अक्सर हो जाती हैं···उसने मेरे प्रारम्भिक रोग-निदान और वह कहां हुआ था। इसका ज़िक्र किया। उससे उसे पता चला कि मैं कजाकिस्तान से आया हूँ। 'क्या?' निजामुद्दीन बोला। 'यह तो दूसरे गणतंत्र का है। हमारे पास पर्याप्त पलंग नहीं है; हम विदेशियों का इलाज क्यों करें? इसे फौरन डिस-

चार्ज कर दो !"

"लेकिन वार्ड में आधे मरीज 'विदेशी' हैं।"

"मैं जानता हूँ, लेकिन उसने सिर्फ मुझे ही चुना। काश, तुम उस समय लुदमिला अफानासएवना के तेवर देखतीं ! मैं आश्चर्यचकित रह गया—वह मेरे लिए इस तरह लड़ी जैसे मुर्गी अपने चूजों के लिए लड़ती है—'वैज्ञानिक दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण और पेचीदा केस है,' उसने कहा—'हमें कुछ आधारभूत निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए उसकी आवश्यकता है……।' मैं वहां उस समय एक जड़तापूर्ण स्थिति में था। कुछ ही दिन पहले मैंने उससे तर्क-वितर्क किया था और मांग की थी कि मुझे डिसचार्ज कर दिया जाए। वह मुझ पर चिल्लाई थी, लेकिन अब वह मेरे लिए अडिग लड़ रही थी। मेरे लिए सिर्फ इतना काफी था कि मैं निजामुद्दीन से 'हां' कह देता और लंच के समय तक तुम्हें मेरी धूल भी न दिखाई देती और फिर मैं भी तुम्हें कभी न देख पाता…"

"तो यह सिर्फ मेरी वजह से था कि तुमने 'हां' नहीं कही ?"

"खैर, यह बताओ, इस बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?" कोस्तोग्लोतोव का कंठ रुंधा हुआ-सा था। "तुमने तो मुझे अपना पता तक नहीं दिया था। मैं तुम्हें भला कैसे ढूंढ पाता ?"

लेकिन वह किसी और काम में व्यस्त थी—उसे कैसे बताती कि उसने उसे कितनी संजीदगी से लिया है।

"मैं शायद लुदमिला अफानासएवना को भी दगा नहीं दे सकता था," उसने अपनी बात जारी रखी—उसका स्वर फिर से ऊंचा हो गया था। "मैं वहां बुत बना बैठा था—मैंने अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं निकाला, जबकि निजामुद्दीन बोले चला जा रहा था—'मैं बाहरी रोगियों के विभाग में जाकर अभी ऐसे पांच मरीज ला सकता हूँ जो इतने ही गम्भीर रूप से बीमार हैं जितना कि यह—और वे सबके सब हमारे अपने आदमी होंगे। इसे डिसचार्ज कर दो !' और मैं समझता हूँ कि यही वह मौका था जब मैंने मूर्खों जैसा आचरण किया और यहां से भाग निकलने का एक बहुत अच्छा मौका हाथ से गंवा दिया। मेरे दिल में लुदमिला अफानासएवना के लिए हमदर्दी पैदा हो गई थी—उसने इस तरह आंखें झपकी थीं जैसे चोट उसी पर पड़ी हो, लेकिन उसने अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं निकाला। तब मैं अपने घुटने पर अपनी कुहनियां रखकर थोड़ा-सा आगे को झुका और अपने गले को साफ करके मैंने शांत स्वर में निजामुद्दीन से पूछा—"तुम मुझे कैसे डिसचार्ज कर सकते हो ? मैं परती धरती (वर्जिन लैण्ड्स) से आया हूँ।" "ओह, तुम परती धरती के रहने वाले हो ? सचमुच ?" निजामुद्दीन ने कहा। वह डर गया था कि उससे एक राजनैतिक गलती हो गई है। "परती धरती पर रहने वालों के लिए हमारा देश कुछ भी करने को तैयार है।"—और वे सबके सब अगले

पलंग की ओर बढ़ गए थे।

"तुम बहुत चालाक हो," जोया ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"जोया, मैं पहले ऐसा नहीं था। यह तो श्रम शिविरों की 'मेहरबानी' है कि उन्होंने मुझे कुल्हाड़े की तरह तेज बना दिया है। मेरे चरित्र में अनेक ऐसे गुण हैं जो वास्तव में मेरे चरित्र का हिस्सा नहीं हैं—वे सब श्रम-शिविरों की देन हैं।"

"—और तुम्हारा प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव? वह तो तुम्हें श्रम-शिविरों से नहीं मिला—नहीं न?"

"क्यों नहीं? मैं प्रसन्नचित्त और खुश इसलिए रहता हूं, क्योंकि मैं सब कुछ गंवा देने का अभ्यस्त हो चुका हूँ। डाक्टरों के राउंड के समय जब यहां लोग चीखते-चिल्लाते हैं, तो मुझे बड़ा अजीब लगता है। आखिर वे किस चीज के लिए चीखते-चिल्लाते हैं? न कोई उन्हें देश निकाला दे रहा है और न ही कोई उनकी जायदाद जब्त कर रहा है..."

"तो तुम हमारे साथ अभी एक आध महीने और रहोगे?"

"खुदा बचाए! लेकिन हां, दो सप्ताह अवश्य रह सकता हूं। ऐसा लगता है कि मैंने लुदमिला अफानासएवना को कोरा चैक दे दिया है। अब चाहे जो भी हो, मुझे सहन करना ही पड़ेगा..."

सिरिंज अब गर्म तरल पदार्थ से भर गई थी—जोया उठ खड़ी हुई। उसे आज एक कठिन परिस्थिति का सामना करना था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उसे ओलेग को आज उसका नया इन्जैक्शन लगाना था—एक ऐसी जगह पर जिसे हर किस्म की ज्यादती बरदाश्त करनी थी। लेकिन अब उन दोनों की ही जो मन-स्थिति हो गई थी उसने इस समय इंजैक्शन लगाना असंभव कर दिया था। उससे खेल ही खत्म हो सकता था। जोया नहीं चाहती थी कि यह खेल और यह मन:स्थिति खत्म हो जाए—और ओलेग भी नहीं चाहता था। अभी पहिया कुछ और घूमना चाहिए जिससे कि वह उसके इतनी निकट हो जाए कि आसानी से अन्तरंगता के साथ उसे इंजैक्शन लगा सके।

वह मेज पर वापस आ गई और अहमदजान के लिए इन्जैक्शन तैयार करते हुए उसने कोस्तोग्लोतोव से पूछा—'तुम्हारा क्या इरादा है? क्या तुमने अपने आपको इंजैक्शन लगवाने के लिए तैयार कर लिया है? अब तुम उनके विरुद्ध पहले की तरह दुलत्तियां तो नहीं चलाते?"

एक मरीज—विशेषकर कोस्तोग्लोतोव से यह सवाल पूछना अपने आप में कितना अजीब था! वह तो अपने विचारों का स्पष्टीकरण करने की प्रतीक्षा में बैठा ही था।

"जोयेन्का, मैं क्या सोचता हूं, यह तुम अच्छी तरह जानती हो। सम्भव होने पर मैं हमेशा इनसे बचना बेहतर समझता रहा हूँ। इस मामले में कभी--

कभी मुझे सफलता मिली है और कभी-कभी असफलता। तुरगुन के इन्जैक्शन लगाने तक मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उसकी बस एक ही इच्छा है कि उसे शतरंज खेलना आ जाए। हमारे बीच एक समझौता हो गया है—अगर मैं जीत जाऊं तो इन्जैक्शन नहीं लगेगा और अगर वह जीत जाए तो इन्जैक्शन लगेगा। मुश्किल यह है कि जब हम खेलते हैं तो मैं उसे धोखा देकर जीत जाता हूं। लेकिन मारिया के साथ तो ऐसा नहीं किया जा सकता न! वह सिरिंज लेकर आती है तो उसका चेहरा पत्थर की तरह संवेदनशून्य होता है। कभी-कभी मैं कोई मजाकिया बात करने की कोशिश भी करता हूँ, लेकिन जवाब हमेशा एक ही होता है—'मरीज कोस्तोग्लोतोव! तुम्हारे इन्जैक्शन का वक्त हो गया है, पाजामा ऊपर उठाओ!' वह कभी भी कोई सहानुभूतिपूर्ण या अनावश्यक शब्द मुँह से नहीं निकालती।"

"वह तुमसे नफरत करती है।"

"मुझसे?"

"तुम सबसे।—सभी पुरुषों से।"

"हां, अगर सामान्यत: बात की जाए तो हम नफरत किए जाने योग्य हैं भी। अब एक और नई नर्स है उसे भी मैं राजी नहीं कर पा रहा हूं।—और जब ओलम्पिआदा वापस आ जाएगी तो और भी मुसीबत हो जाएगी। वह तो रत्ती भर रू रियायत नहीं करती।"

"—और यही मैं भी करने जा रही हूँ," जोया ने सावधानीपूर्वक इंजैक्शन की दवा नापते हुए कहा। लेकिन उसकी आवाज में जोर नहीं आ पाया। वह ओलेग को मेज पर एक बार फिर अकेला छोड़कर अहमदजान को इन्जैक्शन लगाने चली गई।

एक और—और अधिक महत्त्वपूर्ण कारण भी था जिसके आधार पर जोया नहीं चाहती थी कि ओलेग वे इन्जैक्शन लगवाए। इतवार ही से वह इस प्रश्न पर निरन्तर सोच-विचार करती रही थी कि उसे इन्जैक्शनों के प्रभाव और परिणामों के बारे में बताए कि नहीं।

मान लो उनकी आपसी छेड़-छाड़ और हंसी-मजाक से अचानक कोई गम्भीर बात पैदा हो जाए, तो? यह एकदम संभव था। अगर इस बार मामला कमरे में बेताबी से इधर-उधर कपड़ों के टुकड़े ढूंढ़ने पर ही खत्म न हुआ, तो? अगर मामला बढ़ते-बढ़ते सशक्त और स्थायी हो गया—अगर जोया ने फैसला कर लिया कि वह उसकी खिलौना बन जाएगी—उसके साथ देशनिकाले में चली जाएगी, तो क्या होगा? (वह ठीक ही तो कहता था—कौन जानता है कि खुशी किन दूर दराज के कोनों में उसका इन्तजार कर रही है?) अगर ऐसा हुआ तो जो इन्जैक्शन ओलेग के लिए निर्धारित किए गए हैं उनका प्रभाव ओलेग पर ही नहीं, उस पर भी पड़ेगा।

—और वह उनसे विरुद्ध थी।

"अच्छा यह बताओ," उसने खाली सीरिंज लेकर लौटते हुए प्रसन्नता-पूर्वक पूछा—"क्या तुमने साहस बटोर लिया है ? वार्ड में जाओ ! वहां जाकर अपने पाजामे के पाइंचे चढ़ा लो, मरीज कोस्तोग्लोतोव ! मैं एक मिनट में तुम्हारे पास पहुंचती हूं।"

वह वहां बैठा ऐसी निगाहों से उसे देखता रहा जो एक मरीज की निगाहें नहीं थीं। वह तो इन्जैक्शन के बारे में सोच भी नहीं रहा था। उनके बीच अब तक एक संधि हो चुकी थी।

उसने उसकी आंखों की ओर देखा और थोड़ी-सी बाहर को निकली पड़ रही थीं जैसे कि अपने पपोटों से मुक्ति पाने का अनुरोध कर रही हों।

"जोया, आओ यहां से कहीं चले चलें।" उसके वाक्य में स्पष्ट शब्द कम थे, मरमरहाट अधिक। उसका स्वर जितना अधिक मद्धम होता गया, जोया का स्वर उतना ही अधिक खनकदार।

"कहाँ ?" उसने आश्चर्यचकित हो ठहाका लगाया—"शहर में ?"

"डाक्टर के कमरे में !"

वह कोस्तोग्लोतोव की निष्ठुर दृष्टि को पी गई।—और जब उसने यह कहा तो उसके स्वर में कोई चाल नहीं थी—"नहीं, मैं नहीं जा सकती, ओलेग। मुझे अभी बहुत काम करना है।"

ऐसा लग रहा था जैसे कि वह उसकी बात समझा ही नहीं। "आओ चलें !" उसने फिर कहा।

"अरे, हां !" जोया को कोई बात याद आ गई थी। "मुझे···के लिए ऑक्सीजन का गुब्बारा भरना है।" उसने सीढ़ियों की ओर इशारा करते हुए कहा। बहुत संभव है कि उसने मरीज का नाम भी लिया हो, लेकिन उसने नाम नहीं सुना। "मुश्किल यह है कि ऑक्सीजन के सिलेंडर की टोंटी इतनी सख्त है कि मुझसे घूमती ही नहीं। तुम मेरी सहायता कर सकते हो, आओ !"

वह सीढ़ियों की ओर चल दी और वह भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

दबी हुई नाक वाला पीला पड़ चुका दयनीय रोगी, जिसे फेफड़ों का कैंसर चाटे जा रहा था, अपने पलंग पर बैठा हुआ था ऑक्सीजन से सांस लेते हुए वह हांफ रहा था—यहां तक कि उसके सीने की घड़घड़ाहट तक सुनी जा सकती थी। क्या वह शुरू से ही इतना छोटा था या बीमारी ने ही उसे निचोड़कर उसकी यह हालत कर दी थी ? उसकी हालत इतनी खराब थी कि जब डाक्टर राउंड पर आते तो वे न तो उससे कोई बात करते और ना ही उससे कोई सवाल पूछते। उसकी हालत हमेशा ही खराब रहती थी लेकिन आज तो वह बहुत ही खराब थी—और यह बात तो कोई अनुभवशून्य आंख तक उसे देखकर कह सकती थी। वह ऑक्सीजन का एक गुब्बारा खत्म कर

चुका था और दूसरे को भी खत्म करने वाला था। पहला गुब्बारा उसके पास ही पड़ा था।

उसकी हालत इतनी खराब थी कि वह किसी की ओर कोई ध्यान ही नहीं दे रहा था कि कोई उसके पास आया या उसके पास से गुजर गया।

उन्होंने उसके पास पड़ा खाली गुब्बारा उठाया और सीढ़ियां उतर गए।

"तुम लोग उसका इलाज किससे कर रहे हो?"

"हम तो इलाज ही नहीं कर रहे। उसकी हालत ऐसी है कि ऑपरेशन हो नहीं सकता और एक्सरे विकरण से उसे कोई लाभ हुआ नहीं है।"

"क्या तुम उसका सीना नहीं खोल सकते?"

"यहां—यहां इस शहर में ऐसा नहीं हो पाता।"

"तो यह मर जाएगा?"

जोया ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

हालांकि उसके हाथ में जो गुब्बारा था उसकी एक मरीज को जरूरत थी, जिससे कि उसका दम न घुट जाए, लेकिन अब तक वे उस मरीज को भूल चुके थे। वे कोई ऐसी बात करने वाले थे जो साधारण बातों से एकदम भिन्न थी।

ऑक्सीजन का लम्बा सिलेंडर एक अलग-अलग गलियारे में रखा था जिसके बाहर इस समय ताला लगा हुआ था। यह जगह एक्सरे विकरण कक्षों के पास ही थी। यह वही जगह थी जहां कभी गैंगार्त ने बारिश में तरबतर और अन्तिम घड़ियां गिनते हुए कोस्तोग्लोतोव को देखा था। (कोई—यह कोई तीन सप्ताह पहले ही तो था......)जब तक गलियारे की दूसरी बत्ती न जलाई जाए (और उन्होंने पहली बत्ती ही जलाई थी) तो वह कोना' जहां दीवार कुछ आगे को निकलती हुई थी और सिलेंडर खड़ा था, झुटपुटे-से में ही रहता था।

जोया सिलेंडर से छोटी थी और ओलेग बड़ा।

उसने गुब्बारे का वॉल्व सिलैंडर के वॉल्व में लगाना शुरू कर दिया। वह उसके पीछे खड़ा था और उसके बालों की खुशबू को सूंघ रहा था जो उसकी टोपी के नीचे से आ रही थी।

"यही टोंटी सख्त है," जोया ने शिकायत की।

कोस्तोग्लोतोव ने टोंटी पकड़ी और एकदम घुमा दी। ऑक्सीजन घुब्बारे में जाने लगी और हल्की-सी सी-सी की आवाज आने लगी।

और तब, बिना किसी भी किस्म के बहाने के, ओलेग ने अपने उस हाथ से, जिससे उसने अभी-अभी टोंटी घुमाई थी, जोया के उस हाथ की कलाई पकड़ ली जिसमें ऑक्सीजन का गुब्बारा नहीं था।

वह चौंकी नहीं। उसे कोई आश्चर्य भी नहीं हुआ। वह सिर्फ गुब्बारे को

फूलते हुए देखती रही।

कोस्तोग्लोतोव का हाथ उसकी कलाई से ऊपर की ओर बढ़ता गया—वह उसकी कुहनी तक पहुँचा, फिर बाजू तक और फिर उससे भी ऊपर कंधे तक पहुंच गया।

यह छेड़छाड़ कोई अधिक सूक्ष्म और सुकोमल तो नहीं थी, फिर भी यह उन दोनों के ही लिए आवश्यक थी। यह इस बात की परीक्षा थी कि उन दोनों ने एक दूसरे शब्दों का सही अर्थ समझा है कि नही।

उन्होंने ठीक ही समझा था।

वह अपनी दो उंगलियों से उसके बालों को छेड़ने लगा। उसने न तो इस पर कोई आपत्ति ही की और न सिमटी सिकुड़ी ही। वह बस गुब्बारे को देखती रही।

उसने उसके दोनों कंधों को मजबूती से पकड़ लिया और उसके शरीर को अपनी ओर खींच लिया और फिर उसके होंठ जोया के होंठों तक पहुँच गए। ये वही होंठ थे जो उसकी ओर अक्सर मुस्कराते रहते थे और हमेशा चह-चहाते रहते थे।

जिस समय उसके होंठ जोया के होंठों तक पहुंचे उस समय जोया के होंठ खुले नहीं थे—वे न कोमल थे न शोख! वे कसे हुए, तैयार और एकदम आतुर होंठ थे—और इस बात का अहसास उसे फौरन ही हो गया था। एक क्षण पहले उसे याद नहीं था—वह पूरी तरह भूल चुका था कि सभी होंठ एक जैसे नहीं होते हैं, सभी चुम्बन एक जैसे नहीं होते—ये भिन्न-भिन्न हो सकते हैं—और कि एक अकेला चुम्बन दूसरे सौ चुम्बनों के बराबर हो सकता है।

शुरुआत एक हलके से चुम्बन से हुई, फिर जैसे-जैसे वे एक दूसरे से चिपकते गए—एक दूसरे में समाते गए, उनके चुम्बन लम्बे होते गए। दुनिया की कोई भी चीज इस स्थिति को खत्म नहीं कर सकती थी—और उसके खत्म किए जाने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी। वे इसी तरह—एक दूसरे के होंठों से होंठ कसे—हमेशा-हमेशा के लिए खड़े रह सकते थे।

लेकिन कुछ देर बाद—सम्भवत: दो शताब्दियों के बाद—उनके होंठ अलग हुए। ओलेग ने जोया को पहली बार देखा और उसने उसे यह कहते हुए सुना—"चुम्बन लेते समय तुम अपनी आंखें क्यों बन्द कर लेते हो?"

क्या सचमुच उसने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं? उसे पता नहीं। उसने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया था और ना ही उसे इसका कोई अहसास हुआ था।

"क्या तुम अपनी कल्पना में किसी और को लाने का प्रयत्न कर रहे थे?"

जिस तरह कोई गोताखोर जल्दी-जल्दी अपनी सांस ठीक करके समुद्र में कूद जाता है, जिससे कि जो मोती समुद्र की तह में छुपा है, उसे ढूंढ कर बाहर निकाल लाए, वे फिर एक दूसरे के चुम्बन लेने लगे। लेकिन इस बार कोस्तोग्लोतोव को अहसास हो गया कि उसने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं—और उसने उन्हें खोल लिया। वे एक दूसरे के समीप थे—अविश्वसनीय सीमा तक समीप ! कोस्तोग्लोतोव ने उसकी दो चम्पई और लगभग शिकारी जैसी आंखों की ओर देखा और उसकी हर आंख ने उसकी अलग-अलग आंखों में झांका। वह अपने आत्मविश्वासपूर्ण और अनुभवी होंठों से उसके चुम्बन ले रही थीं और होंठ जरा भी ढ़ीले नहीं पड़ रहे थे। वह अपने पांवों पर थोड़ा-सा झूल भी रही थी और उसकी आंखों में लगातार झांके जा रही थी—शायद यह जानने के लिए कि भाग्य ने उसके लिए क्या तय किया है।

यकायक उसकी आंखें घूम गईं। वह यकायक छिटक कर उससे अलग हो गई और चीख पड़ी—"अरे टोंटी !"

ओह ! टोंटी ! कोस्तोग्लोतोव का हाथ फौरन उसकी ओर बढ़ा और उसने टोंटी बन्द कर दी।

यह अपने आप में एक चमत्कार ही था कि गुब्बारा फूटा नहीं।

"देखा, चुम्बनों का क्या परिणाम होता है !" जोया ने कहा। अभी उसकी सांस सुस्थिर नहीं हुई थी और वह रुक-रुक कर बोल रही थी। उसके बालों की लटें बिखरी हुई थीं और उसकी टोपी टेढ़ी हो गई थी।

निःस्संदेह जोया की बात एकदम ठीक थी। लेकिन उनके होंठ एक बार फिर एक दूसरे के होंठों से जुड़ गए—जैसे कि वे एक दूसरे के रस की अंतिम बून्द तक निचोड़ लेना चाहते हों।

गलियारे का दरवाजा शीशे का था। आसपास से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति उनकी उठी हुई कुहनियां—उसकी सफेद और उसकी रक्ताभ कुहनियां—देख सकता था लेकिन इसकी परवाह किसे थी ?

जब ओलेग की सांस कुछ सुस्थिर हुई तो उसने उसे ध्यान से देखा और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर अपनी हथेली रखकर कहा—"गोल्डीलॉक्स,[1] तुम्हारा असली नाम यही है—गोल्डीलॉक्स।"

उसने अपने होठों को शब्द के अनुकूल बनाते हुए दुहरा दिया—"बोल्डी-लॉक्स !"

(ठीक है—आखिर क्यों नहीं ?)

"क्या तुम इस बात को लेकर चिन्तत नहीं हो कि मैं एक देश-निकाले की सजा भोगने वाला व्यक्ति हूँ—एक अपराधी ?"

---

१. एक वृक्ष विशेष जो फूलों से लदा रहता है। (अनुवादक की टिप्पणी)

"नहीं !" उसने अपना सिर जोर से झटकते हुए कहा।

"या यह कि मैं बूढ़ा हूँ ?"

"बूढ़ा !"

"या यह कि मैं बीमार हूँ ?"

जोया ने अपना माथा उसके सीने से लगा लिया और चुपचाप खड़ी रही।

उसने उसे अपनी ओर खींच लिया—समीप और अधिक समीप। वह एक बार फिर सोच रहा था कि जोया की मेज पर रखा रूलर उसकी गर्म और सुगठित छातियों के छज्जे पर टिका रह सकता है कि नहीं। "सच-सच बताओ, तुम उश तेरेक आओगी न ? हम शादी कर लेंगे और अपने लिए एक छोटा-सा घर बना लेंगे।"

ऐसा लगता था कि वह उसे एक ऐसी निरन्तरता देने जा रहा था जिससे वह अब तक वंचित रही थी।—एक ऐसा रचनात्मक स्थायित्व जो उस समय प्रारम्भ होता है जब घबराहट का वह क्षण, जब कपड़े कमरे में इधर-उधर बिखरे पड़े होते हैं, बीत चुका होता है। वह उससे पूरी तरह सटी हुई थी—वह अपने पेट और नीचे के हिस्से से उसे महसूस करती थी और अनुमान लगाने की कोशिश कर रही थी—'क्या उसे वह इसी व्यक्ति से मिलेगा ? क्या यही वह व्यक्ति है ?'

वह थोड़ा-सा ऊपर उचकी और उसकी गर्दन में अपनी बाहें डालकर उसे फिर आलिंगन में बांध लिया। "ओलेग प्यारे !" उसने कहा—"क्या तुम जानते हो कि ये इंजेक्शन क्या कुछ कर सकते हैं ?"

"नहीं ! क्या ?" उसने अपने गाल जोया के गालों से रगड़ते हुए कहा।

"वे···अब मैं तुम्हें कैसे बताऊं ?···उनका वैज्ञानिक नाम है—न्यासर्ग-चिकित्सा (हारमोन थैरेपी)। इसका इस्तेमाल उल्टा प्रभाव डालने के लिए किया जाता है—वे औरतों को पुरुषों के और पुरुषों को औरतों के हारमोन देते हैं। वे यह मानते हैं कि इससे दूसरी रसौलियाँ पैदा नहीं होतीं। लेकिन इसका पहला नतीजा तो यह निकलता है कि ख्वाहिश ही दब जाती है······समझे ?"

"क्या कहा ? नहीं,—पूरी तरह नहीं समझ पाया हूं।" उसका लहजा बदल गया था—उसके बोलने के ढंग से ऐसा लगता था जैसे वह भयभीत और अव्यवस्थित हो उठा है। उसने इस समय भी उसके कंधे पकड़ रखे थे लेकिन इस समय उसकी पकड़ कुछ दूसरी ही तरह की थी जैसे कि वह उसे झिझोंड़कर सब उगलवा लेना चाहता हो—"बताओ—मुझे सब कुछ सचमुच बताओ !"

"उनसे कामेच्छा और काम-शक्ति पूरी तरह मर जाती है। फिर अधिक

इन्जैक्सन लगने से तो यह तक औरतों के दाढ़ी आनी शुरू हो जाती है और पुरुषों की छातियां उभरने लगती हैं।"

"जरा रुको! यह सब क्या है?" ओलेग गरजा। उसकी समझ में बात आनी शुरू ही हुई थी। "तुम्हारा मतलब है, इन इंजैक्शनों से?—ये इंजैक्शन जो आजकल मुझे लगाए जा रहे हैं? क्या ये वह सब कुछ दबा देते हैं?"

"खैर, सब कुछ को तो नहीं, कामोत्तेजना तो काफी बाद तक बनी रहती है!"

"कामोत्तेजना से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?"

जोया ने सीधे उसकी आंखों में देखा और उसके बालों के गुच्छे को छेड़ते हुए कहा—"कामोत्तेजना का अर्थ है जो तुम इस समय मेरे प्रति अनुभव कर रहे हो—कामेच्छा!"

"तो कामेच्छा तो बनी रहती है, लेकिन काम-शक्ति समाप्त हो जाती है? यही न?" वह एकदम हतप्रभ हो गया।

"काम-शक्ति धीरे-धीरे कम होती जाती है और फिर कामेच्छा भी मर जाती है।" वह उसके घाव के निशान पर उंगली फेरने लगी और फिर उसने उसका गाल थपथपा दिया—"इसीलिए मैं नहीं चाहती कि तुम ये इंजैक्शन लगवाओ!"

"कितनी अहमकाना बात है!" वह अब कुछ संभल गया था और पूरी तरह तन कर खड़ा हो गया था। "यह वाकई हिमाकत है। मैंने यह अपनी हड्डियों में महसूस किया था—मुझे खुद महसूस हो रहा था—कि मेरे साथ कोई गंदी चाल चल रहे हैं—और उन्होंने वही किया।"

वह उन डॉक्टरों को, जो अपनी मर्जी से लोगों की जिन्दगियों से खेल रहे थे, गालियां देना चाहता था—हर तरह की गंदी-गंदी गालियां—लेकिन तभी उसे अचानक गैंगार्त का चमकता हुआ और आत्मविश्वासपूर्ण चेहरा याद आ गया। उसे याद आया कि वह उसे कितनी गर्मजोशी और मैत्रीपूर्ण ढंग से बता रही थी—"ये एकदम जरूरी हैं। इन पर तुम्हारा जीवन निर्भर करता है। हम तुम्हारे जीवन की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

वेगा ने यही तो कहा था। वह उसके लिए सब कुछ करना चाहती थी—क्या सचमुच ही वह उसके लिए सब-कुछ करने को तैयार थी? तो इसीलिए वह उसे इस 'अवस्था' की ओर धकेल देने को लालायित कर रही थी?

"तो तुम लोग यह करने जा रहे हो—यही न?" उसने अपनी आंखें जोया की ओर घुमाईं।

नहीं, वह उसे क्यों दोषी ठहरा रहा है? उसने तो जिन्दगी को उसी रूप में देखा था जिस रूप में ओलेग ने। वह जानती थी कि···के बिना जीवन में जीने योग्य कुछ नहीं रहता है। अपने उत्सुक, व्यग्र और लपटों के रंग वाले

होंठों के साथ वह उसे पहाड़ की चोटी तक उठा ले गई थी। वह उन उज्जवल होंठों के साथ वहां खड़ी थी और जब तक उसके दिल में उमंग है ओलेग को इन होंठों को चूमना चाहिए—और यह जितनी जल्दी हो उतना ही बेहतर है।

"क्या तुम मुझे कोई ऐसा इंजैक्शन नहीं लगा सकतीं जिसका प्रभाव एकदम उलटा हो—इन इंजैक्शनों के प्रभाव से उलटा?"

"अगर मैं ऐसा करूंगी तो वे मुझे निकाल बाहर करेंगे..."

"लेकिन क्या ऐसे इंजैक्शन हैं जो ऐसा कर सकें?"

"हां हैं। वे भी हारमानों के ही इंजैक्शन हैं—लेकिन उनमें समलिंगीहार-मोन होते हैं।"

"गोल्डीलॉक्स, सुनो! आओ, और कहीं चलें...!"

"हम इस समय भी कहीं और ही हैं। हम अपनी मंजिल पर पहुँच गए हैं! और अब वापस लौटने का वक्त आ गया है।"

"आओ, डॉक्टरों के कमरे में चलें! चलो तो!"

"नहीं, हम यह नहीं कर सकते। वहां एक अरदली है और वहाँ लोग भी हर समय आते-जाते रहते हैं—शाम के वक्त तो विशेष रूप से..."

"हम रात तक इन्तजार कर सकते हैं...!"

"ओलेग, हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। तुम तो इस ढंग से बातें कर रहे हो जैसे कल होगी ही नहीं..."

"कल तक अगर मेरी कामेच्छा ही मर गई तो वह कैसी कल होगी?—उस कल का क्या मतलब होगा? लेकिन ऐसा होगा नहीं। तुम्हारा शुक्रिया, जोया, मैं अपनी इच्छा को मरने नहीं दूंगा। ठीक है न? आओ, अब कोई और बात सोचें—आओ, अब कहीं चलें!"

"ओलेग प्रिय हमें कुछ चीजें भविष्य के लिए भी छोड़ देनी चाहिएं! जल्दबाजी मत करो!...हमें गुब्बारा भी वापस लेकर चलना है।"

"हाँ, यह ठीक है। गुब्बारा वापस ले जाना है—अभी ले चलते हैं..."

"...अच्छा अब इसे ले चलो...!"

"ले चलो...अब ले चलो...!"

वे सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। उन्होंने एक-दूसरे के हाथ नहीं, बल्कि गुब्बारा पकड़ रखा था जो अब फुटबॉल की तरह फूला हुआ था। गुब्बारे के हर हिचकोले के साथ उन्हें यह लगता था कि उन्होंने एक-दूसरे के हाथ में अपना हाथ दे रखा है।

सीढ़ियों के ऊपर पीला, सूखा-सिकुड़ा, कमजोर सीने वाला मरीज (उसका सीना हमेशा कमजोर रहा था) अपने बिस्तर पर बैठा था। रात-दिन स्वस्थ और रोगी और अपने-अपने कामों में डूबे हुए व्यक्ति उसके पास से गुजरते

रहते थे। वह अपने तकिये के सहारे बैठा था। उसने खांसना बन्द कर दिया था और अपने माथे को अपने घुटनों पर इस तरह पटक रहा था जैसे वे कोई दीवार हों। वह अब भी जिन्दा था लेकिन उसके आस-पास कोई भी जीवित व्यक्ति नहीं था।

वह दिन उसके जीवन का अन्तिम दिन भी हो सकता था। ओलेग का वह भाई और पड़ोसी उपेक्षित पड़ा था और सहानुभूति का भूखा था। अगर ओलेग उसके बिस्तर के पास बैठ जाए और रात वहीं गुजार दे तो बहुत संभव है कि उसे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में कुछ शांति मिल जाए।

लेकिन उन्होंने सिर्फ इतना किया कि ऑक्सीजन का गुब्बारा उसे दिया और आगे चल दिए। इस अभागे आदमी के गुब्बारे में आखिरी बार ऑक्सीजन भरना तो किसी कोने में उनके एक-दूसरे से मिलने और एक-दूसरे के चुम्बनों से परिचय प्राप्त करने का बहाना भर था।

एक जंजीरों में जकड़े आदमी की तरह ओलेग जोया के पीछे-पीछे सीढ़ियां चढ़ता गया। वह अपने पीछे छोड़ आए अभागे आदमी के बारे में नहीं सोच रहा था। दो सप्ताह पहले वह स्वयं भी वैसा ही एक अभागा और मृतप्राय व्यक्ति था और हो सकता है कि अगले छः महीनों में वह फिर वैसा ही हो जाए। वह तो इस समय इस लड़की—इस औरत—के बारे में सोच रहा था—और सोच रहा था कि वह उसे उसी रात अपने साथ रहने को कैसे राजीकरे।

वह लगभग भूल चुका था कि उसका आनन्द कैसा होता है—इसलिए इस मीठे दर्द का आनन्द अनपेक्षित रूप से उसे एक बार और मिलेगा तो और भी अधिक आनन्द आएगा—एक दूसरे के होंठों को तब तक चूमते रहा जाएगा जब तक कि वे सूज ही न जाएं। इस विचार मात्र ने उसके समूचे शरीर को युवा बना दिया।

१९. बिजली की सी तेजी के साथ

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां को 'मम्मी' कहकर नहीं पुकारता—विशेषकर अपरिचितों के सामने तो नहीं पुकारता। पन्द्रह और तीस के बीच की आयु के 'लड़के' तो यह शब्द प्रयोग करने में विशेष रूप से शरमाते हैं। लेकिन वादिम, बोरिस और जत्स्यिर्को अपनी मम्मी को लेकर कभी शर्मिन्दा नहीं हुए थे। जब उनका पिता जीवित था तो वे सब अपनी मां से बेहद प्यार करते थे—और जब उनके पिता को गोली मार दी गई तो वे अपनी मां से और भी अधिक प्यार करने लगे थे। उनकी आयु में आपस में बहुत ही कम अन्तर था, इसलिए वे समवयस्कों की तरह पले-बढ़े थे। स्कूल में और घर में चूंकि वे हमेशा व्यस्त रहते थे, इसलिए आम लड़कों की तरह उन्होंने गलियों में आवारागर्दी नहीं की थी। अपनी विधवा मां को चिन्तित होने का उन्होंने कभी कोई मौका नहीं दिया था। एक बार जब वे अभी छोटे-छोटे बच्चे ही थे तो उनकी मां के साथ उन तीनों का एक फोटो लिया गया था। बाद में तुलना करने के लिए एक और फोटो लिया गया।—फिर तो यह एक नियम सा बन गया कि हर दो वर्ष बाद उनकी मां उनका फोटो खिचवाने के लिए उन्हें फोटोग्राफर के यहां ले जाती। (बाद में वे अपने ही कैमरे से फोटो खींचने लगे थे।)—और वे सारे चित्र एक के बाद एक पारिवारिक एलबम में लगाये जाते रहे थे—मां और तीन बेटे, मां और तीन बेटे! मां का रंग गोरा था, लेकिन उसके तीनों ही बेटे कुछ सांवले थे। इसका कारण सम्भवतः वह गुलाम तुर्क था, जिसने बहुत समय पहले उनकी परदादी से, जो जैपारोजिये की एक कोस्साक लड़की थी, शादी कर ली थी। अपरिचितों के लिए तो कई बार यह बताना तक मुश्किल हो जाता था कि सामूहिक फोटो में कौन, कौन है। हर फोटो में बच्चों के कद बढ़ते गए थे और वे पहले फोटो की अपेक्षा अधिक हृष्ट-पुष्ट भी नज़र आते थे, लेकिन मां की बढ़ती हुई उम्र इतनी स्पष्टता से नहीं दिखाई देती थी। वह कमरे के सामने तन कर बैठती या खड़ी होती। उसने जिस ढंग से जीवन जिया था उसे उस पर गर्व था। वह डॉक्टर थी और अपने शहर में प्रख्यात और लोकप्रिय थी। लोग उसके कृतज्ञ थे और अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिए वे उसे मिठाइयां और गुलदस्ते भेंट करते रहते थे। अगर उसने

कोई और बड़ा काम न किया होता तो भी एक स्त्री के रूप में उसके अहं की तुष्टि के लिये इतना पर्याप्त था कि उसने अपने बेटों का इतने अच्छे ढंग से लालन-पालन किया था कि उन तीनों ने एक ही पौलिटेकनिक में शिक्षा पाई थी। सबसे बड़े ने भू-विज्ञान पा थढ़ा, मंझले ने इलैक्ट्रिक इंजीनियरिंग और सबसे छोटे ने हाल ही में भवन-निर्माण विज्ञान का पाठ्क्रम पूरा किया था और मां उसी के साथ रहती थी।

जब उसे वादिम की बीमारी का समाचार मिला तो वह वहीं थी। पिछले बृहस्पतिवार को वह उसे देखने के लिए चलने ही वाली थी। शनिवार को उसे दोन्तसोवा का तार मिला था कि उसके बेटे के लिये लसदार सोने की ज़रूरत है। इतवार को उसने उत्तर में तार दे दिया कि वह यह सोना लेने के लिए मास्को जा रही है। सोमवार से वह मास्को में थी। कल का दिन और आज का दिन उसने मन्त्रियों और दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्तियों तक पहुंचने में लगाया होगा—यह अनुरोध करने के लिए कि उसके बेटे के शहीद पिता के नाम पर वे उसे राज्य के सुरक्षित कोष में से थोड़ा-सा सोना दे दें। (जब उनके शहर पर दुश्मन का कब्जा हुआ था तो एक ऐसे बुद्धिजीवी का रूप बनाने के लिए उसके पति को पीछे छोड़ दिया गया था जो सोवियत सत्ता से वैर भाव रखता था। लेकिन जर्मनों को वास्तविकता का पता चल गया था और उन्होने उसे गुरिल्लों का साथी होने के इल्ज़ाम में गोली मार दी थी।

इस प्रकार की प्रार्थना करना वादिम को पसन्द नहीं था और वह दूर बैठा हुआ भी अपमानित और आघातित अनुभव कर रहा था। उसे किसी भी प्रकार का दबाव डालना या सिफारिश करना-कराना पसन्द नहीं था। न उसे यह अच्छा लगता था कि मित्रों को इस्तेमाल किया जाए और न यह कि अतीत में की गई सेवाओं का पुरस्कार मांगा जाए। मम्मी ने दोन्तसोवा को जो सिफारिशी तार भेजा था वह भी उसके दिल-दिमाग पर बोझ ही बना हुआ था। उसका जीवन चाहे कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो फिर भी वह इसके लिए तैयार नहीं था कि विशेषाधिकारों से फायदा उठाया जाए—हां, इस स्थिति में भी नहीं जबकि कैंसर के कारण मौत उसके सामने खड़ी थी। लेकिन जब उसने दोन्तसोवा को अपने काम में व्यस्त देखा तो उसे विश्वास हो गया कि अगर उसकी मां का तार न भी आता तो लुदमिला अफानासएवना उस पर अपना इतना ही समय और इतना ही ध्यान लगाती। हां, इतना ज़रूर था कि उस स्थिति में लसदार सोने के लिए तार भेजना शायद अनावश्यक न समझा, जाता।

अगर मम्मी को सोना मिल गया तो वह हवाई जहाज से यहां पहुंचेगी और अगर न भी मिला तब भी हवाई जहाज ही से आयेगी—लेकिन आएगी जरूर। उसने उसे बिर्च के दम्बल के बारे में भी लिख दिया था—इसलिए कि

उसे दम्बल पर तत्काल विश्वास हो गया था, बल्कि इसलिए कि इस तरह उसकी मां को कुछ और जीवन-रक्षा कार्य करने का मौका मिल रहा था। अगर वह सचमुच अत्यधिक हतोत्साह हो गई तो वह अपने चिकित्सा-विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान और अपनी मान्यताओं के बावजूद आईसिक कुल के हकीम से मिलने और उससे जड़ी लेने पहाड़ों तक पहुंच जाएगी। (ओलेग कोस्तोग्लोतोव कल उसके पास आया था और उसने यह आत्मस्वीकृति की थी कि एक औरत को खुश करने के लिए उसने जड़ी का तरल मिश्रण बहा दिया है। वैसे भी वह कोई बहुत अधिक नहीं था और बूढ़े हकीम का पता उसने दे दिया था। उसने यह भी कहा कि अगर वह बूढ़ा अब तक गिरफ्तार हो चुका है तो कुछ जड़ी उसके घर में अब भी सुरक्षित रखी है और वह उसमें से थोड़ी-सी वादिम को दे देगा।)

अपने बड़े बेटे की जान खतरे में होने के कारण मम्मी की स्थिति अत्यधिक दयनीय हो उठी थी। वह उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थी—कुछ भी—वह भी जो जरूरी नहीं था। वह तो उसके साथ पहाड़ी अभियान तक पर जाने को तैयार थी—हालांकि वहां वादिम की प्रेमिका गाल्का मौजूद थी। अपनी बीमारी के बारे में वादिम को जो कुछ पता चला था—पढ़कर या कहीं से सुन-सुनाकर—उसके आधार पर उसे विश्वास हो गया था कि उसकी बीमारी उसकी मम्मी द्वारा आवश्यकता से अधिक उसकी देखभाल किये जाने का ही परिणाम है। बचपन ही से उसकी टांगों पर सहजवर्णता का एक बड़ा-सा निशान था। एक डाक्टर के नाते उसकी मम्मी को मालूम होना चाहिए था कि यह खतरनाक हो सकता है। वह उसे कुरेदने और छेड़ने का कोई न कोई बहाना तलाश कर लेती थी और एक बार तो उसने यह आग्रह तक किया था कि कोई बड़ा सर्जन उसका ऑपरेशन कर दे। यह एक ऐसी बात थी जो कभी होनी ही नहीं चाहिए थी।

हालांकि उसे यह जो मृत्यु दण्ड दिया गया था उसके लिए मम्मी ही उत्तरदायी थी, फिर भी उसके लिए वह उसकी निन्दा या भर्त्सना नहीं कर सकता था—न उसके सामने और ना ही उसके पीठ पीछे। परिणामों को बहुत अधिक महत्व देना ठीक नहीं होता—यह ठीक नहीं है कि केवल परिणामों के ही आधार पर लोगों के सम्बन्ध में कोई धारणा बनाई जाए—बेहतर मानवीय ढंग यह है कि उनकी नीयतों को सामने रखा जाए। उसकी मां से जो गलती हुई थी उसके आधार पर उससे नाराज होना अनुचित था। यह सही है कि उसके काम में इससे रुकावट पैदा हुई थी, मौके उसके हाथ से निकल गए थे, लेकिन यह भी उतना ही सही है कि अगर वादिम अस्तित्व में ही न आया होता तो वह कुछ भी नहीं हुआ होता जो कुछ हुआ था—और उसे अस्तित्व में उसकी मां ही लाई थी।

आदमी के दाँत होते हैं, वह दांत पीसता है, किटकिटाता है, उनसे चबाता है, लेकिन पौधों को देखो—उनके दांत नहीं होते—वे बढ़ते हैं और शान्तिपूर्वक मर जाते हैं।

वादिम ने अपनी मां को तो क्षमा कर दिया, लेकिन वह परिस्थितियों को क्षमा नहीं कर सकता था। वह अपने व्यक्तित्व के तकाजों को तिलांजलि देने के लिए कतई तैयार नहीं था। इसलिए उसका दांत पीसना अपरिहार्य था।

इस घृण्य बीमारी ने उसके जीवन को बीच से काट कर रख दिया था। उसने एक निर्णायक और महत्वपूर्ण अवसर पर उसे अपने पैरों तले कुचल दिया था।

यह सही है कि बचपन ही से उसे इस बात का पूर्व ज्ञान हो चुका था कि वह अधिक दिन नहीं जियेगा। अगर कभी मेहमान या पड़ोसी औरतें घर में आ जातीं और गप-शप में उसका और उसकी मम्मी का समय बर्बाद करतीं तो वह बेचैन हो उठता। स्कूल या कॉलेज में जब विद्यार्थियों को इस सिद्धांत के आधार पर, कि वे हमेशा ही देर से पहुंचते हैं, पढ़ाई, सैर-सपाटे या किसी प्रदर्शन के लिए निश्चित समय से एक-दो घन्टे पहले बुला लिया जाता तो वह गुस्से से पागल हो जाता। रेडियो पर आधे घंटे का समाचार बुलेटिन वादिम के लिए असह्य था—आवश्यक और महत्वपूर्ण समाचार तो पांच ही मिनट में सुना दिये जा सकते हैं—बाकी सब व्यर्थ का शब्दाडम्बर होता था। वह यह सोचकर पागल हो जाता था कि जब भी वह किसी दुकान पर जाता था, प्रायः वह बन्द ही मिलती थी—कभी माल की फहरिस्त तैयार करने के लिए, कभी नये साल की वसूली के लिए और कभी माल की तब्दीली के लिए। यह अनुमान लगा पाना सम्भव नहीं था कि कब दुकान खुली मिलेगी और कब बन्द। ग्राम परिषद का कार्यालय या पोस्ट आफिस भी काम के दिनों में बन्द मिल सकता था और पच्चीस किलोमीटर की दूरी से यह अनुमान लगा पाना एकदम असंभव था कि वह बन्द है या खुला।

समय के मामले में उसे इतना लालची सम्भवतः उसके पिता ही ने बनाया था—उसे निष्क्रियता भी पसन्द नहीं थी। वादिम को याद था कि उसका पिता उसे अपने घुटनों पर बिठा कर कहा करता था—"वाद्का! अगर तुम यह नहीं जानोगे कि एक मिनट का इस्तेमाल कैसे किया जाता है, तो तुम पहले एक घण्टा, फिर एक दिन और फिर अपना समूचा जीवन ही गंवा दोगे।'

लेकिन नहीं, बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। बचपन ही से समय की कभी न खत्म होने वाली भूख उसके स्वभाव का एक अभिन्न भाग थी और इसमें केवल उसके पिता के प्रभाव का ही हाथ नहीं था। जब भी वह दूसरे लड़कों के साथ खेलते-खेलते उकता जाता तो फौरन ही वहां से चल देता। खेल बन्द करने के बाद यूं ही वहां खड़े रहना उसे पसन्द नहीं था। उसके दोस्त उसका मजाक

उड़ाते लेकिन वह उस ओर रत्ती भर ध्यान न देता। अगर कोई किताब उसे अच्छी न लगती तो वह फौरन ही उसे पटक देता और कोई अधिक दिलचस्प किताब ढूंढ लेता। अगर किसी फिल्म के शुरू के दृश्य कुछ महत्वपूर्ण होते (भला कोई पहले ही कैसे जान सकता है कि फिल्म कैसी होगी ? फिल्म वाले तो इस बात को जान-बूझकर छुपाते हैं) तो इस बात की परवाह न करते हुए कि पैसा बर्बाद होगा वह अपनी सीट छोड़कर वहां से चल देता जिससे कि उसका समय बच जाए और उसका मस्तिष्क दूषित न हो। उसे उन अध्यापकों पर बड़ा गुस्सा आता था जो क्लास में दस मिनट बोलते रहते लेकिन फिर भी स्पष्टीकरण करने में असफल रहते—वे या तो इधर-उधर की निरर्थक बातें करते रहते या फिर सब कुछ गड्डमड्ड कर देते और घर के लिए काम वे उस समय बताते जब घंटी बज चुकी होती। यह बात उनकी समझ में नहीं आ सकती थी कि उनका एक शिष्य ऐसा भी है जिसने घंटों के बीच के अपने समय के बारे में एक इतनी सुनिश्चत योजना बना रखी है जितनी उन्होंने अपने पाठों के बारे में भी नहीं बनाई है।

सम्भवत: अपने बचपन में ही उसे खतरे का धुंधला-सा अहसास हो गया था—भले ही वह उसके प्रति पूरी तरह जागरूक न रहा हो। अपनी पूरी अनभिज्ञता के बावजूद वह शुरू ही से अपनी टांग की स्वर्णता के उस निशान के चंगुल में था। बचपन ही से वह वक्त बचाने का आदी था और वक्त की कंजूसी की यह आदत देखा देखी उसके भाइयों को भी पड़ गई थी। स्कूल जाना शुरू करने के पहले से ही वह ऐसी किताबें पढ़ने लगा था जो बड़ों के लिए होती हैं, और जब वह छठे दर्जे में था तब उसने अपने घर ही पर रसायन-विज्ञान की एक प्रयोगशाला बना ली थी। वह हर समय भावी रसौली के मुकाबले में दौड़ता रहा था, लेकिन चूंकि उसे यह पता नहीं था कि दुश्मन कहां है इसलिए उसकी यह दौड़ अंधेरे में लगाई गई दौड़ ही थी। लेकिन उसका दुश्मन सब कुछ देख रहा था और वह उसके जीवन के सर्वोत्तम क्षण में अपने विषैले दांतों के साथ उस पर टूट पड़ा था। यह बीमारी नहीं एक सांप थी। उसका नाम भी तो सांप जैसा ही था—काला सरतान !

वादिम को तो यह तक पता नहीं था कि यह कब शुरू हुई। यह उस समय की बात है जब वह अलताई पहाड़ों पर एक अभियान में गया हुआ था। उसकी टांग का निशान खत्म होने लगा था और फिर उसमें दर्द होने लगा था। फिर वह फूट गया था और यह लगता था कि अच्छा हो रहा है लेकिन वह फिर से सख्त होने लगा था। वह उसके कपड़ों से भी रगड़ खाता रहा था लेकिन वादिम तब तक अपने अभियान में जुटा रहा था जब तक कि चलना लगभग असह्य ही न हो गया। लेकिन उसने न तो अपनी मम्मी को लिखा था और न अपना काम छोड़ा था क्योंकि वह अपने सिद्धान्त के पक्ष-समर्थन के लिए ऐसी सामग्री की

पहली खेप एकत्र कर रहा था जिसे मास्को ले जाना जरूरी था।

उनके अभियान का लक्ष्य रेडियोधर्मी पानी का पता लगाना था और उन्हें जो निर्देश दिये गये थे उनमें कच्ची धातु के भंडारों का पता लगाना सम्मिलित नहीं था। लेकिन वादिम ने, जो अपनी आयु की तुलना में कहीं अधिक पढ़-लिख चुका था और रसायनशास्त्र में तो, सभी भू-वैज्ञानिक जिसके ज्ञाता नहीं होते हैं, उसका ज्ञान और भी अधिक था, या तो अनुमान लगा लिया था या फिर अपने अन्तर्ज्ञान से उसे पता चल गया था कि कच्ची धातु के भण्डार का पता लगाने के नये तरीके की शुरुआत होने वाली है। अभियानों के नेता ने वादिम के काम की इस प्रवृत्ति में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था—उसके लिए उन निर्देशों का पालन करना जरूरी था जो उसे दिये गए थे।

वादिम ने इस काम के सिलसिले में मास्को भेज दिये जाने का अनुरोध किया था, लेकिन नेता ने उसे भेजने से इन्कार कर दिया। तब वादिम ने अपनी रसौली दिखाई थी। उसे बीमारी की छुट्टी का सर्टीफिकेट मिल गया और वह क्लिनिक पहुँच गया था जहां उसे अपनी बीमारी के बारे में पता चला और जहां उसे सीधे अस्पताल में भरती हो जाने का आदेश दे दिया गया। हालांकि यह बताया गया था कि उसकी बीमारी ऐसी है जिसके इलाज में किसी भी प्रकार के विलम्ब की कोई गुंजाइश नहीं थी, फिर भी वह दाखिले का सर्टीफिकेट लेकर हवाई जहाज से इस आशा के साथ मास्को जा पहुँचा था कि चेरेगोरोत्सेव से, जो उन दिनों वहां चल रही एक कान्फ्रेन्स में भाग लेने के लिए आया हुआ था, मिल सकेगा। वादिम चेरेगोरोत्सेव से पहले कभी नहीं मिला था—उसने केवल उसकी पाठ्य पुस्तक तथा अन्य पुस्तकें पढ़ी थीं। लोगों ने उसे चेतावनी दे दी थी कि चेरेगोरोत्सेव उसका एक वाक्य से अधिक नहीं सुनेगा—यह फैसला, कि किसी से उसे बात करनी चाहिए, या नहीं वह उसके एक ही वाक्य से कर लिया करता था। वादिम ने मास्को तक का पूरा सफर यह एक वाक्य तैयार करने में ही लगा दिया था। चेरेगोरोत्सेव से उसका परिचय उस समय कराया गया जब वह मध्यान्तर में कैंटीन की तरफ जा रहा था। उसने अपना वाक्य दाग दिया। चेरेगोरोत्सेव कैंटीन से पलट पड़ा और उसकी कुहनी पकड़ कर उसे अपने साथ ले गया। उससे जो बातचीत हुई वह वादिम को काफी गहरी और गंभीर लगी। वह पांच मिनट तक जारी रही और वह काफी पेचीदा थी। उसने अपना पर्चा एक शब्द भी छोड़े बिना जल्दी-जल्दी पढ़ दिया था। उसने अपनी विद्वता का तो प्रमाण दिया, लेकिन अपने सिद्धांत का पूरा विवरण सामने नहीं रखा क्योंकि प्रमुख रहस्य को वह अभी अपने तक ही रखना चाहता था। चेरेगोरोत्सेव ने उस पर आपत्तियों की झड़ी लगा दी। उसकी सभी आपत्तियों से यही प्रकट होता था कि कहीं पर रेडियोधर्मी पानी मिलना वहां कच्ची धातुओं के भंडार होने का सीधा संकेत नहीं है और

उसे खोज का आधार बना लेना तर्क संगत नहीं होगा। लेकिन जो कुछ उसने कहा उसके बावजूद वह इस बात के लिए पूरी तरह तैयार नजर आता था कि उसे किसी और तरीके से कायल कर दिया जाए। उसने एक मिनट तक इसका इन्तजार किया कि वादिम उसे कायल कर दे, लेकिन जब वह ऐसा न कर सका तो उसने उसे विदा कर दिया। वादिम को ऐसा महसूस हुआ कि एक ओर जहां वह अल्ताई के पहाड़ों में पत्थरों के बीच इस समस्या के समाधान के लिए प्रमाण एकत्र करने में लगा हुआ था, वहां दूसरी ओर समूचा मास्को इन्स्टीट्यूट भी इसी समस्या में उलझा हुआ था।

उस समय इससे अधिक की वह अपेक्षा भी नहीं करता था। उसे अब वास्तविक काम में जुट जाना था।

अस्पताल में दाखिले की समस्या भी उसके सामने थी। इस मामले में उसने अपनी मम्मी को विश्वास में ले लिया था। वह अगर चाहता तो नोवोचेरकास्क जा सकता था लेकिन उसने इसी स्थान को प्राथमिकता दी थी क्योंकि यह स्थान उसके प्रिय पहाड़ों के पास था।

मास्को में उसे रेडियोधर्मी पानी और कच्ची धातुओं के भंडारों के बारे में ही जानकारी नहीं मिली, उसे यह भी पता चल गया कि जिन लोगों को सरतान होता था वे अक्सर मर जाते थे। वे अधिक से अधिक एक वर्ष जीवित रहते थे—सामान्यत: तो आठ ही महीने में खेल खत्म हो जाता था।

वह अब एक ऐसा गतिशील शरीर बन गया था जो बिजली की सी तेजी से बढ़ रहा था। उसका 'समय' और उसके 'शरीरायव' दूसरे लोगों के समय और शरीरायवों से भिन्न होते जा रहे थे। उसका समय क्षमता से बढ़ रहा था और उसके शरीरायव ग्रहण-सामर्थ्य में। उसके वर्ष—अब सप्ताहों में सिमट रहे थे और दिन मिनटों में। जल्दी तो उसने जीवन भर की थी, लेकिन अब तो वह दौड़ रहा था। अगर साठ वर्ष का जीवन मिल जाये तो एक अहमक भी विज्ञान का डाक्टर बन सकता है? लेकिन सिर्फ सत्ताइस वर्ष में कोई क्या कर सकता है।

लरमन्तोव[1] भी तो कुल सत्ताइस वर्ष ही जिया था। लरमन्तोव भी तो मरना नहीं चाहता था। (वादिम जानता था कि उसकी शक्ल-सूरत लरमन्तोव से मिलती-जुलती है। दोनों ही छोटे कद के थे, दोनों ही के बाल एकदम काले थे, दोनों ही दुबले-पतले थे, फर्क सिर्फ इतना था कि वादिम के मूंछें नहीं थीं।) फिर भी लरमन्तोव अपनी याद छोड़ गया था—सौ-दो सौ वर्षों के लिए नहीं

---

१. मिखाइल लरमन्तोव (१८१४-४१), रूस का महानतम रूमानी लेखक जो प्रत्यक्ष युद्ध में मारा गया।

(अनुवादक की टिप्पणी)

हमेशा हमेशा के लिए।

एक बुद्धिजीवी होने के नाते वादिम को मौत के चीते के साथ, जो अल्प-ताल के उसी बिस्तर पर उसके पास बैठा था और जिसके साथ उसे एक पड़ौसी की तरह रहना है, जीने का कोई फार्मूला ढूंढना था। वे शेष रहे महीनों को—अगर वे महीने ही रहने थे तो—सार्थक ढंग से जी सकता है? उसे मृत्यु का अपने जीवन के नए और अपेक्षित तत्व के रूप में विश्लेषण करना पड़ा। उस विश्लेषण के बाद उसे पता चला कि वह उस तथ्य का अभ्यस्त होने लगा है—उसे अपने अस्तित्व का एक अंग मानने लगा है।

तर्क का सर्वाधिक गलत तरीका यह हो सकता है कि व्यक्ति इस तरह सोचने लगे कि उसकी कौन-कौन-सी शक्तियां समाप्त होने लगी हैं, वह यह सोचने लगे कि वह अधिक जीवित रहता तो कितना खुश हो सकता था, क्या कुछ उपलब्ध कर सकता था। लेकिन सही तरीका यह है कि व्यक्ति उन आंकड़ों को स्वीकार करे जो बताते हैं कि कुछ लोगों को जवानी में ही मरना होता है। जवानी पर मरने पर व्यक्ति लोगों की स्मृति में हमेशा जवान ही रहता है। अगर बुझने से पहले वह पूरे जोर से जलता है उसकी रोशनी हमेशा चमकती रहती है। गत कुछ सप्ताह के सोच-विचार में वादिम को एक महत्व-पूर्ण बात का पता चला था जो पहले-पहल विरोधाभासी लगती थी—और वह यह कि एक मूर्ख व्यक्ति की तुलना में एक बुद्धिमान और मेधावी व्यक्ति कहीं अधिक आसानी से मृत्यु को समझ और स्वीकार कर सकता है—हालांकि गंवाने के लिए अधिक उसी के पास होता है। एक बुद्धिहीन व्यक्ति दीर्घ जीवन के लिए ललकता है, लेकिन जैसा कि एपीकूरस ने कहा अगर किसी मूर्ख को अमरत्व भी प्रदान कर दिया जाए तो उसे यह ही पता नहीं चलेगा कि वह उसका करे क्या!

यह कल्पना करना वास्तव ही में मोहक था कि अगर किसी तरह वह तीन या चार वर्ष और जी सके तो जिस तेजी से हमारे युग में वैज्ञानिक खोजें हो रही हैं, काले सरतान का भी कोई न कोई इलाज जरूर ढूंढ लिया जायेगा, लेकिन वादिम ने फैसला कर लिया था कि वह स्वस्थ हो जाने और दीर्घ जीवन पाने के दिवास्वप्न देखना एकदम छोड़ देगा। इन निरर्थक अटकलों में वह तो अपना रात का समय भी बरबाद नहीं करेगा। वह अपने दांत भींचेगा, घोर परिश्रम करेगा, और विरासत में लोगों के लिए कच्ची धातु खोजने का एक नया तरीका छोड़ जाएगा।

इस तरह वह अपनी असामयिक मृत्यु की क्षतिपूर्ति कर देगा और उसे आशा थी कि वह संतुष्टिपूर्वक मरेगा।

अपने छब्बीस वर्ष के जीवन में उसके लिए सर्वाधिक संतुष्टिप्रद, सर्वाधिक संतोषजनक और सर्वाधिक सुखद बात यह अहसास था कि उसने अपने समय

का सदोपयोग किया था। अपने अन्तिम महीने गुजारने का सर्वाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण तरीका भी उसके विचार में यही था।

—और काम करने की इसी लगन के साथ वादिम अपनी बगल में कुछ किताबें दबाए हुए वार्ड में पहुँचा था।

वार्ड में प्रवेश होते समय उसका विचार था कि वहाँ जिस दुश्मन का सबसे पसले सामना होगा वह रेडियो और लाउडस्पीकर होंगे। वह उनका सामना हर तरीके से—फिरचा हे वे वैध तरीकेहों या अवैध—करने को तैयार था। उसकी योजना थी कि वह पहले अपने पड़ोसी रोगियों को रेडियो-विरोधी बनाने की कोशिश करेगा और अगर उसे उसमें सफलता न मिली तो बाहर जाकर तारों में सुई घोंप कर शॉर्ट सर्किट करके उसे बेकार कर देगा या फिर दिवार में लगा उसका सार्किट ही तोड़ फेंकेगा। अनिवार्य लाउडस्पीकर, जिन्हें कुछ कारणों से हमारे देश में सामान्यतः संस्कृति के प्रसार का प्रतीक माना जाता है, वास्तव में सांस्कृतिक पिछड़ेपन का प्रतीक हैं। और वे मानसिक आलस्य को प्रोत्साहन देते हैं। लेकिन दूसरे लोगों को यह बात समझाने में वादिम को शायद ही कभी सफलता मिली थी। लगातार शोर-शराबा, ऐसी सूचनाएं जिन्हें पाने की आपने कभी इच्छा नहीं की और ऐसा संगीत जिसे आपने स्वयं नहीं चुना (और जिसका आपकी उस समय की मनः स्थिति से भी किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं होता) आपके समय की चोरी ही तो है—और यह चोरी आलसी और काहिल लोगों के लिए चाहे कितनी ही आसान और स्वीकार्य क्यों न हो लेकिन बुद्धिमान और कुछ कर दिखाने वाले लोगों के लिए एकदम असह्य होती है। एपीकूरस के अमरत्व प्राप्त मूर्ख के लिए तो उस जीवन को सहन करने का एकमात्र तरीका सम्भवतः यही होगा कि वह बैठा रेडियो सुनता रहे।

लेकिन वार्ड में पहुंचकर वादिम को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि वहां कोई रेडियो था ही नहीं। सच तो यह है कि समूची पहली मंजिल में ही रेडियो नहीं था। (वहां यह 'अनिवार्य' उपकरण न होने का कारण यह था कि कई वर्ष से यह योजना बनाई जा रही थी कि क्लिनिक को एक नए और बेहतर स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा। वहां निश्चित ही हर जगह लाउड-स्पीकर लगे होंगे।)

वादिम को जिस दूसरे दुश्मन का डर था वह था—अंधेरा। हो सकता था कि खिड़कियां उसके पलंग से मीलों दूर हों, बत्तियां बहुत जल्द बुझा दी जाएं और सुबह बहुत देर से जलाई जाएं। लेकिन उदारहृदय द्योमा ने खिड़की के पास का अपना पलंग उसे दे दिया था और उसने पहले ही दिन से यह नियम बना लिया था कि दूसरे लोगों की तुलना में बहुत पहले ही सो जाता और सुबह जल्दी जाग पड़ता और दिन के सर्वाधिक शान्त घण्टे अपने काम में गुज़ार देता।

तीसरा सम्भावित शत्रु वार्ड के लोगों की बातचीत का शोर था। लेकिन उसे पता चला कि वहां बातचीत का शोर भी बहुत कम था। कुल मिलाकर वादिम को यह वातावरण पसन्द आया—विशेषकर इसलिए कि वहां काफी शान्ति थी।

वहां जितने भी लोग थे उनमें सबसे अच्छा व्यक्ति उसकी दृष्टि में एगेन-बरदेव था। वह अपना अधिकांश समय चुप रह कर बिताता था। वह महा-काव्यीय नायक की तरह अपने मोटे-मोटे होठों और थुलथुल गालों को फैला-कर मुस्कराता रहता था।

मुर्सालीमोव और अहमदजान भी काफी अच्छे और किसी के काम में टांग न अड़ाने वाले व्यक्ति थे। वे आपस में उजबेक भाषा में बातचीत करते तो वादिम को किसी भी किस्म की कोई परेशानी न होती थी। क्योंकि वे बात-चीत अत्यधिक शान्तिपूर्ण एवं गम्भीर लहजे में करते थे। मुर्सालीमोव एकदम एक बूढ़ा ऋषि लगता था। वादिम पहाड़ों में ऐसे व्यक्तियों से मिल चुका था। मुर्सालीमोव और अहमदजान में केवल एक बार मतभेद हुआ था और तब उनके बीच अच्छी-खासी गरमा-गरमी हुई थी। वादिम ने उनसे अनुरोध किया था कि वे उसे अनुवाद करके बताएं कि आखिर झगड़ा किस बात पर हुआ है। पता चला कि मुर्सालीमोव को लोगों द्वारा अपने नाम के पहले हिस्से को बिगाड़ लिया जाना और कई शब्दों को मिलाकर शब्द बना लिया जाना पसन्द नहीं था। उसका दावा था कि अधिकारिक पहले नाम केवल चालीस हैं—वे ही चालीस नाम जो पैगम्बर ने हमें दिये थे। बाकी सब नाम गलत हैं।

अहमदजान उन व्यक्तियों में से नहीं था जो किसी के लिए कोई मुसीबत खड़ी करें। अगर आप उससे कहते तो वह हमेशा ही अपनी आवाज नीची कर लेता। एक बार वादिम ने उसे एवेन्की[1] कबीले के बारे में कुछ कहानियां सुना दीं थी जो उसके मन मस्तिष्क पर छा गई थीं। वह दो दिन तक लगा-तार उनकी अकल्पनीय जीवन-पद्धति के बारे में ही सोचता रहा था। वह बीच-बीच में एक प्रश्न लिए अचानक उसके पास आ धमकता—"अरे हां, वे एवेन्की लोग! वे पोशाक किस किस्म की पहनते हैं?"

वादिम संक्षेप में उत्तर दे देता और अहमदजान फिर कई घण्टों के लिए अपने विचारों में डूब जाता। लेकिन फिर अटकते-अटकते पूछ उठता—"वे लोग क्या खाते-पीते हैं—और उनका टाइम टेबिल क्या होता है—अरे उन एवेन्की लोगों का?"

और फिर अगली सुबह उसने पूछा—"अरे हां, वे एवेन्की! वे काम क्या

---

१. एक छोटा-सा कबीला जो आर्कटिक समुन्दर के किनारे पर रहता है।

करते हैं ?"

लेकिन यह बात उसके गले नहीं उतरी कि "वे मनमाने ढंग से ज़िन्दगी बसर करते हैं।"

सिब्गातोव भी एक शान्त और विनम्र व्यक्ति था। वह अहमदजान के साथ ड्राफ्ट खेलने के लिए प्रायः वार्ड में आता रहता था। यह तो स्पष्ट ही था कि वह कोई ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था, फिर भी वह यह जरूर समझता था कि जोर-जोर से बोलना असभ्यता है और जोर से बोलना एकदम अनावाश्यक भी है। अगर कभी अहमदजान से उसकी बहस भी हो जाती तो उसका लहजा नर्म और विनम्रतापूर्ण होता—"यहां तुम्हें अंगूर नहीं मिलते—वास्तविक तरबूज भी नहीं मिलते......"

"यहाँ नहीं मिलते तो फिर मिलते कहां हैं ?" अहमदजान ने गर्म होते हुए पूछा।

"ज़ाहिर है कि क्रीमिआ में—और कहां ? काश, तुमने वे देखे होते—तुम देखना ! ......"

द्योमा भी अच्छा लड़का था। वह बेकार की बातें नहीं करता था। वह अपने समय को सोचने और अध्ययन पर खर्च करता था—वह दुनिया को समझना चाहता था। यह सही है कि उसके चेहरे पर बुद्धिमता की चमक नहीं थी—जब कभी कोई नया विचार उसके दिमाग में आता तो वह उदास-सा दिखाई देने लगता। अध्ययन और दिमागी काम उसके लिए आसान हरगिज नहीं थे यह भी तो होता है कि लोग अपने श्रम और लगन से ही प्रकाशस्तंभ बन जाते हैं।

वादिम को रूसानोव से भी कोई आपत्ति नहीं थी। वह जीवन भर एक ठोस कार्यकर्ता रहा था—हालांकि वह उन लोगों में से नहीं था जो दुनिया को प्रकाशमान कर जाते हैं। उसके विचार मूलतः सही थे, लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वह उन्हें नमनीय ढंग से व्यक्त कैसे करे। वह उन्हें कुछ इस ढंग से व्यक्त करता था जैसे कि उसने वे रट रखे हों।

शुरू-शुरू में कोस्तोग्लोतोव वादिम को पसन्द नहीं आया था। उसे वह कुछ गंवार-सा लगा था—और आवश्यकता से अधिक बड़बोला भी। लेकिन बाद में पता चला कि यह तो उसका ऊपरी रूप था। वह वास्तव में असभ्य और उजड्ड नहीं था—वह पर्याप्त शालीन और विनम्र भी हो सकता था। बात सिर्फ इतनी-सी थी कि उसका जीवन अत्याधिक कष्टों और मुसीबतों में बीता था जिसने उसे चिड़चिड़ा बना दिया था। उसका स्वभाव कुछ कठोर था और ऐसा लगता था कि उसकी असफलताओं का कारण भी उसका यह स्वभाव ही था। उसकी बीमारी अब ठीक हो रही थी—और उसका जीवन भी ठीक हो सकता था—बशर्ते कि वह अपने ध्यान को केन्द्रित कर लेता और यह निर्णय कर लेता कि

वह चाहता क्या है। उसका मुख्य अवगुण ध्यान केन्द्रित न कर पाना था—और इसका पता उस ढंग से ही चल जाता था जिस ढंग से वह अपना सारा समय इधर-उधर घूमने में बर्बाद कर देता था। वह निरुद्देश्य बाग में घूमता रहता और सिगरेट फूँकता रहता। वह अगर कभी कोई किताब उठाता भी तो फौरन ही रख देता और वह स्कर्टों के पीछे भी बहुत भागता था। सरसरी निगाहों से भी यह भांप लिया जा सकता था कि उसके और जोया के बीच और उसके और गैंगार्त के बीच कोई मामला चल रहा है।

वे दोनों ही बहुत अच्छी लड़कियां थीं, लेकिन मौत की सीमा पर पहुँच चुके वादिम के मन में लड़कियों का पीछा करने की कोई इच्छा नहीं रह गई थी। गालका अभियान में उसके साथ थी और उसने वादिम से शादी करने के सपने भी देखे थे, लेकिन वादिम के पास शादी करने का अब कोई अधिकार नहीं रह गया था। अब वह उससे कुछ विशेष नहीं पा सकेगी।

अब कोई भी उससे कुछ विशेष नहीं पा सकेगा—अब वह किसी के हाथ नहीं आएगा।

यह मूल्य तो आपको चुकाना ही पड़ता है। जब कोई एक मनोवेग आप पर हावी हो जाता है तो वह शेष मनोवेगों को बाहर करता है।

जिस व्यक्ति पर वार्ड में वादिम को सचमुच गुस्सा आया था वह पोदुएव था। वह एक दुष्ट व्यक्ति था। वह काफी हृष्ट-पुष्ट था फिर भी ऐसा लगता था कि वह टूट गया है। वह धार्मिक बातें भी बहुत बनाता था जो वादिम के नज़दीक तॉलस्तोई बकवास थीं। वादिम के लिये इन दिमाग चाटने वाली पौराणिक कथाओं को मानना मुश्किल था कि अपने पड़ोसी के साथ विनम्रता और प्यार के साथ पेश आना चाहिए, कि अपने आपको नकारना अपना कर्त्तव्य मान लेना चाहिए और हर समय मुंह बाए इसकी प्रतीक्षा में खड़े रहना चाहिए कि हर ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे की कोई सहायता की जा सके। इस प्रकार के धुन्धले और पनीले छोटे-छोटे सत्य वादिम के यौवन के उत्साह और उसके यौवन की व्यग्रता के विरुद्ध थे—उसकी इस भावना के विरुद्ध थे कि अपनी समस्त शक्तियों और क्षमताओं को अपने काम में लगाया जाए। उसने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वह अपनी क्षमताओं को बिखरने नहीं देगा, वह डगमगाएगा नहीं और अपने लोगों और समूची मानव जाति को लाभान्वित करने के महान कार्य में अपने आपको झोंक देगा।

इसलिए जब पोद्दुयेव को डिसचार्ज किया गया और मुरमई बालों वाला फ़ेदेरौ कोने के पलंग से हटकर उसके पलंग पर आ गया तो वादिम को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। फ़ेदेरौ चुप रहने वाला व्यक्ति था—वार्ड में सबसे अधिक चुप और शांत रहने वाला। वह पूरे-पूरे दिन मुँह से एक भी शब्द न निकालता सिर्फ़ लेटा-लेटा उदास निगाहों से इधर-उधर देखता रहता—विचित्र प्राणी था। वादिम के लिए वह एक आदर्श प्राणी था। ख़ैर, परसों—अर्थात शुक्रवार को उसे ऑपरेशन के लिए ले जाया जाना था।

हाँ, साधारणतया वे लोग चुप ही रहते थे, लेकिन आज वे बीमारी के बारे में आपस में बातचीत करने लगे थे। फ़ेदेरौ ने उसे बताया कि वह कैसे बीमार पड़ा था और किस तरह मस्तिष्क शोथ (मेनिन् जिअल इन्फ्लेमेशन) से मरते-मरते बचा था।

"क्या तुम्हें चोट लगी थी?"

"नहीं, मुझे ठंड लग गई थी। एक दिन मुझे अत्यधिक गरमी लग गई थी और जब वे मुझे फ़ैक्टरी से घर ले गए तो मेरा सिर फट रहा था। मुझे मस्तिष्क शोथ हो गया था। मुझे दिखाई देना तक बंद हो गया था।"

उसने अपनी कहानी एकदम शांत लहजे में सुनाई थी। उसके होठों पर एक हलकी सी मुस्कान खेलती रही थी और उसने अपनी बीमारी की भयावहता पर कोई विशेष बल नहीं दिया था।

"तुम्हें इतनी अधिक गरमी कैसे लग गई थी?" वादिम ने पूछा। उसने यह प्रश्न अपनी कनखियों से अपनी किताब पढ़ते हुए पूछा था: समय जो उड़ा जा रहा था। जब बीमारी पर चर्चा हो तो वार्ड में श्रोता मिल ही जाते हैं। फ़ेदेरौ ने देखा कि रूसानोव कमरे के दूसरे सिरे से उसकी ओर देख रहा है। आज वह कुछ अधिक शांत और सौम्य लग रहा था, इसलिए फ़ेदेरौ ने अपनी कहानी इस ढंग से सुनाई जिससे कि वह भी सुन ले।

"हुआ यह था कि बॉयलर में एक दुर्घटना हो गई थी। टाँके लगाने का पेचीदा काम चल रहा था। अगर बॉयलर को ठंडा करने के लिए उसकी सारी भाप निकाल दी जाती और फिर उसे दुबारा गर्म किया जाता तो इसी में सारा दिन निकल जाता। इसलिए वर्क्स मैनेजर ने कार भेजकर रात में मुझे बुला लिया था। उसने मुझसे कहा था—'फ़ेदेरौ, हम नहीं चाहते कि सारा काम ठप्प

हो जाए—ठीक है न ? तुम अपना सुरक्षा-सूट पहन लो और भाप में घुस जाओ ! ठीक है ?' 'बहुत अच्छा,' मैंने कहा। 'अगर यह काम करना है तो करना ही है।' यह युद्ध से पहले की बात है। शैड्यूल बहुत ही सख्त था और वह काम किया ही जाना था। इसलिए मैं भाप में घुस गया और मरम्मत कर दी—वह लगभग डेढ़ घंटे का काम था......मैं आखिर इन्कार भी कैसे कर सकता था ? फ़ैक्टरी की सम्मान-सूची में मेरा नाम हमेशा सबसे ऊपर रहा था।"

रूसानोव ने, जो उसकी कहानी सुनता रहा था, उसे सहमतिसूचक दृष्टि से देखा। "मैं कहूंगा कि यह एक सच्चे बोलशेविक का ही काम था," उसने टिप्पणी की।

"मैं पार्टी का सदस्य हूं," फ़ेदेरौ ने उसकी ओर मुस्कराते हुए देखा। इस बार उसकी मुस्कान और भी अधिक हलकी और सुकोमल थी।

"तुम्हारा मतलब है कि तुम थे ?" रूसानोव ने उसकी भूल सुधारी। (तुम लोगों की ज़रा भी पीठ थपथपा दो तो वे उसे गंभीरता से लेने लगते हैं।)

"मैं अब भी हूं !" फ़ेदेरौ ने शांत स्वर में कहा।

रूसानोव दूसरे लोगों के जीवनों का विश्लेषण करने, उनसे तर्क-वितर्क करने या उन्हें उनकी औकात बता देने के मूड में नहीं था—स्वयं उसका अपना जीवन ही पर्याप्त दुखद रहा था, लेकिन जब उसने कोरी बकवास सुनी तो रोक लगाना ज़रूरी हो गया। भू-वैज्ञानिक अपनी किताब में डूब गया था। रूसानोव का स्वर कमज़ोर और मद्धम होते हुए भी एकदम स्पष्ट था। (वह जानता था कि सब लोगों ने अपने कान लगाए हुए हैं और वे उसकी बात सुन लेंगे) उसने कहा—"यह सच नहीं हो सकता। तुम जर्मन हो—हो न ?"

"हां !" फ़ेदेरौ ने स्वीकृति में सिर हिलाया। इस सचाई की स्वीकृति से उसे अत्यधिक कष्ट हुआ लगता था।

"तो फिर ?" (मैंने अच्छी तरह स्पष्टीकरण कर दिया है, लेकिन वह अब भी अपनी रट नहीं छोड़ेगा) "जब तुम सबको देश निकाला दिया गया था तो उन्होंने तुमसे तुम्हारे पार्टी कार्ड ले लिए होंगे।"

"नहीं, उन्होंने कार्ड नहीं लिए थे।" फ़ेदेरौ ने सिर हिलाया।

रूसानोव का चेहरा कस गया। उसके लिए बात करना मुश्किल हो गया। "खैर, उनसे ग़लती हो गई होगी। वे जल्दी में रहे होंगे—जाहिर है कोई न कोई गड़बड़ हुई है। बेहतर है कि तुम अपना कार्ड अब उन्हें सौंप दो !"

"नहीं, मैं नहीं दूंगा !" फ़ेदेरौ एक शरमीला व्यक्ति था, लेकिन इस बार वह अड़ गया। "मेरा कार्ड तेरह वर्ष से मेरे पास है, इस सिलसिले में कोई

गलती नहीं हुई है। हमें जिला समिति के सामने पेश किया गया था और उन्होंने हर बात का स्पष्टीकरण कर दिया था। 'तुम पार्टी के सदस्य बने रहोगे,' उन्होंने कहा था। 'लेकिन हम तुम में और शेष जनता में एक भेद कर रहे हैं। कोमेन्दैतुरा (ज़िले) के रिकार्ड में एक नोट लिखा जाना और बात है—लेकिन पार्टी का मामला, पार्टी का मामला है—ये दोनों एकदम अलग-अलग बातें हैं। तुम्हें किसी महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन होने की अनुमति नहीं मिलेगी, लेकिन एक सामान्य कार्यकर्त्ता के रूप में तुम्हें एक आदर्श स्थापित करना होगा।' बस ठीक यही हुआ था।"

"हो सकता है—मैं नहीं जानता!" रूसानोव ने गहरी साँस ली। वह अपनी आँखें बन्द कर लेना चाहता था। उसके लिए बात कर पाना बहुत मुश्किल होता जा रहा था।

परसों उसे जो इंजैक्शन दिया गया था उससे उसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ था। उसकी रसौली न तो दब पाई थी और ना ही वह मुलायम हुई थी। वह एक इस्पाती घूँसे की तरह अब भी उसकी ठोड़ी पर दबाव डाल रही थी। वह लेटा हुआ था और बहुत ही कमज़ोर लग रहा था। वह लेटा-लेटा उस मूर्च्छा के बारे में सोच रहा था जो तीसरे इंजैक्शन के बाद उस पर छा जाती थी। वह और कापा इस बात पर एकमत थे कि तीसरे इंजैक्शन के बाद उसे मास्को चले जाना चाहिए, लेकिन अब वह बीमारी से संघर्ष करने की सारी शक्ति गँवा चुका था। उसे अभी-अभी यह अहसास हुआ था कि अभिशप्त होने का क्या अर्थ होता है। तीन इंजैक्शन लगें या दस—यहाँ लगें या मास्को में—इससे क्या फ़र्क पड़ता है? अगर रसौली नहीं दबती तो कुछ नहीं हो सकता। यह तो सही है कि रसौली का अर्थ मृत्यु ही नहीं होता है; वह हमेशा के लिए बनी रह सकती है—सिर्फ़ इतना होगा कि उसका चेहरा विकृत हो जाएगा या वह अपंग हो जाएगा। बहरहाल, कल उस समय तक पावेल निकोलाईविच ने रसौली और मृत्यु में एक सीधा संबंध स्थापित नहीं किया था, जब 'हड्डी-चूस' ने, जिसने सभी चिकित्सा विषयक पुस्तकें पढ़ रखी हैं, किसी को यह समझाना शुरू किया था कि रसौली समूचे शरीर में किस तरह विष फैला देती है—इसलिए उसे ख़त्म करना ज़रूरी होता है।

पावेल निकोलाईविच को अपनी आँखों में एक चुभन सी महसूस हुई। उसे लगा कि वह मृत्यु को एकदम असंभव नहीं घोषित कर सकता है। यह सही है कि मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठता था, फिर भी उसे दिमाग में तो रखना ही होगा।

कल नीचे की मंज़िल में उसने खुद अपनी आँखों से देखा था कि एक मरीज़ को जिसका ऑपरेशन हो चुका था, सफ़ेद चादर से ढंका जा रहा है। अब

उसकी समझ में आ गया था कि जब अरदली आपस में बातचीत करते हैं कि 'अमुक व्यक्ति का सिर शीघ्र ही सफ़ेद चादर से ढाँप दिया जाएगा' तो उनका क्या मतलब होता है। तो यह बात है! हम हमेशा से यही सोचते आए थे कि मृत्यु काली होती है, लेकिन काला तो उसका प्रारंभिक रूप ही होता है। स्वयं मृत्यु तो सफ़ेद ही होती है।

मनुष्य चूंकि एक मरणशील प्राणी है, रूसानोव सदैव से ही यह जानता था कि एक दिन उसे भी अपने दफ़्तर की चाबियाँ किसी को सौंप देनी होंगी—लेकिन 'एक दिन', इसी क्षण तो नहीं। वह किसी 'एक दिन' मर जाने से भयभीत नहीं था, वह तो इसी समय—इसी क्षण मर जाने से भयाक्रांत था। मृत्यु कैसी होगी? उसके बाद क्या होगा? मेरे बिना जीवन किस तरह चलेगा?

जब उसने अपने सोद्देश्य और सोत्साह जीवन के बारे में सोचा तो उसे अपने आप पर तरस आने लगा। उसके जीवन को अद्भुत तक कहा जा सकता था। लेकिन अब वह रसौली की चट्टान से टकरा कर चकनाचूर हो गया था। यह रसौली उसके जीवन में इतनी अजनबी थी कि उसके मन-मस्तिष्क उसे अपरिहार्य मानने को तैयार नहीं थे।

मृत्यु—सफ़ेद और तटस्थ मृत्यु—एक अशरीरी और खाली चादर अपने सावधानी पूर्वक उठाए क़दमों से दबे पाँव चुपचाप उसकी ओर बढ़ रही थी। उसने उस समय रूसानोव पर झपटा मारा था जब उसे उसका कोई ध्यान ही नहीं था। वह अब न केवल उससे लड़ने में अक्षम था बल्कि वह तो उसके बारे में सोचने, कोई निर्णय लेने या उसके बारे में कुछ कहने में भी अक्षम था।

मृत्यु का इस तरह आना अवैधानिक था—और ऐसा कोई नियम या उपनियम भी नहीं था जिसके बल पर वह अपने आपको बचा सकता।

वह इतना कमजोर हो गया था कि अब एक नागरिक के रूप में उसकी इस बात में भी कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी कि वार्ड में क्या कुछ हो रहा है। प्रयोगशाला में काम करने वाली एक लड़की आज वार्ड में मतदाता-सूची तैयार करने आई थी। (तो चुनाव की तैयारियां यहां भी की जा रही थीं!) वह पासपोर्ट एकत्र कर रही थी। प्रत्येक व्यक्ति ने अपना पासपोर्ट या सामूहिक फार्म में काम करने का अपना प्रमाणपत्र उसके हवाले कर दिया था; सिर्फ कोस्तोग्लोतोव ने उसे कुछ नहीं दिया—उसके पास उनमें से कोई था ही नहीं। इस पर लड़की का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक ही था। वह उससे पासपोर्ट मांगती रही थी और इस पर उस उजड्ड ने उससे झगड़ना शुरू कर दिया था। वह कहने लगा—'तुम्हें मतलब राजनैतिक तथ्यों की जानकारी तो होनी ही चाहिए। तुम्हें पता होना चाहिए कि देश-निकाला भोग

रहे लोगों की विभिन्न श्रेणियां हैं। तुम अमुक-अमुक नम्बर पर फोन करके क्यों नहीं पूछ लेतीं कि मैं ठीक कह रहा हूं कि नहीं ?' जहां तक उसका संबंध है, सिद्धांततः उसे मताधिकार प्राप्त था, लेकिन निकृष्टतम स्थिति आई तो हो सकता है वह वोट दे ही नहीं।

आखिर पावेल निकोलाईविच को यह अहसास हो गया कि इस क्लिनिक में वह चोरों की एक अजीबो-गरीब मंडली में फंस गया है। यह वही गुंडा है जिसने बिजली बुझाने से इन्कार कर दिया था और जो जब चाहता था खिड़की खोल लेता था। परती धरती का रहने वाला बनकर वह सीनियर डाक्टर तक पहुंच गया था और उसने रूसानोव से पहले ही ताजा अखबार खोलने तक की कोशिश की थी। पावेल निकोलाईविच ने उसे देखते ही उसके बारे में जो राय बनाई थी वही सही थी। वह सचमुच ही वैसा आदमी था।

पावेल निकोलाईविच को उदासीनता की एक धुंध ने अपने आंचल में लपेट लिया था। अब उसमें इतनी शक्ति नहीं रह गई थी कि वह 'हड्डी-चूस' का मुखौटा उतार फेंके। अब तो चोरों की उस पूरी मंडली से भी उसे कोई अरुचि नहीं थी।

उसके सामने सफ़ेद चादर का सिरा नाच रहा था।

लॉबी से अरदली नेल्या की गड़गड़ाती आवाज आ रही थी। सारे क्लिनिक में ऐसी आवाज सिर्फ़ उसी की थी। वह कोई बीस मीटर की दूरी से कोई सवाल पूछ रही थी और इसके लिए उसे अपनी आवाज को ऊंचा करने की जरूरत भी महसूस नहीं हो रही थी—"हे ! ये पेटेंट चमड़े के जूते तुमने कितने में खरीदे हैं ?"

जवाब तो नहीं सुनाई दिया, लेकिन नेल्या की आवाज फिर सुनाई दी—"अरे, ऐसे जूते अगर मेरे पास हों तो अपनी पसंद के सारे आशिक मिजाज लड़कों को अपनी ओर खींच लूं।"

दूसरी लड़की को इस पर विश्वास नहीं हुआ और खुद नेल्या भी उससे लगभग सहमत होने लगी—"अरे हां, पहली बार जब मैंने नाइलोन के मोजे पहने थे तब भी मैंने यह सोचा था। मुझे वे सचमुच ही बहुत पसंद थे। लेकिन सरगेई ने माचिस की जलती हुई तीली फेंक कर उनमें एक सूराख कर दिया था।—हरामी कहीं का !"

वह एक ब्रुश लिए हुए वार्ड में आई। "अच्छा लड़को !" उसने कहा—"मुझे बताया गया है कि कल फर्श को खूब धोया गया था और रगड़-रगड़ कर साफ किया गया था—इसलिए आज एक ही ब्रुश मारना काफी होगा—ठीक है न ?" उसे अचानक कोई बात याद आ गई। "हे ! मेरे पास तुम लोगों के लिए एक खबर है," उसने फ़ेदेरो की ओर इशारा करके प्रसन्नतापूर्वक

कहा—"कल जो वहां था, वह अपनी दुकान बढ़ा गया। जो खाना-पीना था—खा पी चुका।"

फ़ेदेरौ स्वभाव से अत्यधिक संयत प्रकृति का व्यक्ति था, लेकिन यह सुन कर उसने अपने कंधे सिकोड़ लिए—वह बेचैनी अनुभव कर रहा था।

नेल्या ने जो कुछ कहा था वह सबकी समझ में नहीं आया, इसलिए उसने स्पष्टीकरण किया—"अरे वह जो दागों भरे चेहरे वाला लड़का था न, जिसके पट्टियां ही पट्टियां बंधी रहती थीं। यह घटना कल रेलवे स्टेशन पर ठीक टिकट घर के पास हुई। अभी-अभी उसे पोस्टमार्टम के लिए लाए हैं।"

"ओह!" रूसानोव का स्वर अत्यधिक करुण था—"तुम्हें कुछ तो सलीका आना चाहिए, कामरेड अरदली! इतनी भयावह खबरें यहां क्यों फैला रही हो? क्या तुम्हारे पास हमें सुनाने को कोई सुखद बात नहीं है?"

वार्ड का प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने विचारों में डूब गया। हां, यह सच है कि येफ़्रेम मृत्यु के बारे में बहुत बातें किया करता था—और ऐसा लगता था कि उसे अपने हश्र का पता था। वह पलंगों के बीच की जगह में खड़ा होकर अपने दांत किटकिटाकर कहा करता था—'हम वास्तव ही में एक भयावह स्थिति में हैं!'

लेकिन उन्होंने येफ़्रेम को मरते नहीं देखा था। वह क्लिनिक से चला गया था इसलिए उनकी स्मृति में वह जीवित ही था। कोई ऐसा व्यक्ति उनकी स्मृति में नहीं था जो कल उन्हीं की तरह फर्श पर चल-फिर रहा था और अब मुर्दाघर में कीमे की तरह छिला, कटा चिथा पड़ा था।

"अब मैं तुम्हें ऐसी बात बताती हूं जिसे सुनकर तुम हँस पड़ोगे—हँसते-हँसते तुम्हारी पसलियां दुखने लगेंगी। लेकिन यह कुछ अरुचिकर है......"

"चलेगी—सुनाओ!" अहमदजान ने अनुरोध किया—"जरूर सुनाओ!"

"अरे हां!" नेल्या को कोई और बात याद आ गई। "ए, खूब सूरत लड़के, तुम्हें एक्सरे के लिए बुला रहे हैं। हां, तुम्हें।" उसने वादिम की ओर इशारा किया।

वादिम ने अपनी किताब खिड़की में रख दी। अत्यधिक सावधानीपूर्वक उसने अपने हाथों का सहारा देकर पहले अपनी दुखती टांग फ़र्श पर रखी और फिर दूसरी टांग। अपनी दुखती टांग को छोड़कर, जिसके प्रति वह अत्यधिक सावधान रहता था, दरवाजे की ओर बढ़ते समय वह अच्छा खासा बैले डांसर लग रहा था।

उसने पोद्दुयेव के बारे में सुन लिया था, लेकिन उसके लिए उसके दिल में कोई हमदर्दी नहीं थी। पोद्दुयेव समाज का कोई मूल्यवान सदस्य नहीं था और यह शोर मचाने वाली अरदली भी वैसी ही है। आखिर मानव जाति का मूल्य

उसकी अधिक मात्रा में नहीं, उसकी परिपक्व गुणवत्ता में निहित है।

प्रयोगशाला में काम करने वाली लड़की अखबार लेकर कमरे में आई।

'हड्डी-चूस' उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह अखबार झपट लेने के लिए हमेशा तैयार रहता था।

"मुझे! मुझे दो," पावेल निकोलाईयेविच ने हाथ फैलाते हुए कमजोर स्वर में कहा।

—और वह अखबार लेने में सफल हो गया।

इतना तो वह चश्मा लगाए बिना भी देख सकता था कि पूरे का पूरा पहला पृष्ठ बड़े-बड़े फ़ोटोग्राफों और मोटी-मोटी सुर्खियों से भरा पड़ा था। वह आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर को उठा, आहिस्ता-आहिस्ता उसने अपना चश्मा लगाया और फिर देखा कि, जैसी कि उसे उम्मीद थी, सर्वोच्च सोवियत का अधिवेशन समाप्त हो गया था। पहले पृष्ठ पर प्रेसिडियम का फोटो था और हाल का भी। महत्वपूर्ण प्रस्ताव बड़े टाइप में थे—इतने बड़े टाइप में कि छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण पैराग्राफों को ध्यान से पढ़ने की कोई जरूरत नहीं थी।

"क्या? क्या?" पावेल निकोलाईविच अपने आप पर काबू नहीं रख पाया—हालांकि वहाँ वार्ड में ऐसा कोई भी न था जिसे संबोधित तक किया जा सके और अखबार की किसी खबर पर इतना आश्चर्य प्रकट करना कोई अच्छा तरीका नहीं था।

पहले कॉलम में बड़े-बड़े टाइप में यह समाचार छापा गया था कि मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष जी० एम० मैलेन्कोव ने कार्य-मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की थी और सर्वोच्च सोवियत ने सर्वसम्मति से उसका यह अनुरोध स्वीकार कर लिया है।

तो जिस अधिवेशन के बारे में रूसानोव ने यह सोचा था कि वह केवल बजट ही पास करेगा उसका अंत यह हुआ!

वह अपने आपको अत्यधिक अशक्त अनुभव करने लगा। उसके हाथ लुढ़क गए—हालांकि उसने अखबार अब भी पकड़ रखा था। वह आगे नहीं पढ़ पाया।

इसका कोई कारण उसकी समझ में नहीं आया, लेकिन उसे यह अहसास जरूर हो गया कि परिस्थितियां बदल रही हैं—और अत्यधिक तीव्र गति से बदल रही हैं।

यह बिलकुल ऐसा ही था कि नीचे कहीं पाताल में तूफान की गड़गड़ाहट हो रही है जिसकी हलकी सी धमक से समूचा शहर, अस्पताल और पावेल निकोलाईविच का पलंग कांपने-डगमगाने लगा है!

कमरे और फर्श की गड़गड़ाहट और डगमगाहट से एकदम बेखबर डॉक्टर गैन्गार्त अपने कोमल और समतल कदमों से कमरे में दाखिल हुई। उसने नया प्रेस किया हुआ सफेद कोट पहन रखा था। उसके चेहरे पर उत्साहवर्धक मुस्कान थी और हाथों में सिरिंज।

"सुनो, तुम्हारे इंजैक्शन का वक्त हो गया है," उसने अनुरोध भरे स्वर में कहा।

कोस्तोग्लोतोव ने रूसानोव के पांवों में पड़ा अखबार झपट लिया। उसने वह महत्वपूर्ण समाचार तत्काल ढूँढ़ लिया और पढ़ा।

—और तब वह उठ खड़ा हुआ। बैठे रहना उसके लिए संभव ही नहीं था।

समाचार का पूरा महत्त्व तो उसकी समझ में नहीं आया था, लेकिन अगर परसों उन्होंने समूची सुप्रीम कोर्ट बदल दी थी और आज प्रधानमंत्री बदल दिया है, तो इसका अर्थ था कि इतिहास आगे बढ़ रहा है।

इतिहास आगे बढ़ रहा था। क्या यह संभव है कि जो परिवर्तन हुए हैं उनसे स्थिति और अधिक बिगड़ जाए?

परसों उसने उछलते हुए दिल को हाथों से थाम लिया था, लेकिन तब उसने अपने आपको और विश्वास बाँधने से रोक लिया था।

लेकिन दो दिन गुजर चुके थे और अब फिर से याद ताजा हो गई थी। बिथोविन की वही चार संलयें समूचे आकाश में गूँज रही थीं।

मरीज शांतिपूर्वक अपने-अपने बिस्तरों में लेटे हुए थे। उनमें से किसी ने कुछ नहीं सुना। वीरा गैन्गॉर्त शांतिपूर्वक रूसानोव की नसों में दवा उतार रही थी।

ओलीग कमरे से भाग खड़ा हुआ। वह बाहर दौड़ रहा था।

बाहर खुले में!

२०. मधुर स्मृतियां

नहीं, आस्था और विश्वास को तो वह बहुत पहले ही तिलांजलि दे चुका था। उसकी हिम्मत पूरी तरह जवाब दे चुकी थी।

कोई कैदी अपने कारावास के प्रारंभिक वर्षों में ही यह सोच सकता है कि जब भी उसे उसकी कोठरी से बुलाया जाता है या उससे अपनी चीजें समेट लेने को कहा जाता है तो उसे रिहा किया जा रहा है। वह क्षमा-दान की हलकी से हलकी फुसफुसाहट को भी मुक्ति-दूतों का तूर्यनाद समझ लेता है। लेकिन दरअस्ल होता यह है कि वे उसे उसकी कोठरी से बाहर बुलवाते हैं, कुछ घृणास्पद दस्तावेज पढ़कर सुनाते हैं और फिर उसे निचली मंजिल की किसी एक कोठरी में धकेल दिया जाता है जो पहली से भी अधिक अंधेरी होती है और उसमें भी वही गंदी और बदबूदार हवा होती है। क्षमा-दान हमेशा ही स्थगित होता रहता है—विजय की वर्षगांठ से क्रांति की वर्षगांठ पर और क्रांति की वर्षगांठ से सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन पर। फिर सब कुछ बुल-बुले की तरह फूट जाता है—और अगर क्षमा-दान मिलता भी है तो चोरों को, जालसाजों को और भगोड़ों को, उन्हें नहीं जो युद्ध में लड़े थे और जिन्होंने कष्ट और यातनाएं झेली थीं।

मानव-हृदय के जो कोषाणु प्रकृति ने आनंद के लिए बनाए हैं, प्रयोग में न आने के कारण मर जाते हैं। मनुष्य के हृदय में वह छोटी सी जगह जो विश्वास और आस्था के लिए बनी है, वर्षों तक खाली पड़े रहते-रहते बर्बाद हो जाती है।

वह आशा करते-करते थक गया था। वह यह सोचते-सोचते कि उसे मुक्ति मिलेगी और वह घर वापस लौट सकेगा बुरी तरह थक चुका था। अब तो वह सिर्फ यह चाहता था कि वह उसी खूबसूरत और प्यारी जगह लौट जाए जहां उसे देश-निकाला दे कर रखा गया था—अपने प्यारे और मनोरम उश-तेरेक में; हां मनोरम! यह बात अपने आप में अजीब थी, लेकिन अस्पताल से, इस बड़े शहर से, इस उलझे हुए नियमों वाली दुनिया से, जिसके साथ तालमेल बिठाने में ओलीग अक्षम था या संभवतः उसके अनुकूल अपने आपको ढालने का इच्छुक ही नहीं था, उसे अपना वह दूरस्थ स्थित निर्जन स्थान मनोरम ही लगता था।

उश-तेरेक का अर्थ है 'तीन पॉपलर'। उस जगह का यह नाम पॉपलर के तीन पुराने वृक्षों के नाम पर पड़ा था जो दस किलो मीटर या इससे भी अधिक दूर से दिखाई देने लगते थे। ये वृक्ष एक दूसरे के एकदम समीप खड़े हैं। वे पॉपलर के अन्य वृक्षों की तरह एकदम सीधे और पतले नहीं हैं, बल्कि कुछ मुड़े हुए हैं। वे लगभग चार सौ वर्ष पुराने होंगे। अपनी वर्तमान ऊंचाई पर पहुंच कर उन्होंने और बढ़ना बंद कर दिया था और उनकी शाखें इधर-उधर बढ़ने लगी थीं। इस तरह उन्होंने मुख्य सिंचाई-नहर के आर-पार छाया का एक जाल बुन दिया था। कहा जाता है कि एक जमाने में गांव में ऐसे और भी वृक्ष थे, लेकिन १९३१ में वे काट दिए गए थे। इस प्रकार के वृक्ष अब वहां अपनी जड़ें नहीं जमा पाते—फिर चाहे पायनियर्स[1] कितने ही प्रयत्न क्यों न करें; जैसे ही उनके कुल्ले फूटते हैं बकरियां उन्हें खा जाती हैं। सिर्फ अमरीकी मेपल ही पनप सका है, जो क्षेत्रीय पार्टी-समिति के भवन के सामने मुख्य सड़क पर खड़ा है।

धरती पर वह कौन सी जगह है जिससे आप सर्वाधिक प्यार करते हैं? वह जगह जहां तुम मां की कोख से बाहर आए थे—एक ऐसे चीखते चिल्लाते बच्चे के रूप में जो कुछ भी नहीं समझता और जिसे अपनी आंख-कान की क्षमताओं तक का ज्ञान तक नहीं होता? या फिर वह जगह जहां उन्होंने पहली बार तुमसे कहा था—'ठीक है, अब तुम बिना पहरेदार के जा सकते हो—अब तुम जहां चाहो जा सकते हो?'

खुद अपने पैरों पर! "अपना बिस्तर उठाओ और चले जाओ!"

ओह, अर्ध-स्वतन्त्रता की वह पहली रात! जिलेदार चूंकि अब भी उन पर अपनी नजर रखे हुए था, इसलिए उन्हें गांव में जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन सुरक्षा पुलिस की इमारत के अहाते में घास के छप्पर के नीचे जहां वे चाहें उन्हें सोने की इजाजत थी। वह रात उन्होंने छप्पर में घोड़ों के साथ गुजारी थी जो रातभर चुपचाप खड़े घास चबाते रहे थे! उससे अधिक मधुर आवाजकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती!

ओलीग आधी रात बीतने तक सो नहीं पाया था। अहाते की जमीन चांदनी में चमक रही थी—सफेद! वह मंत्रबिद्ध व्यक्ति की तरह अहाते में इधर से उधर और उधर से इधर घूमता रहा था। वहां कोई ऐसी मीनार नहीं थी जिसमें बैठकर कैदियों की निगरानी की जाती है।—और जब वह डगमगाकर पीठ के बल जमीन पर गिर पड़ा—उसका सिर पीछे की ओर

१. चौदह वर्ष तक के सोवियत बच्चों का एक किशोर-संगठन।

(अनु० की टि०)

और चेहरा सफेद आसमान की ओर हो गया—तो भी उसे कोई देखने वाला नहीं था। वह बस चलता चला जा रहा था—उसे न यह पता था कि वह कहां जा रहा है और ना ही इसकी चिन्ता थी। फिर भी वह इस तरह चल रहा था जैसे उसे यह डर हो कि देर हो रही है—जैसे कि कल जब आएगी तो वह इस कमीने और निर्जन गांव में न होकर, एक खुली, विस्तृत और उल्लासमयी दुनिया में होगा। वसंतऋतु के प्रारंभ की वह गर्म रात मौन नहीं थी। वह एक कोलाहलपूर्ण बड़े रेलवे स्टेशन की तरह थी जहां इंजन रात भर एक-दूसरे के जवाब में चीखते रहते हैं। सारी रात गांव के अहातों और अस्तबलों में गधे और ऊंट रेंकते और बलबलाते रहे थे। उनकी आवाजें तुरही जैसी थीं जिनमें इच्छाओं की धड़कनें थीं जो संभोग-आवेग की अभिव्यक्ति कर रही थीं और जो जीवन की निरंतरता में आस्था की प्रतीक थीं। —और यह दाम्पत्तीय कोलाहल एक गरज के साथ ओलीग के वक्ष में समाविष्ट हो गया था।

क्या कोई स्थान उस स्थान से अधिक प्रिय हो सकता है जहां आपने ऐसी रात गुजारी हो ?

यही वह रात थी जब उसने अपने संकल्प के बावजूद फिर से आशा और विश्वास करना शुरू किया था।

श्रम-शिविरों के अनुभवों के बाद देश-निकाले की इस दुनिया को निर्मम कदापि नहीं कहा जा सकता—हालांकि यहां भी लोग सिंचाई करने के दिनों में पानी लेने के लिए बाल्टियों से लड़ते थे—और इस झगड़े में बहुतों की तो टांगें लहू-लुहान हो जाती थीं। देश-निकाले की दुनिया कहीं अधिक विस्तृत थी और यहां रहना कहीं अधिक आसान था। इसमें कहीं अधिक विस्तार थे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि यह किसी भी दृष्टि से निर्मम थी ही नहीं। यहां कोई पौधा लगाना और उसे पालना-पोसना कोई आसान काम नहीं था। इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि जिलेदार उसे डेढ़ सौ किलोमीटर और आगे रेगिस्तान में न धकेल दे, उसकी चापलूसी करना जरूरी था। उसे सिर छुपाने के लिए घास और मिट्टी की एक छत ढूंढ़नी थी और मकान मालकिन को किराया देना था—हालांकि उसके पास देने को कुछ भी नहीं था। उसे अपने खाने-पीने की व्यवस्था करनी थी। उसे काम ढूंढ़ना था, लेकिन पिछले सात वर्षों में वह इतनी मेहनत-मशक्कत कर चुका था कि अब बाल्टी उठाने और फसलों में पानी देने का उसका मन नहीं करता था। हालांकि उस गांव में ऐसी औरतें थीं जिनके पास मिट्टी-गारे के घर भी थे, रसोई-वाटिकाएं भी थीं और यहां तक कि उनके पास अपनी गायें भी थीं—और वे किसी भी अविवाहित निर्वासित व्यक्ति से शादी करने को भी तैयार

थीं, लेकिन उसके विचार में अभी वह समय नहीं आया था कि वह एक पति के रूप में अपने आपको बेच देता। वह यह नहीं समझता था कि उसका जीवन लगभग बीत चुका है, इसके प्रतिकूल यह तो उसके जीवन की बस शुरूआत ही थी।

पीछे श्रम-शिविरों में कैदी ऐसे लोगों की संख्या का अनुमान लगाते रहते थे जो उनके मतानुसार बाहरी दुनिया में पहुंच कर खो गए थे। वे समझते थे कि किसी व्यक्ति पर से पहरा हटते ही, उसकी नजर जिस भी औरत पर पड़ती है वह उसकी हो जाती है। वे सोचते थे कि बाहरी दुनिया में सारी औरतें तनहाई में आहें भरती रहती हैं और पुरुषों के अतिरिक्त वे और किसी चीज के बारे में सोचती ही नहीं हैं। लेकिन यहां उसके गांव में असंख्य बच्चे थे और औरतें अपनी-अपनी जिन्दगी में मगन जान पड़ती थीं। वे चाहे अकेली रहने वाली औरतें हों या नौजवान क्वांरी लड़कियां—यों ही उठ कर किसी पुरुष के साथ नहीं हो लेती थीं। वे चाहती थीं कि पहले सम्मानित ढंग से उनसे शादी की जाए और एक ऐसा छोटा सा घर बनाया जाए जिसे सारा गांव देखता ही रह जाए। नैतिकता संबंधी नियमों और रीति-रिवाजों की दृष्टि से उश-तेरेक अब भी पिछली शताब्दी में ही रह रहा था।

ओलीग पर से पहरा उठे हालांकि काफी समय हो चुका था, लेकिन अब भी वह किसी औरत के बिना ही रह रहा था—ठीक वैसे ही जैसे कि वह कंटीले जंगले के पीछे रहा करता था—हालांकि गांव में खूबसूरत लड़कियां भी थीं और मेहनतकश लड़कियां भी।

उसके देश-निकाले के आदेश में उसके लिए 'अनवरत निर्वासन' लिखा था और ओलीग ने भी सोच लिया था कि यह देश-निकाला अनवरत ही होगा। वह और सोच भी क्या सकता था, लेकिन फिर भी उसके मन की गहराइयों में कोई ऐसी चीज छुपी थी जो इसकी अनुमति नहीं देती थी कि वह यहीं शादी कर ले। बेरिया का तख्ता उलटा जा चुका था और वह एक खोखली मूरत की तरह एक हलकी सी झनकार के साथ जमीन पर आ गिरा था। सभी यह अपेक्षा करते थे कि अत्यधिक तेज गति के साथ बड़े-बड़े परिवर्तन होंगे लेकिन परिवर्तन बहुत ही धीमे-धीमे हुए और वे भी बहुत ही कम। ओलीग ने पता लगा लिया था कि उसकी पुरानी प्रेमिका कहां है—वह क्रास्नोयार्स्क में निर्वासित थी—और उनमें पत्राचार भी हुआ था। उसने उस लड़की को भी पत्र लिखने शुरू कर दिए थे जिससे उसकी मुलाकात लेनिनग्राद में हुई थी। वह महीनों तक इस आशा से चिपका रहा था कि वह यहां आ जाएगी। (लेकिन लेनिनग्राद का फ्लैट छोड़कर भला कोई यहां उसकी मांद में रहने कैसे आ सकता था ?—) और तभी उसकी रसौली उभर आई थी

और उसके निरंतर बने रहने वाले असहनीय दर्द ने उसकी जिन्दगी के परखचे उड़ा कर रख दिए थे। अब औरतें उसके लिए अन्य भले लोगों की तुलना में अधिक आकर्षक नहीं रह गई थीं।

ओलीग जानता था—जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति जानता है—हालांकि अनुभव से नहीं बल्कि किताबों के अध्ययन से—कि निर्वासन दमनकारी होता है (न आप ऐसे स्थान पर होते हैं जो आपको सर्वाधिक प्रिय हो और न ऐसे लोगों से मिल सकते हैं जिनसे आप मिलना चाहते हैं), लेकिन इसके साथ ही उसे यह अहसास भी था—और यह अहसास बहुत कम लोगों को था—निर्वासन मुक्ति भी प्रदान करता है—शंकाओं और उत्तरदायित्वों से मुक्ति। वास्तविक अभागे वे नहीं थे जो निर्वासित थे, बल्कि वे थे जिन्हें कुत्सित 'धारा ३९'[1] के अधीन पासपोर्ट दिए गए थे। ये अभागे हर समय अपनी गलतियों के लिए अपने आपको कोसते रहते थे, हमेशा किसी ऐसे स्थान की तलाश में रहते थे जहां वे सिर छुपा सकें और हर वक्त काम की खोज में रहते थे—और जगह से निकाल दिए जाते थे। इसके विपरीत कैदी जब निर्वासन में प्रवेश करता था उसके सभी अधिकार पूर्णतया सुरक्षित होते थे। जब वह स्थान का चयन स्वयं करता ही नहीं था तो उसे वहां से निकाला कैसे जा सकता था? उसके लिए तो हर चीज अधिकारियों ने ही निर्धारित की होती थी : उसे इस बात की कोई चिन्ता ही नहीं होती थी कि वह किसी बेहतर जगह पर रहने का मौका गंवा बैठा है या यह कि उसे किसी बेहतर वातावरण की खोज करनी चाहिए। वह जानता था कि वह जिस रास्ते पर चल रहा है, उसके लिए वही एकमात्र रास्ता है—और इससे उसके मन में एक आनंददायक उत्साह पैदा हो जाता था।

अब वह स्वस्थ होने लगा था और अब एक बार फिर उसे जीवन की उलझी हुई गुत्थी का सामना हो रहा था। ओलीग इस विचार से आनंदित था कि इस धरती पर उश-तेरेक नाम की एक छोटी सी सुखद और पवित्र जगह है, जहां उसके लिए कुछ सोचने विचारने की जरूरत नहीं है—उसके लिए सोचविचार दूसरे ही करते हैं, जहां हर चीज एकदम दो टूक है, जहां उसे लगभग एक नागरिक ही समझा जाता है और जहां वह शीघ्र ही जाने वाला था।—वहां जाना उसके लिए ऐसा ही था जैसे कि वह अपने देश—अपने घर जा रहा हो। उसके लिए वह उसका घर-देश ही तो था।

---

१. इस धारा के अधीन श्रम-शिविरों के भूतपूर्व बंदियों पर यह प्रतिबंध लगा दिया जाता था कि वे केवल अमुक-अमुक कार्य ही कर सकते हैं और वे अमुक-अमुक स्थान से बाहर नहीं जाएंगे। (अनु० की टि०)

संबंधों के धागे उसे वहाँ खींच रहे थे और वह चाहता था कि उसे 'अपना देश—अपना घर' कह कर पुकारे।

ओलीग ने उश-तेरेक में एक वर्ष गुजारा था और उसमें से नौ महीने वह बीमार रहा था। वह प्रकृति और दैनंदिन जीवन को निकट से नहीं देख सका था और ना ही वह उनसे कोई आनंद प्राप्त कर पाया था। एक बीमार व्यक्ति को मैदान कुछ अधिक ही धूल भरे सूरज कुछ अधिक ही गर्म महसूस होता है, रसोई-नाटिका उसे झुलसी-झुलसी सी लगती है और ईंट-गारा ढोना उसके लिए कुछ अधिक ही कष्टकर होता है।

लेकिन अब, जब वह मैडिकल सेंटर की पगडंडियों पर—जहां ढेरों ढेर वृक्ष थे, लोग थे, चमकदार रंग थे और पक्के मकान थे, टहल रहा था तो जीवन उसके मन-मस्तिष्क में तूर्य-नाद कर रहा था—ठीक उन्हीं गधों की तरह जो बसंत ऋतु में रेंक रहे थे। उसके मन-मस्तिष्क में गहरे तक उथल-पुथल मची हुई थी। वह अपनी कल्पना में उश-तेरेक की दुनिया के चित्र फिर से उकेर रहा था—उसकी छोटी से छोटी रेखा, छोटे से छोटे विवरण और छोटे से छोटे रूपाकार के साथ! यह तुच्छ दुनिया उसे इसलिए प्रिय थी क्योंकि यह उसकी अपनी दुनिया थी—मौत तक उसकी अपनी दुनिया—**अनवरत** उसकी अपनी। बाकी दुनिया अस्थायी थी—जैसे कि वह किराए पर ली गई दुनिया हो!

उसे अपनी मरुभूमि का तेज गंध वाला **जूसन** याद आया—जैसे वह उसके अस्तित्व का एक निकटतम भाग हो। उसे तेज कांटों वाला **जंतक** और उससे भी अधिक नोकीले और तेज कांटों वाला **जिगिल** याद आया जिसमें मई के महीने में बैंगनी रंग के सुंदर फूल लगते थे जो लाइलैक के फूलों की तरह मीठी गंध देते थे।—और वह मदहोश कर देने वाला **जिदू** का वृक्ष जिससे फूलों की सुगंध इतनी तेज और तन-मन आप्लावित कर देने वाली होती थी जैसे कोई इत्र-फुलेल में रची-बसी स्त्री।

क्या यह बात अपने आप में एक विचित्र और असाधारण बात नहीं थी कि एक रूसी जिसका रोम-रोम रूस के छोटे-छोटे खेतों और जंगलों की पगडंडियों से इस तरह जुड़ा हुआ था, जो मध्य रूस के ग्रामीण क्षेत्र की निजता से इस तरह संबद्ध था, जिसे उसकी इच्छा के विरुद्ध मरुभूमि में भेज दिया गया था, वह उसके सूखे और खुले मैदानों से, जहां हर समय अत्यधिक गर्मी होती है, बहुत अधिक तेज हवा चलती है, जहाँ बादल छा जाने पर लोग चैन की सांस लेते हैं और बरसात के दिन को छुट्टी-त्यौहार का दिन समझते हैं, इतना प्यार करने लगे?—उनमें इतना अनुरक्त हो जाए? वह कृत संकल्प था कि अपनी अंतिम सांस तक वहीं रहेगा। सेरिमबतोव, तेलेगेनोव, मौकियेव

ग्रौर स्कोकोव-बंधु जैसे लोगों ने उसे उनकी कौम से जोड़ दिया था—हालांकि
वह अभी भी उनकी भाषा नहीं समझ सकता था। उनके स्वेच्छाचारिता के
ग्रावरण के नीचे, जिसमें सच्ची ग्रौर झूठी संवेदनाग्रों का मिश्रण था, ग्रौर
उनकी पुरानी कबीलाई ग्रास्था के पीछे उसने मूलतः भोले-भाले हृदय के
लोग देख लिए थे जो प्यार ग्रौर संजीदगी का जवाब हमेशा प्यार ग्रौर
संजीदगी तथा सहृदयता का जवाब सहृयता से देते थे।

ग्रोलीग चौंतीस वर्ष का था। कॉलेजों में ३५ वर्ष से ऊपर के लोगों को
दाखिला नहीं दिया जाता। इसलिए वह कभी भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर
पाएगा। बहरहाल, जो था, सो था। पिछले ही दिनों वह जैसे-तैसे करके ईंट
थापने वाले से तरक्की करके भूमि-सर्वेक्षक का सहायक बन गया था। (उसने
ज़ोया से झूठ बोला था—वह सर्वेक्षक का सहायक मात्र था, जिसे प्रति मास
३५० रूबल मिलते थे।) उसके बॉस को जो जिला-सर्वेक्षक था, जरीब के
निशानों की भी बस यूँ ही सी जानकारी थी—ग्रौर ग्रगर कोई काम होना
तो ग्रोलीग जो चाहता कर सकता था, लेकिन सच यह है कि उसके करने के
लिए वहाँ न के बराबर ही काम था। सामूहिक फार्मों के दस्तावेज़ों में दर्ज था
कि यह ज़मीन उन्हें 'ग्रनवरत' प्रयोग के लिए दी जा रही है (फिर वही
ग्रनवरत!) ग्रौर उसे सिर्फ इतना करना होता था कि ग्रौद्योगिक विस्तार के
लिए कभी-कभी किसी फार्म में से जमीन का कोई टुकड़ा काट ले। वह सिंचाई
के सर्वोच्च ग्रधिकारी की कार्य कुशलता की समता करने की तो सोच भी नहीं
सकता था। (उसका व्यवसाय भी शाश्वत था) जमीन में ग्रगर मामूली-सी भी
ढलान होती तो वह फौरन ही भांप जाता। बहरहाल, ग्राने वाले वर्षों में
कभी न कभी उसे कोई बेहतर काम मिल ही जाएगा। लेकिन इसका ग्राखिर
क्या कारण था कि इस समय भी वह उश-तेरेक वापस लौटने के बारे में इतने
उत्साह के साथ सोच रहा था, ग्रपने इलाज के तत्काल बाद वहाँ चले जाने का
इच्छुक था?—इतना ही नहीं वह तो यह तक चाहता था कि ग्रधूरा इलाज
होने पर भी वह गिरता-पड़ता वहां पहुंच जाए—ग्राखिर क्यों?

क्या ग्रधिक स्वाभाविक बात यह न होती कि व्यक्ति ग्रपने निर्वासन-स्थल
के प्रति कटुता ग्रनुभव करे, उसे कोसे ग्रौर उससे घृणा करे? ऐसी कई गलत
चीजों पर, जो किसी व्यंगकार के कोड़े का निशाना बनने लायक थीं, ग्रोलीग
बस मुस्करा भर देता था—वह उन्हें मनोरंजक कहानियों से ग्रधिक ग्रौर कोई
महत्व नहीं देता था। उदाहरण के लिए नए हैडमास्टर ग्राबेन बर्देनोव को
लीजिए, जिसने सब्रामोव का शतरंज का डिब्बा उठाकर एक ग्रलमारी के पीछे
फेंक दिया था। (उसने डिब्बे पर एक चर्च का चित्र देख लिया था ग्रौर
उसने उसे धर्म का प्रोपैगंडा समझा था।) या फिर स्थानीय मुख्य स्वास्थ्य

अधिकारी को लीजिए, जो एक चालाक रूसी लड़की थी। वह मंच से स्थानीय बुद्धिजीवियों को उपदेश देती थी, लेकिन उसके तत्काल बाद गांव की औरतों के पास नये से नये डिजाइन की क्रेप लगभग दूनी कीमत पर बेचने पहुंच जाती थी—जब तक वह क्रेप स्थानीय दुकानदारों के पास पहुंच पाती, वह अपनी चांदी कर लेती थी।—और वह एम्बुलेंस! वह गर्द के तूफान में इधर से उधर दौड़ती रहती थी। अक्सर उसमें कोई मरीज़ नहीं होता था—वह या तो पार्टी सेक्रेटरी के अपने काम आती या फिर उसका इस्तेमाल आस-पास के फ्लैटों में लपसी और मक्खन पहुंचाने के लिए किया जाता। उसे छोटे से परचून दुकानदार ओरम्बायेव द्वारा चलाया जाने वाला 'थोक व्यापार' भी याद था। उसके छोटे से जनरल स्टोर में कभी कोई चीज़ मिलती ही नहीं थी। छत तक बिक चुके माल के खाली डिब्बे ही भरे थे। उसे अपने व्यापार को निर्धारित सीमा से आगे बढ़ाने के लिए हमेशा बोनस मिलता था।—हालांकि वह हमेशा ही दुकान के दरवाज़े पर बैठा ऊँघता रहता था। वह इतना आलसी और काहिल था कि न तो कभी तोल सकता था न, माप सकता था और ना ही कोई चीज़ बांध कर दे सकता था। पहले वह बड़े-बड़े लोगों को माल सप्लाई कर देता, फिर उनमे अपेक्षाकृत कुछ कम बड़े लोगों की सूची बनाता और उन्हें इस प्रकार के परामर्श देने लगता—'सेवइयों का पूरा डिब्बा ले जाओ।—पूरा डिब्बा।' या 'चीनी की बोरी ले लो—पूरी बोरी।' डिब्बा या बोरी डिपो से सीधे खरीदार के घर पहुँच जाते, लेकिन उन्हें शामिल ओरम्बायेव की बिक्री की फ़हरिस्त में ही किया जाता।—और वह जिला पार्टी समिति का तृतीय सचिव, जो हाई स्कूल की परीक्षा में प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में बैठना चाहता था—हालांकि वह गणित में एकदम कोरा था। एक रात वह दबे पांव अध्यापक के घर गया था (जो एक निर्वासित व्यक्ति था) और अस्त्राखान की एक खाल रिश्वत के रूप में पेश कर दी थी।

श्रम-शिविरों में भेड़ियों के बीच जानवरों की सी ज़िन्दगी गुजारने के बाद इस प्रकार की बातों को निश्चित ही मुस्कराकर सहन किया जा सकता है—उन्हें मुस्कराकर टाल दिया जा सकता है। श्रम-शिविरों की जिन्दगी के बाद आखिर क्या था जो मजाक भर नहीं था? ऐसी क्या चीज थी जो एकदम मामूली नही लगती थी।

जब वह अपनी सफेद कमीज पहन कर शाम को गांव की गली में घूमने निकलता था तो क्या ही आनंद आता था! (उसके पास बस एक यही कमीज थी और उसका भी कॉलर फटा हुआ था—लेकिन उसके पाजामे और जूतों की हालत तो इतनी खराब थी कि बयान ही नहीं की जा सकती।) नरकुल

की छत वाले सामुदायिक कल्याण केन्द्र की दीवार पर पोस्टर लगा होता कि एक नई 'विजय-स्मारक'[1] फिल्म दिखाई जा रही है और गांव का विदूषक वास्या हर किसी से यह अनुरोध करता घूमता रहता कि वह यह फिल्म देखने जरूर आए। ओलीग सबसे सस्ती टिकट खरीदता—दो रूबल की—और सबसे आगे की लाइन में बच्चों के साथ जा बैठता। महीने में एक बार वह शराब भी पीता था—वह ढाई रूबल में बीअर का एक मग खरीदता और चाय घर में चेचन लॉरी-ड्राइवरों के साथ बैठ कर पी जाता।

ओलीग का निर्वासन ठहाकों और प्रसन्नता से भरपूर था—और इसका श्रेय मुख्यत: कादमिन-दंपत्ति को था। ये बूढ़े पति-पत्नी ओलीग के परिचितों में से थे। पति निकोलाई इवानोविच स्त्री-रोग-विशेषज्ञ था और उसकी पत्नी का नाम एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना था। इस निर्वासित दम्पत्ति को चाहे किसी भी कठिनाई का सामना करना पड़ता वे यही कहते रहते—'क्या ही अच्छी बात है! अब परिस्थितियां पहले से कहीं अच्छी हैं। हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि धरती के इतने अच्छे भाग में पहुंच गए हैं!'

अगर कहीं से उन्हें सफ़ेद गेहूँ की रोटी मिल जाती तो—सुब्हान अल्लाह! अगर उन्हें किताबों की दुकान में पौस्तोव्स्की की पुस्तक का दो खंडीय संस्करण मिल जाता तो—वाह, क्या कहना! सामुदायिक कल्याण केन्द्र में उस दिन एक अच्छी फिल्म चल रही है—अद्भुत! एक नया दांतों का डॉक्टर आया—वाह-वाह! एक स्त्री-रोग-विशेषज्ञ आई—एक और निर्वासित महिला डॉक्टर—कितनी अच्छी बात है! स्त्री रोगों का उपचार और अवैध गर्भपात का काम वह करती रहे। निकोलाई इवानोविच अब लोगों की आम बीमारियों का इलाज करेगा। पैसा कम सही, दिमाग को शांति तो अधिक मिलेगी।—और मरुभूमि में सूर्यास्त का दृश्य!—नारंगी, अंगारे की तरह लाल और उन्नाबी सूरज—भला उसकी तारीफ हो सकती है! निकोलाई इवानोविच एक छोटा सा नर्मो-नाजुक आदमी, जिसके बाल सफेद हो रहे थे, अपनी पत्नी का हाथ थामता और दोनों नपे-तुले कदम उठाते सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए बस्ती के अंतिम छोर पर पहुंच जाते। (उसकी पत्नी कुछ मोटी थी और उसका वजन बढ़ता ही जा रहा था—इसके इस थुलथुलपन में उसके खराब स्वास्थ्य का भी कुछ हाथ था। जहां वह तेज चलने वाला था, वहां उसकी पत्नी बहुत धीरे-धीरे चल पाती थी।)

---

१. १९४५ में लालसेना द्वारा जर्मनी में अपने कब्जे में ली गई पश्चिमी फिल्में, जो युद्ध के बाद कई वर्षों तक समूचे रूस में दिखाई जाती रही थीं। (अनु० की टि०)

सबसे आगे की लाइन में बच्चों के साथ जा बैठता। महीने में एक बार वह शराब भी पीता था—वह ढ़ाई रूबल में बीअर का एक मग खरीदता और चाय घर में चेचन लॉरी-ड्राइवरों के साथ बैठ कर पी जाता।

ओलेग का निर्वासन ठहाकों और प्रसन्नता से भरपूर था—और इसका श्रय मुख्यत: कादमिन-दम्पत्ति को था। ये बूढ़े पति-पत्नी ओलेग के परिचितों में से थे। पति निकोलाई इवानोविच स्त्री-रोग-विशेषज्ञ था और उसकी पत्नी का नाम एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना था। इस निर्वासित दम्पत्ति को चाहे किसी भी कठिनाई का सामना करना पड़ता वे यही कहते रहते—क्या ही अच्छी बात है! अब परिस्थितियां पहले से कहीं अच्छी हैं। हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि धरती के इतने अच्छे भाग में पहुँच गए हैं!'

अगर कहीं से उन्हें सफेद गेहूं की रोटी मिल जाती तो—सुब्हान अल्लाह! अगर उन्हें किताबों की दुकान में पौस्तोव्स्को की पुस्तक का दो खंडीय संस्करण मिल जाता तो —वाह, क्या कहना! सामुदायिक कल्याण केन्द्र में उस दिन एक अच्छी फिल्म चल रही है—अद्भुत! एक नया दांतों का डॉक्टर आया—वाह-वाह! एक स्त्री-रोग-विशेषज्ञ आई—एक और निर्वासित महिला डॉक्टर—कितनी अच्छी बात है! स्त्री रोगों का उपचार और अवैध गर्भपात का काम वह करती रहे। निकोलाई इवानोविच अब लोगों की आम बीमारियों का इलाज करेगा। पैसा कम सही, दिमाग को शान्ति तो अधिक मिलेगी।—और मरुभूमि में सूर्यास्त का दृश्य!—नारंगी, अंगारे की तरह लाल और उन्नाबी सूरज—भला उसकी तारीफ हो सकती है! निकोलाई इवानोविच एक छोटा-सा नर्मो-नाजुक आदमी, जिसके बाल सफेद हो रहे थे, अपनी पत्नी का हाथ थामता और दोनों नपे-तुले कदम उठाते सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए बस्ती के अन्तिम छोर पर पहुंच जाते। (उसकी पत्नी कुछ मोटी थी और उसका वजन बढ़ता ही जा रहा था—इसके इस थुलथुलपन में उसके खराब स्वास्थ्य का भी कुछ हाथ था। जहां वह तेज चलने वाला था, वहां उसकी पत्नी बहुत धीरे-धीरे चल पाती थी।)

एक दिन जब उन्होंने अपने लिए मिट्टी का टूटा-फूटा घरौंदा खरीद लिया, जिसके साथ एक रसोई-वाटिका भी थी, तो उनके जीवन में स्थायी आनन्द आ गया। वे जानते थे कि यह उनके जीवन का अन्तिम पड़ाव है—यह वह छत है जिसके नीचे वे जिएंगे और जिसके नीचे वे मरेंगे। (उन्होंने फैसला कर लिया था कि वे इकट्ठे मरेंगे। अगर एक गया तो दूसरा भी जाएगा—फिर जीने के लिए रहेगा ही क्या?) उनके पास कोई फर्नीचर नहीं था, इसलिए उन्होंने खामरातोविच से, जो एक बूढ़ा निर्वासित व्यक्ति था, कहा कि वह एक कोने में लकड़ी का एक तख्त-सा लगा दे। यह उनका दाम्पत्य-पलंग था—खूबसूरत, चौड़ा और आरामदायक पलंग। हर दृष्टि से पूर्ण! उन्होंने लम्बा-चौड़ा

थैला लेकर उसमें भुस भर लिया और उस पर एक चादर चढ़ाकर गद्दा बना लिया। फिर उन्होंने खोमरातोविच से एक गोल मेज बना देने को कहा। खोमरातोविच आश्चर्यचकित रह गया उसे दुनिया में आए साठ वर्ष हो चुके थे – और उसने आज तक कोई गोल मेज देखी ही नहीं थी। 'आखिर गोल क्यों ?' 'प्लीज़ !' निकोलाई इवानोविच ने अपने हाथों को—जो एक स्त्री-रोग-विशेषज्ञ के सफेद हाथ थे—रगड़ते हुए कहा, 'बस वह गोल ही होनी चाहिए !' इसके बाद उनकी अगली समस्या एक पैराफीन लेम्प प्राप्त करने की थी। वे शीशे का लेम्प चाहते थे, टीन का नहीं। उस लेम्प की नाल लम्बी होनी चाहिए थी। लेम्प की बत्ती दस डोरियों वाली होनी चाहिए थी, सात डोरियों वाली नहीं।—और वे यह भी चाहते थे कि ग्लोब एक-से अधिक हों। ऐसा कोई लेम्प उश-तेरेक में तो मिलता नहीं था, इसलिए वह जोड़-जोड़ कर बनाया जाना था। उसके विभिन्न भागों को सहृदय लोग दूर-दूर से ढूँढ़-ढूँढ़ कर लाए। आखिर घर में बने शेड वाला लेम्प तैयार हो गया और उसे गोल मेज़ पर सजा दिया गया। १९४५ में जब हाइड्रोजन बम तैयार हो चुका था और बड़े-बड़े शहरों के लोग स्टैंडर्ड लेम्पों के पीछे दौड़ रहे थे, उश-तेरेक में घर में बनी मेज पर रखा यह पैराफीन का लेम्प एक ऐसी चीज थी जिसने मिट्टी के उस घरौंदे को दो शताब्दी पूर्व के विलासितापूर्ण ड्राइंग रूम में परिवर्तित कर दिया था। कितना बड़ा विजयोल्लास था।—और जब वे तीनों उसके गिर्द गोल मेज पर बैठते तो एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना भावाकुल स्वर में कहती—ओलेग जीवन कितना अच्छा और सुखद है! बचपन के दिनों को छोड़कर, ये मेरे जीवन के सुखदतम दिन हैं।'

—और निस्संदेह उसका कहना ठीक ही था। हम सम्पन्नता के स्तर से नहीं, दिल और दिल के बीच के सम्बन्धों से सुखी होते हैं, हमारी प्रसन्नता उस दृष्टि पर निर्भर करती है जिससे हम दुनिया को देखते हैं। ये दोनों ही बातें चूँकि हमारे अधिकार में हैं, इसलिए व्यक्ति जब तक चाहे खुश रह सकता है—कोई भी उसे खुश रहने से रोक नहीं सकता।

युद्ध से पहले वे दोनों एलेना की सास के पास रहते थे। सास किसी मामले में समझौता करना जानती ही नहीं थी—वह अपनी मनमानी करती और छोटी-से छोटी बात पर नज़र रखती। निकोलाई इवानोविच मां से बहुत डरता था। इसलिए एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना यह महसूस करती रहती कि उसे कुचला जा रहा है। उस समय वह स्वयं प्रौढ़ावस्था को पहुँच चुकी थी—उसका जिन्दगी का अपना ढंग था और यह उसकी पहली शादी भी नहीं थी। वह उन दिनों अब अपना 'मध्य युग' कहती थी। उस परिवार में ताज़ा हवा के किसी झोंके के अन्दर आने के लिए किसी भयावह दुर्घटना की आवश्यकता थी।

—और वह भयावह दुर्घटना हो ही गई—और उसका श्रेय भी उसकी सास

ही को था। युद्ध के पहले वर्ष में एक ऐसा व्यक्ति उनके घर आया था जिसके पास उसका कोई दस्तावेज नहीं था, और उसने शरण मांगी थी। उसकी सास ने यह अपना कर्तव्य समझा था कि उस भगोड़े को शरण दे दी जाए और इस सिलसिले में उसने 'युवा दम्पत्ति' से कोई परामर्श करना भी आवश्यक नहीं समझा था। अपने परिवार के साथ हालांकि वह काफी कठोरता बरतती थी, लेकिन इसके साथ ही वह ईसाइयत के सिद्धान्तों को भी मानती थी। भगोड़े ने दो रातें उनके फ्लैट में बिताई थीं और फिर चला गया था। बाद में वह पकड़ा गया और जब उसके साथ पूछताछ की गई तो उसने उस घर का पता बता दिया था जहां उसने शरण ली थी। सास की उम्र लगभग अस्सी वर्ष थी, इसलिए उससे उन्होंने कुछ नहीं कहा। इसकी बजाय उचित यही समझा गया कि उसके पचास वर्षीय बेटे और चालीस वर्षीय बहू को गिरफ्तार कर लिया जाए। पूछताछ के दौरान उन्होंने यह जानने की कोशिश की थी कि क्या भगोड़ा उनका कोई सम्बन्धी था। अगर वह उनका कोई सम्बन्धी हुआ होता तो सम्भव था कि कुछ नरमी बरती जाती—किसी परिवार का अपने किसी सम्बन्धी का बचाव करना समझ में आ सकता था—हो सकता था कि माफ भी कर दिया जाता। लेकिन वह व्यक्ति चूंकि एक मामूली राहगीर था, और उनका कुछ भी नहीं लगता था, इसलिए कादमिन दम्पत्ति को दस-दस वर्ष के कारावास की सज़ा दी गई—उन पर यह आरोप नहीं था कि उन्होंने एक भगोड़े को शरण दी थी, बल्कि यह कि वे अपने देश के शत्रु हैं और उन्होंने जान-बूझ कर लाल सेना की शक्ति को क्षति पहुंचाई थी। युद्ध समाप्त हो गया और १९४५ में जब स्तालिन ने महान क्षमा-दान की घोषणा की तो उस भगोड़े को रिहा कर दिया गया। (इतिहासकार हमेशा ही इस बात पर सिर खपाते रहेंगे कि आखिर सबसे पहले भगोड़ों को ही क्यों माफ किया गया—और वह बिना किसी शर्त के!) वह यह भूल चुका था कि अपने भगोड़ेपन के दिनों में उसने दो रातें किस घर में गुजारी थीं और ना ही वह यह जानता था कि वह अपने साथ दो अन्य व्यक्तियों को भी घसीटकर जेल ले गया था। कादमिन-दम्पत्ति पर क्षमा-दान का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था—वे भगोड़े थोड़ा ही थे, वे तो देश के शत्रु थे। वे जब दस वर्ष की अपनी सजा भुगत चुके तो भी उन्हें घर जाने की अनुमति नहीं दी गई। आखिर उन्होंने अपराध एक व्यक्ति के रूप में तो नहीं किया था, वे तो एक गुट थे—एक संगठन—पति और पत्नी! इसलिए उन्हें अनवरत निर्वासन देना आवश्यक था। यह जानते हुए कि क्या कुछ होने वाला है, कादमिन दम्पत्ति ने एक प्रार्थना-पत्र भेजा था कि उन्हें एक ही स्थान पर निर्वासित किया जाए। ऐसा लगता था कि इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी—अनुरोध एकदम उचित और वैध था, फिर भी पति को कजाकिस्तान के दक्षिण में भेज दिया गया और पत्नी को

क्रास्नोयार्स्क क्षेत्र में। क्या इसका उद्देश्य यह था कि उनके संगठन को तोड़ दिया जाए? नहीं, ऐसा विद्वेष वश या उन्हें दण्ड देने के लिए नहीं किया गया था। बात सिर्फ इतनी-सी थी कि गृह-मन्त्रालय के कर्मचारियों में कोई ऐसा व्यक्ति था ही नहीं जिसके ऊपर यह उत्तरदायित्व हो कि वह पत्नियों और पतियों को एक साथ रखे। इसलिए वे अलग-अलग रहे थे। पत्नी की उम्र लगभग ५० वर्ष थी और उसके हाथ-पांवों पर सूजन आ रही थी। उसे टाइगा[१] भेज दिया गया था, जहां एकमात्र काम लकड़ियां ढोना ही था—श्रम-शिविरों का विशेष काम! (फिर भी वह टाइगा का उल्लेख 'अत्यधिक अद्भुत स्थान' कह कर किया करती थी।) एक वर्ष तक वे मास्को पर शिकायतों के गोले दागते रहे थे। आखिर एक विशेष पहरेदार भेजा गया था जो एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना को उश-तेरेक तक पहुंचा गया था।

निस्संदेह वे अब जीवन से आनन्द लेते थे। वे उश-तेरेक और अपने मिट्टी-गारे के घरौंदे से प्यार करते थे। दुनियाई चीजों और सुख-सुविधाओं के सिलसिले में उन्हें किसी और चीज की अभिलाषा भी क्या हो सकती थी?

अनवरत निर्वासन? बहुत अच्छा! अनवरतता तो काफी लम्बा समय होता है और इस समय में उश-तेरेक की जलवायु का पूरी तरह अध्ययन किया जा सकता था। निकोलाई इवानोविच ने अपने घर के बाहर तीन थर्मामीटर लटका रखे थे, वर्षा मापने के लिए एक जार रख दिया था और राज्य मौसम केन्द्र की इन्चार्ज इन्ना स्त्रोम से उसने इस सम्बन्ध में परामर्श किया था कि हवा की रफ्तार का ज़ोर कब कितना रहता है। मौसम-केन्द्र में चाहे कुछ भी हो, लेकिन निकोलाई इवानोविच के पास एक ऐसा रजिस्टर अवश्य था जो मौसम सम्बन्धी आंकड़ों से भरा पड़ा था।

उसका पिता संचार इंजीनियर था। निरन्तर सक्रियता का आवेग और व्यवस्था और आंकड़ों की शुद्धता के प्रति प्रेम उसे अपने बचपन में ही अपने पिता से विरासत में मिल गये थे। हालांकि कोई भी कोरोलेनको[२] को सिद्धान्तवादी नहीं कह सकता है, फिर भी वह कहा करता था (और निकोलाई इवानोविच को उसके शब्द उद्धृत करना अच्छा लगता था) कि 'चीजों के व्यवस्थित रहने में मानसिक शान्ति बनी रहती है' डा० कादमिन की प्रिय लोकोक्ति थी—'चीजें अपने स्थान को पहचानती हैं। चीजें जानती हैं कि कहां की हैं और हमें उनके रास्ते में नहीं आना चाहिए।'

---

१. आर्कटिक के बंजर तटों और मरुभूमि के बीच सनोबर का एक जंगल।
(अनुवादक की टिप्पणी)

२. क्रान्ति-पूर्व का एक रूसी लेखक जो 'जनता की सेवा' करने के इच्छुक बुद्धिजीवियों में अत्यधिक लोकप्रिय था।
(अनुवादक की टिप्पणी)

सर्दियों की शामों में निकोलाई इवानोविच का चहेता शुगल जिल्दबन्दी था। उसे फटी-पुरानी किताबें इकट्ठा कर उन्हें फिर से नया और चमकता-दमकता बना देना बहुत पसन्द था। उश-तेरेक में भी वह जिल्दबन्दी की मशीन बनवा लेने में सफल हो गया था, जिसका कागज़ काटने वाला फल असाधारण रूप से तेज़ था।

गारे-मिट्टी के घर का पैसा चुका देने के बाद फिर से कादमिन दम्पत्ति ने बचत करना शुरू कर दी थी। वे लगातार कई महीनों तक एकदम फटे-पुराने कपड़े पहनते रहे थे, जिससे कि वे एक बैटरी का रेडियो खरीद सकें। पहले उन्होंने कुर्द के साथ, जो सांस्कृतिक वस्तु भंडार में सहायक था, यह व्यवस्था की कि वह उनके लिए बैटरियां अलग निकाल कर रख देगा। बैटरियां अगर आती थीं तो रेडियो सैटों से अलग ही आती थीं। इसके बाद उन्हें उस डर पर विजय पाना थी, जिसका सामना रेडियो रखने वाले हर निर्वासित व्यक्ति को करना पड़ता है। सुरक्षा अधिकारी क्या कहेगा? क्या वे बी० बी० सी० के प्रसारण सुनने के लिए रेडियो रखना चाहते हैं? खैर आतंक पर विजय पा ली गई, बैटरियां ले ली गईं, रेडियो खोल दिया—और उसमें से एक संगीत निकला—जो एक कैदी के लिए स्वर्ग था—बस एक स्वर्ग! बैटरियां समतल करेंट भेज रही थीं, इसलिए प्रसारणों में गड़बड़ नहीं हुई थी। प्रतिदिन पुकीनीं, सिबेलियस और बौर्तन्यान्स्की का संगीत सुनते। रेडियो ने उनके जीवन के प्रत्येक शून्य को भर दिया था। अब उन्हें बाहरी दुनिया से कुछ नहीं लेना था—उलटे वे ही अपनी सम्पन्नता में से दुनिया को कुछ दे सकते थे।

बसन्त ऋतु आने पर रेडियो सुनने के लिए शामों को कोई बहुत समय नहीं मिल पाता था। उसके बजाय अब उनका अधिकांश समय रसोई-वाटिका की देखभाल में ही लग जाता था। निकोलाई इवानोविच ने अपने चौथाई एकड़ प्लाट की क्यारियां इतने उत्साह और इतने अच्छे ढंग से बनाई थीं कि बूढ़ा प्रिंस बोलकोन्स्की[1] भी, जिसकी बाल्डहिल स्थित जागीर की निगरानी करने के लिए एक निजी कृषि-विशेषज्ञ और भवन-कलाविद् नियुक्त थे, उससे ईर्ष्या करता। साठ वर्ष की उम्र में भी निकोलाई इवानोविच अस्पताल में पूरी मुस्तैदी से काम कर रहा था। वह निर्धारित समय से ड्यौढ़े समय तक अस्पताल में काम करता था और अगर किसी को प्रसव कराना होता तो वह रात में भी दौड़ता हुआ वहां पहुँच जाता था। वह चलता तो कम ही था--अधिकतर तो वह भागता था और ऐसा करते समय वह अपनी सफेद दाढ़ी की

---

१. तालसताय के महान उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' का एक पात्र।

(अनुवादक की टिप्पणी)

प्रतिष्ठा का भी कोई ध्यान नहीं रखता था। एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना ने उसके लिए कैनवस की जो जैकिट बनाई थी, भागते समय उसके किनारे फड़फड़ाते रहते थे। जहां तक खुदाई का सम्बन्ध है, यह काम करने की शक्ति उसमें नाम मात्र को रह गई थी। इस काम पर वह सुबह अधिक से अधिक आधा घण्टा लगाता था और इतने ही में थक जाते था। बहरहाल, उसके हाथ और दिल चाहे जवाब दे जाएं, लेकिन उसने अपनी वाटिका का जो नक्शा बनाया था, वह अद्भुत था—लगभग सभी दृष्टियों से एकदम पूर्ण ! वह ओलेग को बड़े गर्व के साथ अपनी खाली वाटिका दिखाने ले जाता था जिसमें बाड़ के लिए अभी तक कुल दो पौधे ही लगे होते थे।

'ओलेग !' वह कहता—"मैं यहां बीच में से एक रास्ता निकालूंगा: उसके एक ओर तीन खूबानी के पेड़ होंगे, उनके बीज तो मैं लगा भी चुका हूँ। दूसरी ओर मैं अंगूरों का बाड़ा लगवाऊंगा। अंगूर की बेलें जड़ जरूर पकड़ लेंगी—इसका मुझे पूरा-पूरा विश्वास है। जहां यह रास्ता खत्म होगा वहां मैं गर्मियों में रहने का मकान बनाऊंगा। एक वास्तविक ग्रीष्म-भवन—ऐसा, जैसा कि उससे पहले उशतेरेक में किसी ने देखा भी नहीं होगा। उसकी नींव तो मैं रख भी चुका हूं—वह देखो अर्ध-वृत्त लगी कुछ (ईटेंखोमरातोविच होता तो पूछता—आखिर अर्ध-वृत्त क्यों।) और यहां वे लट्ठे होंगे जिन पर हॉप की बेलें चढ़ेंगी। सामने मैं तम्बाकू के पौधे लगाऊंगा—वे बहुत अच्छी खुशबू देते हैं। वहां हम दिन की गर्मी से बचने के लिए बैठा करेंगे और शाम को समोवर[1] में से चाय पिया करेंगे। (सच तो यह है कि अभी तक उन्होंने समोवर खरीदा भी नहीं था।) तुम जब भी चाहो आ सकते हो—हर समय तुम्हारा स्वागत होगा।'

उनकी वाटिका में एक दिन क्या कुछ उगेगा, इस सम्बन्ध में तो केवल कल्पना ही की जा सकती थी, लेकिन उसमें अब तक जो कुछ नहीं उगा था—और जो पड़ौसियों की वाटिकाओं में उगता था, वह थे—आलू, करमकल्ला, टमाटर और कद्दू। 'लेकिन ये चीजें तो आप खरीद भी सकते हैं,' इस ओर ध्यान आकर्षित कराए जाने पर कादमिन दम्पत्ति प्रतिरोध करता। उशतेरेक में आकर बसे लोग कारोबारी किस्म के थे—वे गायें, सूअर, भेड़ और मुर्गियां रखते थे। ऐसा नहीं था कि कादमिन दम्पत्ति को पशु-पक्षी पालन आता नहीं था, लेकिन ऐसा करते समय वे व्यावहारिकता का ध्यान नहीं रखते थे। वे सिर्फ कुत्ते और बिल्लियां पालते थे—और कुछ नहीं। इसके पक्ष में उनका तर्क कुछ यों होता था—'आप दूध और गोश्त तो बाजार से भी खरीद सकते हैं, लेकिन एक कुत्ते की भक्ति और निष्ठा आपको 'बाजार में कहां मिलेगी ?'

---

१. रूसी चायपात्र, (अनुवादक की टिप्पणी)

लटके कानों वालों रीछ जैसा बड़ा चितकबरा बीतल या तेज नाक वाला तोबिक जिसका समूचा जिस्म सफेद है—सिर्फ कान काले हैं, तुम्हें देखकर तुम्हारा स्वागत करने के लिए जब छलांगें लगाते हैं तो क्या पैसे के लिए ?

'इन दिनों जानवरों से प्रेम करना कोई बहुत महत्वपूर्ण या आवश्यक नहीं समझा जाता—जो लोग बिल्लियों से प्यार करते हैं, हम उनका मजाक उड़ाते हैं, लेकिन अगर हम जानवरों से प्यार करना छोड़ दें तो एक दिन वह भी आ जाएगा जब हम मनुष्यों से भी प्रेम करना छोड़ देंगे।'

कादमिन दम्पत्ति अपने जानवरों से प्रेम उनकी खाल के लिए नहीं, बल्कि उन्हीं के लिए करता था। जानवरों ने भी अपने मालिकों की सहृदयता तत्काल ही सीख ली थी—और इसके लिए उन्हें कोई ट्रेनिंग भी नहीं देनी पड़ी थी। वे कादमिन दम्पत्ति की बातें अत्यधिक ध्यान और सम्मान के साथ सुनते थे—और घन्टों तक सुनते रह सकते थे। उनका साथ उन्हें पसन्द था और वे जब भी कहीं जाते, उनके साथ जाने में वे गर्व अनुभव करते। कमरे में लेटा तोबिक (कुत्ते घर में कहीं भी आ जा सकते थे) जैसे ही देखता कि एलेना अलेक्जेन्द्रोव्ना कोट पहन रही है और अपना हैन्ड बैग उठा रही है तो वह जान जाता कि वे लोग गाँव में सैर के लिए जा रहे हैं। वह फौरन ही उछल पड़ता और इससे भी बड़ी बात तो यह थी कि वह भागकर वाटिका में बीतल को भी अपने साथ ले आता। अपनी भाषा में वह बीतल को सैर पर जाने की बात बता देता और बीतल इतने जोश में भागा-भागा आ पहुंचता जैसे कि सैर के लिए वह खुद भी बेहद बेताब हो।

समय का तो बीतल एक असाधारण जज था। सिनेमा हॉल तक कादमिन दम्पत्ति के साथ जाने के बाद उन लोगों के हॉल में चले जाने पर वह बाहर बेकार बैठे रहने की बजाय मटरगश्ती को निकल जाता था, लेकिन फिल्म खत्म होने से पहले ही वह हमेशा लौट आता था। एक बार ऐसा हुआ कि फिल्म सिर्फ पांच रील की थी—उसे वापस आने में देर हो गई। इस बात से वह बहुत ही दुखी हुआ, लेकिन जब उसे यह अहसास हो गया कि उसके मालिकों ने उसे माफ कर दिया है तो वह फिर खुशी से उछल-कूद करने लगा।

निकोलाई इवानोविच के साथ कुत्ते हर जगह जाते थे—सिवाय उस वक्त के जब वह काम पर जाता था, क्योंकि उन्हें अहसास था कि ऐसा करना कोई बहुत ठीक नहीं होगा। अगर वे डॉक्टर को दोपहर बाद हल्के-हल्के कदम उठाते हुए दरवाजे से बाहर निकलते देखते तो वे निश्चित रूप से जान जाते कि वह किसी स्त्री को प्रसव कराने जा रहा है। या फिर नहाने के लिए जा रहा है। ऐसा लगता था कि वे बोध-संवहन (टैलीपैथी) से यह पता कर लेते थे कि वह कब क्या करने जा रहा है। पहली स्थिति में वे वहीं बैठे रहते और दूसरी स्थिति में उछलते-कूदते उसके साथ हो लेते। निकोलाए इवानोविच

पाँच किलोमीटर दूर बहती चू नदी में तैरने जाया करता था । उश-तेरेक के स्थानीय लोग और निर्वासित व्यक्ति भी—फिर चाहे जवान हों या प्रौढ़—यह मानते थे कि प्रतिदिन इतनी दूर नहीं जाया जा सकता है, लेकिन छोटे लड़के जाते थे और डाक्टर कादमिन और उसके कुत्ते भी । सच तो यह है कि यह एक ऐसी सैर थी जिसमें कुत्तों को पूर्ण सन्तोष नहीं मिलता था रास्ता पथरीली भी था और काँटेदार भी । बीतल के पंजे लहू-लुहान हो जाते थे और तोबिक, जिसे एक बार डाक्टर कादमिन ने गोता दे दिया था, फिर से नदी पर पहुंच कर भयभीत हो उठता था । लेकिन उनके लिए उनकी कर्त्तव्य-भावना सर्वोपरि थी, इसलिए वे डॉक्टर के साथ जाते अवश्य थे । जब तोबिक और नदी के बीच की दूरी कुल तीन सौ मीटर रह जाती तो वह पीछे रह जाता, वह निश्चिन्त हो जाना चाहता था कि उसे कोई पकड़ न ले । आगे न जा पाने के लिए वह क्षमा-याचना करता—पहले अपने कानों से, फिर पूँछ से—और फिर वह वहीं लेट जाता । लेकिन बीतल नदी के ढलवाँ किनारे तक डॉक्टर कादमिन के साथ जाता, वहां एक स्मारक की तरह तन कर खड़ा हो जाता और नीचे लोगों को नहाते देखता रहता ।

तोबिक ने मार्गरक्षक के रूप में साथ जाने में अपने उत्तरदायित्व का घेरा बड़ा कर लिया था—उसमें अब ओलेग भी शामिल था, जो कि अक्सर कादमिन दम्पत्ति के यहां आता जाता रहता था । (उसका उनके यहां आना-जाना इतना अधिक था कि सुरक्षा अधिकारी चिन्तित हो उठा था और उसने उनसे अलग-अलग पूछा था—'तुम लोगों में इतनी मित्रता क्यों है ? तुम लोगों में ऐसी क्या चीज है जो समान है ? तुम लोग बातें किस विषय पर करते हो ?) बीतल तो कभी हिचकिचा भी जाता था, लेकिन तोबिक ओलेग का साथ जरूर देता था—फिर चाहे वर्षा हो या धूप ! जब बारिश हो रही होती और गली-कीचड़ से भरी होती तो उसके पंजे लिथड़ जाते और उसे सर्दी लगने लगती । ऐसे मौसम में उसे बाहर जाना पसन्द नहीं था । ऐसे मौसम में पहले वह अपने अगले पंजे पसारता, फिर पिछले—लेकिन जाता जरूर । वह ओलेग और कादमिन दम्पत्ति के बीच पोस्टमैन का काम भी करता था । अगर वे ओलेग को यह सूचित करना चाहते कि इस समय कोई अच्छी फिलम चल रही है या रेडियो पर संगीत का कोई अच्छा कार्यक्रम आने वाला है या परचून की दुकान या जनरल स्टोर में कोई उपयोगी चीज बिक्री के लिए आई हुई है तो वे कपड़े की पट्टी की जेब में संदेश रखकर उसके गले में बांध देते और और ओलेग के घर की दिशा में संकेत करके कह देते—'ओलेग के यहां चले जाओ !' मौसम चाहे कैसा ही होता वह पूरी आज्ञाकारिता के साथ अपने लम्बे और स्वस्थ पांवों से मंजिल की ओर दौड़ पड़ता और अगर वह घर पर न मिलता तो वह दरवाजे पर खड़ा-खड़ा उसके आने की प्रतीक्षा करता

रहता। यह अपने आप में एक असाधारण बात थी। उसे किसी ने यह सब कभी सिखाया नहीं था और ना ही उसे कोई ट्रेनिंग दी थी फिर भी वह निर्देशों को तुरन्त समझ लेता था—जैसे कि कोई विचार-तरंग काम कर रही हो—और उनका पालन भी तुरन्त कर देता था। (हालांकि यह भी मानना पड़ेगा कि जब वह पोस्टमैन का काम करता था तो ओलेग उसकी सैद्धांतिक आस्था को सुदृढ़ करने के लिए उसे भौतिक प्रोत्साहन भी दे देता था।

वैसे तोबिक की आंखों की स्थायी उदासी ने ओलेग को उलझन में डाल रखा था। वह अपने दांतों से कभी नहीं मुस्कराता था—सिर्फ उसके कान मुस्कराते थे।

बीतल अपने कद और शरीर की गठन से किसी जर्मन गड़रिये का पालतू कुत्ता लगता था, लेकिन उसमें वैसी चौकसी या दुष्टता नहीं थी। उसके चेहरे मोहरे से तो सहृदयता बरसती थी जो सर्वाधिक बड़े और शक्तिशाली जानवरों में होती है। उसकी उम्र काफी थी और अब तक उसके कई मालिक रह चुके थे। लेकिन कादमिन दम्पत्ति को स्वयं उसी ने चुना था। उनसे पहले वह वसाद्जे के पास था। वसाद्जे एक कलाल था और बस उसे खाली बोतलों की क्रेटों की रखवाली करने के लिए जंजीर में बांधकर रखता था। कभी-कभी मजाक के लिए वह उसकी जजीर खोलकर उसे पड़ौसी कुत्तों पर लटका देता था। बीतल एक दिलेर और लड़ाका कुत्ता था और गली के फूले हुए पीले कुत्तों के उसके सामने प्राण सूख जाते थे। लेकिन वास्तव में वह सहृदय और शांतिप्रिय था। एक बार जब उसे खुला छोड़ दिया गया था तो वह कादमिन दम्पत्ति के घर के पास ही कुत्तों की एक शादी में भी सम्मिलित हुआ था। सभी स्थानीय कुत्ते तोबिक की मां डौली को फुसलाने में लगे हुए थे। बीतल को डौली ने इसलिए पसंद नहीं किया था क्योंकि उसका डील-डौल बहुत ही बड़ा था और इसलिए वह तोबिक का सौतेला बाप नहीं बन पाया। कादमिन दम्पत्ति के घर और बगीचे से उसे संजीदगी और सहृदयता की गन्ध आती अनुभव हुई थी और वह वहां अक्सर आने जाने लगा था—हालांकि कादमिन दम्पत्ति ने उसे खाने को कभी नहीं दिया था। वसाद्जे जब गांव से गया तो अपनी निर्वासित मित्र एमीलिया को उसे दे गया। फिर भी जब कभी मौका मिलता वह भाग खड़ा होता और कादमिन-दम्पत्ति के यहां पहुंच जाता—हालांकि एमीलिया बीतल को खाने को ढेरों ढेर देती थी। इस पर एमीलिया की कादमिन दम्पत्ति से अच्छी-खासी तू-तू मैं-मैं भी हो गई थी। एमीलिया उसे अपने यहां ले जाती और फिर जंजीर से बांध देती, लेकिन वह फिर जंजीर तोड़ भाग खड़ा होता। आखिर उसने उसे एक कार के टायर से बांधना शुरू कर दिया। यह उन्हीं दिनों की बात है कि उसने टायर से बंधे-बंधे देखा कि एलेना

अलेक्जेन्द्रोवना गली में से गुज़र रही है। बीतल को देखकर एलेना ने जान-बूझकर अपना मुंह उसकी ओर से घुमा लिया था, लेकिन बीतल ने एक बलिष्ठ घोड़े की तरह झटका दिया और टायर को खींचता हुआ लगभग सौ मीटर तक चला आया और फिर बेदम होकर गिर पड़ा। इसके बाद तो एमीलिया ने भी हार मान ली और उसने बीतल कादमिन दम्पत्ति को दे दिया। उनके पास पहुंच कर बीतल ने अपने नए मालिकों के मानवीय सिद्धांतों को अपनी आचरण-संहिता ही बना लिया। अब गली के कुत्तों से उसने लड़ना छोड़ दिया था और राहगीरों से भी उसने मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया था—हालांकि उसने अपने आपको दयनीय कभी नहीं बनने दिया।

लेकिन हर जगह की तरह उशतेरेक में भी ऐसे लोग थे जिन्हें जीवित प्राणियों को गोली मारना अच्छा लगता था। कोई बेहतर खेल न मिलने पर वे नशे में धुत होकर गलियों में घूमते और कुत्तों को गोली मारते रहते थे। बीतल को भी दो बार गोली लग चुकी थी और अब वह उस चीज से डरने लगा था जिसका निशाना उसकी तरफ हो—चाहे वह कैमरे का लैंस ही क्यों न हो। इसीलिए वह कभी भी अपना फोटो नहीं खींचने देगा।

कादमिन दम्पत्ति ने बिल्लियां भी पाल रखी थीं—बिगड़ैल, मनमौजी और कलाप्रिय बिल्लियाँ। लेकिन मैडिकल सेंटर की पगडंडियों पर घूमते हुए ओलेग को बीतल ही याद आ रहा था—बीतल और उसका बड़ा और परोप-कारी सिर। गलियों में घूमता हुआ बीतल नहीं, बल्कि उसकी खिड़की में से झाँकता हुआ बीतल। यकायक उसका सिर प्रकट होता, वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो इस तरह झांकता जैसे की इन्सान हो। ओलेग को विश्वास होता कि तोबिक भी यहीं कहीं आस-पास ही उछल-कूद कर रहा होगा और निकोलाई इवानोविच भी अब पहुंचने ही वाला है।

अत्यधिक भावाकुल हो गए ओलेग को अब पता था कि वह अपने लोगों के बीच काफी सन्तुष्ट रहेगा—अपने लोगों के बीच निर्वासन का जीवन! उसने सिर्फ स्वास्थ्य की दुआ मांगी थी। वह किसी चमत्कार की तो मांग नहीं कर रहा था!

यह उसी ढंग से रहना चाहेगा, जिस ढंग से कादमिन-दम्पत्ति रहता था—जो कुछ उसके पास था उसी में मगन! बुद्धिमान व्यक्ति बहुत थोड़े से ही सन्तुष्ट हो जाता है।

आशावादी कौन है? वह व्यक्ति जो यह कहता है—'हर जगह हालत यहां से भी खराब है। हम बाकी दुनिया से अच्छे हैं—हम बहुत सौभाग्यशाली हैं।' जैसा भी वातावरण है वह उसी में प्रसन्न है और वह स्वयं को आत्म-यंत्रणा नहीं देता है।

निराशावादी कौन है ? वह, जो यह कहता है—'यहां के अलावा सभी जगह हालत अच्छी है, प्रत्येक व्यक्ति हमसे बेहतर स्थिति में है। अभागे केवल हमीं हैं।' वह अपने आपको निरन्तर आत्म-यंत्रणा देता रहता है।

काश, ओलेग का इलाज पूरा हो जाता—वह रेडियो-विकरण चिकित्सा और हारमोन चिकित्सा के जबड़ों से बच सकता और अपंग हुए बिना रह जाता अगर किसी तरह वह अपनी कामेच्छा को बनाए रख सकता—और हर उस चीज़ को भी जो उससे सम्बन्धित है ! उसके बिना तो······

काश, वह उशतेरेक पहुंच सके ! वहां पहुंच कर उसे एक कुंवारे का जीवन न जीना पड़े और वह शादी कर ले ! जोया के वहां पहुंचने की तो कोई विशेष सम्भावना नहीं थी—और अगर वह पहुंची भी तो अठारह महीने से पहले नहीं पहुंच पाएगी। प्रतीक्षा—और प्रतीक्षा—इसी प्रतीक्षा में तो उसने अपना समूचा जीवन बिता दिया था। नहीं, अब यह असम्भव था !

वह कसाना से शादी कर सकता था। सुदृढ़ चरित्र की थी और खूब हृष्ट-पुष्ट थी—हालांकि उसका सिर कुछ अधिक ही गोल था ! लेकिन वह एक आदर्श गृहिणी सिद्ध होगी। कंधे पर तौलिया डाले जब वह प्लेटें साफ कर रही होगी तब भी वह एक साम्राज्ञी ही लगेगी, तुम उससे अपनी नजरें नहीं हटा पाओगे। तुम उसके साथ सुरक्षित रहोगे; तुम्हारा घर अच्छा-खासा होगा और आस-पास हमेशा बच्चे होंगे।

—या वह इन्ना स्प्रोम से शादी कर सकता था। उसकी उम्र अभी कुल अठारह वर्ष थी; यह विचार उसके दिमाग में अकस्मात् ही आया था, लेकिन यह आकस्मिकता ही उसे मोहित कर रही थी। उसकी मुस्कराहट में कुछ उदासी भी थी और कुछ ढीठता व खुलापन भी—लेकिन वह उत्तेजक भी थी। उसकी ओर आकर्षित होने का एक कारण यह भी था।

उसे झटकों—बिथोविन की संलयों—पर विश्वास नहीं करना चाहिए। वे तो सिर्फ साबुन के भदेस झाग भर थे। उसे तो अपने अनियन्त्रित हृदय पर नियन्त्रण करना चाहिए; उसे किसी चीज पर विश्वास नहीं करना चाहिए, भविष्य में किसी चीज की किसी भी सुधार की कोई अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

जो कुछ है उसी में खुश रहो !

अनवरत ! क्यों नहीं ? हाँ, अनवरत !

२१. आती जाती परछाइयां

ओलेग बहुत खुशकिस्मत था कि उससे उसकी टक्कर क्लिनिक के दरवाजे में ही हो गई। उसने एक ओर हटकर उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया। वह अपने शरीर को थोड़ा-सा आगे को झुकाए इतने उत्साह से चली आ रही थी कि अगर वह एक ओर को न हट गया होता तो उसने टकरा कर ओलेग को ज़मीन ही सुंघा दी होती।

उसने एक ही नजर में उसे एड़ी से चोटी तक देख लिया—अपने गहरे भूरे बालों पर उसने नीली टोपी पहन रखी थी। उसका सिर थोड़ा-सा आगे को झुका हुआ था जैसे वह किसी तेज़ हवा का सामना कर रही हो। उसके कोट की काट एक विशेष प्रकार की थी। उसका कॉलर बहुत ही बड़ा था—एक स्कार्फ जैसा—और गले तक बटन लगे हुए थे।

अगर उसे पता होता कि वह रूसानोव की बेटी है तो बहुत संभव था कि वह लौट पड़ता, लेकिन अब वह क्लिनिक के बीच के रास्तों पर रोज की तरह सैर-सपाटे के लिए निकल पड़ा।

आवेती को ऊपर की मंजिल पर वार्ड में जाने की अनुमति प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उसका पिता बहुत ही कमजोर था—और वैसे भी बृहस्पतिवार मरीज़ों के रिश्तेदारों उनसे मिलने का दिन होता है। उसने अपना ओवरकोट उतारकर अपने लाल स्वेटर के ऊपर अस्पताल से दिया गया सफेद कोट डाल लिया था जो बहुत ही छोटा था और उसकी आस्तीनों में उसकी बाहें तभी आ सकती थीं यदि वह बच्ची होती।

परसों उसे जो तीसरा इंजेक्शन लगा था उसके बाद तो रूसानोव और भी कमजोर हो गया था इतना कमज़ोर कि अत्यधिक आवश्यकता के बिना उसका दिल अपनी टांगों को कम्बल के नीचे से निकालने को नहीं करता था। वह बिस्तर में भी बहुत ही कम हिलता-डुलता था और खाने में भी उसे हिचकिचाहट होती थी। उसने न तो अपना चश्मा ही लगाया था और न अपने आस-पास चलने वाली किसी बात-चीत में कोई हिस्सा लिया था। उसके आस-पास का सामान्य वातावरण, जिसके प्रति सामान्यत: निर्णायक ढंग से सहमति-सूचक या असहमतिसूचक प्रतिक्रिया व्यक्त किया करता था, अब उसके लिए धुंधलाता जा रहा था। वह उस सबके प्रति एकदम उदासीन हो गया था।

उसकी सामान्य इच्छा-शक्ति हिल गई थी और अब उसने अपनी कमजोरी के सामने आत्म-समर्पण कर दिया था—और वह भी एक प्रकार की प्रसन्नता के साथ। यह एक गलत किस्म की प्रसन्नता थी – यह उसी प्रकार की प्रसन्नता थी जो किसी व्यक्ति को उस समय अनुभव होती है जब उसके हाथ पांव जम रहे हों, मृत्यु उसके अधिकाधिक समीप आ रही हो—और वह हिलने-डुलने में भी अक्षम हो। उसकी रसौली जो पहले उसे भयभीव करने लगी थी उसने अब अपना निज का अधिकार जमा लिया था। अब रसौली उसके अधीन नहीं, वह उसके अधीन था।

यह जानते हुए कि आवेती मास्को से हवाई जहाज से आई है, पावेल निकोलाएविच उसी की प्रतीक्षा कर रहा था। हमेशा की तरह अब भी वह खुशी-खुशी उसका इन्तजार कर रहा था, लेकिन आज खुशी में थोड़ा-बहुत डर भी मिला हुआ था। यह फैसला किया जा चुका था कि कापा उसे मिनाई के पत्र और रोदीचेव और गुजुन के बारे में सब कुछ बता देगी। पहले उसे इस संबंध में बताने से कोई फायदा नहीं था, लेकिन अब उसकी बुद्धिमता और उसके परामर्श की आवश्यकता थी। आवेती एक अत्यधिक बुद्धिमान और चतुर लड़की थी और समस्याओं के संबंध में उसके विचार अपने माता-पिता के विचारों जितने ही बुद्धिमत्तापूर्ण होते थे—और सामान्यत: तो उनके विचारों से भी अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण! फिर भी उसे सब कुछ बता देने में थोड़ा-बहुत डर जरूर लगता था। इस सब पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या वह अपने आपको उनकी उन दिनों की परिस्थितियों में रखकर समूची स्थिति को समझ सकेगी? कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि कुछ भी सोचे-विचारे बिना उन्हें तत्कालनिंदनीय ठहरा दे?

इसके बावजूद कि उसने अपने एक हाथ में एक भारी थैला पकड़ा हुआ था और दूसरे हाथ से अपने कंधों के गिर्द सफेद कोट को संभाले हुए थी, आवेती वार्ड में बड़े उत्साह और मुस्तैदी से दाखिल हुई—उसका सिर अब भी थोड़ा-सा आगे को झुका हुआ था जैसे वह किसी तेज हवा का मुकाबला कर रही हो। उसका तरो-ताजा और युवा चेहरा दमक रहा था। उसके चेहरे पर उस कर्त्तव्यनिष्ठ सहानुभूति या करुणा के कोई चिन्ह नहीं थे, जिसके साथ लोग सामान्यत: गंभीर रोगियों को देखने मिलने जाते हैं—और अगर उसकी बेटी के चेहरे पर ऐसा कोई भाव हुआ होता तो पावेल निकोलाएविच को कष्ट ही होता।

"क्या हाल है, पापा? बताओ कैसे हो?" उसने पलंग पर उसके पास बैठकर चहचहाते हुए उसका अभिवादन किया। उसने बड़ी निश्छलता के साथ पहले उसके एक मैले-कुचैले गाल का चुंबन लिया और फिर दूसरे का। "तो आज आपकी तबियत कैसी है? ठीक-ठीक बताइये कि आपको कैसा लग रहा

है ? बताइये न !"

अपनी बेटी के दमकते चेहरे और उसके प्रसन्नतापूर्वक प्रश्न पूछने के ढंग से पावेल निकोलाएविच को लगा कि उसकी शक्ति लौट रही है। वह कुछ स्वस्थ-सा अनुभव करने लगा।

"मैं तुम्हें कैसे बताऊं ?" उसका स्वर अत्यधिक कमजोर और नपा-तुला था—जैसे कि वह अपने आप ही से बातें कर रहा हो। "मैं नहीं समझता कि यह कुछ घटी है, लेकिन हां, मुझे यह लगता है मैं अब अपने सिर को अपेक्षाकृत अधिक आसानी से हिला-डुला सकता हूं—थोड़ी-सी अधिक आसानी से। दबाव भी कुछ कम हैं—तुम मेरी बात समझ रही हो न !"

अपने पिता की अनुमति लिए बिना उसने कॉलर खोल दिया—इतनी सावधानीपूर्वक कि उसे लेशमात्र भी दर्द न हो, और उसकी गर्दन की रसौली को देखने लगी जैसे कि वह कोई डॉक्टर हो और हर रोज की तरह आज भी उसका मुआइना कर रही हो।

"इसमें डरने की कोई बात नहीं है," उसने घोषणा की। "सिर्फ एक गिल्टी फूल गई है—बस ! मां ने तो कुछ इस तरह लिखा था कि मेरी तो जान ही सूख गई थी। आप कह रहे हैं कि अब आप अपने सिर को अधिक आसानी से हिला-डुला सकते हैं—है न ? इसका मतलब है कि इंजैक्शन कारगर सिद्ध हो रहे हैं—निश्चित ही कारगर हो रहे हैं। बाद में यह घटने लगेगी। एक बार आधी रह जाने पर यह आपको इतना परेशान नहीं करेगी। तब आप—यहां से चल सकेंगे।"

"हां, तुम ठीक कहती हो," पावेल निकोलाएविच ने दीर्घ निःश्वास लेकर कहा। "काश, यह आधी रह जाए। फिर तो मैं इसके साथ भी जी लूंगा।"

"इलाज तो घर पर भी हो सकता है।"

"क्या तुम समझती हो कि ये इंजैक्शन घर पर भी लग सकते हैं ?"

"क्यों नहीं ? आप इनके आदी हो जाएंगे और मेरा दृढ़ विश्वास है कि आप उन्हें घर पर भी लगवाते रह सकेंगे। हम इस सिलसिले में बातचीत करेंगे—हम कोई-न-कोई रास्ता जरूर निकाल लेंगे।"

पावेल निकोलाएविच और भी अधिक प्रसन्नता अनुभव करने लगा।। वे उसे घर पर इंजैक्शन लगवाने की अनुमति दें या न दें, लेकिन इस बात पर उसे अत्यधिक गर्व अनुभव हुआ कि उसकी बेटी उसके लिए संघर्ष करने का संकल्प कर चुकी है और वह जो चाहती है उसे पाने के लिए कृतसंकल्प है। आवेती उस पर झुकी हुई थी और वह अपने चश्मे के बिना भी यह देख सकता था कि उसका सहानुभूति और उन्मुक्त चेहरा उत्साह और जीवन के ओज से दमक रहा है और उसके फड़कते नथुने उसकी गतिशील भवें प्रत्येक अन्याय पर पूरे आवेग से थरथराने लगती हैं। वह शायद गोर्की ने ही कहा

था—'अगर आपके बच्चे आपसे बेहतर नहीं हैं तो आप पिता बनने के योग्य ही नहीं थे—आपने अपना जीवन बेकार ही गंवाया है।' पावेल निकोलाएविच ने अपना जीवन बेकार नहीं गवाया था।

फिर भी वह चिन्तित था। क्या इसे उसका पता है? यह क्या कहेगी?

आवेती ने उस विषय पर बातचीत करने में कोई जल्दी नहीं दिखाई और वह उस विषय के बजाय उसके इलाज के संबंध में और जानकारी प्राप्त करती रही। उसने उससे पूछा कि यहां डाक्टर कैसे हैं। उसकी एक मेज़ की जांच-पड़ताल की ओर देखा कि उसने क्या कुछ खाया है और खराब हो चुकी खाने की चीज़ों के स्थान पर ताजा चीजें रख दीं।

"मैं आपके लिए कुछ स्वास्थ्यकर शराब लाई हूं," उसने कहा—"एक वक्त में एक जाम पीना। और हां, कुछ मछली का स्वादिष्ट अचार भी लाई हूं—जो आपको बहुत ही प्रिय है—है न? और मास्को से कुछ बहुत ही अच्छे संतरे भी लाई हूं।"

"यह तुमने बहुत अच्छा किया।"

इस दौरान वह वार्ड, वार्ड के वातावरण और वार्ड के मरीज़ों को भी देखती रही थी। उसकी ऊपर को उठी-उठी भोंहें बता रही थीं कि उसे वार्ड बहुत ही गंदा लगा है, फिर भी पावेल निकोलाएविच का विचार था कि उस पर नाक-भौं चढ़ाने की बजाय सिर्फ मुस्करा भर देना काफी है।

हालांकि और कोई दूसरा व्यक्ति उनकी बातें सुनता प्रतीत नहीं होता था, फिर भी वह आगे को झुककर अपने पिता के समीप हो गई और उन्होंने इस ढंग से बातें करना शुरू कर दिया कि उनकी बातों को उनके अतिरिक्त और कोई सुन ही न सके।

"हां, पापा, मुझे पता है—यह तो बहुत ही भयानक बात है!" आवेती सीधी असल बात तक पहुंच गई। अब तो यह सर्वविदित है—मास्को में हर कोई इस बारे में बात कर रहा है। इसे कानूनी कार्रवाईयों की बृहत् समीक्षा ही कहा जा सकता है।"

"बृहत्?"

"इसके लिए बृहत् शब्द ही प्रयोग किया जा सकता है। यह महामारी की तरह है। पेंडुलम एकदम दूसरी ओर घूम गया है। जैसे कि इतिहास-चक्र उलटा लौटाया ही जा सकता हो! ऐसा कौन कर सकता है? इसको जुर्रत कौन कर सकता है? ठीक है, चलो मान लिया कि बहुत पहले, सही या गलत ढंग से उन्होंने उन लोगों को सज़ा देकर दूर-दराज़ स्थानों पर निर्वासित कर दिया था, लेकिन अब उन्हें वापस लाने से फायदा? अब उन्हें उनके पहले के जीवनों में क्यों रोपा जाए? यह तो एक अत्यधिक कष्टकर प्रक्रिया है। —और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ऐसा करना स्वयं निर्वासितों के प्रति

भी अत्यधिक निर्मम होगा। उनमें से कुछ मर चुके हैं—उनके प्रेतों को आखिर क्यों परेशान किया जाए ? ? उनके संबंधियों के मन में आधारहीन आशाएं क्यों जगाई जाएं ?—हो सकता है कि प्रतिशोध की इच्छा ही भड़क उठे ! फिर 'पुनर्वासित' का वास्तविक अर्थ क्या है ? इसका अर्थ कहीं यह तो नहीं कि वह एकदम निरपराध था। कुछ-न-कुछ तो उसने किया ही होगा—फिर चाहे वह कोई साधारणतम बात ही क्यों न रही हो।"

वाह, कितनी बुद्धिमान् और चतुर लड़की है ! जिस उत्साह और आश्वस्ति के साथ वह बोलती रही थी उससे यही प्रकट होता था कि वह अपने को सही समझती है। हालांकि अभी तक पावेल निकोलाएविच की समस्या के बारे में बातचीत नहीं हुई थी, फिर भी उसे विश्वास हो गया था कि उसकी बेटी उसके पक्ष-समर्थन में चट्टान की तरह अडिग खड़ी रहेगी। आल्ला कभी भी उसका साथ नहीं छोड़ेगी।

"लेकिन क्या तुम्हें किन्हीं ऐसे मामलों का पता है जिनमें वास्तव ही मैं लोग वापस आ गए हों ? क्या मास्को में भी कुछ लोग वापस आ गए हैं ?"

"हां, मास्को में भी कुछ लोग वापस आए हैं। मुख्य बात यही है। वे इस तरह वापस आ रहे हैं जैसे चीटियां चीनी तलाश कर रही हों। कुछ केस तो बहुत ही भयानक और दुखद हैं। ज़रा सोचो तो, एक व्यक्ति वर्षों से शांति और चैन की जिन्दगी बसर कर रहा है, अचानक उसे बुला लिया जाता है··· जानते हो, किसलिए ! आमना-सामना कराने के लिए, क्या इसकी कल्पना भी की जा सकती है ?"

पावेल निकोलाएविच का चेहरा बिगड़ गया जैसे कि उसने नींबू निगल लिया हो। आल्ला ने यह देख तो लिया लेकिन अब वह रुक नहीं सकती थी। उसकी आदत थी कि वह जब कोई बात शुरू कर देती तो उसे पूरा करके ही दम लेती।

"उन्होंने उससे कहा कि बीस वर्ष पहले उसने जो बात कही थी, उसे दुहरा दे। ज़रा सोचो तो सही ! भला कौन याद रख सकता है ? उससे किसी को फायदा भी क्या होगा ? खैर, अगर आपके मन में उन्हें फिर से बसाने की कोई उत्कट इच्छा अचानक पैदा ही हो गई है तो बड़ी खुशी से उन्हें बसा दो ! लेकिन खुदा के लिए आमना-सामना न कराओ ! मेरा मतलब है कि आखिर ऐसा क्यों किया जाए कि लोगों के स्नायु ही जवाब दे जाएं ? वह बेचारा घर गया और उसने लगभग आत्म-हत्या ही कर ली !

पावेल निकोलाएविच पसीने में नहाया हुआ लेटा था। उसने यह तो आज तक सोचा ही नहीं था कि यह भी संभव है कि वे रोदीचेव या येलचान्स्की या अन्य किसी व्यक्ति से उसका आमना-सामना भी करा सकते हैं।

"मूर्ख कहीं के ! पहले तो उन्हें विवश ही किसने किया था कि वे अपने

बारे में गढ़ी हुई बातों को सच मान लें और आत्म-स्वीकृतियों पर हस्ताक्षर कर दें ? उन्हें हस्ताक्षर करने से इन्कार कर देना चाहिए था।" आल्ला का नमनीय मस्तिष्क प्रश्न पर प्रत्येक कोण से विचार कर रहा था। "वे जहन्नुम की इस आग को हवा कैसे दे सकते हैं ? उन्हें उनके बारे में भी कुछ सोचना चाहिए जो समाज की भलाई के लिए कुछ कर रहे थे। इस सारी उथल-पुथल से आखिर वे बेचारे कैसे उभरेंगे ?"

"क्या तुम्हारी मां ने तुम्हें कुछ बताया है···उसके···?"

"हां, पापा बता दिया है। लेकिन आपके चिन्ता करने की कोई बात नहीं है।" आवेती ने अपनी सशक्त उंगलियों से उसके कंधे जकड़ लिए।। "अगर आप चाहें तो मैं बताए देती हूँ कि मैं इस बारे में क्या सोचती हूं। एक व्यक्ति जो खतरे की घंटी बजाता है, राजनैतिक दृष्टि से अपने जागरूक और प्रगतिशील होने का प्रमाण देता है। उसका लक्ष्य समाज का हित-साधन है। जनता इस बात को समझती है और उसकी कद्र करती है। हो सकता है कि कुछ मामलों में उससे गलती भी हो जाए, लेकिन केवल वे लोग ही कोई गलती नहीं करते हैं जो कभी कुछ करते ही नहीं हैं। सामान्यत: कोई भी व्यक्ति अपनी वर्ग-अंत:स्फूर्ति के दिशा-निर्देशन में कार्य करता है और वह उसे कभी धोखा नहीं देता।"

"धन्यवाद, आल्ला, धन्यवाद !" पावेल निकोलाएविच के मन में आंसू उमड़ रहे थे—उसे मुक्ति का अहसास कराने वाले परिमार्जक आंसु ! "तुमने बात बड़े सलीके से कही है। जनता समझती है, जनता कद्र करती है। अफसोस यह है कि हमने अहमकाना आदत डाल रखी है कि जनता को नीचे स्तर का समझें।" अपने पसीने से भीगे हाथ से उसने अपनी बेटी का ठंडा हाथ थपथपाया। "यह अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है कि युवक वर्ग हमें समझे और हमारी भर्त्सना न करे। लेकिन यह बताओ तुम इस बारे में क्या सोचती हो···क्या वे कानून में कोई ऐसी धारा ढूंढ़ ले सकते हैं जिसके अनुसार गलत गवाही देने के अपराध में हमें···मेरा मतलब है मैं पकड़ा जा सकूँ।"

"सुनो !" आवेती ने उत्साहभरे स्वर में उत्तर दिया—"एक बार मास्को में मैं एक ऐसी जगह थी जहां वे इसी प्रकार की अप्रिय सम्भावनाओं पर विचार-विमर्श कर रहे थे। बातचीत में एक वकील भी सम्मिलित था। उसका कहना यह था कि तथाकथित गलत गवाही देने के विरुद्ध बने कानून के अनुसार केवल

दो वर्ष के कारावास का दंड दिया जाता था, लेकिन उसके बाद तो दो बार क्षमा-दान भी दिया जा चुका है। अब तो किसी को गलत गवाही देने के अपराध में दंड दिए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। रोदीचेव चूं भी नहीं करेगा—इस मामले में तुम निश्चिन्त रहो!"

पावेलनिकोलाएविच को ऐसा लगा जैसे कि उसकी रसौली को भी कुछ आराम आ गया है।

"वाह मेरी बुद्धिमान नन्हीं बिटिया!" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा—ऐसा लग रहा था जैसे कि उसके मन पर से भार उतर गया था। "तुम्हारे पास हर सवाल का उत्तर हैं। तुम ज़रूरत पड़ने पर सही मौके पर हमेशा मौजूद रहती हो। तुमने मेरी बहुत कुछ खोई शक्ति लौटा दी है।"

अपनी बेटी का एक हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर उसने अत्यधिक सम्मानपूर्वक चूमा। पावेल निकोलाएविच एक निस्वार्थ व्यक्ति था—वह सदैव ही अपने बजाय, अपने बच्चों के हितों को प्राथमिकता देता था। वह जानता था कि उसमें इसके अतिरिक्त और कोई विशेष गुण नहीं है कि वह कर्त्तव्य-निष्ठ, सहनशील और धुन का पक्का है। लेकिन उसकी बेटी उसकी वास्तविक उपलब्धि थी उसका नाम उसकी बेटी के कारण ही रोशन रहेगा।

अपने कंधे से बार-बार फिसल पड़ते उस प्रतीकात्मक कोट को संभालते-संभालते तंग आ चुकी आवेती ने हंसते हुए वह उतार कर पलंग के पांयते पर लगे अपने पिता के टेम्परेचर चार्ट पर फेंक दिया। यह डाक्टरों या नर्सों के वार्ड में आने का वक्त नहीं था।

अब आल्ला के शरीर पर लाल रंग का स्वेटर ही रह गया था। जो पावेल निकोलाएविच ने उसे इससे पहले कभी पहने नहीं देखा था। स्वेटर की आस्तीनों और सीने पर आड़ी-तिरछी सफेद धारी थी। धारी का आड़ा-तिरछापन आल्ला के शरीर की सोत्साह गतिविधियों से एकदम मेल खाता था।

आल्ला के अच्छे कपड़ों पर पैसा खर्च करने मे उसके पिता ने कभी कोई अनिच्छा प्रकट नहीं की थी। उसके लिए चीजें चोर बाजार से खरीद ली जातीं और विदेशों से भी मंगा ली जातीं। आल्ला के कपड़े आत्म-विश्वासपूर्ण और भड़कीले होते थे जो उसके संतुलित और निर्णायक मस्तिष्क से मेल खाने वाले उसके आकर्षण को और भी अधिक सबल और बेलाग बना देते थे।

"सुनो !" उसके पिता ने शान्त स्वर में कहा—"तुम्हें याद है कि मैंने तुमसे किसी चीज के बारे में जानकारी प्राप्त करने को कहा था ? भाषणों और समाचार-पत्रों में कभी-कभी एक अजीब शब्द मिलता है—'व्यक्ति-पूजा'[1] क्या इस शब्द का संकेत वास्तव में···"

"मेरे विचार से, पापा, हां ! हां, उनका संकेत उसी ओर होता है। उदाहरण के लिए लेखक-सम्मेलन में यह शब्द अनेक बार प्रयोग किया गया था। लेकिन दिक्कत तो यह है कि कोई यह नहीं बताता कि उसका अर्थ क्या है,—हालांकि सभी लोग मुद्रा ऐसी बनाते हैं जैसे वे उसका अर्थ समझते हैं।"

"लेकिन यह तो सरासर कुफ्र है—उन्हें ऐसा करने की हिम्मत कैसे होती है ?"

"यह लज्जास्पद और अत्यधिक असम्मानजनक है ! किसी ने हवा में यह शब्द फुसफुसा दिया और अब वह हर जगह गूंज रहा है। फिर भी हालांकि 'वे 'व्यक्ति-पूजा' की बात करते हैं, लेकिन एक ही सांस में वे 'महान उत्तराधिकारी' की बात भी करते हैं। बेहतर तो यह है कि व्यक्ति किसी भी दिशा में अतिवादिता की सीमा तक न जाए। सामान्यत: आपको नमनीय होना चाहिए, आपको समय की मांगें पूरी करनी ही होती हैं। पापा, चाहे आप इस बात से नाराज हो क्यों न हों, लेकिन फिर भी चाहते न चाहते हुए भी हमें हर नए दौर के अनुसार अपने आपको ढालना चाहिए । मैंने मास्को में बहुत कुछ देखा है। कुछ समय मैंने साहित्यिक क्षेत्रों में भी लगाया है—क्या आपके विचार से गत दो वर्षों में साहित्यकारों के लिए अपने रवैये में परिवर्तन करना आसान था ? बहुत ही मुश्किल था ! लेकिन यह वर्ग भी क्या ही अनुभवी है ? क्या तरकीबें हैं ! आप उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

पिछले चौथाई घन्टे से अपने पिता के सामने बैठी आवेती अपनी उत्तेजक और दो टूक टिप्पणियों से अतीत की भयावह विरूपताओं को निर्मूल कर रही थी और भविष्य के नए क्षेत्र खोल रही थी। इस दौरान पावेल

---

१. स्तालिनवाद के नकारात्मक और अपराधी पहलुओं पर इन दिनों चिपकाया जाने वाला रुसी लेबिल। लेकिन लेनिन के उत्तराधिकारी के रूप में उसके रचनात्मक पहलू को प्रकट करने के लिए उसे 'महान् उत्तराधिकारी' भी कहा जाता है।

(अनुवादक की टिप्पणी)

निकोलाएविच स्पष्टत: अधिक स्वस्थ लगने लगा था। उसमें अब इतना उत्साह आ गया था कि अपनी कष्टकर रसौली के संबंध में बात करने की भी उसकी कोई इच्छा नहीं रह गई थी। अब तो इस बात में भी कोई तुक नहीं दिखाई देती थी कि उसे किसी और क्लीनिक में स्थानांतरित करने के लिए भाग-दौड़ की जाए। वह तो अब बस यह चाहता था कि अपनी बेटी की प्रसन्नता दायक कहानियाँ सुनता रहे और अपने साथ वह जो ताजी हवा की लहर लाई थी उसमें सांस लेता रहे।

"बताओ, बताओ," उसने घिघियाते हुए कहा— "मास्को में क्या कुछ हो रहा है? तुम्हारी यात्रा कैसी रही?"

"हाय!" आल्ला ने अपना सिर कुछ इस ढंग से हिलाया जैसे वह घोड़ा हिलाता है जिसे गोमक्षी परेशान कर रही हो। "मैं आपको कैसे बताऊं कि मास्को क्या है? मास्को सचमुच ही एक रहने लायक जगह है। मास्को एक दूसरी ही दुनिया है। मास्को की यात्रा करना वैसा ही है जैसे कोई भविष्य में पचास वर्ष आगे निकल जाए। पहली बात तो यही है कि मास्को में प्रत्येक व्यक्ति टेलिविजन देखता है..."

"बहुत जल्द ही टेलिविज़न हमारे यहां भी होगा।"

"हां, ज़रूर होगा, लेकिन उस पर मास्को के कार्यक्रम नहीं आयेंगे। कहां मास्को का टेलिविजन और कहां हमारा! वहां तो बिलकुल एच० जी० वेल्स की कथाओं में आने वाले चित्रण जैसा ही है—प्रत्येक व्यक्ति बैठा हुआ टेलिविजन देख रहा है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हो जाती। मेरा खयाल है—और हवा में क्या कुछ है यह मैं तुरन्त सूंघ लेती हूं—कि हमारी जीवन पद्धति में पूर्ण क्रांति होने जा रही है। मेरा तात्पर्य फ्रिजों और कपड़े धोने की मशीनों से यह नहीं है—वातावरण में उससे कहीं अधिक आमूल-चूल परिवर्तन होने जा रहे हैं। उदाहरणार्थ कहीं-कहीं शीशे की प्लेटों के प्रकोष्ठ दिखाई देते हैं। और होटलों में नीची मेजें—सही अर्थों में नीची मेजें लगाई जा रही हैं—इतनी नीची जितनी कि अमरीकियों की होती हैं। पहली बार जब व्यक्ति उस मेज पर बैठता है तो उसकी कुछ समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। फिर लैम्पों के कपड़े के बने शेड हैं जैसे कि यहां हमारे घरों में हैं—ये सचमुच ही अत्यधिक लज्जाजनक और 'भदेस' हैं—उन्हें शीशे का होना चाहिए। और पलंगों में भी अब मसहरियाँ नहीं लगाई जातीं—मसहरियों का फैशन वहां

कभी का खत्म हो चुका है। अब तो हर जगह चौड़े और नीचे सोफों और कोचों का रिवाज है। उनसे कमरा कुछ और ही हो जाता है। हमारी जीवन-शैली बदल रही है। इतने परिवर्तन हो रहे हैं कि उन सबकी कल्पना कर पाना भी सम्भव नहीं है। मम्मी और मैं इस विषय पर काफी बातचीत कर चुके हैं। और हम इस बात पर एकमत हैं कि हमें अपने घरों में अनेक परिवर्तन करने होंगे। स्पष्ट है कि ऐसी चीजें यहां नहीं मिल सकतीं, वे तो मास्को से ही लानी होंगी। लेकिन कुछ फैशन सचमुच ही घातक हैं और उनकी शुरू ही से भर्त्सना की जानी चाहिए—उदाहरण के लिए रॉक-एन-रोल नृत्य। वह एकदम भ्रष्ट नृत्य है—मैं तो आपको बता भी नहीं सकती कि वह क्या और कैसा होता है।—और वह भयानक छज्जेदार केश-विन्यास! वे लोग अपने बालों को जान-बूझकर अस्त-व्यस्त कर लेते हैं जैसे कि अभी सीधे बिस्तर से उठकर चले आ रहे हों।"

"यह पश्चिमी ढंग है। वे हमें पथभ्रष्ट करना चाहते हैं।

"इसमें तो कोई संदेह ही नहीं कि नैतिक मानदन्डों का पूर्ण पतन हो रहा है—और उसकी झलक कलाओं में देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए कविता को ही लीजिए! उस दुबले-पतले और लंबे येव्तुशेंको को देखिए—पूरी तरह अनभिज्ञ—न कविता में लय न तुक। वह सिर्फ हाथ इधर-उधर हिलाकर चीखता है और लड़कियां हैं कि बस इसी पर पागल हो जाती हैं..."

आवेती अब इस ढंग से बात नहीं कर रही थी जैसे कि वे कोई व्यक्तिगत बातचीत कर रहे हों। एक सार्वजनिक विषय पर बात-चीत करना शुरू करते ही उसने अपने स्वर पर कोई प्रतिबंध नहीं रहने दिया था और वह इतने जोर से बोल रही थी जिससे कि वार्ड का प्रत्येक व्यक्ति उसकी बात सुन ले। लेकिन द्योमा ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने उसकी बात पूरे ध्यान से सुनने के लिए अपना काम छोड़ दिया था—कुछ देर के लिए उसका ध्यान अपने यंत्रणा देने वाले दर्द से हट गया था जो क्षण-प्रतिक्षण उसे ऑपरेशन टेबुल के अधिकाधिक समीप घसीट ले जा रहा था। वार्ड के बाकी लोगों ने या तो उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ली या फिर उस समय वहां थे ही नहीं। हां, वादिम जत्स्यिर्को अलबत्ता कभी-कभी अपनी किताब पर से निगाह उठाकर आवेती की पीठ पर जो कि एक पुल की तरह मुड़ी हुई थी, एक उचटती-सी नजर डाल लेता था। उसकी पीठ स्वेटर में कसी हुई थी। स्वेटर एकदम नया

था। वह समूचा स्वेटर एक कन्ध को छोड़कर लाल रंग का था—उस कन्धे पर एक खुली खिड़की से आकर पड़ती हुई धूप के कारण स्वेटर गहरा रक्ताभ दिखाई देता था।

"अपने बारे में कुछ और बताओ!"

"तो सुनो पापा! मेरी मास्को की यात्रा अद्भुत रही। उन्होंने मुझे वचन दिया है कि वे मेरे कविता संग्रह को अपनी प्रकाशन योजना में सम्मिलित करने जा रहे हैं। स्पष्ट ही है कि अगले वर्ष के प्रकाशन-कार्यक्रम में—लेकिन उससे पहले की तो आशा की भी नहीं जा सकती—इससे जल्दी प्रकाशित हो पाना तो अकल्पनीय होगा।"

"आल्ला, क्या सचमुच? तुम्हारा मतलब है कि एक वर्ष के अन्दर-अन्दर तुम्हारा कविता संकलन हमारे हाथों में होगा...?"

"खैर हो सकता है कि एक नहीं, दो वर्ष लग जाएं..."

उसकी बेटी उसके लिए खुशियों का अम्बार ले आई थी। उसे यह तो पता था कि वह अपनी कविताएं मास्को ले गई है लेकिन टाइप्ड कागजों और एक मुद्रित पुस्तक के बीच की दूरी, जिसके मुख पृष्ट पर आल्ला रूसानोव लिखा हो, उसे कभी न खत्म होने वाली दूरी लगी थी।

"आखिर तुमने यह सब व्यवस्था कर कैसे ली?"

आल्ला उसकी ओर देखकर मुस्करा दी। वह अपने आपसे बहुत खुश थी। "स्पष्ट ही है," उसने कहा—"कि मैं यह भी कर सकती थी कि सीधे किसी प्रकाशन-गृह में जाकर अपनी कविताएं उनके सामने रख देती, लेकिन मैं समझती हूं कि उस तरह कोई मुझसे बात करने तक को तैयार न होता। लेकिन अन्ना येव्गेन्येव्ना ने पहले मेरा परिचय 'म'—से कराया और फिर 'स—' से। मैंने उन्हें अपनी दो-तीन कविताएं सुनाईं—वे उन दोनों को ही पसन्द आईं और फिर उसके बाद उन्होंने किसी को फोन किया और किसी दूसरे व्यक्ति के नाम एक चिट लिख दी। बस!"

"वाह-वाह!" पावेल निकोलाएविच का चेहरा खुशी से दमक रहा था। उसने अपने पलंग के पास रखी मेज पर टटोल कर अपना चश्मा उठाया और लगा लिया—जैसे कि वह अपनी बेटी की मूल्यवान पुस्तक को वहीं और उस समय प्रशंसात्मक दृष्टि से देख-पढ़ लेना चाहता हो।

द्योमा ने अपने जीवन में पहली बार किसी जीते-जागते कवि को देखा

था—और मात्र कवि ही नहीं, बल्कि कवियत्री ! उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

"एक कवि होने के लिए मेरा नाम भी बहुत-अच्छा है। यह एक अच्छा, साफ सुथरा और गूँजदार नाम है। मैं कोई उपनाम या छद्म नाम नहीं रखूँगी। इतना ही नहीं, मुझे तो यह भी महसूस होता है कि मैं एकदम एक लेखक जैसी दिखाई देती हूं।"

"लेकिन आल्ला, इसमें सफलता न मिली तो? तुम जानती हो कि तुम्हें हर किसी के बारे में इतने विस्तार से लिखना पड़ेगा कि उसका हू-ब-हू नक्शा खिंच जाए, उसके दोस्त फौरन ही उसे पहचान लें...।"

"नहीं, मुझे एक बात सूझी है। मैं पृथक्-पृथक् पात्रों के बारे में सिर नहीं खपाऊंगी—इसकी कोई जरूरत नहीं है। मेरे दिमाग में जो विचार आया है वह एकदम नया है। मैं सीधे सहकारिताओं के बारे में लिखूँगी—मैं सहकारी कृषि का पूरा चित्र खींचूंगी। आखिर व्यक्ति का समूचा जीवन सहकारिताओं से सम्बद्ध है—अलग-थलग व्यक्तियों से नहीं।"

"हां, यह तो सही है," पावेल निकोलाएविच को स्वीकार करना पड़ा लेकिन एक खतरा ऐसा था जिस पर हो सकता है उसकी बेटी ने उत्साह में ध्यान ही न दिया हो। "लेकिन क्या तुमने इस बारे में सोचा है कि आलोचक तुम पर टूट पड़ सकते हैं? हमारी दुनिया में आलोचना एक प्रकार की सामाजिक निन्दा है, और यह बहुत ही खतरनाक है!"

आवेती ने अपने गहरे भूरे बालों के गुच्छे को पीछे की ओर झटक दिया और भविष्य की ओर रणचंडी की-सी निर्भीकता से देखते हुए कहा—"लेकिन सच्चाई यह है कि वे मेरी कोई बहुत गम्भीर आलोचना कर ही नहीं सकेंगे क्योंकि मेरी रचनाओं में विचारधारा सम्बन्धी गलतियां तो होंगी ही नहीं।—और कलात्मक दृष्टि से अगर उन्होंने मुझ पर वार भी किए तो उनकी किसे चिन्ता है!—आखिर वे बख्शते किसे हैं? बाबयेव्स्की का मामला लो! पहले हर कोई उससे प्यार करता था, फिर हर कोई उससे घृणा करने लगा, हर किसी ने—यहाँ तक कि उसके सर्वाधिक विश्वासपात्र मित्रों ने भी—उसकी भर्त्सना की। लेकिन यह अपने आप में एक अस्थाई स्थिति है, वे अपने विचार बदल लेंगे और फिर उसे अपना लेंगे। यह नाजुक संक्रमणों में से केवल एक है जिनसे जीवन भरा पड़ा है। उदाहरणार्थ, पहले वे कहा करते थे—

'संघर्ष या अन्तर्द्वन्द्व नहीं होना चाहिए।' लेकिन अब वे 'अन्तर्द्वन्द्व के अभाव में गलत सिद्धांत' की आलोचना कर रहे हैं। अगर आपस में कोई मतभेद होता—कुछ लोग अब भी लिखने के पुराने ढंग का पक्ष लेते और कुछ नए ढंग का—अब तो यह स्पष्ट होता कि हां कोई परिवर्तन हुआ है। लेकिन जब प्रत्येक व्यक्ति अचानक लिखने के नए ढंग की बात करने लगे तो आपको यह पता ही नहीं चलता कि कहीं कोई संक्रमण हुआ भी है। मेरे विचार में महत्त्वपूर्ण बात तो कौशल और समय के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना है। उस स्थिति में आलोचकों से कोई मुठभेड़ होगी ही नहीं...अरे हां, पापा आपने मुझसे पुस्तकों के लिए कहा था—मैं कुछ ले आई हूं। इन दिनों आपको ज़रूर कुछ पढ़ लेना चाहिए—सामान्यतः तो आपके पास समय ही नहीं होता।

"लेखक जिस प्रकार का जीवन जीते हैं, वह मैंने निकट से देखा है। एक-दूसरे के साथ उनके संबंध बहुत ही अच्छे और सीधे-सादे हैं। फिर चाहे वे स्तालिन पुरस्कार विजेता ही क्यों न हों, लेकिन वे एक-दूसरे के निकट हैं कि आपस में एक-दूसरे को उसके नाम के पहले हिस्से से पुकारते हैं। कहीं कोई दुराव छिपाव नहीं—सभी कुछ एकदम साफ और दो टूक! सामान्यतः हम समझते हैं कि लेखक आसमान पर बैठा रहने वाला कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी भौंहें हमेशा तनी रहती हैं और हम उस तक पहुंच भी नहीं सकते हैं। लेकिन यह एकदम गलत है। वे जीवन का पूरा आनन्द लेते हैं—खाने में, पीने में, घूमने-फिरने में—और हमेशा ही दोस्तों के साथ आनन्दमग्न रहते हैं। वे हर वक्त एक को छेड़ते-चिढ़ाते रहते हैं और ठहाके लगाते रहते हैं। मेरे विचार से उनका जीवन वास्तव ही में आनन्दमय है। लेकिन जब कोई उपन्यास लिखने का समय आता है तो वे अपने आपको दो या तीन महीने के लिए अपने देहाती मकानों में बन्द कर लेते हैं—और उपन्यास तैयार! मुझे अपने लिए बस यही जीवन पसन्द है। आत्म-निर्भरता, स्वतन्त्रता और सम्मान-प्रतिष्ठा का जीवन! लेखक संघ की सदस्यता प्राप्त करने के लिए मैं हर संभव प्रयत्न करने जा रही हूं।"

"तुम्हारा मतलब है कि तुमने यूनीवर्सिटी से जो डिगरियां ली हैं, उनसे कोई काम नहीं लोगी?" पावेल निकोलाएविच कुछ चिन्तित हो उठा।

"पापा," अवीती ने अपना स्वर कुछ धीमा कर लिया—"आप चाहे उसे

किसी भी दृष्टि से देख लें, पत्रकारिता एक घटिया और ओछा काम है। वे आपको काम सौंप देते हैं—यह करो, वह करो! आपको कोई स्वतन्त्रता होती ही नहीं। हर वक्त बस बड़े-बड़े मशहूर लोगों के इन्टरव्यू लेते फिरो। एक लेखक के जीवन से भला उसकी क्या तुलना! आप जानते हैं, एक लेखक है—जैसे ही उसने अपना साहित्यिक जीवन शुरू किया, अपनी पत्नी और अपनी भतीजी को लिखना सिखा दिया—और अब वे तीनों लेखक हैं।"

"वाह!"

"साहित्य से पैसा भी तो मिलता है!"

"अल्ला, तुम चाहे कुछ ही कहो, लेकिन मैं अब भी कुछ चिन्तित हूं। मान लो, उसमें सफलता न मिल पाई तो?"

"लेकिन सफलता मिल क्यों नहीं पाएगी? आप तो बेवजह वहम कर रहे हैं। गोर्की ने कहा था—'कोई भी व्यक्ति लेखक बन सकता है' कठोर परिश्रम से कुछ भी उपलब्ध किया जा सकता है।—और अगर बहुत ही कठिनाई हुई तो मैं बाल लेखिका बन जाऊंगी। वह तो कोई भी बन सकता है।"

"ठीक है, सिद्धान्ततः यह बहुत अच्छा है," पावेल निकोलाएविच ने कुछ सोचते हुए कहा। "सिद्धान्ततः यह बहुत ही अच्छी बात है निःसन्देह तुम जैसे नैतिक दृष्टि से स्वस्थ लोगों का साहित्यकार बनना एकदम ठीक है।"

वह अपने थैले में से किताबें निकालने लगी। "ज़रा देखो तो! मैं आपके लिए 'बाल्टिक का बसन्त और 'उसे मार डालो' लाई हूँ। यह दूसरी किताब कविता की है। क्या आप उसे पढ़ेंगे!"

"'उसे मार डालो'! अरे उसे रहने ही दो!"

"हमारी सुबह आ चुकी है,' 'धरती पर प्रकाश', 'शान्ति के मुजाहिद', 'पहाड़ खिल उठे'..."

"ज़रा रुको! 'पहाड़ खिल उठे'—मेरा खयाल है, मैं इसे पढ़ चुका हूँ।"

"नहीं, आपने 'धरती खिल उठी' पढ़ी थी, यह 'पहाड़ खिल उठे' है। यह एक और किताब है—यौवन हमारे साथ है। यह तो पढ़नी ही चाहिए—बेहतर तो यही है कि आप इसी से शुरू करें। किताबों के नाम ही ऐसे हैं कि जी खुश हो जाए और इन्हें छांटते हुए यही बात मेरे दिमाग में थी।

"हां, यह बहुत अच्छी बात है," पावेल निकोलाएविच ने कहा। "इन्हें वहां रख दो! लेकिन क्या तुम ऐसी कोई किताब नहीं लाईं जिसमें कुछ

भावुकता हो ?"

"भावुकता ? नहीं पापा। मैंने यह सोचा था···आप जिस प्रकार की मन:स्थिति में हैं···"

"मैं इस तरह की किताबों के बारे में पहले ही काफी जानता हूं" पावेल निकोलाएविच ने किताबों के ढेर की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा। "लेकिन क्या तुम कोई ऐसी किताब नहीं दे सकती हो जो सीधे दिल को छुए ?"

"ठीक है," आवेती ने कुछ सोचते हुए कहा—मैं मां को ड्यूमा की 'ल रेने मारगोट' दे दूंगी। वह जब यहां आएगी तो अपने साथ लेती आएगी।"

'हां, मुझे बस ऐसी ही किताब की जरूरत है।"

आवेती अब जाने की तैयारी कर रही थी।

इस बीच द्योमा अपने कोने में बैठा मन ही मन बुदबुदाता रहा था—या अपनी टांग के खत्म न होने वाले दर्द की यन्त्रणा पर या फिर अपनी उस हिचकिचाहट पर जो उसे एक चकाचौंध कर देने वाली लड़की से, जो एक कवियत्री भी थी बातचीत करने में अनुभव हो रही थी। आखिर उसने इतनी हिम्मत बटोर ही ली कि अपना गला साफ किए बिना और वाक्य के बीच में खाँसे बिना उससे सवाल पूछ ले—"माफ कीजिए," उसने कहा—"क्या आप मुझे यह बता सकती हैं कि साहित्य में सत्यनिष्ठा के बारे में आपका क्या विचार है ?"[१]

"क्या ? क्या कहा तुमने ?" आवेती अपनी भव्य अर्ध-मुस्कान के साथ उसकी ओर मुड़ गई। द्योमा की बैठी हुई आवाज से उसने अनुमान लगा लिया था कि वह कितना अधिक शर्मीला है। "फिर वही मनहूस 'सत्यनिष्ठा !' क्या उसकी चर्चा यहां भी पहुंच गई ? इस तुम्हारी 'सत्यनिष्ठ, के कारण उन्होंने पूरा सम्पादन मण्डल ही बर्खास्त कर दिया है। यहां यह क्या गुल खिलाएगी ?"

---

१ इससे आगे की बहस नोवी मीर के दिसम्बर, १९५३ के अंक में प्रकाशित व्लादिमीर पोमेरान्तसेव के लेख के इर्द-गिर्द घूमती है। जब यह लेख प्रकाशित हुआ था तो कम्युनिस्ट पार्टी के अखबारों ने उसकी कटु आलोचना की थी। बाद में यह लेख आगे आने वाले 'पिघलाव' का प्रथम संकेत सिद्ध हुआ। (अनुवादक की टिप्पणी)

उसने द्योमा के चेहरे पर नज़रें जमा दीं। स्पष्ट ही था कि लड़का अधिक पढ़ा लिखा नहीं है और वह कोई बहुत बुद्धिमान भी नहीं है। हालांकि उसके पास समय नहीं था, फिर भी यह तो उचित न होगा कि वह उस लड़के पर इतना बुरा प्रभाव छोड़ कर चली जाए।

"सुनो !" उसने अपनी सशक्त और गूंजती हुई आवाज में कहा जैसे वह किसी मंच से बोल रही हो—"जिस व्यक्ति ने वह लेख लिखा था उसने हर चीज को एकदम उलट-पुलट करके रख दिया था। उसने अपने तर्कों पर समुचित ढंग से सोच-विचार नहीं किया था। सत्यनिष्ठा किसी पुस्तक को परखने की प्रमुख कसौटी नहीं हो सकती है। अगर कोई लेखक गलत विचारों की अभिव्यक्ति करता है या विदेशी रवैयों का प्रचार करता है तो वह उन विचारों के प्रति तो सत्यनिष्ठ हो सकता है लेकिन इससे उसकी पुस्तक की घातक क्षमता में ही वृद्धि होगी। सत्यनिष्ठा हानिकारक और घातक हो जाएगी। व्यक्तिपरक सत्यनिष्ठा जीवन के वस्तुपरक प्रस्तुतिकरण के विरुद्ध उठ खड़ी हो सकती है। यह एक द्वन्द्वात्मक बात है। अब तुम कुछ समझे ?"

द्योमा के लिए इन विचारों को पचा पाना आसान नहीं था। उसकी भौंहों में बल पड़ गए—"नहीं, पूरी तरह नहीं," उसने कहा।

"अच्छा, मैं तुम्हें समझाती हूं," आवेती ने अपनी बांहें फैलाते हुए कहा। उसके स्वेटर पर जो सर्पिल सफेद लकीर थी, वह बिजली की तरह चमक रही थी। "यह दुनिया का सरलतम कार्य है कि किसी कष्टदायक घटना या तथ्य को लेकर उसे ज्यों का त्यों चित्रित कर दिया जाए। हालांकि करना यह चाहिए कि व्यक्ति हलकी फाल की तरह घटना की गहराई तक जाकर भविष्य के अंकुरों को उजागर करे। अगर ऐसा न किया गया तो वह अंकुर सामने ही नहीं आ पाएगी।"

"लेकिन अंकुर···!"

"क्यों, क्या बात है ?"

"अंकुरों को तो स्वयं फूटना-बढ़ना चाहिए !" द्योमा ने जल्दी से अपनी बात पूरी कर दी। "अगर अंकुरों के ऊपर कोई हल चला दे तो पौध उगेगी ही नहीं।"

"मैं जानती हूं, लेकिन हम खेती-बाड़ी की बात तो नहीं कर रहे। नहीं कर रहे न ? लोगों को सच से परिचित कराने का अर्थ यह तो नहीं कि उन्हें

केवल बुरी बातें और खामियां ही बताई जाएं। उसके सर्वथा प्रतिकूल, क्या यह अच्छा नहीं होगा कि अच्छी बातों को पूरी निर्भीकता से चित्रित किया जाए ताकि वे और भी बेहतर हो जाए ? तथाकथित 'कटु सत्य' की यह गलत मांग आखिर आई कहां से है ? सत्य के लिए यह अचानक आवश्यक क्यों हो गया कि वह कटु ही हो ? वह प्रकाशमान, उत्साहजनक और आशावादी क्यों नहीं हो सकता ? हमारे साहित्य को पूरी तरह आनन्ददायक होना चाहिए। लोगों के जीवन के सम्बन्ध में निराशा पैदा करने वाले अन्दाज में लिखना उनका अपमान करना है। वे तो यह चाहते हैं कि उनका जीवन सजा-संवरा और अलंकृत हो।"

"सामान्यत: मैं इससे सहमत हूं।" आवेती के पीछे से एक प्रिय एवं स्पष्ट आवाज आई। "यह सच है, निराशा आखिर क्यों फैलाई जाए ?"

निस्सन्देह, आवेती को किसी समर्थक की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन उसे अपने भाग्य पर पूरा-पूरा विश्वास था—जब भी कोई बोलता उसके पक्ष में ही बोलता। वह खिड़की की ओर मुड़ी और उसके स्वेटर की सर्पिल रेखा धूप पड़ने से चमक उठी। उसी का समवयस्क एक लड़का, जिसके चेहरे से बुद्धिमता बरसती थी, पेंसिल की नोक से अपने दांतों को ठुकठुका रहा था।

"आखिर साहित्य का उद्देश्य क्या है ?" वह बड़ी तेजी से सोच रहा था—शायद द्योमा के फायदे के लिए या शायद आल्ला के फायदे के लिए। "साहित्य का उद्देश्य यह है कि जब हमारी मन:स्थिति ठीक न हो तो हमारे ध्यान को किसी और तरफ ले जाए।"

"साहित्य जीवन का अध्यापक है," द्योमा बुदबुदाया। वह अपने कथन के बेढंगेपन पर कुछ शरमा सा गया।

वादिम ने अपना सिर पीछे को झुका लिया। "खाक अध्यापक है!" उसने कहा। "उसके बगैर किसी न किसी तरह हमारा गुजारा हो ही जाता है। तुम कहीं यह तो नहीं कहना चाहते कि लेखक हम व्यावहारिक कार्यकर्ताओं की तुलना में अधिक बुद्धिमान और चतुर होते हैं ?"

उसकी और आल्ला की नजरें आपस में मिलीं। उन्होंने भांप लिया कि वे दोनों एक ही जैसे हैं। हालांकि वे समवयस्क थे और यह स्वाभाविक ही

था कि उन्हें एक-दूसरे की दृष्टि भा जाए, लेकिन उनमें से प्रत्येक अपने निश्चित मार्ग पर अडिग था और इसकी कोई सम्भावना नहीं थी कि दृष्टि के इस आकस्मिक आदान-प्रदान को किसी साहसिक कहानी की शुरुआत मान लिया जाए।

"जीवन में साहित्य की भूमिका को सामान्यत: अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर चित्रित किया जाता है," वादिम ने अपना तर्क जारी रखते हुए कहा। "कभी-कभी पुस्तकों की इतनी प्रशंसा की जाती है कि उन्हें आसमान पर चढ़ा दिया जाता है, जबकि वे इस प्रशंसा की अधिकारी नहीं होतीं। उदाहरण के लिए 'गारगैन्तुआ एण्ड पैंट्राग्रुएल' को लीजिए। अगर आपने वह नहीं पढ़ी है तो आप समझेंगे कि वह कोई अद्भुत पुस्तक है। लेकिन अगर आप पढ़ें तो पाएंगे कि उसमें अश्लीलता के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। उसे पढ़ना, समय बर्बाद करना ही है।"

"साहित्य में श्रृंगारिकता का अपना स्थान है—यहां तक कि समकालीन लेखकों की पुस्तकों में भी वह आपको मिल जाएगी," आवेती ने तीव्र विरोध करते हुए कहा। "उसका वर्णन-चित्रण अनिवार्यत: अनावश्यक नहीं होता। उसे वास्तविक प्रगतिशील सैद्धान्तिक चिन्तन के साथ मिला देने पर साहित्य के रस में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। उदाहरणार्थ..."

"वह एकदम अनावश्यक है," वादिम ने पूरी आस्था के साथ दो टूक जवाब दिया। "मुद्रित शब्द का यह कार्य कदापि नहीं होता कि वह आवेगों को गुद-गुदाए। उत्तेजक औषधियाँ कैमिस्ट की दुकान से खरीदी जा सकती हैं।"

लाल रंग के स्वेटर वाली रणचंडी पर एक और दृष्टि डाले बिना और इसकी प्रतीक्षा किए बिना कि आवेती उसे सहमत करने की कोशिश करे उसने अपनी आंखें अपनी किताब पर झुका लीं।

जब लोगों के विचार दो स्पष्ट श्रेणियों—तर्कसम्मत और तर्कहीन—में से किसी एक श्रेणी में न आते थे तो आवेती को हमेशा ही बड़ी उलझन होती थी। उसे अस्पष्ट विचारों से घृणा थी। उनसे तो केवल सैद्धान्तिक धुंधलका ही पैदा होता था। उस समय तो वह यही निर्णय नहीं कर पा रही थी कि यह नवयुवक उसका समर्थन कर रहा है या विरोध। यह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि वह उससे तर्क-वितर्क करे या बात को यहीं पर खत्म कर दे।

उसने बात वहीं खत्म कर दी। "अच्छा, सुनो," वह थोमा की ओर मुड़ी

जिससे कि वह उसके साथ अपनी बात पूरी कर ले। "तुम्हें पता होना चाहिए कि जिस चीज़ का अस्तित्व है उसका चित्रण करना उस चीज़ के चित्रण से कहीं अधिक आसान है जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है—फिर चाहे आपको यह पता ही क्यों न हो कि वह अस्तित्व में आने जा रही है। हम आज अपनी नंगी आंख से जो कुछ देखते रहे हैं, आवश्यक नहीं कि वह सत्य ही हो। सत्य वह है जो हम होने जा रहे हैं, जो कल होने जा रहा है। लेखकों का कर्त्तव्य यही है कि वे हमारे आश्चर्यजनक 'काल' का आज चित्रण करें।

"लेकिन तब वे कल क्या चित्रित करेंगे?" द्योमा की समझ में बात कुछ धीरे-धीरे ही आ पाती थी।

"कल?......स्पष्ट है कि कल वे परसों का वर्णन करेंगे।"

इस नवयुवक का मस्तिष्क कुछ कमजोर था। उसके साथ तर्क-वितर्क करना समय की बर्बादी ही थी। फिर भी आवेती जनता में सत्य के प्रसार के अभियान पर थी—इसलिए अपनी बात को समेटते हुए उसने कहा—

"वह लेख अत्यधिक हानिकारक था। उसने बिना किसी आधार के और अपमानजनक ढंग से लेखकों पर सत्यनिष्ठाहीनता का आरोप लगाया था। और लेखकों के साथ ऐसा अपमानजनक व्यवहार कोई अशिष्ट व्यक्ति ही कर सकता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लेखक भी ईमानदार और परिश्रमी व्यक्ति हैं और इस रूप में उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए। सत्यनिष्ठाहीनता का आरोप तो केवल पश्चिमी लेखकों पर लगाया जा सकता है क्योंकि वे पैसे के लिए लिखते हैं। अगर ऐसा न हो तो कोई उनकी किताब न खरीदे। वहां सब कुछ पैसे पर निर्भर करता है।"

वह उठ खड़ी हुई—वह इस समय पलंगों के बीच की जगह में खड़ी थी—रूसानोव की स्वस्थ, सशक्त, फुर्तीली और सुन्दर बेटी। उसने द्योमा को अभी-अभी जो लेक्चर पिलाया था पावेल निकोलाएविच उसे अत्यधिक प्रसन्नतापूर्वक सुनता रहा था।

आवेती अपने पिता का चुम्बन ले चुकी थी और अब उसने विदा लेने के लिए अपना खुली उंगलियों वाला हाथ हवा में प्रसन्नतापूर्वक लहरा दिया। "पापा अपने स्वास्थ्य के लिए संघर्ष कीजिए," उसने कहा। "कड़ा संघर्ष कीजिए, अपना इलाज कराते रहिए, इस रसौली से मुक्ति पा लीजिए, और किसी भी चीज़ की चिन्ता मत कीजिए!" उसने अपने अन्तिम शब्दों पर बल देते हुए कहा—"सब कुछ ठीक हो जाएगा, सबकुछ!"

कुछ सजिल्द प्रकाशन

१ कैन्सर वार्ड (दो भागों में। प्रत्येक भाग का मूल्य ८.००) १९७० में नोबल पुरस्कार विजेता अेलेक्ज़ेण्डर सोलनिस्तीन का उपन्यास

२	उद्देश्य की दृष्टि से	,,	,,	५.००
३	सूखा सावन	अनीस मिर्ज़ा	उपन्यास	५.००
४	पीली धुन्ध	प्रो० ज्ञानेश्वर	,,	५.००
५	पहली लड़की	आदिल रशीद	,,	८.००
६	चांद सी औरत	दत्त भारती	,,	५.००
७	एमरजेन्सी वार्ड	,,	,,	७.००
८	भयानक कैदी	ओमप्रकाश शर्मा	,,	६.००
९	रैड सर्कल सोसायटी	सुरेन्द्र मोहन पाठक	,,	६.००
१०	कांटे और कलियां	साधना प्रतापी	,,	६.००
११	गंगा के घाट	रत्न चन्द धीर	,,	६.००
१२	मौत का पैगाम	एस० एन० कंवल	,,	६.००
१३	दुश्मन	विरेन्द्र सिन्हा	,,	६.००
१४	अमीर अली ठग की आप बीती	—	,,	६.००
१५	प्यासी नदी	महेन्द्रसिंह सरना	,,	४.५०
१६	वापसी	रमेश गौड़	,,	६.००
१७	मुहूर्त	शुभा वर्मा	,,	४.५०
१८	कोलाज	,,	,,	४.५०
१९	हलचल	अनीस मिर्ज़ा	,,	५.००
२०	दामन की आग	माणिक टाला	,,	६.००
२१	लोकतन्त्र	डोरोथी पिकल्स	लोकतन्त्र पर एक अध्ययन	७.००